सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - वल्लभी वैष्णव

Vibrant Pushti

" जय श्री कृष्ण "

"पुष्टि" कहींओ ने कहा पुष्टि अर्थात कृपा।

"पुष्टि" कहींओ ने अहैतुक कृपा

क्या यह ही अर्थ को अपना कर हमें पुष्टित्व पाना है?

क्या यह ही अर्थ को समझ कर हमें पुष्टि स्पर्श पाना है?

क्या यह ही अर्थ को सैद्धांतिक कर हमें ब्रह्म संबंध करना है?

क्या यह ही अर्थ को जीवन चरित्र कर हमें परम भगवदीय होना है?

क्या यह ही अर्थ को गोपिभाव प्रकट कर हमें गोपित्व सँवारना है?

आंतरिक चिंतन से कहे तो यह अर्थ आज के काल में अंधश्रद्धा से सभर है, जो गलत है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हे हमारे मित्र!

हे हमारे साथी!

सर्वे के होते हुए बहोत कुछ सीखा, बहोत कुछ पाया, बहोत कुछ समझा, बहोत कुछ बांधा, बहोत कुछ जीया।

हे हमारे मित्र!

हे हमारे साथी!

जो धरती ने जन्म पाया, जो आकाश ने शिक्षित किया, जो सूरज ने गति दिया, जो सागर ने सिंचा, जो हवा ने वृद्धाया, जो वनस्पति ने औषधा यही से सृष्टि रची, संस्कृति घड़ी, धर्म धरा।

पुष्टि की पहचान यही है की न कोई कृपा है कोई पर, न कोई उपकार है कोई पर, न कोई ऋण है कोई पर। जीना है तो संवरते जाओ खुद को, खुद की समता बढ़ाते जाओ, अधूरापन की विष विषमता को नष्ट करते जाओ, तो खुद की होगी पहचान, तो जीएँगे पुष्टित्व पा कर,

श्रीयमुनाजी मेरे साथ है

श्रीगिरिराजजी मेरे साथ है

श्रीमहाप्रभुजी मेरे साथ है

श्रीश्रीनाथजी मेरे साथ है।

यही साथ से तो बाह्य और आंतर जगत में विचरते है, पुष्टि यात्रा करते है, पुष्टि परिभ्रमण करते है सदा पुष्टिमय रहते है।

यही ही जीवन है, यही ही पुरुषार्थ है, यही ही पुष्टि सत्य है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

सच में कैसे होते है रिश्ते!

रिश्ते! इतना पवित्र शब्द है यह

जो शब्द अपने विचार में उठने से अपने अंदर की ऊर्जा भड़क जाये

जो शब्द अपने विचार में उठने से अपने अंदर की ऊष्मा सुलग जाये

जो शब्द अपने विचार में उठने से अपने अंदर की ज्योति अधिक तेजोमय हो जाये

जो शब्द अपने मन की स्तिथि को स्थिर करे

जो शब्द अपने मन को धैर्य करे

जो शब्द अपने मन को आनंद दायक करे

जो शब्द अपने मन को सांत्वना दे

जो शब्द अपने मन को हिम्मत दे

जो शब्द अपने तन को हर्ष उल्हास कर दे

जो शब्द अपने तन को शांत कर दे

जो शब्द अपने तन को शक्तिशाली कर दे

जो शब्द अपने तन को धैर्यवान कर दे

जो शब्द अपने तन को निरोगी कर दे

जो शब्द अपने तन को ऊर्जावान कर दे

जो शब्द अपने तन को सेवामय कर दे

जो शब्द अपने जीवन को मधुर कर दे

जो शब्द अपने जीवन को सार्थक की पुरुस्कृति दे

जो शब्द अपने जीवन को साथ साथी निभाये

जो शब्द अपने जीवन को उज्ज्वल बनाये

जो शब्द अपने जीवन को योग्य बनाये

जो शब्द अपने जीवन को अलंकृत बनाये

जो शब्द अपने जीवन को संस्कृत बनाये

जो शब्द अपने जीवन को धन्य बनाये

जो शब्द हमें जीवन भर आशीर्वाद प्रदान करे

जो शब्द जीवन भर हमारा ऋण नष्ट करे

सच! कितना अदभुत शब्द है

सच! कितना अलौकिक शब्द है

सच! कितना स्पर्शीय शब्द है

सच! हमें यह विशुद्धता से समझना चाहिए, निभाना चाहिए, सार्थक करना चाहिए।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"शिव" को कैसे पहचाने

"जीव" को कैसे जाने

जीव के पुरुषार्थ से शिव जागे

शिव के जागने से जीव विशुद्धे

विशुद्ध अर्थात प्रबल ज्ञान भक्ति

ज्ञान भक्ति से पवित्रता प्रकटे

पवित्रता से आचरण दुरित क्षये

दुरित क्षय से प्रीत सृजे

प्रीत से पुष्टि प्रज्वले

पुष्टि से गोपित्व स्फुरे

गोपित्व से यमुना सघोषे

यमुना से व्रज रचे

व्रज से गिरिराज बैठे

गिरिराज से कृष्ण लीला भये

कृष्ण लीला से शिव दौड़े

शिव से जीव संस्कृते

एकात्म हो जीव शिव पुष्टि प्रमये

यही है शिव जो स्पर्शे जीव जीव

यही है जीव जो जगाये शिव शिव

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

प्यार को जानना,

प्यार को समझना

प्यार को पाना

प्यार को निभाना

प्यार में लूटाना

प्यार में खोजाना

प्यार में डूब जाना

प्यार में विरहाना

प्यार में जुड़ना

प्यार में एक होना

क्या है?

यह कोई साधारण और सामान्य नही है।

यह अलौकिक और अदभुत है

जो केवल सीता को ही हो सकता है

जो केवल राधा को ही हो सकता है

जो केवल ....

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

प्रियजनों! आज का स्पर्श कुछ अनोखा है, विनंती है आप अचूक उन्हें समझे।🌷🙏🌷

जीव जब देह में प्रवेश करता है तब ही अहंकार और वासना का उदभव हो जाता है अर्थात जीव या ने अंश - आत्म ज्योति और देह या ने सृष्टि के तत्वों का समूह या ने पंच महा तत्वों।🌷🌷🌷

यह अहंकार - वासना और देह का समन्वय अपने कर्म से ही एकत्व होते है अर्थात जो भी देह धारण होता है वह कर्म की गति से ही निर्मित होता है।

यही ब्रह्मांड और सत्य का नियमन है, विज्ञान है, धर्म है। जो अहंकार और वासना है वह जब जीव देह में प्रविष्ट करते समय निर्मोही और निर्गुण होता है और देह धारी स्वभाव गत होता है, जैसे जैसे वृद्धि होती है वह प्रबल और द्रढ होता जाता है तबतक जब जीव और देह को पूर्णता से समझ आ जाती है की यह मैं हूँ, यही मैं से वह खुद को यह सृष्टि के हर तत्वों से जुड़ना प्रारंभ कर देता है - जैसे अपना नन्हा सा बालक।🌷🌷🌷

जैसे जैसे बड़ा होता जाता है वह अपने संस्कार, संस्कृति और जीवन पद्धति से जीना सीख जाता है।

हाँ! पर उनका पूर्व कर्म अनुसंधान वह अपनी कर्म निधि को जागृत कर अपने आपको योग्य परिस्कृत कर सकता है, योग्य ज्ञान धर्म संस्कार से अनुभव करवा सकता है और वृद्धि पाते पाते वह जीव देह धारी खुद की पहचान भी करवा सकता है।

देह का धरना अर्थात जो भी पंच महा तत्वों का समन्वय भी जो कर्म की वासना है उसी के कारण रूप ही देह का निर्माण होता है, जो जीव यही देह का उपयोग करके अपने आप को अपने अहंकार और वासना से घडता जाता है - वृद्ध होता जाता है। जब वह अपने आपको समझ जाता है तबतक वह जीव देह धारी निर्मोही और निर्दोष होता है, पर जैसे उन्हें संसार, कुटुंब का स्पर्श होता जाता है, वह भी अपनी आसपास के जीव देहधारी जैसा होने लगता है और खुद को समझ ने लगता है। यही समझ में उनमें योग्य संस्कार, विद्या, शिक्षा और कर्म का ज्ञान और भाव का सिंचन योग्यता से होता है तो वह योग्य पुरुषार्थ लायक होता है और अपने जन्म और जीवन को सार्थक करता है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

ओहह कितना असमंजस

सुनते है तो असमंजस

कहते है तो असमंजस

करते है तो असमंजस

समझते है तो असमंजस

समझाते है तो असमंजस

पता नही कौन क्या कहे और हम क्या जाने

पता नही कौन क्या सुने और हम क्या जाने

पता नही कौन क्या क्या कह कर क्या क्या अपनाये

पता नही कौन क्या क्या जान कर क्या करे

पता नही कौन क्या क्या सुन कर क्या करे

पता नही कौन क्या क्या समझ कर क्या करे

पता नही कौन क्या क्या कर कर क्या करे

पता नही कौन क्या क्या कह कर क्या करे

पता नही कौन क्या क्या अपना कर क्या करे

हाँ! इतना है की जो कोई कुछ भी करे वो कोई जाने, कोई समझे, कोई अपनाये, और वो खुद जो भी जाने, जो भी समझे, जो भी अपनाये पर करता ही रहता है जैसा भी हो - करता रहता है यही मुख्य है, चाहे उसका जो भी क्रियास्था हो!

सच! यही तो है - मैं करु यही सत्य!

सच! यही तो है - मैं कराऊ यही सत्य!

सच! यही तो है - मैं जानु यही सत्य!

सच! यही तो है - मैं समझु यही सत्य!

सच! यही तो है - मैं कहूँ यही सत्य!

सच! यही तो है - मैं समझाऊ यही सत्य!

हाँ! इसीलिए तो सर्व साक्षर - सर्व ज्ञानी - सर्व सही - मैं ही सही - मैं सत्य - मेरा ही सत्य!

ओहह! सच! खुद श्रेष्ठ जगत! खुद श्रेष्ठ धर्म! खुद श्रेष्ठ जीवन! खुद श्रेष्ठ मैं!🌷🙏🌷

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

सृष्टि को चलानी है

सृष्टि को बढ़ानी है

सृष्टि को परिवर्तित करनी है

सृष्टि को विकसित करनी है

सृष्टि को संगत करनी है

सृष्टि को शुद्ध करनी है

सृष्टि को सुंदर करनी है

सृष्टि को रंगीन करनी है

सृष्टि को प्रीतिमय करनी है

सृष्टि को तेजोमय करनी है

सृष्टि को मृदुल करनी है

सृष्टि को समतोल करनी है

सृष्टि को नवपल्लित करनी है

सृष्टि को सुंगंधित करनी है

सृष्टि को निर्दोष करनी है

सृष्टि को अक्रूर करनी है

सृष्टि को संस्कृत करनी है

मैं ही हूँ सिर्फ जो सृष्टि को संवार सकता हूँ।

क्यूँकि

मेरी सृष्टि मेरी ही है

मेरी सृष्टि मेरे जैसी है

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

छोटी सी नन्ही ही सी प्यारी बेटी
नन्ही सी कुहुक से
नन्ही सी ठुमक से
नन्ही सी मुसुकान से
आँगन को नचाती है
नचाते नचाते जीव जीवन
हुलामति खिलखिलाती
ठनठनाती रुमझूमती
दर से घर के कोने कोने को
ऐसा खेल खिलाती
प्रकृति हँसे सृष्टि हँसे
जगत हँसे समय हँसे
हँसे सारे तत्व जीव तत्व
ऐसी घटमाल रचाये
समय भूले घट घट भूले
भूले सारे संसारी
कब हुई इतनी ऊँची बढ़ाई
अपने घर से हो किसी की पराई
कैसी है यह रीत समाज की
जो अपनी बिटियाँ नही अपनी
सदा की हो किसीकी जिवनियाँ
हे मेरी बिटियाँ! हे मेरी बिटियाँ!
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

ओ मैंने सजाई सूरज बिंदिया तेरे आत्म की मेरे आत्म से एकात्म होने

ओ मैंने पहना आकाश आँचल तेरे तन का मेरे तन से एक स्पर्श होने

ओ मैंने लगाया अमावस काजल कजरिया तेरे नैन ज्योति का मेरे नैन से बसने

ओ मैंने चिपकाया पंकज लाल पंखुड़िया तेरे अधर का मेरे अधर से चिपकने

ओ मैंने गुँथाया जीवन बाग गजरा तेरी महक का मेरी महक से खिलने

ओ मैंने पुराया सैंथि कुमकुम तेरे सौभाग्य सुहाग का मेरे सुहाग भाग्य से मिलने

ओ मैंने बंधाया मिन्थळ तेरे साथ का मेरे साथ से निभाने

ओ मैंने धागायी वैजयंती कंठ माला तेरे संस्कार की मेरे संस्कार से संस्कृतने

ओ मैंने गंठाये झुल्फ़े

ओ मैंने बँधाये पैजनिया

ओ मैंने लटकाये झुमखें

ओ मैंने पिरोयी अंगूठी

ओ मैंने ....

हे कृष्ण!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

किसको पूछे की मैं क्या हूँ?

मैं ही खुद को नही पूछ सकता की मैं क्या हूँ?

कैसा यह संसार मैंने घड़ा है?

की

कौन किसको पूछे की कौन क्या है?

हाँ! जो कोई किसीको पूछे तो कोई क्या समझ से समझे की कौन क्यूँ पूछते है?

शायद ऐसा है की ऐसे पूछते पूछते कोई किसीको जान सके, किसीको समझ सके, खुद को समझ सके की मैं क्या हूँ?

यही रीत से भी हो सके तो शायद संसार योग्य परिवर्तित हो सकता है, शायद कोई किसीको त्वरित गति से समझ सकता है, खुद खुद को भी त्वरित कह सकता है - मैं यह हूँ।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हर साँस से मार्ग है

हर विचार से मार्ग है

हर दृष्टि से मार्ग है

हर चिंतन से मार्ग है

हर हिम्मत से मार्ग है

हर उम्मीद से मार्ग है

हर कर्म से मार्ग है

हर धर्म से मार्ग है

हर साथ से मार्ग है

हर एकता से मार्ग है

हर सत्य से मार्ग है

हर शुद्ध से मार्ग है

हर पवित्र से मार्ग है

हर योग्य से मार्ग है

हर शरण से मार्ग है

हर प्रणाम से मार्ग है

हर वंदन से मार्ग है

हर नमन से मार्ग है

हर इमान से मार्ग है

हर सिद्धांत से मार्ग है

हर दृष्टांत से मार्ग है

हर प्रतिज्ञा से मार्ग है

हर सुविद्या से मार्ग है

हर निष्ठा से मार्ग है

हर विश्वास से मार्ग है

हर निखालस से मार्ग है

सच!

हर दिशा से मार्ग है

हर तरफ से मार्ग है

सिर्फ और सिर्फ हमें जागृत हो कर जीना है।

भगवान भी - श्रीप्रभु भी - परब्रह भी हमें खुद - खुद करने के लिए तो यहाँ प्रस्थापित किया है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🙏🌷

जितना जुठ कहोगे

जितना जुठ सुनोगे

जितना जुठ देखोगे

जितना जुठ फैलाओगे

जितना जुठ बोलोगे

जितना जुठ सोचोगे

जितना जुठ करवाओगे

जितना जुठ करोगे

आप क्या समझते हो

कोई कोई नही समझता

आप क्या जानते हो

कोई कोई नही जानता

आप क्या सोचते हो

कोई कोई नही पहचानता

जितना जुठ होगा

उतना ही विचित्र होगा

न कही योग्यता होगी

न कही शुद्‌धता होगी

न कही पवित्रता होगी

न कही सत्यता होगी

न कही शांत होगा

न कही विश्वास होगा

न कही श्वास होगा

न कही प्रेम होगा

जहाँ जहाँ जुठ होगा

वही वही उचाट होगा

वही वही क्रोध होगा

वही वही असमंजस होगी

वही वही धोका होगा

वही वही अविश्वास होगा

वही वही अंधश्रद्धा होगी

वही वही क्रूरता होगी

वही वही दुष्टता होगी

वही वही नफरत होगी

वही वही दुरुपयोग होगा

वही वही भ्रष्टता होगी

वही वही दिखावा होगा

वही वही रोग होगा

वही वही अप्रीति होगी

हम क्या समझते है

हम रोगी और भोगी क्यूँ है?

जुठ को अपने आप को घड़ा है

हम अशांत और दूसरे के सहारे क्यूँ है?

जुठ को अपने ने अपनाया है

हम निम्न और भ्रष्ट क्यूँ है?

जुठ को हमने हमारा कर्म साधन बनाया है

हम संताप और दुःखी क्यूँ है?

जुठ को हमने इतना फैलाया है की अब तो न कोई सृष्टि है - न कोई प्रकृति है - न कोई संसार है - न कोई जगत है - जो जुठ से भरा न हो!

हर दृष्टि जूठी

हर स्वर जूठे

हर क्रिया जुठ

हर विचार जुठ

हर रीति जुठ

हर प्रीति जुठ

तो ....

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🙏🌷

"होली" जो जो हो गई है

"होली" जो जो होकर जो न होना था

"होली" जो जो हो सका फिर भी जो न कर पाये

"होली" जो जो हो चुका है उनमें नया संवारने

होली होली अब न होली

होली होली अब ऐसी ही बोली

होली होली अब ऐसी ही करली

होली होली अब ऐसी ही धरली

होली होली अब ऐसी ही भरली

होली होली अब ऐसी ही चलली

जीवन का हर धृष्टता का अंत

जीवन की हर दुष्टता का अंत

जीवन का हर भ्रष्टता का अंत

ऐसी ही रंग में रंगाऊ अब मैं

जो मेरे पिया का है रंग

ऐसे ही रंग में रंगाऊ अब मैं

जो मेरे पिया ही मुझे रंग दे

ऐसे ही रंग में रंगाऊ अब मैं

जो मेरे पिया ही मुझे रंगाये

यही तो उम्र है

जो यही समझ से रंगाऊ

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

लाल रंग से रंगदू

हरा रंग से रंगदू

नीला रंग से रंगदू

पीला रंग से रंगदू

कैसे कैसे रंग से रंगदू

हे साँवरी! कौनसे रंग से रंगदू?

कोई नही लाल रंग से

कोई नही हरा रंग से

नही कोई नीला रंग से

नही कोई पिला रंग से

तेरा तो एक ही रंग! हे साँवरिया!

तेरा तो एक ही रंग!

तुझमें ही लाल रंग

तुझमें ही हरा रंग

तुझमें ही नीला रंग

तुझमें ही पिला रंग

क्यूँकि

जो श्याम रंग तेरा

तो तुझमें ही रंग समाये सारा

हे श्याम! तुझमें ही समाया रंग सारा

अरि ओ नार! तु तो है गौर चटक दार

ओ रंगदार! तु तो है गौर चटक दार

कैसे रंगदे ओ नार!

तुझे लाल रंग से रंगदू

तुझे हरा रंग से रंगदू

तुझे नीला रंग से रंगदू

तुझे पीला रंग से रंगदू

नही नही ओ श्याम!

मुझे अपने ही रंग से रंग दे

ओ श्याम!

मुझे श्याम रंग से रंग दे

गौर रंग नही भाये

श्याम रंग मोहे भाये

अपने ही रंग में रंग दे ओ श्याम

तेरा ही रंग में रंग दे ओ घनश्याम

तेरा ही रंग में रंग दे

मुझे तेरा ही रंग दे

श्याम श्याम से श्यामा कर दे

श्याम श्याम से श्यामा कर दे

ओ श्याम! यही है रंग का त्योहार

ओ श्याम! यही है जीवन का प्यार

ओ श्याम! यही है प्रीत का सार

ओ श्याम! यही है जन्म सिद्धार

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"भीष्म पितामह"

कभी सोचा है यह विभूति को जो हमारी हिन्दुसंस्कृति का एक विशुद्ध और श्रेष्ठ न्यायी जीवन चारित्र्य योद्धा है।

महाभारत का यह परम योगी योद्धा का चरित्र इतना सर्वोत्तम है जिससे सारे मनुष्य जीव तत्वों को उनसे शिक्षा और ज्ञान पाना अति आवश्यक है।

हर चरित्र दृष्टांत उनका हमें दृढ और योग्य ही घडता है।

क्या हम मान सकते है की ऐसा परम योग्य तत्व को युद्ध में परार्मश होना पड़े और मृत्यु बाण शैय्या पर सोना पड़े?

नही नही ऐसा हो ही नही सकता!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

बार बार कहने से

बार बार पढ़ने से

बार बार लिखने से

बार बार सुनने से

बार बार देखने से

भी हम

नही जान सकते है

नही समझ सकते है

नही पहचान सकते है

नही कर सकते है

तो हम क्या है?

तो तो

सोच भी नही सकते है

अपना भी नही सकते है

पा भी नही सकते है

तो तो

जी भी कैसे सकते है

विचर भी कैसे सकते है

क्रिया भी कैसे कर सकते है

जीवन भी कैसे बिताते है

ओहह!

श्रीप्रभु!

जीव तत्व की कैसी भूमिका में है?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

नारी को सन्नारी

सन्नारी को आकृति

आकृति को सुकृति

सुकृति को सुश्रुति

सुश्रुति को संस्कृति

यही ही नारी धर्म है।

यही ही नारी गर्व है।

यही ही नारी पर्व है।

यही ही नारी ईश्वर है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"सेवा"

हमारी हिन्दू संस्कृति की वर्ण व्यवस्था की रचना हमारे जो ऋषिओं ने रची है, वह कोई भी जीव के तफावत - मनुष्य का ऊंच निच - तवंगर निर्धन - अमीर गरीब - सुखी दुःखी - निरोगी रोगी ऐसी व्याख्या अर्थात मानसिक - शारीरिक और अर्थोपार्जन से सैद्धांतिक नही है।

यह वर्ण व्यवस्था जो अपने सर्वोच्च गोत्र श्रीगुरु के आधारित है। हर श्रीगुरु प्रज्ञानी और साक्षर ही थे। जो जो व्यवस्था प्रमाणित और सार्थक है, यही रुचि और प्रमाणित क्रिया के आधारित ही रची है। जीवन व्यवस्था को सर्वोच्च करने के लिए योग्य सैद्धांतिक समन्वय करके यह व्यवस्था का निर्माण किया है।

जो विशुद्ध है

जो पवित्र है

जो सत्य है

जो प्रीत भरी है

यही व्यवस्था से ही सेवा का निर्माण हुआ है, हर जीव तत्वों को योग्य और सलामत गति हो। यही ही मूलभूत सिद्धांत है।

सत्य से समझे तो कहीं स्थली पर ऐसी मान्यता नही है। जो सत्य को रूढिचुस्तता के आधीन समझे।

आजकल जो गोत्र विमुख और स्वार्थ वृति से जो जो सिद्धांत - रीति रिवाज का संचालन करते है, उनसे न तो योग्यता केलवाती है, न सत्य समझाता है, न जीवन सुधार होता है, न धर्म का संस्थापन होता है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"तेरे लिए हम कुछ भी सहेंगे

तेरा दर्द अब दर्द मेरा"

कभी अपने आप को कहा है?

कभी अपने मन को कहा है?

कभी अपने तन को कहा है?

कभी अपने धन को कहा है?

कभी अपने ईमान को कहा है?

कभी अपने विश्वास से कहा है?

कभी अपने नयन से कहा है?

कभी अपने धर्म को कहा है?

कभी अपने प्रीत को कहा है?

कभी अपने भगवान को कहा है?

खुश हूँ जिस हाल में रक्खे

तेरी हूँ तेरी ही सदा

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"माँ - बाप"

क्या समझते है - यह कोई व्यवहारिक रिश्ता है?

"बेटा - बेटी"

क्या समझते है - यह कोई सुख का रिश्ता है?

"बहू - बेटा"

क्या समझते है - यह कोई धन बचत का रिश्ता है?

"पौत्र - पौत्री"

क्या समझते है - यह कोई चौकीदार का रिश्ता है?

"माँ" यह कोई घर को संभालने का व्यक्ति है या हमारे संस्कार - कर्म सुधारने की व्यक्ति है?

"पिता" यह कोई डाँटने का साधन है या हमारे जीवन की संस्कार पूंजी के व्यवस्थापक है?

"बेटा" यह कोई धन कमाने का साधन है या हमारे शांत जीवन का साथी है?

"बेटी" यह कोई घर काम करने का साधन है या हमारे गृहस्थी का कल्पवृक्ष है?

"बहू" यह कोई गृह कार्य निभाने का साधन है या हमारे जीवन की सृश्रुषा है?

"पौत्र" यह कोई गृहस्थ जीवन का खिलौना है या हमारे महकते गृह बगिया का फूल है?

"पौत्री" यह कोई गृहस्थ जीवन का भार है या हमारे संस्कृत जीवन का शृंगार है?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

पुष्टि संप्रदाय में "अष्ट" शब्द का प्रयोग कबसे हुआ?

पुष्टि संप्रदाय में अष्टयाम सेवा विधि और अष्टछाप कीर्तन व्यवस्था कब हुई?

पुष्टि संप्रदाय में ८४ वैष्णव की वार्ता का प्रयोग कब और कैसे हुआ?

पुष्टि संप्रदाय में अष्टसखा का प्राधान्य उपाधि कैसी साक्षरता और कैसी रचना के आधारित की गई?

पुष्टि संप्रदाय में ८४ वैष्णव को कैसे आविष्कार किया?

वैष्णव संप्रदायों में "व्रज भूमि" अर्थात गोकुल - मथुरा - वृंदावन - गोवर्धन -८४ कोस की स्थली का ही प्राधान्य है, क्यूँ?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हमें सर्वे को श्रद्धांजलि अर्पित करनी है।

कल ब्रह्मांड का एक सर्वोत्तम अंश ब्रह्मांडो में विलीन हो गया

"Stephen Hawking"

यह ऐसा अंश था जो हमारे जीवन - हमारे काल और हमारे तत्वों को हमें परम सत्य से जागृत कर रहा था।

यह ऐसा अंश था जो हमारे अंश को हम कैसे पहचाने!

यह ऐसा अंश था जो हमारे आंतर और बाह्य परिवर्तन से हम हमारे काल से कैसे सलामत रह सके, यह सर्वे प्रयोगात्मक विधि और ज्ञान से हमें सर्वोत्तम करने की कोशिश कर रहा था।

हमारी सर्वे की ओर से हम प्रार्थना करते है कि ऐसे आत्म तत्त्व को बार बार जन्म धारण करके हमें सदा जागृत रखे।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

पुष्टि संप्रदाय में "अष्ट" शब्द का प्रयोग श्रीवल्लभाचार्यजी जब गोविंद घाट पहुंचे और अपने मुख से "अथः श्रीयमुनाष्टक" की रचना हुई और प्रथम मिलन - "श्रीनाथजी और श्रीवल्लभाचार्यजी" का हुआ वो ही क्षण श्रीवल्लभाचार्यजी के मुख से "मधुराष्टकं" की रचना हुई। ऐसे श्रीवल्लभाचार्यजी के मुख से "अष्ट" का प्रथम प्रयोग हुआ।

"अष्ट" गहराई से समझे तो यह जीवन का अनोखा क्रम है

प्रथम अष्ट - बचपन

दूजा अष्ट - प्राथमिक

तीसरा अष्ट - माध्यमिक

चौथा अष्ट - संसार प्रारंभिक पुरुषार्थ

पाँचवा अष्ट - संसार प्राथमिक पुरुषार्थ

षष्ट अष्ट - संसार माध्यमिक पुरुषार्थ

सप्तम अष्ट - संसार निवृत्तिक पुरुषार्थ

अष्टम अष्ट - संसार विभूति पुरुषार्थ

यही अष्ट से ही जीवन कृतकृतार्थता

यही अष्ट से ही जीवन धर्म संस्कार धरता

यही अष्ट से ही जीवन कर्म पुरुषार्थता

यही अष्ट से ही जीवन प्रीतार्थता

यही अष्ट से ही जीवन एकात्मता

ऐसे ही नवं अष्ट से प्रारंभिक आध्यात्म

ऐसे ही दसम अष्ट से प्राथमिक आध्यात्म

ऐसे ही एकादश अष्ट से माध्यमिक आध्यात्म

ऐसे ही बारह अष्ट से परम आत्मीय

ऐसे ही तेरह अष्ट से परम भगवदीय आत्मीय

ऐसे ही चौदह अष्ट से पूर्ण भगवदीय आत्मीय

ऐसे ही पंद्रह अष्ट से अद्‍वैत आत्मीय

ऐसे ही सोलह अष्ट से जन्म जीवन परम अंशी आत्मीय में एकात्म हो जाता है।

यही ही है अष्ट जन्म जीवन वृतांत।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"अष्ट याम"

याम - आयाम - जहाँ ठहरते है

याम - आयाम - जहाँ स्थिर रहते है

याम - आयाम - जहाँ विश्वास रहता है

याम - आयाम - जहाँ पवित्रता रहती है

याम - आयाम - जहाँ शुद्धता रहती है

याम - आयाम - जहाँ सेवा होती है

याम - आयाम - जहाँ निःस्वार्थ रहता है

याम - आयाम - जहाँ निखालसता रहती है

याम - आयाम - जहाँ प्रीत रहती है

याम - आयाम - जहाँ साक्षरता रहती है

याम - आयाम - जहाँ न्योछावर रहती है

पुष्टि मार्ग संप्रदाय में - अष्टयाम सेवा विधि

चार प्रहर बंसी बट भटक्यो सांझ पड़े घर आयो

चार प्रहर - चार आयाम

कैसा है यह प्रहर? - कैसा है यह आयाम?

यह ऐसा गणित है जो अपनी अपनी समझ से करते है - अपनी अपनी कक्षा से करते है - अपनी अपनी साक्षरता से करते है।

अष्ट याम सेवा विधि का इतना विशाल अर्थ होता है - हर क्षण - हर घड़ी - हर पल।

"न क्षण विलंबते" ऐसी ये विधि है और ऐसी ये निधि है।

श्रीवल्लभाचार्यजी ने ये अष्ट याम विधि प्रकट करी और श्रीविट्ठलनाथजी ने ये अष्ट याम विधि को श्रृंगार किया।

इतने अदभुत थे वह व्यक्तित्व जो जो ने अपनायी वह श्रीप्रभु प्रिय वैष्णव हो गए। 🌷🙏🌷

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

पुष्टि मार्ग में "अष्ट याम" सेवा विधि और अष्टछाप कीर्तन व्यवस्था

अष्ट का अर्थ आठ

समय का आठ प्रकार है

सूरज की स्थिरता से

सूरज की परिक्रमा तक

सूरज की परिक्रमा निरंतर है

सूरज का भ्रमण अखंड है

ब्रह्मांडो के हर तत्व सूरज का भ्रमण करता है।

यही भ्रमण से ही पवित्रता, विशुद्धता और साक्षरता का पार्दुभाव होता है।

अष्टयाम इतना असाधारण जागृतता है मानव जीव के लिए, जिससे मानव देव हो सकता है - श्रीप्रभु हो सकता है - श्री भगवान हो सकता है - श्री भक्त हो सकता है।

अष्ट प्रकार के याम सच में कितने अदभुत और अलौकिक है।

एकम याम - मंगला

दूजम याम - श्रृंगार

तृतयं याम - ग्वाल

चतुर्थं याम - राज भोग

पंचम याम - उत्थापन

षष्टम याम - भोग

सप्तम याम - संध्या आरती

अष्टम याम - शयन

लौकिकता से समझते है कि

हम श्रीप्रभु को जगा रहे है - गलत

हम श्रीप्रभु का श्रृंगार करते है - गलत

हम श्रीप्रभु को ग्वाल सजाते है - गलत

हम श्रीप्रभु को गौचारण करवा पधार रहे है - गलत

हम श्रीप्रभु को राजभोग धर रहे है - गलत

हम श्रीप्रभु को उठा रहे है - गलत

हम श्रीप्रभु को भोग धर रहे है - गलत

हम श्रीप्रभु की संध्या वंदना कर रहे है - गलत

हम श्रीप्रभु को पोढा रहे है - गलत

ओहह मेरे मित्र!

कैसी मान्यता! कैसी श्रद्धा!

श्री यशोदा मैया ने श्रीप्रभु को कभी जगाया नही है!

श्रीवल्लभाचार्यजी ने श्रीप्रभु को कभी जगाया नही है!

श्रीअष्ठ सखा के कोई भी कीर्तन - पद समझ ले - हर पद और कीर्तन में श्रीप्रभु को नही जगाया है - श्रृंगार किया है - ग्वाल सजाते है - राजभोग धराते है - उत्थापन कराते है - भोग धराते है - संध्या आरती करते है - शयन कराते है।

सच!

यही तो अष्ट याम का माधुर्य है!

यही तो अष्ट याम की श्रेष्ठता है!

यही तो अष्ट याम की योग्यता है!

यही तो अष्ट याम की विशुद्धता है!

यही तो अष्ट याम की पराकाष्ठा है!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"अष्ट छाप"

अष्ट का माहात्म्य और ज्ञानार्थ - चरितार्थ- भावार्थ - दृढ़ार्थ - पुष्टार्थ - कर्मठ - भक्तार्थ को समझ पाये।

"छाप" अर्थात प्रामाणित - योग्ययिक - कृतार्थीक - अखंडित - अचलित - अनन्यता - अविभाज्यता - पूर्णता।

"अष्ट छाप"

जो हर विचार से योग्ययिक है

जो ज्ञानार्थ से अविभाज्य है

जो दृढ़ार्थ से अचलित है

जो भावार्थ से पूर्ण है

जो पुष्टार्थ से अनन्य है

जो भक्तार्थ से कृतार्थ है

जो कर्मठ से अखंडित है

जो चरितार्थ से प्रामाणित है

वो ही "अष्ट छाप" है

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"अष्ट सखा"

कहीं बार सुना, पढ़ा और स्पर्श पाया। आज कोई भी पूछे तो हमारा मन तुरंत ही कह देगा - यह है अष्ट सखाएँ!

कभी ध्यान किया है?

कभी सोचा है?

कभी चिंतन किया है?

यह "अष्ट सखा" शब्द कहाँ से आधारित किया है?

कितने अदभुत थे वह पुष्टि मार्गीय आचार्य और पुष्टित्व स्पर्श और पुष्टिमय लीलाएँ - जो हर आचार्य अपनी आंतरिक जागृतता और पुष्टि ज्ञान भाव से हर डगर को उत्स करते थे, जिससे पुष्टिमार्ग का प्रस्थापन अति सिद्धांतमय और आनंदमय साक्षर हो रहता था। 🌷🙏🌷

यह अष्ट सखा का मूल आरोहण श्रीकृष्ण भगवान की बाल लीलाओं से स्फुरण किया है।

श्रीमद भागवत के आधारित जो श्रीकृष्ण के सखा थे यही सखाओं को केंद्रित रखें हुए श्रीहरिरायजी ने एक पद रचा है -

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

"सूरदास सो तो कृष्ण तोक परमानंद जानो।

कृष्णदास सो रिषभ, छित स्वामी सुबल बखानो।।

अर्जुन कुम्भनदास चतुर्भुजदास विशाला।

नन्ददास सो भोज स्वामी गोविन्द श्रीदामाला।।

अष्ट छाप आठों सखा श्री द्वारकेश परमान।

जिनके कृत गुनगान करि निज जन होत सुजान।।

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

कितनी सुंदर और शिक्षात्मक तुलना रची है - श्रीहरिरायजी ने!

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

श्रीमद भागवत में श्री कृष्ण अपने सखाओं को पुकारते थे -

"हे स्तोक कृष्ण! हे अंशो! श्रीदामान सुबलार्जुन।

विशालषर्भ! तेजस्विन! देवप्रस्थ! वरुथप।।

ऐसी थी श्रीकृष्ण की पुकार अपने अंतरंग श्री सखाओं के लिए।

यही रचना से ही श्रीविट्ठलनाथजी ने अष्ट सखा - अष्ट छाप का स्थापन किया।

यही प्रेरणा से श्री गोकुलनाथजी और श्री हरिरायजी ने प्रथम अष्ट छापी - चार सेवकन की वार्ता" का सोपान किया।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"वाह कृष्ण वाह"

"वाह कुटुंब वाह"

"वाह संसार वाह"

"वाह पुरुषार्थ वाह"

सच में आज मुझे तुमने बहोत कुछ दे दिया।

प्रणाम करता हूँ।🌷🙏🌷

किससे क्या पाया

किसने क्या क्या पहचाना

कितने निकट है पर कितने दूर है

मैं कहां और कौन कौन कहां

कैसे जीता मैं संसार तुम्हारा

आज पता हुआ तु ही है रखवाला

पर

हे कृष्ण! तेरा चरित्र ने मुझे संभाला

मुझको मेरे जीवन से मुझको पहचाना

कितनी अदभुत जीवन शिक्षा

सत सत प्रणाम तुझको

सत सत वंदन तुझको

जो जो जिया जो जो सँवारा

ऐसा प्रीत साँवरिया मेरा

तुझसे ही पाया प्रीत गोपिजन

तुझसे ही पाया मेरी बिटियाँ कृष्णा

तुझसे ही खेले मेरी गुड़िया मिसरी मन

मुस्कुराओ! गाओ यही तराना

कृष्णा कृष्ण! वल्लभ वल्लभ!🌷🌹🌷

सदा मुझसे प्रीत ही बरसाना🌷🌹🌷

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हम कैसे है?

विज्ञान अर्थात शिक्षा पाना - खुद को समझने के लिए इंजीनियर बने, डॉक्टर बने, व्यापारी बने पर न हमें समझ आयी कैसे स्वच्छता पाना - कैसे खुद को घड़कर गरीबी मिटाना - बीमार न होना।

पर नही!

हर बहाने से जीना

हर कोई को घुमाना

खुद के चारित्र्य को बिगाड़ना

हमारा जीवन असाधारण होना चाहिए - ऐसी नफरत भरा नही, जिससे हम जीवन न संवार सके, न संभाल सके, न सलामत रख सके।

पर ऐसा है कि हम ....

उसने कहा

उसने करा

ओह्ह! तो हम भी

हम क्यूँ नही?

नही नही! ऐसे है हम और हमारा जगत!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

भाग्य न कभी भागता है
भाग्य न कभी साथ छोड़ता है
भाग्य न कभी असत्य कराता है
भाग्य न कभी सन्मार्ग छुडाता है
भाग्य सदा निकट रखता है
भाग्य सदा पास ही बुलाता है
भाग्य सदा शुद्ध करता है
भाग्य सदा निष्कपट रखता है
भाग्य सदा अक्रुर है
भाग्य सदा उत्कृष्ट है
भाग्य सदा निरोगी है
भाग्य सदा वियोगी है
भाग्य सदा अमृत है
भाग्य सदा संस्कृत है
भाग्य सदा कर्मयोगी है
भाग्य सदा यात्रा है
भाग्य सदा उपयोगी है
भाग्य सदा सहयोगी है
भाग्य सदा जागृत है
भाग्य सदा प्रवृत है
भाग्य से ही सत्संग है
भाग्य से ही दर्शन है
भाग्य से ही परिक्रमा है
भाग्य को घडते है - रचते है - कृत करते है हमारा योग्य विचार - योग्य कर्म - योग्य परिमाण।
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कौन से घर को तुम अपना समझ रहे हो?

कौन से मातापिता को तुम अपना समझ सकते हो?

कौन से पुत्र को तुम अपना समझ सकते हो?

कौन सी पुत्री को तुम अपना समझ सकते हो?

कौन सी प्रियतमा को तुम अपना समझ सकते हो?

कौन सी पत्नी को तुम अपना समझ सकते हो?

कौन से प्रियतम को तुम अपना समझ सकते हो?

कौन से गुरु को तुम अपना समझ सकते हो?

कौन सा धर्म को तुम अपना समझ सकते हो?

कौन सा मित्र को तुम अपना समझ सकते हो?

सच! जो समय अर्थात काल है, यह सब रीते कैसे हम पहचान सकते है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

जो मानव जगत से खेलता है

जगत में खेलता है मानव

किससे खेले - अपनो से खेले

खेल खेल से अपनो को खोये

खो खो कर खुद को भी खोये

कुछ न पाया कहीं को घवाया

अकेले अकेले ही सबको पाया

जो मानव जगत से खेलता है

वह जगत में खेलता है मानव

मान्यता महेच्छा में सारी उम्र गवाई

उम्र की अवधि निकट रचाई

मैं ही सही से न अहंकार विसराई

तील तील घट से सारी काल नष्टाई

यह मेरा यह मेरा न कुछ खुद में समाई

जो मानव जगत से खेलता है

वह जगत में खेलता है मानव

ओहह! तो अब क्या करें!

जाग गये हो तो खुद संवारो

जागृत हो गये हो तो काल संवारो

घट घट संवरी अहंकार संवरी

मान्यता महेच्छा की अंधश्रद्धा संवरी

उम्र उम्र की अवधि संवरी

जो मानव खेलता है जगत से

वह मानव संवरता है जगत

जो जगत खेलता है मानव से

वह जगत को संवरता है मानव

कितनी अनोखी खुद की संवराई

खुद जगा कर खेल खिलाड़ी मिटाई

अकेले अकेले की अवस्था बिसराई

निकट निकट सारी मानव महेराई

वाह!

खुद खुद से कर्म धर्म संवराई

कर्म धर्म - धर्म कर्म से जगत संवराई

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

साँस भरता हूँ

कोई ऊर्जा खिचाती है

साँस निकालता हूँ

कोई ऊर्जा बहती है

है कोई साँसों का सिलसिला

जो खिंचते निकालते

कुछ आदान प्रदान करती है

शायद ऐसा हो सकता है

जो साँसों को रचने वाला

अपनी ऊर्जा से मुझे खिंचता है

मेरी ऊर्जा से खुद को समर्पण करता हूँ

यह दोनों की क्रिया से

ऐसा है

की

वह मेरे लिए है

और

मैं उनके लिए हूँ

शायद यह है

की

वह मेरे लिए ही है

पर

मैं उनके लिए हूँ या नही

वह तो साँसों का सिलसिला ही जता सकता है

जैसे पुष्टि धारा - पुष्टि सेवा - पुष्टि स्पर्श

जो अक्षरसः परिस्कृत कर सकता है

अपने विचार से

अपने स्वर से

अपने अक्षर से

अपने क्रिया से

अपने संस्कृत से

अपने साक्षर से

यही तो विशुद्धता है - सत्यता है - पवित्रता है पुष्टिमय की!

जो घूटते घूटते घट घट समर्पित होय।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"कृष्ण" ऐसा क्या है - भारतवर्ष के हर व्यक्ति, हर प्रकृति, हर सृष्टि, हर साँस, हर गूँज, हर सेवा, हर निधि, हर यात्रा, हर स्पर्श, हर आनंद "श्रीकृष्ण" से ही जुड़ा है?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"कृष्ण" का कोई संदेश न समझ सके

"कृष्ण" का कोई चरित्र न समझ सके

"कृष्ण" की कोई लीला न समझ सके

"कृष्ण" का कोई भावार्थ न समझ सके

"कृष्ण" कोई ज्ञान न समझ सके

"कृष्ण" का कोई माध्यम न समझ सके

तो क्या केवल आंडबर से ही जिये जाएंगे

तो क्या केवल अंधश्रद्धा से ही जिये जाएंगे

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"कृष्ण"

"नवलक्षणलक्ष्यो हि कृष्णस्तस्य निरूपणात्"

"आश्रय: क्रमभावित्वात् निरोधो वेति संशय:"

हमारा जीवन उत्कृष्ट और आनंदमय करने "श्रीवल्लभाचार्यजी" ने सूक्ष्मता से "श्रीसुबोधिनीजी" के माध्यम से हमें जागृत करने "श्रीकृष्ण" चरित्र को ऐसे सिद्ध किया है कि हमारा हर जन्म, जीवन और काल "श्रीकृष्णमय" हो जाय, जीवन मधुर हो जाय।

एक बात कहें!

ऐसा कैसा हमारा मन - तन - धन - जीवन है कि हम भटक जाते है, बहक जाते है, चहक जाते है, अटक जाते है, लपस जाते है, तूट जाते है, भूल जाते है?

कैसी दृष्टि है हमारी?

कैसी है शिक्षा हमारी?

कैसी है वृत्ति हमारी?

कैसी है कृति हमारी?

कैसी है स्वीकृति हमारी?

कैसी है निष्ठा हमारी?

कैसी है शिष्टता हमारी?

कैसी है प्रकृति हमारी?

कैसी है विश्रुति हमारी?

कैसी है जागृति हमारी?

कैसी है संशय सृष्टि हमारी?

कैसी है प्यास हमारी?

कैसी है आश हमारी?

कैसी है सृश्रुता हमारी?

सच! कैसी है......

जो अनगिनत चरित्र

जो अनगिनत संयम

जो अनगिनत नियम

जो अनगिनत सिद्धांत

जो अनगिनत अनुभव

जो अनगिनत प्रमाण

जो अनगिनत साध्य

जो अनगिनत संस्कार

जो अनगिनत शिक्षा

जो अनगिनत माध्यम

जो अनगिनत सूत्र

जो अनगिनत शास्त्र

जो अनगिनत संकेत

जो अनगिनत संकल्प

तो भी हम?

ओहह!

"कृष्ण" यह एक ऐसा पूर्ण पुरुषोत्तम परमम योग्य तत्व ही है ऐसा तुम कैसे समझ सकते हो, पहचान सकते हो,

अपने आंतर और बाह्य ब्रह्मांड में उजागर कर सकते हो?

यही उत्सता से, यही प्राकट्यता से, श्रीवल्लभाचार्यजी ने, श्रीमाधवाचार्यजी ने, श्रीनिम्बाकाचार्यजी ने, श्रीरामानुजचार्यजी ने, श्रीचैतन्य महाप्रभुजी ने और उस समय के आदि संप्रदायों ने, उस समय के भक्तों ने, जो जो अनुभूति से जो उजागर किया वह "कृष्ण तत्व" ही है - क्यूँकि यही परमम चरित्र ने पूर्णता से हर काल को लीला में परिवर्तित किया - यही लीला से उनके आंतर और बाह्य मधुरता का पार्दुभाव हुआ, उन्हें परमानंद की अनुभूति और साक्षात्कार हुआ। इसीलिए "कृष्ण" को समस्त भारतवर्ष में परम श्रेष्ठ पुरुषोत्तम प्रस्थापित किया। जिनकी हर चारित्रता - जन्म से लेकर मृत्यु पर्यान्त जीवन की माधुर्य लीला में परिवर्तन किया - यही परिवर्तन से प्रत्येक क्षण अर्थात हर एक प्रकार का काल योग्य और संयम और नियमन में उनकी साक्षरता से रहे, यही सर्व श्रेष्ठ पुरुषार्थता ही उन्हें परमेश्वर रूप में धारण कर दिया।

"Vibrant Pushti"

जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"कृष्णस्य सर्व वस्तुनि भूम्न इशस्य योजयेत्"

कहते है कितनी सूक्ष्मता से की कृष्ण तत्व और कृष्णस्य ही सर्व है रज रज से, अणु अणु से जो सारे भूमा में व्याप है और यही परमाणु सदा इशस्य का आयोजन नियोजन करते है।

अति गहरी और स्फटिक विशुद्ध रीत जताई है - हर परमाणु में जो तत्व है वह कृष्ण ही है और वह सदा तनुनवत्व की ओर ही गति करता है।

"निरोधो स्यानुशयनं प्रपच्ये किड़नं हरे: ।

शक्तिभिदु विभाव्याभि: कृष्णस्येति हि लक्षणम्।।

कितना अदभुत! श्री हरि की अपनी अचिन्त्य शक्तिओं सहित जगत में क्रीड़ा करना ही "निरोध" है।

कृष्ण और कृष्णस्य अर्थात परब्रह्म (कृष्ण) और कृष्ण की लीला दोनों ने ब्रह्मांडो के हर तत्व के साथ लय करके सारे तत्वों का निरोध किया है और हर तत्व में ऐसा परिवर्तन का बीज प्रस्थापित किया है कि वह सदा उनकी और आकर्षित रहे और सदा योग्य होने के पुरुषार्थ में ही गतित्व रहे।

जिससे उनका प्रपंच का नाश हो, संशय का नष्ट हो, सदा शांत और आनंदमय हो, मधुर हो। यही ही तो कृष्ण का सामर्थ्य है।

ओह कृष्ण!

ओह कृष्ण!

ओह कृष्ण!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"जय श्री कृष्ण"

हम जब भी किसीसे मिलते है

हम जब भी घर से बाहर निकलते है

हम जब भी किसीसे दूर जाते है

हम जब भी कोई बात की शुरुआत करते है

हम जब भी कोई बात की पूर्णाहुति करते है

हम जब भी कोई व्यवहार अर्थात कोई भी क्रिया किसीके साथ करते है तब प्रारंभ और अंत में "जय श्री कृष्ण" करते है।

क्यूँ?

यह कोई परंपरा है?

यह कोई रीत है?

यह कोई सेवा है?

यह कोई तंत्र मंत्र है?

यह कोई सन्मानित चेष्टा है?

यह कोई व्यवहार दृष्टि है?

यह कोई सामान्यत नमस्कार है?

यह कोई आदर प्रदान है?

यह कोई नियमन आवकार है?

यह कोई शास्त्रोक्त शिक्षा है?

यह कोई माध्यम है?

यह कोई आंतर संवेदना है?

यह कोई मुख शुद्धि है?

यह कोई व्यवहार कुशलता का प्रतीक है?

यह कोई सांत्वना की विश्वसनीयता है?

यह कोई मूर्ख समझ की पूर्ति है?

यह कोई अनैतिक भौतिक व्यवहार की उठामन है?

यह कोई छल कपट की व्यवहारता है?

सच कहें!

हम कितने अज्ञानी और अहंकारी और दंभी है

हम कितने मूर्ख और निर्लज है

हम कितने निम्न और नींच है

हम कितने स्वार्थ और अविश्वनीय है

हम कितने गिरे हुए और घिनौने है

हम कितने क्रूर और पापी है

हम कितने अछूत और विकृत है

हम कितने डरपोक और भयावह है

हम कितने छलि और कपटी है

हम कितने अव्यवहारु और दुष्ट है

सच!

हम कैसे कह सकते है कि हम परब्रह्म के अंश है

हम सामाजिक प्राणी है

हम जगत के शिक्षित जीव तत्व है

हम जीव तत्व के प्रतिनिधि है

सोचों!

अगर थोड़ी भी कुछ अंशता है तो सोचों

"जय श्री कृष्ण" क्या है?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

माफ करना अगर किसीको कोई भी प्रकार की ठेश पहुँचे तो!

यह एक जागृत और संस्कारमय सेवा है। 🌷🙏🌷

"जय श्री कृष्ण"🌷

कितना अदभुत!

कितना अलौकिक!

कितना स्पर्शिय!

कितना आत्मीय!

कितना परिवर्तनीय!

कितना पवित्र!

कितना विशुद्ध!

कितना ऐश्वर्य!

कितना ईश्वरीय!

कितना मधुर!

कितना प्रायोगिक!

कितना प्रमेय!

कितना श्रेष्ठ!

कितना योग्य!

कितना प्रामाणिक!

कितना सलामत!

कितना वैज्ञानिक!

कितना आधारित!

कितना आंतरिक!

कितना सार्थक!

कितना आध्यात्मिक!

कितना चैतन्य!

कितना आग्नेय!

कितना तेजस्वी!

कितना ब्राह्मणीय!

कितना साक्षर!

कितना संस्कृत!

कितना प्रीतार्थ!

सच! जिसने भी यह "जय श्री कृष्ण" की रचना कृतकृति है, उन्होंने कितनी विशालता और पूर्णता से यह सत्यता को हमारी उत्कृष्टता के लिए,

हमारा उद्धार के लिए,

हमारी तनु नवत्वता के लिए,

हमारा समस्त दुरित क्षयो के लिए,

हमारा सर्व दोषों की नष्टता के लिए,

हमारा आध्यात्म जागृतमय के लिए।

"जय श्री कृष्ण"

ओहह कृष्ण!🌷

हा कृष्ण!🌷

हे कृष्ण!🌷

अति सर्वोच्च!

अति सर्वोत्तम!

अति प्रीत!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"जय श्री कृष्ण"

आपको "जय श्री कृष्ण"

उन्हें "जय श्री कृष्ण"

हमें "जय श्री कृष्ण"

सर्वेको "जय श्री कृष्ण"

तुम्हें "जय श्री कृष्ण"

मुझे "जय श्री कृष्ण"

ओहह "जय श्री कृष्ण"

ऐसा क्यूँ?

क्या संकेत कर रहा है "जय श्री कृष्ण"

क्या कह रहा है "जय श्री कृष्ण"

क्या जता रहा है "जय श्री कृष्ण"

क्या सुना रहा है "जय श्री कृष्ण"

क्या जागृत कर रहा है "जय श्री कृष्ण"

क्या दर्शा रहा है "जय श्री कृष्ण"

क्या स्पर्शता है "जय श्री कृष्ण"

क्या विरहता है "जय श्री कृष्ण"

क्या एकात्मता है "जय श्री कृष्ण"

हाँ! जब भी "जय श्री कृष्ण" सुनते है और जब भी कहते है "जय श्री कृष्ण" तो कुछ असर - प्रभाव और उनका सामर्थ्य तो प्रकट होता ही है, यह सामर्थ्यता - कृतार्थता असाधारण और असामान्य है।

उनका गूँजन - उनका स्पंदन जिसको भी छूता है उनमें आह्यदालकत्मकका - आनंदात्मकका - अलौकिकात्मकका - मधुरात्मकका प्राकट्य होता है।

यही प्राकट्य से हमारे अंश में परब्रह की अनुचेतना प्रबल होती है, यही चेतना से ही हम परब्रह का अनुभव करते है - विरह की उतेजना उठती है और हम हमारे अंग अंग से "जय श्री कृष्ण" को निहालने की उन्मादित करते है।

ओहह! "जय श्री कृष्ण"

"जय श्री कृष्ण"

"जय श्री कृष्ण"

कितना सचित्र!

कितना साक्षात!

कितना अनुभव!

कितना माधुर्य!

कितना स्पष्ट!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"जय श्री कृष्ण" 🌷
शायद हमनें आप में पाया
और
आपने हममें पाया
ठीक है
पर सैद्धान्तिक सत्य कहें
🌷"जय श्री कृष्ण"🌷
एक प्रार्थना है
एक विनंती है
एक परस्पर है
एक स्वीकृति है
एक समन्वय है
एक प्रीत है
एक एकात्मता है
एक ब्रह्मसंबंध है
ओहह!
अति सूक्ष्मता से और आंतर पुष्टि गहराई से खुद को सर्वथा से समेट कर एकांत में स्थिर बैठना और आंतरिक ऊर्जा से शांत होना।
अवश्य 🌷"जय श्री कृष्ण"🌷
प्रार्थना है
विनंती है
परस्पर है
स्वीकृति है
समन्वय है
प्रीत है
एकात्मता है
ब्रह्मसंबंध है
कभी भी - कोई भी क्षण - कोई भी पल - कोई भी स्थल - कोई भी समय - कोई भी तत्व - कोई भी जीव - कोई भी व्यक्ति को "जय श्री कृष्ण" कहना या सुनना या स्पर्शना या गुनगुनाना
आंतरिक समाधि हो जायेगी।

आंतरिक ऊर्जा उठेगी।

आंतरिक संवेदना प्रकटेगी।

आंतरिक स्पंदन खिलेगा।

आंतरिक विरहता तुटेगी।

आंतरिक भक्ति पार्दुभावेगा।

आंतरिक मिलन माधुर्य जागेगा।

आंतरिक स्पर्श चूमेगा।

आंतरिक अंश समायेगा।

हाँ! 🌷"जय श्री कृष्ण"🌷

यही ही सर्वोच्चता "जय श्री कृष्ण" की जो हमारा सर्व श्रेष्ठ ब्रह्मसंबंध करेगा

यही ही सर्वाधिक संपूर्ण सूत्र है "जय श्री कृष्ण" जो हमें सर्व श्रेष्ठ तत्वों से एकात्म करेगा

यही ही सर्वोत्तम पुरुषार्थ है "जय श्री कृष्ण" जो हमें सृष्टि के हर नवत्व से आग्नेय करेगा

यही ही आनंदात्मक है "जय श्री कृष्ण" जो हमें पुष्टित्व के हर स्पर्श से परमानंद लूटायेगा

हे वल्लभ! अखंडता से संपूर्ण ज्ञानात्मक और भावात्मक से आपके शरण में रह कर खुद को सर्वथा से न्योछावर करते है। 🌷🙏🌷

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

मेरे दोस्त मेरे मित्र का नाम यह है
मेरे दोस्त मेरे मित्र का काम यह है
तो यह तो मेरे जीवन घड़तर के लिए योग्य है - उत्कृष्ट है
यही ही ऐसे साथी है जो मेरी अंदर जागृत हुए संस्कार युक्त विचार और कर्म धारा में साथ निभाता है।
यही तो सत्य और विशुद्ध मित्रता है। जिससे केवल और केवल विश्वास और अतूटता ही घनिष्ट होती है।
मित्रता मेरे जीवन का एक ऐसा अभिन्न साक्षात्कार और संस्कार संस्थापन है जो मुझे निर्भय और आनंदमय करने में सुसंगत स्त्रोत्र है।
मित्र का अर्थ
मित्र का परमार्थ
मित्र का शास्त्रर्थ
मित्र का प्रीतार्थ
मित्र का कृतार्थ
मित्र का भावार्थ
मित्र का पुरुषार्थ
मित्र का निःस्वार्थ
ही हमारा विशुद्ध और पवित्र और संशय मिटाने का एकात्म सिद्ध साथ है।
जो निर्विवाद है
जो निर्विकार है
जो निर्विघ्न है
जो नीरव है
जो विरल है
जो श्रेष्ठ है
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कितनी सरल बात है

मैं चाहूँ ऐसा हो जाये तो

कौन नही चाहता

कौन नही कहता

कौन नही सुनता

हर कोई चाहता है

हर कोई कहता है

हर कोई सुनता है

पर

नही चाहत है

नही करते है

नही सुनते है

क्यूँ?

क्यूँकि यही तो मैं हूँ

क्यूँकि यही तो हम है

क्यूँकि यही तो सर्व है

तो

कोई क्या करें

ऐसे ऐसे तो कैसे जीये?

मृत्यु तो आनी ही है

तो नैन मिलाके जीये

तो सुन समझ के जीये

तो निखालस रह के जीये

तो सरल समझ के जीये

तो व्यवस्था कर के जीये

तो आत्मविश्वास के जीये

तो संयम के जीये

तो नियमन के जीये

तो सत्य के जीये

तो पवित्र के जीये

तो विशुद्ध के जीये

तो सिद्धांत के जीये

तो स्वतंत्र के जीये

तो स्वमान के जीये

तो निश्चिंत के जीये

तो निष्ठा के जीये

तो धर्म के जीये

जो नमन के जीये

जो प्रणाम के जीये

जो सद्आचरण के जीये

जो कर्मकारण के जीये

जो समर्पण के जीये

तो प्रेम के जीये

तो बिना संशय के जीये

तो बिना संकोच के जीये

तो बिना भय के जीये

तो बिना मजबूर के जीये

तो बिना मदद के जीये

तो बिना आश के जीये

तो बिना मोह के जीये

तो बिना असमंजस के जीये

जो बिना क्रोध के जीये

जो बिना लोभ के जीये

तो बिना सहारा के जीये

तो बिना चालाकी के जीये

तो बिना लगनी के जीये

तो बिना खिंचाव के जीये

जो बिना आधार के जीये

जो बिना संबंध के जीये

जो बिना बंधन के जीये

जीवन जन्म और काल स्वीकृत और परिस्कृत हो कर सलामत की परमम गति करेगा।

यही तो योग्यता है जन्म जीवन और सर्वकाल की।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"मनुष्य" सच में हम मनुष्य है?

मनुष्य कैसे है हम?

सृष्टि - प्राणी से संस्कृत होती है अर्थात जो प्राणी खुद में सोचने की सिद्धि प्राप्त करें और यही सिद्धि से अपनी निजी क्रिया से जीवन व्यवहार निभाता जाए - कर्म करता जाए - तो वह मानव है।

यही जो प्राणी ऐसा पुरुषार्थ करने के लिए अपनी सारी इंद्रिया - अपने सारे साधन - अपने सारे उद्देश्य को सृष्टि और प्रकृति की रचनाओं को अपने में समेट कर - एक जुट कर योग्य प्रकार का ज्ञान प्राप्त कर अनेक मार्ग - अनेक दिशा - अनेक सार्थकता - अनेक सिद्धि खुद में जागृत कर खुद को एक ऐसा व्यक्तित्व घड़ कर प्राणी से वह मनुष्य की पदवी - मनुष्य की संस्कृति - मनुष्य की दृष्टि - मनुष्य का स्वभाव- मनुष्य की कर्माणि का धी रास्ता रचता है वह मनुष्य है।

अर्थात मनुष्य ही एक ऐसी उपाधि - कक्षा - योग्यता - सिद्धि है जो प्राणी अपनी मन की धरणा से खुद मनुष्य है।

अगर कोई प्राणी सोचने की सिद्धि के साथ अचूक ध्येय के साथ अचूक नीति की सिद्धि प्राप्त करे - व्यवहार करे - कर्म करे तो वह प्राणी देव है।

अगर कोई प्राणी सोचने की सिद्ध के साथ अचूक ध्येय के साथ अचूक अनीति की सिद्धि प्राप्त करे - व्यवहार करे - कर्म करे तो वह प्राणी दानव है।

यह तो सामान्य और साधारण ही समझ है। यही ही धारणा - मान्यता और संस्कृति से ही हम जीये जा रहे है - जीये जा रहे है।

बस यही ही तक हमारी मर्यादा है?

बस यही ही हमारी सार्थकता है?

क्या हम ऐसे ही मनुष्य है?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"अस्वच्छता"

क्या यह शब्द से हम वाकेफ है?

क्या यह शब्द से हम जुड़े है?

क्या यह शब्द से हम है?

क्या यह शब्द से हम स्पर्शनीय है?

क्या यह शब्द से हम मिले झूले है?

क्या यह शब्द से हम एकैय है?

क्या यह शब्द से हम व्यवहारिक है?

क्या यह शब्द से हम जैविक है?

क्या यह शब्द से हम धर्मी है?

क्या यह शब्द से हम प्रेमी है?

क्या यह शब्द से हम व्यवसायी है?

क्या यह शब्द से हम कर्मी है?

क्या यह शब्द से हम व्यसनी है?

क्या यह शब्द से हम आस्थि है?

क्या यह शब्द से हम सेवक है?

क्या यह शब्द से हम ज्ञानी है?

क्या यह शब्द से हम संस्कृत है?

क्या यह शब्द से हम मनुष्य है?

सच! सोचलों!

यह शब्द से हम क्या है?

जन्म से मृत्यु पर्यान्त हम कितने गहराई में खुपे हुए है की कितनी भी बार हम स्वच्छता का शपथ ग्रहण करे - संकल्प करे - प्रतिज्ञा करे - वचन दे! पर हम वहीं के वहीं! न तिलभर न बदले और बदलेंगे!

"प्राण जाए पर अस्वच्छता न जाए"

यही ही हमारा तन मन धन ज्ञान जीवन धर्म कर्म और बलिदान है।

जो भी करे अस्वच्छ करे

जो भी सोचे अस्वच्छ सोचे

जो भी अपनाये अस्वच्छ अपनाये

सच! कितने द्रढ है हम अस्वच्छ के सिद्धांत को धरे हुए।

सच! कितने चोक्कस है हम अस्वच्छ के कर्माधिन के लिए।

सच! कितने निडर है हम अस्वच्छ की सलामती के लिए।

सच! कितने उपयोगी है हम अस्वच्छ को फैलाने के लिए।

सच! कितने कठोर परिश्रमी है हम अस्वच्छ को आबाद करने के लिए।

हम सारी सृष्टि को वादा करे - कितना भी तु हमें नफरत करे - कितना भी तु तरछोडे - हम न तुझे छोड़ेंगे - हम तुझसे दूर रहेंगे।

आप सर्वे को मेरा प्रणाम! 🌷🙏🌷

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

आखरी साँस तक नही पता है कब क्या होगा?

नही मनुष्य जानता है

नही आदमी जानता है

नही जीव तत्व जानता है

जब श्री भीष्म ने जन्म लेकर मनुष्य देह धारण किया तो नही पता था मृत्यु बाण शैया पर सोना है।

जब भगवान श्री कृष्ण ने मनुष्य देह धारण किया तो नही पता था पैर में तीर लगना है।

जब भगवान श्री राम ने मनुष्य देह धारण किया तो नही पता था सरयू नदी में डूबना है।

जब रावण ने मनुष्य देह धारण किया तो नही पता था मेरा वध होना है।

जब द्रौपदी ने मनुष्य देह धारण किया तो नही पता था मेरा चीरहरण होना है।

यह नकारात्मकता की सोच नही है, यह हमें अचूक सोचना है - ऐसा क्यूँ?

कर्म का ऐसा क्या सिद्धांत है, जो ऐसी स्थिति उदभवती है।

धर्म का ऐसा क्या सिद्धांत है, जो ऐसी परिस्तिथि रचती है।

प्रकृति का ऐसा क्या सिद्धांत है, जो ऐसे रोगीष्ट होते है।

सृष्टि का ऐसा क्या सिद्धांत है, जो ऐसे राक्षस जन्म लेते है।

समय का ऐसा क्या सिद्धांत है, जो ऐसे कलयुग परिवर्तते है।

जन्म, पूर्व जन्म, पुनः जन्म, गत जन्म की मान्यता को त्यागकर यह जन्म धरा है उनसे खुद को संस्कृत, साक्षर, पवित्र, शुद्ध, सत्यार्थी करके जन्म जन्म, भव भव को क्यूँ न सुधारे! क्यूँ न परिवर्तित करे!

सत्य से कहे - यही ही प्रकृति, सृष्टि और समय से ही योग्य पुरुषार्थ से हम यही ही मनुष्य देह से हम खुद को परम भगवदीय, परम प्रज्ञानी, परम भक्त, परम श्रेष्ठ, परम आचार्य, परंब्रह्म कर सकते है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"प्रागट्य श्रीवल्लभ"

नाचत मन गावत तन

सृष्टि जगावत प्रकृति मधुरावत

मधुर मधुर मन मधुर मधुर तन

मधुर सृष्टि मधुर प्रकृति

पधारे द्वार श्री वल्लभ

किरण किरण रंग उड़ावत

पुष्प पुष्प महक बहावत

पधारे द्वार श्री वल्लभ

रज रज सांझी पुरत

रंग रंग उड़ावत अंग अंग सुहावत

पत्ते पत्ते जगत सजावत

पधारे द्वार श्री वल्लभ

मेरे मन स्थिरावत

मेरे तन शुद्धावत

मेरे कर्म सिद्धांतवत

मेरे धर्म धरावत

पधारे द्वार श्री वल्लभ

नमन हमारे

प्रणाम हमारे

वंदन हमारे

दंडवत हमारे

पधारे श्री वल्लभ द्वार हमारे

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

पता है सृष्टि और प्रकृति का नियम है

किसीको मारना और जीना

अर्थात कोई पशु पशु का शिकार करेगा और अपना निर्वाह करेगा

अर्थात यह ही हुआ कि जो कोई किसको मारके जीये - किसीको मारके जीवन निर्वाह करे वह पशु है।

सोचले! हम किसीको किस किस तरह मारते है और अपना जीवन निर्वाह करते है

कमीशन खा कर

लूट कर

Money laundering कर

भ्रष्टाचार कर

रिस्वत दे और ले कर

गलत भाव दे और ले कर

गलत हिसाब कर

गलत माप तोल कर

गलत वस्तु दे और ले कर

गलत माहिती दे और ले कर

गलत रीत अपनाकर

अनपढ़ को गलत समझा कर

नादुरस्त अर्थात रोगी को घुमा घुमा कर इलाज कर

विश्वास को पैसे में परिवर्तित कर

भरोसा को पैसे में तोल कर

हर व्यवहार और रिश्ता को अर्थोपार्जन में ही ढालना - अपनाना - सुलझाना।

ओहहह! सब करते है तो मैं करता हूँ!

कौन नही करता ऐसा?

जहां देखो जो व्यवहार सोचलो - करलो - देखलो - अनुभव करलो!

कोई भी स्तिथि परिस्तिथि लूटना और लूटा।

कौनसा अर्थोपार्जन क्रिया ऐसी नही है जो कोई किसीको न लूटे!

सभ्य समाज में नजर करे

Doctor - लूटे - भरोसा का कितना बड़ा दरज्जा - विश्वास का गलत इस्तेमाल - प्राणी में कितना उच्च स्थान - जो यही लूटे तो कौन न लूटे!

Judge - न्यायाधीश - पुलिस अधीक्षक - अधिकारी - जो न्याय करने वाले न्याय के नियम विरुद्ध अनीति करे - गुनाह को गलत ठहरे - असत्य को अज्ञान की टिप्पणी से - अक्षर शब्द की अज्ञानता और अधुरप का गलत अर्थघटन करे - विश्वास का गलत उपयोग करे।

Industrialist व्यापारी Businessman - कैसा भी प्रकार का उत्पादक और विक्रेता - जो जगत के हर व्यवहार और कारोबार से जुड़े है वह ऐसी नीति - अनीति रचे - जिससे हर व्यवहार से गलत अर्थोपार्जन ही हो! हर व्यवस्था से लूटना! क्या ज्ञान का यही सही उपयोग है?

नेता - नेता शब्द का अर्थ को इतना निम्न और निच कर दिया कि हर जीव अपने खुद को भूल गया। कितना घिलौना और दुष्ट प्राणी या पशु बना दिया।

शिक्षक - आचार्य! ज्ञान का उजाला करने वाले - ज्ञान को उजेडे!

ज्ञान से विद्या से संस्कार और जीवन को घड़ने वाले - विद्यार्थियों को लूटे - मानसिक और शारीरिक कुसंस्कार को सिंचे! कैसे समाज की रचना रचे! जो हर शिक्षा से केवल लूटना! ओहह!

जो जगत को गति और योग्य करते है वही किसीका विश्वास तोड़ते है - दामन नोचते है - बेगुनाह को तिल तिल कर मारते है।

खुद ही सोचलो!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कैसी है यह जीने की राह
जो
रास्ते रचते रचते
या
रास्ते चलते चलते
कोई क्या मिल गया
कोई कहा मिल गया
कोई कहा जुड़ गया
तो
रास्ता चौराहा हो गया
जहा देखो वहा चौराहा
न कोई एक रास्ते पर जा सका
न कोई एक रास्ते को पा सका
न कोई एक रास्ते को ढूंढ सका
बस
घूमता रहा
भटकता रहा
अटकता रहा
लटकता रहा
कितना भी संकेत पाये
कितना भी संकल्प करे
कितना भी द्रढता निभाये
पर
न जान सका
न समझ सका
न पहचान सका
कोई कहे गुरु करलो
कोई कहे गुरु ढूँढलो
कोई कहे यही ही गुरु
लड़खड़ाता गया
रुकता गया
गिरता गया
कभी
अकेले में बैठ कर
कभी

खुद का जो मन हो
खुद का जो तन हो
खुद का जो आत्मा हो
खुद की जो वैचारिक शक्ति हो
खुद की जो ज्ञानिक दीर्घ दृष्टि हो
खुद की जो आत्मीय साक्षरता हो
तो
यज्ञ करना
ध्यान धरना
तप करना
अविचलित हो कर
समांतर हो कर
न्याय पहचान कर
तो
अचूक चौराहा तोड़ोगे
अचूक रास्ता पकड़ोगे
अचूक जीवन डग भरोगे
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हम कहीं बार कहते है

हम कहीं बार सुनते है

हम कहीं बार भुगतते है

यह किया

वह किया

ऐसा किया

वैसा किया

ऐसा न करना था

ऐसा करना था

ऐसा ही योग्य है

ऐसा ही अयोग्य है

पहले ऐसे सोच लेते तो

पहले पूछ लिया होता तो

पहले सलाह ले ली होती तो

सच! कैसे है हम?

क्यूँ इतनी असमंजस

क्यूँ इतनी बेकरारी

क्यूँ इतने बौखलाये

क्यूँ इतनी तालावेली

क्यूँ इतनी उत्तेजना

क्यूँ इतनी तीव्रता

क्यूँ इतनी अस्थिरता

क्यूँ इतनी .... क्यूँ?

कैसी हमारी क्रिया

कैसी हमारी तृष्णा

कैसी हमारी वृति

कैसी हमारी बुद्धि

क्यूँकि हर सोच में है अधुरप्ता

क्यूँकि हर क्रिया में है आद्रता

क्यूँकि हर वृति में है कुत्रिमता

क्यूँकि हर स्थिति में है अपरिपकवता
क्यूँकि हर काल में है अनिश्चितता
क्यूँकि हर दिशा में है निष्क्रियता
क्यूँकि हमारा घड़तर हुआ है
ऐसे ही वचन से
ऐसे ही कथन से
ऐसे ही साधन से
ऐसे ही वाचन से
ऐसे ही लगन से
ऐसे ही शिक्षण से
ऐसे ही धर्म से
ऐसे ही कर्म से
ऐसे ही मर्म से
ऐसे ही शास्त्र से
तो क्या करना चाहिए?
तो हमें अपने आप को ऐसे चरित्र से जोड़ना चाहिए जो चरित्र हमारा आमूल परिवर्तन करे
तो हमें अपने आप को ऐसे व्यवहार से व्यवहारना चाहिए जो व्यवहार संसार का शुद्ध हो
तो हमें अपने आप को ऐसे ऐसे धर्म के सिद्धांतों से सिंचना चाहिए जो सिद्धांत से सत्य की ही पहचान हो
तो हमें अपने आप को ऐसे ज्ञान से संस्कृत साक्षर होना चाहिए जो ज्ञान केवल आनंद की ओर ही गति करता हो
तो हमें ऐसे ही भाव जागृत करना चाहिए जो भाव केवल विश्वास ही उत्स करता हो
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"मंगला चरण" साक्षर चारित्र्य स्पर्श भक्तिवर्धिनी प्रार्थना 🌷🙏🌷

🌷पुष्टि षोडस - ०१🌷

🌷"पुरुषोत्तम सहस्त्र नाम स्त्रोतम्" परब्रह्म पुरुषार्थ चरित्र स्पर्श

🌷"यमुनाष्टकम्" परम उत्कट सकल सिद्धि जागृत तनुनवत्व परिवर्तित चरित्र

🌷"बालबोध" जीव अहंताममतानाशे सर्वथा निरहंकृतौ - केवलश्चेत्समाश्रित: बोध प्रोक्तं - जीव विशुद्धता।

🌷"सिद्धान्तमुक्तावली" - विज्ञाने ब्रह्मात्म्त्वावबोधने - ज्ञानाभावे पुष्टिमार्गी तिष्ठेत्पूजोत्सवादिषु - अनुग्रह: पुष्टिमार्गे नियामक इति स्तिथि: - एतद् बुद्ध्वा विमुच्येत पुरुष: सर्वसंशयात् ।

🌷"पुष्टिप्रवाहमर्यादाभेद" भक्तिमार्गस्य कथनात्पुष्टिरस्तीति निश्चय: - भगवद्ररुपसेवार्थं तत्सृष्टि र्नान्यथा भवेत्।

🌷"सिद्धान्तरहस्यम्" सर्वदोषनिवृत्तिर्हि दोषा: पञ्चविद्या: स्मृता: - निवेदिभि: समर्प्यैर्व सर्वम कुर्यादिति स्तिथि:।

जो भी प्रकार का देह धारण किया हो वह देह धारी उपरोक्त पुष्टि ज्ञानामृत और भावामृत का मधुरात्मक साक्षर पान पा ले और कर ले, वह ही मधुदेश का गौलोक धाम में स:देह परमानंद प्रीत सिद्धि की अद्वैत स्तिथिस्थापक्ता धारण कर सकता है, सदैव तनुनवत्व और वपु अमृतम से स्वराट आत्मा हो सकता है।

पुष्टि षोडस -०१ .... आगे ...

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

"इतिहास"

इतिहास ऐसा होना चाहिए जो इतिहास से इतिआनंद होना चाहिए।

कितना भी युगों का इतिहास अनुसंधाने सतयुग के सिवाय बाकी हर युग में इतिआहास - इतिआभास - इतिदाहक ही इतिहास है।

जैसे जैसे साक्षरता - योग्यता - सुधारता व्यापक होती जाती है वैसे वैसे सलामतता - सुरक्षता अनिश्चित, अरक्षित, अवैधिक, भ्रमित और अनैतिक होती जाती है।

हम दिन ब दिन कितने अहंकारवादी और कुत्रिम और नाटकीय होते जाते है कि अपनी हर विचारधारा और कार्यदक्षता खुद को खुद से और हमें अपने कुटुंब से - समाज से दूर करता जाता है - विघटित करता जाता है - विच्छेदन करता जाता है - क्रूर करता जाता है।

यही ही है आज का मानव जीवन जो जीने की हर घड़ी में नफरतता और निष्ठुरता का सिंचन करती रहती है और हम उनमें स्वाहा होते जाते है। हम एक दूसरे से बाटते जाते है, विखुटे पड़ते जाते है, नष्ट होते जाते है।

क्या करना चाहिए? ऐसे बरबाद होते हुए जीवन को सुशील - सुरक्षित - शुद्ध - आनंदमय करने के लिए?

हम इतने भाग्यशाली है कि हमारी धरोहर में सतयुग का इतिहास सूक्ष्मता से रज रज में, कण कण में, बूँद बूँद में पड़ा है, उन्हें उजागर करना ही योग्य मार्ग - दिशा और संस्कृत है।

हम हमारा सतयुग का इतिहास के ही माध्य्म से हमें

१. प्रातःकाल में ५ (पाँच) बजे उठ कर नित्य कर्म करके सेवा का कार्य करना योग्य है।

जिससे मन - तन शांत और सुनिश्चित दिनचर्या में साथ देती है।

२. सुनिश्चित दिनचर्या से हमारे अंदर न रोग या अविचार का प्रवेश न होने से हम अधिक पुरुषार्थवादी होंगे जो हमें अधिक मात्रा में हमारी अर्थोपार्जन व्यवस्था में हमें अधिक योग्यता प्रदान करेगा, जो हमें वधु "Digital Tools" से अवगत और सरल करेगा।

यही ही सर्वश्रेष्ठ जीवन घड़तर की प्रक्रिया है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

ये कैसा है यह प्यार

जो नैन से जुड़े

जो मन से जुड़े

जो तन से जुड़े

जो आत्म से जुड़े

जो आँसू से जुड़े

जो इंतेज़ार से जुड़े

जो तड़पन से जुड़े

जो तरस से जुड़े

जो विरह से जुड़े

जो यादों से जुड़े

जो ख्यालों से जुड़े

जो आह से जुड़े

जो अगन से जुड़े

जो अपलक से जुड़े

जो बैचैन से जुड़े

जो आनंद से जुड़े

जो एकांत से जुड़े

जो धड़कन से जुड़े

जो साँस से जुड़े

जो आंतर वेदना से जुड़े

जो अनंत प्रवाह से जुड़े

जो आंतरिक ऊर्जा से जुड़े

जो अनंतता से जुड़े

जो अखंडता से जुड़े

जो निर्भयता से जुड़े

जो अमृत से जुड़े

जो राग से जुड़े

जो ऋचा से जुड़े

जो स्वर से जुड़े

जो अक्षर से जुड़े

जो अंग से जुड़े

जो रंग से जुड़े

जो स्वयं से जुड़े

जो संयम से जुड़े

जो अन्न से जुड़े

जो क्रिया से जुड़े

जो विचार से जुड़े

जो रूप से जुड़े

जो विशुद्धता से जुड़े

जो निःस्वार्थ से जुड़े

जो पवित्रता से जुड़े

जो परमार्थ से जुड़े

जो आध्यर्थ से जुड़े

जो कृतज्ञ से जुड़े

जो कृतार्थ से जुड़े

जो सेवा से जुड़े

जो निष्ठा से जुड़े

जो धर्म से जुड़े

जो कर्म से जुड़े

जो विश्वास से जुड़े

जो सत्य से जुड़े

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कभी फूल को खिलते निहाला है?

कभी बीज को अंकुर फूटे निहाला है?

कभी बूँद को बादल से बरसते निहाला है?

कभी किरण को सूरज से ऊर्जते निहाला है?

कभी चांदनी को चंद्र से बहते निहाला है?

कभी तरंग को सागर से उठते निहाला है?

कभी लहर को हवा से लहराते निहाला है?

कभी दृष्टि को नैन से खिंचते निहाला है?

कभी धड़कन को हृदय से धड़कते निहाला है?

कभी विचार को मन से उदभवते निहाला है?

कभी साँस को तन हृदय से संयोजितते निहाला है?

कभी प्रीत को प्रियतम से जोड़ते निहाला है?

नही कभी नही!

तो भी प्रयत्न करना!

अवश्य नही ही निहाला है।

सोच लो!

यह अनुभूति की बात या रीत नही है।

यह केवल आंतरिक आध्यात्मिक की बात या रीत है।

अभी भी कहता हूँ, नही ही निहाला है।

क्यूँ?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"मंतव्य"

कैसा अनोखा शब्द है

कैसा व्यवहारिक शब्द है

कैसा साधारण शब्द है

कैसा सामान्य शब्द है

कैसा स्पर्शिय शब्द है

कैसा नाटकीय शब्द है

कैसा तिरस्कृत शब्द है

जो

कौन कैसे उपयोग और उपभोग करता है

जो

कौन कैसे अर्थात से समझ और स्पर्श करता है

जो

कौन कैसे क्या क्या खेल रचत है और रचावत है।

"मंतव्य" को निखालस से, योग्यता से, निर्भयता से, साक्षरता से उपयोग और उपभोग करे तो

"मंतव्य" को द्रढता से, विश्वास से, पूर्णता से, कुशलता से, ऊंच नीच अभेदता से व्यवहार और स्पर्श करे तो

यह "मंतव्य" मददगार हो जाएगा, शैक्षणिक हो जाएगा, धार्मिक हो जाएगा, कार्मिक हो जाएगा, जागृत हो जाएगा, आग्नेय हो जाएगा, निःभ्रमित हो जाएगा, निःसंदेह हो जाएगा, आनंदित हो जाएगा।

हमारे जीवन का यह एक ऐसा घटक घटक और पृथक पृथक धारणा और कल्पनीय है कि इन्हें निखालस से ही स्पर्श करे - स्वीकार करे तो जीवन सफल हो जाए - जीवन कर्मयोगी हो जाए - जीवन श्रेष्ठ हो जाए।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

तुझसे कितना दूर हूँ मैं

नही है मुझे पता

तुझसे कितना निकट हूँ

नही है पता

पर

इतना चोक्कस है

मैं तुझमें हूँ

तु मुझमें है

क्यूँकि कभी

ये तेरे मूंदते नैन आकाश के बादलों से बरसाता है

ये तेरे थरकते होंठ बिजली की घरघराहट से थरथराता है

ये तेरी सिसकती साँसे हवा के तूफान से पैड पत्ते की चीत्कार है

ये तेरा काँपता तन धरती की उड़ती रज से जलता है

ये तेरा तड़पता मन ब्रह्मांड की घट घट की परिवर्तनता है

क्या यह सब की असर का पता मुझे नही होता

क्या

मेरे नैन भी क्यूँ मूंदते है?

मेरे होंठ भी क्यूँ थरकते है?

मेरी साँसे भी क्यूँ सिसकती है?

मेरा तन भी क्यूँ काँपता है?

मेरा मन भी क्यूँ तड़पता है?

क्या मुझे तुमसे कुछ सुख पाना है

क्या मुझे तुमसे कुछ दुःखो का सहारा पाना है

क्या मुझे तुमसे कुछ अधिक माँगना है

क्या मुझे तुमसे कुछ अधिकार करना है

नही नही

तुझसे ही रचा हूँ तो क्या तुझसे चाहे

तुझमें ही मैं हूँ

मुझमें मैं ही तु है

तो

क्या ऐसा नही है

तु ही मैं हूँ

मैं ही तु हूँ

सच! जीवन जीते जी हर प्रकार का एहसास हो रहा है कि तेरा भी यही जीवन है जो मेरा है।

गुजरते हर वक़्त की असर

तुझसे कितना दूर हूँ मैं

तुझसे कितना निकट हूँ मैं

नही पता

पर

अब पता हो गया

तु ही मैं हूँ

मैं ही तु हूँ

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"तपश्चर्या"

हिन्दू संस्कृति के कुटुंब में तपश्चर्या कुटुंब के हर सभ्य निभाते है, यह ऐसा संस्कार है कि कोई नया सभ्य भी उनमें जुड जाये तो वह भी तपस्वी हो जाता है।

माँ बाप या दादा दादी या छोटे भाई या छोटी बहन आयु से बिमार हो या कोई रोग से ग्रस्त हो - कोई अपाहिज हो - कोई मानसिक नादुरस्त हो अर्थात दिव्यांग हो तो भी उनके साथ जीते जीते हस्ते खेलते जीवन का हर क्षण निभाते है - आनंद लूटाते है।

क्यूँ? ऐसा क्या रहस्य और संस्कार है, ऐसे जीने में?

गर्व से कहें "हम हिन्दू है"

छोटे थे तब से न कभी समझा है यह मेरा है - जो जो हमारे है उन सबका है।

साथ साथ जीते है किसीको कुछ भी होता है - वह हमें ही हुआ है।

एक कमाने वाला है तो भी सब मिलकर खायेंगे - पीयेंगे - रहेंगे, ज्यादा कमाने वाले है तो भी इकट्ठा रह कर जियेंगे। शारीरिक - मानसिक कोई भी कठिनाई उन्हें तोडकर - निचोड़कर दुरस्त करके जीतेंगे।

न डर है पाप का - न अपेक्षा है पुण्य की, बस एक ही द्रडता है आनंद से गुजरने की - साथ साथ मिलकर जीने की।

यही कला है - यही संस्कृति है हमारे हिन्दुत्व की

जो साथ रहे वो हमारे!

जो साथ जीये वो हमारे!

जो साथ निभाये वो हमारे!

हर कोई अपना - हर कोई हमारा

न कोई पराया - न कोई गवारा

मिलजुलकर बाँट कर जीवन जीयेंगे सारा

दर्द है तो हर दर्द की दवा करेंगे सारे

जो कुछ है हमारा वह लूटायेंगे आनंद में सारा

कितना निराला है जीवन हमारा

गर्व से कहें ऐसा ही है हिन्दुस्थान हमारा!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

नाथद्वारा में "श्री नाथजी"
द्वारकापुरी में "श्री द्वारकाधीश जी"
जगन्नाथपुरी में "श्री जगन्नाथ जी"
तिरुपति में "श्री बालाजी"
ऐसे तो कहीं स्वरूप प्राकट्य है ऐसे "श्री कृष्ण" के
क्या माध्यम है ऐसे विस्तृति का
क्या सामर्थ्य है ऐसे स्पर्श का
क्या सिद्धांत है ऐसे पुरुषार्थ का
क्या संस्कृति है ऐसे प्रज्वलित का
क्या संकेत है ऐसे कृतार्थ का
क्या संस्थापन है ऐसे विस्तार का
क्या ज्ञान है ऐसे साधन का
क्या गति है ऐसे मार्ग रचने का
क्या रीत है ऐसे सृष्टि जगाने का
हमारे श्री आचार्यों ने ऐसी दीर्घ द्रष्टि तो अचूक सिद्ध की ही है - मनुष्य जीवन को कैसे योग्य साक्षर और संस्कृत किया जाय।
पुष्टि गृह सेवा - हवेली सेवा - अक्षर शास्त्र सेवा- मंदिर सेवा - बैठकजी सेवा - व्रज रज सेवा - निधि स्वरूप सेवा - ऐसी कहीं प्रकार की सेवा स्वरूप - ऐसे अनगिनत स्वरूप और पद्धति
कभी सोचा है ऐसा क्यूँ?
कभी सोचा है ऐसे संस्थापन का रहस्य?
कभी सोचा है ऐसे मार्ग का माहात्म्य?
कभी सोचा है ऐसे पुरुषार्थ का स्पर्श?
कभी सोचा है ऐसे सिंचन का परिवर्तन?
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"श्री वल्लभाचार्यजी" ने गृह सेवा का सुसृजन किया,
सुश्रुत किया,
सुबोधन किया।
हम क्या समझते है
सुबह प्रातःकाल में उठ कर, नित्यकर्म निपटाके श्री प्रभु सेवा में रहना।
श्री प्रभु को मंगल स्नान - भोग - शृंगार सजा कर - कीर्तन - संगीत गा कर जगाना है।
शृंगार रस से शृंगार और गान पद से खुद की भक्ति का इजहार कर,
ग्वाल से गौओं की रक्षा और सलामती धरनी है।
राजभोग जो भोग से छप्पन विविध सामग्रियां और पकवान से श्री प्रभु का आविष्कार करते है।
आराम फर्मा कर फिरसे उठ कर उत्थापन - भोग और संध्या आरती करके श्री प्रभु को दिन आखर में शयन में पधराकर खुद आनंद परमानंद की वेदी पर बैठ कर दिन रात माह वर्ष पसार करते है।
क्या यह सेवा है? नही
क्या यह धर्म है? नही
क्या यह आनंद उत्स की प्रक्रिया है? नही
यह तो एक समय और जीवन बिताने का प्रयास है - प्रमाण है।
सच कहे यह गृह सेवा नही है।
यह तो एक निष्ठा है, श्रद्धा है, भाव है।
पर
यह गृह सेवा नही है।
यह तो एक क्रिया है, विधि है, नियमन है।
पर
यह गृह सेवा नही है।
यह तो एक व्यवहार है, निधि विधि का त्योहार है।
पर
यह गृह सेवा नही है।
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"गृहसेवा" गृहसेवा का अर्थ अति प्राथमिक, माध्यमिक, और उच्चस्तरीय है। श्री वल्लभाचार्यजी की यह अति गुढात्मक और गुणात्मक हैतुक व्यवस्था जगत के लिए अति दुर्लभ है। विशुद्ध प्रीतमय, पवित्र निष्ठामय, सत्य क्रियामय, द्रढ विश्वासमय यह रीति निधि और परिमिती है।

निकट से निकट और निकट से आंतरिक स्पर्श पाने की परिकृति है - एकात्म पाने की पराकाष्ठा है - मैं न मैं - मैं और मैं को निःहंकृत करने की निधि है।

परम ज्ञान - परम भक्ति - परम प्रीति - परम शक्ति से पूर्णत्व यह गति है - जो क्षण क्षण सलामत और निस्पृही करती है।

न अन्याश्रय - न सन्देह - न संशय है, केवल परम पुष्टि जो हर संस्कृति से एक हो जाते है, अतूट हो जाते है, अभिन्न हो जाते है, अजर हो जाते है, अंशी हो जाते है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कहीं बार सोचा

कहीं बार सोच सोच कर सोचा

मैं क्या हूँ?

क्यूँ मुझसे बार बार गलती होती है?

क्यूँ मुझसे बार बार किसीको तकलीफ होती है?

क्यूँ मुझसे बार बार कोई हैरान होता है?

क्यूँ मुझसे बार बार कोई दु:खी होता है?

क्यूँ मुझे बार बार कोई नफरत करता है?

क्यूँ मुझसे बार बार कोई तिरस्कृत होते है?

कैसा हूँ मैं?

हर घडी, हर पल, हर क्षण हैरान हैरान और हैरान!

हर बात, हर रीत, हर क्रिया से परेशान परेशान और परेशान!

सच! क्या है? कैसा है? क्यूँ है?

कौन सिखाये? कौन समझाये? कौन सहाये?

कैसा है जीव? कैसा है मन? कैसा है जीवन?

यह नकारात्मक नही है

यह सूक्ष्मता से गतिवर्धक करना है

यह अचूकता से ही करना ही है

यह कोई ऐसी सामान्यता से तरछोडना नही है

जागृत होना होना और होना ही है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कितनी सोच से जीते है हम

कितने ख्यालों से जीते है हम

कितनी मान्यता से जीते है हम

कितने बंधनो से जीते है हम

कितनी नजर से जीते है हम

कितनी रीति से जीते है हम

कितनी मर्यादा से जीते है हम

कितनी द्रष्टि से जीते है हम

कितनी सृष्टि से जीते है हम

कितनी प्रकृति से जीते है हम

कितनी व्यक्ति से जीते है हम

कितने सहारे से जीते है हम

कितने संकल्प से जीते है हम

कितने धर्म से जीते है हम

कितने कर्म से जीते है हम

कितने वर्ण से जीते है हम

कितनी गति से जीते है हम

कितनी मति से जीते है हम

कितने भ्रम से जीते है हम

कितने आधार से जीते है हम

कितनी हद से जीते है हम

कितनी घृणा से जीते है हम

कितनी कृपा से जीते है हम

कितने निखालस से जीते है हम

कितनी निर्भरता से जीते है हम

कितनी पवित्रता से जीते है हम

कितनी नफरत से जीते है हम

कितने वात्सल्य से जीते है हम

कितने संस्कार से जीते है हम

कितनी कृतज्ञता से जीते है हम

कितने सुख से जीते है हम

कितने दु:ख से जीते है हम

कितने रंग से जीते है हम

कितने संग से जीते है हम

कितने अंधकार से जीते है हम

कितने प्रकाश से जीते है हम

कितने माध्यम से जीते है हम

कितनी मजबूरी से जीते है हम

कितने रोग से जीते है हम

कितने भोग से जीते है हम

कितनी जागृतता से जीते है हम

कितनी पाखंडता से जीते है हम

कितनी रुक्षता से जीते है हम

कितनी शुष्कता से जीते है हम

कितने ज्ञान से जीते हम

कितने मान से जीते है हम

कितनी आज्ञा से जीते है हम

कितनी प्रज्ञा से जीते है हम

कितने विश्वास से जीते है हम

कितनी मृत्यु से जीते है हम

कितने जीवन से जीते है हम

सच! हम ऐसे तो कहीं कहीं - ऐसे ऐसे - नित्य नित्य - निजी निजी धाराओं, कृतिओं से जीते है हम

पर कभी अपनी आत्मीयता से जीते है हम?

पता नही जीवन का घडतर की संस्कृति को - सिद्धांतो को - आनंद को और हमारा जीवंत को हम समझते नही है?

ओहह श्री कृष्ण!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🙏🌷

हम जो जो करते है
उसका निरिक्षण करते है?
ऐसा क्यूँ? हम जो करते है वह सही ही है
अच्छा विश्वास है और होना चाहिए
अनुभव है
शिक्षा है
समझ है
तो
आपको आपके कार्य में दिक्कतें आती है?
क्यूँ? ऐसा तो होता ही रहता है
दिक्कतें आयेगी नही तो हम सीखेंगे कैसे?
दिक्कतें आयेगी तो ही सुधार होगा
दिक्कतें आयेगी तो ही सही पध्दति अपनायेंगे
यह तो होना ही चाहिए
इससे तो हम जीवन घडते है।
क्या हम यह ही सोच, समझ और ख्याल से जीते है?
हाँ! सही ही है।
हम कितनी मेहनत और ईमानदारी और लगन से हमारा हर कार्य करते है।
हाँ! है
पर यह मेहनत, इमानदारी और लगन से कार्य होगा तो दिक्कतें आयेगी की आ ही नही सकती?
वह तो आयेगी
सबका मन एक थोडा ही है
अलग अलग सोच से तो अलग अलग होगा ही
दिक्कतें आयेगी तो ही पता चलता है कि हम कुछ करते है और हमारा कितना अनुभव है
ओहह!
सच! ऐसे संवाद!
सच! ऐसी सोच!
सच! ऐसी रीत!
हम बार बार सुनते है, कहते है और करते रहते है
इसका अर्थ चोक्कस यह हो गया
हम निरिक्षण सही नही करते है
हमारा निरिक्षण हम कर सकते है
विश्वास के साथ
पर - अगर
जब भी हमें कोई कहे

जब भी हमें कोई सूचन करे
जब भी हमें कोई टोके
जब भी हमें कोई समझाये
तो समझ लेना
जो कोई मेरा निरिक्षण करता है
वह सिर्फ और सिर्फ मेरे खुद के लिए
न समझे ऐसा
यह तो सलाह देते रहते है
यह तो उनकी आदत है
यह तो उनका स्वभाव है
यह तो उनकी मुझे अयोग्य करार देने की सोच है
और
यह तो होता रहता है
नही!
बस!
यहां ही हमने समाप्त करदी
हमारी संस्कृति
हमारी जीवन पद्धति
हमारी सुधारक विचार धारा
हमारी लाक्षणिकता
हमारे जीवन की तमन्ना
हमारा उद्देश्य
हमारा उत्साह
हमारा धर्म
हमारा आनंद
और
हमारा अस्तित्व
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

आकाश अकेला है
सूरज अकेला है
चंद्र अकेला है
पृथ्वी अकेली है
वायु अकेला है
सागर अकेला है
यह अकेले कैसे है?
जैसे कहीं तारों के समूह जो इकठ्ठे होते होते सूरज हो जाते है
वैसे ही कहीं मानव जीवों के समूह से इकठ्ठे होते सत्य से संत हो जाते है, जो संत सूरज हो जाते है।
जैसे कहीं धातु के समूह जो इकठ्ठे होते होते पृथ्वी हो जाती है
वैसे ही कहीं वनस्पति जीवों के समूह से इकठ्ठे होते होते अन्न हो जाता है, जो अन्न अमृत हो जाता है, जो पृथ्वी से सिंचित होता है।
जैसे कहीं वायुओं के समूह से इकठ्ठे होते होते जीवंत वायु हो जाता है
वैसे कहीं तत्वों के समूह से इकठ्ठे होते होते जीवन का आधार हो जाता है, जो वायु प्राणवायु हो जाता है।
जैसे कहीं नीर के समूह से इकठ्ठे होते होते सागर हो जाता है
वैसे ही कहीं मान्यताओं के समूह से इकठ्ठे होते होते धर्म हो जाता है, जो धर्म सागर हो जाता है, जिसमें भिन्न से अभिन्न संस्कृति खिलती है।
हम सोचें कि यह सर्वे प्रकिया हमें क्या संकेत करती है?
यह सर्वे प्रक्रिया हमें यही संकेत करती है कि जो भी करना है खुदको करना है और करते करते ऐसे इकठ्ठे होते जाये जिससे
योग्य आकाश रचे
योग्य सूरज रचे
योग्य चंद्र रचे
योग्य पृथ्वी रचे
योग्य वायु रचे
योग्य सागर रचे
जैसे सूरज, चंद्र, पृथ्वी, वायु और सागर को इकठ्ठे होते ही आकाश हो जाता है
वैसे ही मनुष्य, प्रेम, पुरुषार्थ, संस्कृति और सत्य का इकठ्ठे होते ही युगपुरुष हो जाता है - जो हमें होना है।
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हम हमारा सत्य छोडते है

तब ही हम दु:खी, हैरान, जूठे, पाखंडी, नीच, निम्न और होते है

हम हमारा संस्कार छोडते है

तब ही हम लंपट लोभी क्रोधी और असंस्कृत होते है

हम हमारा वात्सल्य छोडते है

तब ही हम निष्ठुर नफरत भरे, क्रूर, लफंगे, उचक्के, अप्रिय और विकृत होते है

हम हमारा धर्म छोडते है

तब ही हम अविश्वासु, अंधश्रद्धालु, अभद्र, अन्यायी और अनिर्णयी, निरर्थक होते है

हम हमारा कर्म छोडते है

तब ही हम आलसी, प्रमादी, मजबूर, चोर, लुच्चे, असमंजसी, दुष्कर्मी, रोगी, मूल्यहीन और क्रुर होते है

हम हमारा अस्तित्व छोडते है

तब ही हम अनघड, अज्ञानी, मूर्ख, नि:सहाय और निर्लज्ज होते है

पता नही

हम इतिहास देखते है

हम शास्त्र पढते है

हम शिक्षा पाते है

हम सिद्धांत घडते है

हम जीवन व्यवहार निभाते है

हम धर्म अपनाते है

हम कर्म करते है

तो भी हमें ऐसा क्यूँ?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🙏🌷

बहोतो ने समझा

ऐसा तो ऐसा

ऐसा तो वैसा

हम करते भी रहते है

ऐसा तो ऐसा

ऐसा तो वैसा

हम सोचते भी रहते है

ऐसा तो ऐसा

ऐसा तो वैसा

हम निभाते भी रहते है

ऐसा तो ऐसा

ऐसा तो वैसा

हम करवाते भी रहते है

ऐसा तो ऐसा

ऐसा तो वैसा

ऐसा बंधन क्यूँ बाँधना

ऐसा तो ऐसा

ऐसा तो वैसा

ऐसी रीति में क्यूँ ढलना

ऐसा तो ऐसा

ऐसा तो वैसा

ऐसे रिवाज क्यूँ अपनाना

ऐसा तो ऐसा

ऐसा तो वैसा

जीवन के कहीं परिबलों ऐसे है

जीवन के कहीं मानव ऐसे है

जीवन के कहीं संजोग ऐसे है

जीवन की कहीं परिस्थिति ऐसी है

जीवन का कहीं काल ऐसा है

जीवन की कहीं घडी ऐसी है

जीवन के कहीं पद ऐसे है

जीवन के कहीं अधिकार ऐसे है

जीवन के कहीं साथ ऐसे है

पर सच कहें

बस यही

ऐसा तो ऐसा

ऐसा तो वैसा

में

हममें उठता अहं

हमारा चरित्र

हमारी संस्कृति

हमारा संस्कार

हमारा धर्म

हमारा कर्म

हमारा वात्सल्य

हमारा जीवन

हमारा आध्यात्म

हमारा प्रेम

हमारा हम

गँवा बैठते है

खो देते है

नष्ट करते है

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"राधाकृष्ण"

मैं "राधा कृष्ण" ऐसा लिख सकता था पर जैसे "राधा" लिखा तो "कृष्ण" को जोडने से जो अनुभव पाया! यह तो मेरा प्रियआत्म और मेरे परम प्रीत प्रियतम परमात्मा ही पहचानते है।

"राधाकृष्ण" लिखते

मेरा ऊँगली से स्पर्शता "र" अक्षर से ही मेरा रोम रोम में अलौकिक रोमांच का प्राकट्य जागता है और सारे अंग और मेरी आसपास के वातावरण में ऐसी आह्लदायकता छा जाती है, मधुर मधुर और मधुर ही मेरे नयन निहालते है। सुमधुर सुमधुर और सुमधुर ही मेरे अधर से शब्द सूर रसते है। रंग रंग और रंग मेघधनूष उडते है। महक महक और महक अनिल महकता है। घुउहह घुउहह और घुउहह लहर उछल उछल कर घुघुती है। किल्लत किल्लत और किल्लत करते पंखी मिलन गूँजन से प्रकृति को जीवंतती है। कितना अनोखा माधुर्य का आनंद लूट रहा हूँ मैं!

मैं अति गूढता से स्मरण करु तो

मैं अति गहराई से चिंतन करु तो

मैं अति सुढ्रडता से भक्ति करु तो

मैं अति श्रेष्ठता से सुश्रुत करु तो

मैं अति सर्वज्ञता से स्पर्श करु तो

मैं अति निष्ठा से आज्ञाकिंत करु तो

मैं अति संपूर्णता से स्वीकृति करु तो

हे राधाकृष्ण!

ओ राधाकृष्ण!

ओहह राधाकृष्ण!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"गरीबी" कितने जुडे है हम इनसे

शायद कितने भी धनवान हो

शायद कितने भी धर्मवान हो

शायद कितने मी धरतीवान हो

शायद कितने भी ऐश्वर्यवान हो

शायद कितने भी बुद्धिमान हो

शायद कितने भी रुपवान हो

शायद कितने भी आध्यात्मवान हो

पर है तो गरीब

क्यूँकि मन के भीतर एक डर हो

क्यूँकि मन के भीतर एक अनिश्चितता हो

क्यूँकि मन के भीतर एक असंतोष हो

क्यूँकि मन के भीतर आत्मग्लानि हो

क्यूँकि मन के भीतर उपहास हो

क्यूँकि मन के भीतर दर्द हो

क्यूँकि मन के भीतर अराजकता हो

क्यूँकि मन के भीतर कपटता हो

क्यूँकि मन के भीतर स्वार्थ हो

क्यूँकि मन के भीतर अस्पृश्यता हो

क्यूँकि मन के भीतर असहिष्णुता हो

क्यूँकि मन के भीतर क्रूरता हो

क्यूँकि मन के भीतर लंपटता हो

क्यूँकि मन के भीतर नीचता हो

क्यूँकि मन के भीतर अधर्म हो

क्यूँकि मन के भीतर निष्ठुरता हो

क्यूँकि मन के भीतर विष हो

क्यूँकि मन के भीतर निम्नता हो

क्यूँकि मन के भीतर असभ्यता हो

क्यूँकि मन के भीतर ऋढिचुस्तता हो

क्यूँकि मन के भीतर कृतघ्नता हो

क्यूँकि मन के भीतर दुष्टता हो

क्यूँकि मन के भीतर अविश्वसनीयता हो

क्यूँकि मन के भीतर अप्रीतता हो

क्यूँकि मन के भीतर असत्यता हो

क्यूँकि मन के भीतर असमंजस हो

क्यूँकि मन के भीतर अस्थिरता हो

क्यूँकि मन के भीतर अनियमकता हो

सोच लें! हम कितने गरीब है!

क्या हमें हमारे नैन कहते है

क्या हमें हमारी साँसें कहती है

क्या हमें हमारी आत्मीयता कहती है

हाँ!

हम गरीब तो क्या उससे भी बदतर है

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"राधाकृष्ण" का युगल स्वरूप अर्थात प्रेम का साक्षातकार कौन नही समझता? पहचानता? मानता?

क्या यह सत्य है?

क्या यह योग्य है?

क्या यह संपूर्णता है?

हाँ! अगर जो पुरुष अंगी है जो यह माने हम पुरुष है तो "राधाकृष्ण" युगल स्वरूप है वह अयोग्य है, अपूर्ण है, असत्य है।

पर जो पुरुष प्रेम में खुद को पुरुष अंगी से प्रियतम अंगी गोपिअंगी परिवर्तित करे तो "राधाकृष्ण" का युगल स्वरूप प्रेम का साक्षातकार है ऐसा समझ सकते है, पहचान सकते है, मान सकते है।

गहराई भरा संकेत है जो जीवन को अमृत और मधुर कर सकता है।

यह स्वरूप बार बार निहाला पर ……….

Vibrant Pushti

“ जय श्री कृष्ण “ 🌷🙏🌷

इतना तो कुछ पता है

यह संसार को कैसे निभाना

यह संसार के साथ कैसे जोड़ना

यह संसार में कैसे संभलना

यह संसार में कैसे तैरना

यह संसार में कैसे रहना

यह संसार में कैसे जीना

हाँ! कैसे है यहाँ के तत्व

हाँ! कैसे है यहाँ के रंग

हाँ! कैसे है यहाँ के कर्म

हाँ! कैसे है यहाँ के संग

हाँ! कैसे है यहाँ के रूप

हाँ! कैसे है यहाँ के मर्म

हाँ! कैसे है यहाँ के भूप

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

थकता ही जा रहा हूँ

थकता ही जा रहा हूँ

यह नयनों से निहालते अत्कृष्ट दृश्यों से

थकता ही जा रहा हूँ

थकता ही जा रहा हूँ

यह अधरों से बहते अभद्र स्वरों से

थकता ही जा रहा हूँ

थकता ही जा रहा हूँ

यह कर्णो से सुनते अविवेक व्यंगों से

थकता ही जा रहा हूँ

थकता ही जा रहा हूँ

यह मन से स्फुरते अकल्पनीय असंस्कृत तरंगों से

थकता ही जा रहा हूँ

थकता ही जा रहा हूँ

यह तन से उभरते अवैद्य रोगों से

थकता ही जा रहा हूँ

थकता ही जा रहा हूँ

यह धन से उठते अविश्वनीय दुष्टता से

थकता ही जा रहा हूँ

थकता ही जा रहा हूँ

यह धारणाओं से अपनाते आडंबर से

थकता ही जा रहा हूँ

थकता ही जा रहा हूँ

यह कर्मो से करते अनैतिकता से

थकता ही जा रहा हूँ

थकता ही जा रहा हूँ

यह बंधनो से बंधते अवैध संबंधों से

थकता ही जा रहा हूँ

थकता ही जा रहा हूँ

यह अलगता से छूटते प्रियता से

थकता ही जा रहा हूँ

थकता ही जा रहा हूँ

यह साँसों से बढ़ती क्रूर जीवन आयुष्य से

थकता ही जा रहा हूँ

थकता ही जा रहा हूँ

यह खुद को खुद से तोड़ते खुद आपखुदी से

थकता ही जा रहा हूँ

थकता ही जा रहा हूँ

यह पुरुषार्थ से धरते विष कृतघ्नता से

पर कोई पल एक प्रीत छू गई श्रीकृष्ण की

हर थकावट नष्ट हो गई - भष्म हो गई - विलीन हो गई

जो खुल गए आंतर चक्षु मेरे जो दृष्टि दृष्टि में प्रियतम समाये

जो गुल गए अमृत मेरे अधर में जो स्वर स्वर से मधुर प्रीत गूँजे

जो संस्कृत हो गए कर्ण मेरे जो सुनते सुमिरन स्मरण प्रियतम के

जो ....

ओह्ह मेरे कृष्ण!

ओ मेरे प्रिये!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"कृष्ण" "कृष्" व्याकरण अर्थ है आकर्षण, सर्व में, सर्वत्र व्याप्त। हमारी धरती खेती प्रधान धरती है और हर रज में कृष् उगता ही है, यह हर रज में। "ण" अस्तित्व है, अस्तित्व होना, सर्वत्र दृश्य और अदृश्य से होना - समाना - बसना - व्यापक होना - ऐक्य होना - आंनद होना - परिवर्तन करना अर्थात नूतन तनु करना वह परम विशुद्ध तत्व को "कृष्ण" कहते है।

"कृष्ण" मेरे कैसे प्रियतम है और प्रेमी है?

जो मुझे प्रीत करें!

जो मुझे सदा जगाये - तुम कौन हो?

जो मुझे सदा योग्य करने खुद को कहीं कहीं रीति से - परिवर्तन से मुझे सिखाये, समझाये, मेरा साथ निभाये।

जो मुझे अपना सर्वत्र लूटा कर मुझसे शुद्ध और पवित्र क्रिया करवाये।

जो मुझमें एकरुप हो कर खुद को सामान्य करके मुझे असामान्य - असाधारण रचाये।

मेरे हर ज्ञान - भाव और परिस्तिथि में मुझे सर्वोत्तम पाठ पढाये।

मुझे मेरी खुद की पहचान कराने ब्रहमांड, जगत, सृष्टि, प्रकृति और संसार को हर तरह का पोषण - पुष्टि कराये।

मुझे हर कक्षा में, हर समय में मेरी रक्षा करें।

मुझमें प्रीत की हर रीत से मुझे खुद में समाये और वह खुद मुझमें समाये।

ओहह मेरे प्रिये!

तुम ही मेरे परम प्रियतम हो! जो मुझे प्यार प्यार और प्यार करते हो।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"पौरुषत्व"

"पुरुष"

"पुरुषार्थ"

"पुरुषोतम"

यही ही है सीडी जो हर मनुष्य को गति करना है।

तो ही वह पुरुष है - स्त्री है - मनुष्य है ।

नहीं तो वह अमानवीय है, पशु है, पंखी है, परतंत्र है।

हर जन्म यही सिद्धांत से ही होता है।

जो सिद्धांत चूक गया, तूट गया, लूट गया, मर गया।

कैसे जीते है हम? कौनसी कक्षा में हम है?

यही समझ के लिए ही यह शरीर, यह तन, यह मन हमें पाया है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

"कन्हैया" कन् + हैया = कन्हैया🌷
कन् अर्थात कहाँ नहीं।
कन् अर्थात कण कण में।
कन् अर्थात कोई भी अवकाश।
कन् अर्थात कोई भी साँस।
हैया - प्रीत का मूल स्थान।🌷
हैया - विश्वास का मूल स्थान।
हैया - धारणा का मूल स्थान।
हैया - पवित्र गति का मूल स्थान।
हैया - पुरुषार्थ का मूल स्थान।
हैया - प्रिये का मूल स्थान।
कन्हैया! कितना माधुर्य है - कहने में🌷
कन्हैया! कितना वात्सल्य है - तन मन में
कन्हैया! कितनी तीव्रता है - स्मरण में
कन्हैया! कितनी शुद्ध गूँज है - आंतरिक पुकार में🌷
कन्हैया! कितनी अनोखी स्वर सरगम है - सुनने में
कन्हैया! कितना अलौकिक शब्द है - लिखने में
कन्हैया! कितना धडकता भरा आनंद है - सीने में
कन्हैया! कितना अद्वैत है - परम - पर एकात्म में🌷
कन्हैया! कितनी प्रीत उत्सती धारा है - आत्म में
कन्हैया! कितनी विरहता है - साँसों की आह में
कन्हैया! कितनी आतुरता है - तन में
कन्हैया! कितनी व्याकुलता है - विरहाग्नि में
कन्हैया! कितनी एकात्मता है - आत्म परमात्मा मिलन में🌷
कन्हैया! कितना समर्पण है - तन मन धन में
कन्हैया! कितना कितना ओह्ह! कितना .... है - तुमसे दूर रहने में
कन्हैया! तु कौन है रे! तु क्या है रे!
ऐसो है मेरो प्रियतम!🌷
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण" 🌷🙏🌷

निकुंज में पधारे
श्री नाथ प्यारे प्यारे
श्री नाथ प्यारे प्यारे
श्री वल्लभ के दुलारे
निकुंज में पधारे
श्री नाथ प्यारे प्यारे
गोवर्धन पर्वत पधारे
गौ गोपि से गौचारण करे
नटखट नटखट लीला रचाये
गिरिराज प्यारे प्यारे
गिरिराज प्यारे प्यारे
गौपालों के रखवाले
निकुंज में पधारे
श्री नाथ प्यारे प्यारे
श्री यमुनाजी तट बिराजे
बंसीवट पर चिर चुराये
गोप गोपि संग रास रचाये
श्याम प्यारे प्यारे
श्यामा के प्यारे प्यारे
प्रियतम हो हमारे
निकुंज में पधारे
श्री नाथ प्यारे प्यारे
श्री नाथ प्यारे प्यारे
पंकज के पुष्टि प्रिये
निकुंज में पधारे
श्री नाथ प्यारे प्यारे
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷
🌷🌷🌷🙏🌷🌷🌷

"केशव" हे केशव! हे केशव! यह चीत्कार था श्री नारदजी का। जब वह जगत विचरण करते रहते है तब केशी नाम धारक अति बलवान दानव उन्हें भटक जाता है। नारदजी ने वह दानव को समझाया कि मुझे अकेला समझ कर तुम अपना कार्य सिद्ध कर पायेगा वह अशक्य है। मुझे अकेला मत समझना।

ओहह! दानव ने उन्हें आहवान किया - हे ब्राहमण! मैं अवश्य मेरा कार्य सिद्ध करके ही रहूँगा और तुम्हें तेरा प्राण मुझे देना ही होगा, चाहे तु किसीको पुकारले।

जैसे नारदजी ने श्री नारायण को पुकारा श्री प्रभु प्रकट हो कर वह केशी दानव का संहार किया तब ही नारदजी के मुख से पुकार उठी - हे केशव! हे केशव!

कितना अदभुत और कितना सूक्ष्म विचरण है श्री कृष्ण का जो हर रूप से हर गति से अपनी प्रीत निभाते है।

हे मेरे प्रियतम!

तुने कहाँ लगाई इति देर अरे ओ कन्हैया!

तुने कैसे कैसे धरे रुप अरे ओ बावरियाँ!

कन्हैया! कन्हैया! कन्हैया! ओ मेरे साथियाँ!

नित् नित् बरसे प्रीत पिया कि

मुख मुख पुकारे नारायण विरह कि

तुने कैसे किया मुझमें प्रीत शृंगार, अरे ओ कन्हैया!

तुने कहाँ लगाई इति देर अरे ओ कन्हैया!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

जीते है सिंधु के देश में

रहते है नर्मदा के देश में

पीते है यमुना के देश में

स्नान है गंगा के देश में

तपते है तापी के देश में

यात्रा है कृष्णा के देश में

पढ़ते है सरस्वती के देश में

बंधते है सतलज के देश में

अर्पते है क्षिप्रा के देश में

पूजते है गोमती के देश में

नमते है चंद्रभागा के देश में

तर्पणते है गोदावरी के देश में

हम इस देश के व्यक्ति है जिस देश में संस्कृति बहती है।

हम इस देश के मानव है जिस देश में प्रकृति खिलती है।

हम इस देश के आत्म है जिस देश में प्रीत तरसती है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"मोहन"

मोहे भूल न जाना हे कन्हैया!

मोहे छोड़ न देना हे कन्हैया!

न तो यह मोह को मारता है पर मोहे उनकी ओर खींचता है

मोहे अपना बनाता है

मोहे अपना करता है

मोहे अपना समझता है

मोहे अपना अपनाता है

यही तो है मोहन जो केवल और केवल मेरे है

यही तो है प्रीत धारण जो केवल मुझ पर न्योछवर करते है

यही तो है आनंद जो केवल मुझ पर लूटाते है।

यही तो है सौंदर्य जो केवल मुझ पर सजाते है।

ओ मेरे मोहन! मेरे तन मन धन के दामन।

तु है तो ही मैं हूँ, मेरे जीवन का सृजन ।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कैसा हूँ मैं?

नजर उठाता हूँ श्याम नजर न आये

नजर फिराता हूँ श्याम नजर न आये

कैसा गिनौना हूँ श्याम ओझल जाये

कैसा डरावना हूँ श्याम दूर जाये

अधर से पुकारता हूँ श्याम न मेरी सुने

अधर से जपता हूँ श्याम न मेरी सुने

कैसा भ्रष्ट हूँ श्याम डर जाये

कैसा भिक्षुक हूँ श्याम हार जाये

तन तड़पाता हूँ श्याम सहारे न आये

तन तरसाता हूँ श्याम सहारे न आये

कैसा पवित्र हूँ श्याम छुपता जाये

कैसा विश्वसनीय हूँ श्याम लज्जाता जाये

मन से स्मरणता हूँ श्याम निकट न आये

मन से ध्यानता हूँ श्याम निकट न आये

कैसा अगम्य हूँ श्याम शरमाता जाये

कैसा निम्न हूँ श्याम दर्दता जाये

ओहह जगत वासी!

ओहह मन वासी!

ओहह तन वासी!

ओहह धन वासी!

ओहह नर्क वासी!

कैसे मैं रहूँ? कैसे क्या करूँ?

श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

हे आकाश

हे धरती

ढूंढता हूँ जिसे तुमने छुपाया कहीं

तेरे सितारें टम टमा कर कहे रहे है

वह यही ही कहीं छुपाया है

तेरे पौधें खील खील कर जता रहे है

वह यही ही कहीं छुपाया है

ढूंढता ही रहूँगा आखिर तक

जब सितारें सूरज हो जायेगा

ढूंढता ही रहूँगा आखिर तक

जब पौधा वृक्ष हो जायेगा

तब तो तु किरण बन कर मेरे साँसों में बस जाएगी

तब तो तु फूल हो कर मेरे आँचल पर छा जाओगी

तब मैं मैं न रहूँगा तु तु न रहेगी

मैं श्याम हो जाऊँगा तु श्यामा हो जाओगी

यही है हमारी जन्म की रीत

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

हे कृष्ण!

तु भी ऐसा दर्द से खुद का इलाज नहीं कर सकता

तु भी ऐसा दर्द से खुद को इतना जलाता है

तु भी ऐसे दर्द से खुद को अनगिनत वेदना में तडपता है

तु भी ऐसे दर्द से खुद से खुद की पहचान खो देता है

तु भी ऐसे दर्द से खुद से खुदा की रुसवाई से आहे भरता है

तु भी ऐसे दर्द से खुद से खुद को बरबादता है

तु भी ऐसे दर्द से खुद से दिल्लगी की तन्हाई में डुबाता है

तु भी ऐसे दर्द से खुद से खुद को लुटाता है

तु भी ऐसे दर्द से खुद को खुद से ध्रुजता है

तु भी ऐसे दर्द से खुद को यह धरती, यह आसमान, यह सागर, यह सूरज, यह वायु से सलगता है

तु भी ऐसे दर्द से खुद को इंतज़ार में भटकाता है

तु भी ऐसे दर्द से अपने आप को विरहता में गुनगुनाता है

तु भी ऐसे दर्द से कुछ लिखता ही रहता है

तु भी ऐसे दर्द से तन मन और धन को भूलता है

तु भी ऐसे दर्द से अपने आपको पुकारता रहता है

यही तो एक सत्य है,

जिसमें जिसको तरछोडा है

जिसमें जिसको निचोड़ा है

जिसमें जिसको नचाया है

जिसमे जिसको रुलाया है

जिसमें जिसको सहा है

जिसमें जिसको बिकाया है

जिसमें जिसको धोकाया है

जिसमें जिसको भरमाया है

पर हे मेरे प्रीत मित्र!

यही तो एक ऐसा आनंद सत्य है जिसने जिसने उन्हें स्पर्शा उन्होंने कुछ पाया है।

हे कृष्ण! तो तु मेरे लिये कुछ नहीं कर सकता।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

तुम मिले तो तुम ऐसे है

हम मिले तो हम ऐसे है

वो मिले तो वो ऐसे है

ये मिले तो ये ऐसे है

ऐसे कैसे मिले तो तुम ऐसे है

ऐसे कैसे मिले तो हम ऐसे है

ऐसे कैसे मिले तो वो ऐसे है

ऐसे कैसे मिले तो ये ऐसे है

यही रफ्तार में तो कहीं रुक गये

यही व्यवहार में तो कहीं भूल गये

यही विचार में तो कहीं खो गये

यही आचार में तो कहीं तुट गये

ऐसी है यह रीत जगत की कोई कैसे कैसे मिले

ऐसी है यह जीत जगत की कोई कैसे कैसे खेले

ऐसी है यह नीत जगत की कोई कैसे कैसे झेले

ऐसी है यह प्रीत जगत की कोई कैसे कैसे महाले

कितने अवतार लिए जगत में

हर हर को मिले

पर

न कोई हर को मिले

न कोई हरि को मिले

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

पता नहीं मेरी नजर में क्या है?

जो मुझे सब नकारात्मक ही नजर आये

जहां मेरी नजर पहुँचे नकारात्मकता ही जगाये

जहां नजर स्पर्शे वैसे ही मुझमें क्रोध ही प्रकटाये

जहां नजर छूते ही मुझमें अयोग्यता ही खिलाये

जैसे नजर पड़ते ही मुझमें अन्याय ही अन्याय दिखाये

जैसे नजर खुलते ही मुझमें असमंजस में ही भरमाये

जैसे नजर गिरते ही मुझे खुद को ही गिराता जाये

जैसे नजर से नजर मिलते ही मुझसे कुछ न कुछ मांगा जाये

जैसे नजर फिरते ही मेरा मन खुद ही भटका जाये

जैसे नजर झुकते ही मेरा रोम रोम शरमाये

सच कैसी है ये नजर मेरी जो मुझे हर तरह से हराये

हे मेरा सत्य! मुझे कुछ भी तरह से बचाय

मेरा जन्म जीवन सुधराय!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

ये नैनन में ऐसा क्या है, जो कुछ जगाने के लिए पल में अपलक और पल में कहीं बार खुल बंध होता है?

ये नैनन में ऐसा क्या है, जो कुछ जिज्ञासा के लिए कहीं कहीं घुमके अटकलें करती है?

ये नैनन में ऐसा क्या है, जो कुछ ढूंढती ढूंढती अपने आप में खो जाती है?

ये नैनन में ऐसा क्या है, जो सदा कोई इंतजार ही होता रहता है?

ये नैनन में ऐसा क्या है, जो सारे जीवन धारा उनमें डूबी रहती है?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

धर्म

अर्थ

काम

मोक्ष

यह क्या है?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

सोचता है सोचता ही रहता हूँ

कौन है कृष्ण? कैसा है कृष्ण?

कहाँ है कृष्ण? क्यूँ है कृष्ण?

किसने अपनाया कृष्ण?

किसने प्रकटाया कृष्ण?

किसने जताया कृष्ण?

किसने कहा कृष्ण?

किसने जगाया कृष्ण?

किसने दर्शाया कृष्ण?

किसने स्पर्शाया कृष्ण?

किसने मिलाया कृष्ण?

किसने तड़पाया कृष्ण?

किसने विरहया कृष्ण?

हे कृष्ण! हे कृष्ण! कृष्ण कृष्ण!

हा कृष्ण! हा कृष्ण! कृष्ण कृष्ण!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कैसे उठ कर दौड़ते है मंदिर

कैसे सोच कर पहुंचते है मंदिर

कैसे नयन से दरशते है मंदिर

कैसी नजर से निहालते है मंदिर

कैसी दृष्टि से सजाते है मंदिर

कैसे स्वर से पाठते है मंदिर

कैसे हस्त से वंदनते है मंदिर

कैसे अंग से दंडवते है मंदिर

कैसे चरण से छूते है मंदिर

कैसे सगा स्नेही से मिलते है मंदिर

कैसे भाव से खेलते है मंदिर

कैसे ज्ञान से आते है मंदिर

कैसी मांग से लूटते है मंदिर

कैसी आश से भरते है मंदिर

कैसे व्यवहार से व्यस्तते है मंदिर

कैसी सेवा से निभाते है मंदिर

कैसे रिस्ते से जुड़ते है मंदिर

कैसे सुख से तोलते है मंदिर

कैसी रज से संवारते है मंदिर

कैसी आज्ञा से अपनाते है मंदिर

कैसे आनंद से तरसाते है मंदिर

कैसी गूँज से पुकारते है मंदिर

कैसे संकल्प से बांधते है मंदिर

कैसी पुष्टि से जगाते है मंदिर

कैसी मर्यादा से पूजते है मंदिर

कैसे ध्यान से ध्वजाते है मंदिर

कैसे भाग्य से भगाते है मंदिर

कैसे व्यापार से निर्माणते है मंदिर

कैसी प्राण प्रतिष्ठा से पूर्णते है मंदिर

कैसी रीतों से बुलाते है मंदिर

हे मेरे विश्वेश्वर! तु ही मेरा संरक्षणेश्वर!

थकता हूँ कितनी घृणाओ से

फिरभी तुजे उजालता जा रहा हूँ। 🌷🙏🌷

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"स्वरुपम एव न जानती"

श्री वल्लभाचार्य

हम अपने आप का स्वरुप नहीं जानते

हम कैसे दूसरे स्वरुप को जानेंगे?

जगत, प्रकृति, सृष्टि अनगिनत स्वरुपों से है, न हम अपने स्वरुप को जानते है न कोई और स्वरुप को पहचानते है। तो हम क्या कर रहे है, कैसी कैसी सेवा और संबंध करते रहते है?

बिना समझ हम

बिना जानत हम

बिना पहचानत हम जो भी कुछ करते है वह व्यर्थ है।

इसीलिए श्री वल्लभाचार्य कहते है

"स्वरुपम एव जानत सर्वम भुनक्तु"

"स्वरुपम एव जानत सर्वम सर्वोत्तम"

"स्वरुपम एव जानत सर्वम सार्थकं"

"स्वरुपम एव जानत सर्व शुद्धतम"

"स्वरुपम एव जानत सर्वम प्रियतम"

बिना जानत हम एक अविचारित जीव हो कर केवल और केवल खुद को भटकाते रहते है, असमंजस हो कर जीते रहते है, हर रीत से घुमते और घुमाते रहते है।

कभी शांति से अकेले बैठ कर सोचों - हम क्या क्या जानते है? केवल पैसा बनाना, प्रतिष्ठा कमाना, माया में लूटना और भटकना।

तो हम सेवा करते है किसकी?

तो हम आज्ञा लेते है किसकी?

तो हम धर्म धारण करते है किसका?

तो हम दर्शन अर्चना करते है किसकी?

ओहह! श्री वल्लभ! 🌷🙏🌷

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"दिक्षु"

गोपिगीत का अलौकिक शब्द है।

गोपिगीत के रच हिता ने गोपि की दृष्टि कितनी अनोखी है, कितनी विशुद्ध है, कितनी सरल है, कितनी प्रीतमयी है, यह समझाया है।

दिक्षु अर्थात ऐसे चर्म चक्षु जो केवल और केवल अपने प्रियतम को ही निहालती रहती है, ढूंढती रहती है, खोजती रहती है, फरकती रहती है, मचलती रहती है, पसरती रहती है, तड़पती रहती है, बरसती रहती है।

यह कक्षा कितनी असाधारण है, जो श्रेष्ठता से ऐसे जीव तत्व में खिलती है जो जीव तत्व को न डर है जगत का, न फिक्र है संसार की, न संकोच है अपने जीवन का, है तो केवल और केवल अपने प्रियतम - कृष्ण! यही तो गोपिगीत की प्राथमिकता है।

यही प्रथम शिक्षा है - पुष्टि सेवा की।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

निर्जल मन से तन को मापा

निर्जल धन से जीवन को मापा

निर्जला एकादशी से तप को मापा

पाया एक भाव

पाया एक ज्ञान

पाया एक ध्यान

पाया एक स्वभाव

जो मन को उजालना हो

जो तन को उजालना हो

जो धन को उजालना हो

जो जीवन को उजालना हो

तो करे परम्पर एकादशी

जो करे निर्मल प्राण

जो करे दोष तमाम

जो करे श्वास सप्रमाण

निर्जला एकादशी की ऐसी है पहचान

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

"ॐ नमः भगवते वासुदेवाय"🌷🙏🌷

"ॐ " क्या है?

"नमः" क्या है?

"भगवते" क्या है?

"वासुदेवाय" क्या है?

🌷🌷🙏🌷🌷

ॐ यह एक निराकार नाद है

यह नाद को हम अपनी आंतरिक जागरुकता से उन्हें हम ब्रह्म में रूपांतर करते है, जो हमारे आत्मा से प्रकट हो कर परमात्मा से एकात्म करने का प्रथम स्वर है - नाद है - हमारा गुणधर्म है।

ॐ हमारी ऊर्जा है जो हमारी आंतरिक शुद्धि को सिद्ध करती है। जो हमारे पंच महाभूत तत्वों को योग्य करके हमारे तन, मन और आत्म में वहन करके सर्वे मूलभूत तत्वों को समांतर करके साक्षर और पवित्र करती है।🌷🙏🌷

"नमः" नमन करता हूँ। नमः को योग्यता से समझना अति आवश्यक है। "नमः" जब भी उच्चारते है - हमारा मस्तिष्क में जो शिखा धरी है, वह सतेज हो कर हमें ज्ञानामृत की धारा से जोड़ देता है। जो हमारे ज्ञान में वृद्धि करके हमें सदा निरहंकारी करती है। जो सदा वनस्पति की तरह स्थिर और झुकने को विस्मृत करती है, प्रणाम करती है, वंदन करती है, नमन करती है। 🌷🙏🌷

"भगवते" भगवते - भग + वते = भगवते।

भग अर्थात छः सिद्धि जो धारण करें हुए,

भग अर्थात छः सिद्धि जो पाये हुए,

भग अर्थात छः सिद्धि से सृष्टि, प्रकृति और धामों को संचालित करता परम तत्व।

"वासुदेवाय" वासुदेवाय - वासु अर्थात जिसने वसुंधरा को अपना बनाया है,

वासु अर्थात जिसने सृष्टि, प्रकृति का हर अहंकार खुद में बसाया है,

वासु अर्थात जो ब्रह्मांड के हर कण कण, रज रज, जर्रा जर्रा में बसे परंब्रह्म तत्व।

जो सर्वज्ञ देते है वह दैवत्व,

जो सर्वत्र लूटाते है वह दैवत्व,

जो कृतज्ञ स्पर्शाते है वह दैवत्व,

जो आनंद प्रकाटते है वह दैवत्व,

जो संरक्षण करते है वह दैवत्व,

जो सेवक प्रीत आचरते है वह दैवत्व।

ओ मेरे परम प्रिय! प्रियतम!

राधा! श्यामा! गोपि! चतुर्थ प्रिया यमुना! मधुरा पुष्टि!

मेरे साँसों से उत्सती

मेरे नाद से स्फूर्ति

मेरे नैन से दमकती

मेरे विचार से सरस्वती

मेरे कर्म से संवरती

मेरे आनंद से संस्कृति

मेरे आत्म से प्रज्वलती

हे परम प्रीत!

तु ही है मेरा -

"ॐ नमः भगवते वासुदेवाय"

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"घर" घर का अर्थ होता है -

जो स्थली सदा संस्कार सिंचन कर सकती हो।

जो स्थली सदा आनंद लुटाती हो।

जो स्थली सदा धर्म का आचरण करती हो।

जो स्थली सदा आशीर्वाद प्रदान करती हो।

जो स्थली सदा संप का शासन करती हो।

जो स्थली जिसमें हर गृहस्थ एक वृक्ष हो।🌳

जो स्थली जिसमें सन्मान और कुर्बान किनारे हो।

जो स्थली जिसमें स्नेह की अमृतधारा बहती हो।

जो स्थली जहां हर पंखी की पुरुषार्थ का आसरा हो।🐥

जो स्थली जहां हर पौधा जीवन का आधार हो।🥀

जो स्थली जिसकी हर नीव अखंड कृत कृत्य हो।

जो स्थली जिसके हर सूर मधुर संगीत हो।

जो स्थली जिसमें परस्पर सेवा का निरधार हो।

जो स्थली जहां पवित्र अर्थोपार्जन का निर्वाह हो।

जो स्थली जहां एकता का ध्वज फरफराता हो।🚩

जो स्थली जहां हर व्यक्ति दास हो।

जो स्थली जहां हर निवासी एक दूजे का सहवासी हो।

जो स्थली जहां हर आश्रित सुरक्षित हो।

जो स्थली जहां हर जिंदगी ख़ुदा की बंदगी हो।🙏

जो स्थली जहां हर रीत प्रीत की गति हो।

जो स्थली जहां जिम्मेदारी निस्वार्थ परायण हो।

जो स्थली जहां एकात्मता की निष्ठा हो।

जो स्थली जहां कर्तव्य न्यास का संतोष हो।

जो स्थली जहां कानापुसि की गूँज न हो।

जो स्थली जहां दिखावा का आचरण न हो।

जो स्थली जहां साथ साथ रहने का शुभ गर्व हो।

जो स्थली जहां आमान्या की वृत्ति हो।

जो स्थली जहां गौचारण का वरदान हो।

जो स्थली जहां यौवन का संवर्धन हो।

जो स्थली जहां हर अक्षर चरण वंदना हो।🙏

जो स्थली जहां आतिथ्य का सत्कार हो।

जो स्थली जहां वडिलों का पूजन हो।🌷

जो स्थली जहां युवाओं की संयम उर्मि हो।

जो स्थली जहां बालक की मधुर लीला हो।

जो स्थली जो किसीकी मिलकत न हो।

जो स्थली केवल विश्वास का धाम हो।

जो स्थली पर हर व्यक्ति का प्रणाम हो।🙏

जो स्थली पर केवल मेरे अनुज का नाम हो।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🙏🌷

नीले आकाश में

श्याम रंग बादल भरे

सुनहरी किरण खिली

जो मेरे मन को कुछ कहने लगी

जो मेरे तन को कुछ छूने लगी

कहती है ऐसा

मन खिलने लगा ऐसा

छूती है ऐसा

तन मचलने लगा ऐसा

सुरीले सूर से कहा

हे मेरे सृजन! तु ही है मेरा श्रेष्ठतम

तु जागा तो सृष्टि जागी

तु खिला तो प्रकृति खिली

तु ही मेरा संरक्षक

तु ही मेरा धर्मधरण

मधुर स्पर्श से छूआ

हे मेरे पुरुषं! तु ही मेरा गतिर्मम

तु उठा तो जग उठा

तु संवारा तो संसार संवर्धना

तु ही मेरा वहन दाता

तु ही मेरा कर्म नियंता

हे मनुष्य! तु ही है मेरी जीवन धन्यता

हे मनुष्य! तु ही है मेरा प्राणं सार्थकता

🌷🌷🙏🌷🌷

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"श्री कृष्ण शरणं मम:" धून गाये
"जय श्री कृष्ण" मंत्र आंतर मुख से जागे
आज श्री वल्लभ पधारे मेरे द्वार
मैं नीत नीत नाचुं आज
ढोल मंजीरा बाजे
उडे लाल गुलाल
प्रीत बंधन की माला सिद्ध करी
ब्रह्म संबंध की आण गंठन करी
पुष्टि रीत कीर्तन से उर्जा जगायी
मधुरम गीत से गूँज उठाई
आये मेरे वल्लभ प्यारे मेरे वल्लभ
पधारे मेरे वल्लभ स्पर्शे मेरे वल्लभ
नजर में वल्लभ नजारों में वल्लभ
नैनों में वल्लभ दर्शन में वल्लभ
होठों पर वल्लभ कर्णों पर वल्लभ
अंग अंग में वल्लभ संग संग में वल्लभ
रोम रोम में वल्लभ रज रज में वल्लभ
साँस साँस में वल्लभ दास दास में वल्लभ
रुप रुप में वल्लभ रुह रुह में वल्लभ
ब्रह्म में वल्लभ ब्रह्मांड में वल्लभ
सृष्टि में वल्लभ युक्ति में वल्लभ
जगत में वल्लभ भक्त में वल्लभ
संसार में वल्लभ सार सार में वल्लभ
आकाश में वल्लभ प्रकाश में वल्लभ
साकार में वल्लभ आकार में वल्लभ
धरती पर वल्लभ हस्ती पर वल्लभ
वल्लभ वल्लभ वल्लभ वल्लभ
🌷🌷🌷🌷🙏🌷🌷🌷🌷
“Vibrant Pushti “
“ जय श्री कृष्ण “ 🌷🙏🌷

मनाते है मनोरथ

जगाते है उत्सव

मन के रथ को दिशा देते है

तन के अंग को शृंगारते है

ऐसे जीवन सजाते है

ऐसे जन्म संवारते है

ब्रह्मांड मिला है ब्रह्म पायेंगे

जगत मिला है जगतनियंता सहायेंगे

सृष्टि मिली है सृजनता सहारेंगे

प्रकृति मिली है प्राकृत्व पीयेंगे

पंचमहाभूत है पंचतत्वों जोडेंगे

ऐसी रीत है जन्म जीवन की

ऐसी रीत है आत्म परमात्मा की

ऐसी प्रीत है श्री प्रभु प्रियतम की

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🙏🌷

निरखते निरखते मैं हो गई

निरखते निरखते मैं खो गई

निरखते निरखते मैं डूब गई

निरखते निरखते मैं भूल गई

निरखते निरखते मैं बन गई

निरखते निरखते मैं पा गई

सच! ऐसा है मेरा कान्हा

सच! ऐसा है मेरा साँवरिया

सच! ऐसा है मेरा गोविंद

सच! ऐसा है मेरा गोपाल

सच! ऐसा है मेरा श्याम

सच! ऐसा है मेरा प्रियतम

"Vibrant Puahti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कुछ तो है यह मन में

कुछ तो है यह तन में

कुछ तो है यह जीवन में

कुछ तो है यह वन में

कुछ तो है यह आँगन में

कुछ तो है यह सावन में

कुछ तो है यह गगन में

कुछ तो है यह चमन में

कुछ तो है यह कंगन में

कुछ तो है यह चरण में

कुछ तो है यह सजन में

कुछ तो है यह लगन में

कुछ तो है ....

प्रीत शरण में 🌷🌷🌷

“Vibrant Pushti “

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

लूटाना इतना जो पानेवाला खद को लूटाना शिख जाय

तडपना इतना जो तडपाने वाला खुद तडपता जाय

पुकारना इतना जो सुनने वाला खुद झुमता जाय

भूलना इतना जो याद आने वाला खुद भूलो में खो जाय

"कान्हा" ऐसी है मेरी प्रीत

न कभी हमसे ....

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

जलते हुए सूरज से जले

तपते हुए रेगिस्तान से जले

सुलगते हुए संसार से जले

आर्त दीप दीपक से जले

पर्वत के पाषाण पत्थर से जले

धगधगते कोयले अंगार से जले

वेदना भरे नयन नजर से जले

प्रीत विरह की याद से जले

जो जलते है वोही जाने

प्रीत की आग निराली

जले तो भी झूमे

फना हो मुस्कुराता मुस्कुराता

“Vibrant Pushti “

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

आज सूरज को देखा

इतना शांत था

जैसे अमावस्या का सागर

आज सागर को देखा

इतना शांत था

जैसे तरुवर की छाया

आज तरुवर को देखा

इतना शांत था

जैसे पंखी का लपकना

आज पंखी को देखा

इतना शांत था

जैसे पशु का वागोलना

आज पशु को देखा

इतना शांत था

जैसे मनुष्य का जागना

आज मनुष्य को देखा

इतना शांत था

जैसे प्रभु का दर्शना

सच! कितना शांत है यह जगत

जो सर्वे को है जीना

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

नैनन के पलके बोले कृष्ण कृष्ण
नैनन की कीकी बोले कृष्ण कृष्ण
नैनन के बिंब बोले कृष्ण कृष्ण
नैनन की नजर बोले कृष्ण कृष्ण
नैनन के तीर बोले कृष्ण कृष्ण
नैनन की वाचा बोले कृष्ण कृष्ण
नैनन के इशारे बोले कृष्ण कृष्ण
नैनन की आतुरता बोले कृष्ण कृष्ण
नैनन के प्रश्न बोले कृष्ण कृष्ण
नैनन की व्याकुलता बोले कृष्ण कृष्ण
नैनन के उत्तर बोले कृष्ण कृष्ण
नैनन की वेदना बोले कृष्ण कृष्ण
नैनन के अश्रु बोले कृष्ण कृष्ण
नैनन की ज्योत बोले कृष्ण कृष्ण
नैनन के नर्तन बोले कृष्ण कृष्ण
नैनन की धारा बोले कृष्ण कृष्ण
नैनन के दर्पण बोले कृष्ण कृष्ण
नैनन की तस्वीर बोले कृष्ण कृष्ण
नैनन के दरवाजे बोले कृष्ण कृष्ण
नैनन की तकदीर बोले कृष्ण कृष्ण
नैनन के गीत बोले कृष्ण कृष्ण
नैनन की अपलकता बोले कृष्ण कृष्ण
नैनन के विरह बोले कृष्ण कृष्ण
नैनन की तृष्णा बोले कृष्ण कृष्ण
नैनन के मिलन बोले कृष्ण कृष्ण
नैनन की प्रीत बोले कृष्ण कृष्ण
नैनन के चरण बोले कृष्ण कृष्ण
हे कृष्ण! हे कृष्ण! हे कृष्ण!
मेरे नैन तेरे दास कृष्ण
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

पंखी बीन कैसे जीऊँ मैं

वह गाये गीत पिया मिलन में

यह है मुझे सिख बीन बादल गगन में

वनस्पति बीन कैसे जीऊँ मैं

वह बिछाये आँचल पिया मिलन में

यह है मुझे सिख वैरान रेगिस्तान में

पशु बीन कैसे जीऊँ मैं

वह निभाये साथ पिया मिलन में

यह है मुझे सिख पथराळ जमीन में

पिया मिलन में एक एक स्पंदन

हर जगाये हर संवारे पिया मिलन

यही मुझे प्रीत सिखाई आत्म जीवन में

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हे इश्क!   क्या है तु? क्यूँ है तु?

तेरे एक साँस से दिल पंकज हो जाता है

तेरे एक अश्क से धडकन पूजा हो जाती है

तेरे एक स्पर्श से आत्म ज्योत हो जाती है

तेरी एक नजर से नयन शरण हो जाता है

तेरी एक सोच से मन पागल हो जाता है

तेरी एक गूँज से रोम स्पंदन हो जाता है

सच मैं ऐसा साँवला हो गया हूँ

हर तरह से हर द्वार भटक रहा हूँ

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

गाँव जाते पगडंडी चलते

गाँव जाते नदी नहाते

गाँव जाते मंदिर दर्शते

गाँव जाते पैड चढते

गाँव जाते उजाणी करते

गाँव जाते वडील मिलते

गाँव जाते मन बहलाते

गाँव जाते तनमन गाते

गाँव जाते धन लूटाते

गाँव जाते थाक उतारते

गाँव जाते उत्सव मनाते

गाँव जाते सबकुछ भूलते

ओहहह मेरा गाँव!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कैसे है रे नैन तेरे

जो हर नैनन से मुझे निहारे

कैसा है रे निहार तेरा

जो हर नजर से मुझे पुकारे

कैसी है पुकार तेरी

जो हर निगाह से मुझे संवारे

कैसा है संवारना तेरा

जो हर पलक से मुझे करारे

कैसा है करार तेरा

जो हर दृष्टि से मुझे एकरारे

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

वार्ता कर दिया चरित्र को

इतिहास कर दिया एक सत्य को

भूतकाल कर दिया वर्तमान को

सुख कर दिया सच्चिदानंद को

दु:ख कर दिया एक विशुद्ध दर्द को

देव कर दिया परमेश्वर को

साधन कर दिया साक्षात को

नेह कर दिया परमप्रीत को

यंत्र कर दिया प्राकृतिक को

विष कर दिया विश्वास को

कैसे है हम!

जो पूर्ण पुरुषोत्तम रुप से प्रकट भये

श्री कृष्ण कन्हैया को आकार कर दिया

कुछ करें ऐसा जो आकार को साकार कर दे

कुछ जगायें ऐसा जो निराकार को साकार कर दे

ओहहहह! श्री वल्लभ!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

थाडे से खडा हूँ कबसे

न मैया यशोदा आयी

न प्रिय राधा आयी

झुके हुए नैन से

रुके हुए अधर से

न थकता हूँ इंतजार करते

न हारता हूँ बेकरार सोचते

वात्सल्य की रीत निराली

प्रीत की गति अमृतावली

थाडे से मुझे संवारे

आंतर विरहाग्नि से जगत संवारुँ

जन जन पुकारें हे साँवरिया!

पुष्टि प्रीत का स्पर्श अनोखा

हर स्पर्श से मैया पायी

हर साँस से प्रिया पायी

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

क्या होता है

कुछ होता है

किसके लिए होता है

कौन करता है

जो मन से खींचता है

जो तन से पुकारता है

जो नैन से निहालता है

जो धन से व्यवस्थापकता है

जो साँस से एक करता है

जो याद से निकट रहता है

जो अक्षर से जुडता है

जो स्वर से स्पर्शता है

ओ मेरे कृष्ण!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

जो नैन में बसे

जो दिल में ठहरे

वो कहा जाये?

जो होठों पर बसे

जो धडकन में ठहरे

वो कहा जाये?

जो मन में बसे

जो आत्म में ठहरे

वो कहा जाये?

जो आँचल में बसे

जो बिंदिया में ठहरे

वो कहा जाये?

जो कंगना में बसे

जो पायल में ठहरे

वो कहा जाये?

अरे कान्हा! तु कैसे जायेगा?

हाँ! अगर तु मुझे तुझमें समाये

तो तु मुझमें से जायेगा

ऐसा करले!

तु चाहे वह करले

बस यही ही एक रीत है

जो तु मुझमें न ठहरेगा

कोई बात नहीं

मैं तुझमें ठहरुँगी

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"दान" कितना विशिष्ट, कितना सामर्थ्यक, कितना सार्थक, कितना कृतज्ञत्क शब्द है जो पढते, जो सुनते और जो कहते समय में, मन में, तन में और धन में अदभुत परिवर्तन हो जाता है।

संस्कृति का अनोखा धर्म है

जीवन का अलौकिक कर्म है

सृष्टि का शुद्धनैतिक फल है

प्रकृति का संतुलन धरण है

जीव के अधोगत, अनैतिक, अभद्र, अघटित, निर्लज्ज, निर्दय, क्रुर क्रिया, मानसिकता, वृत्ति, कृति का आमूल विशुद्ध परिवर्तन "दान" से होता है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

द्वार जगत के जितने

वहाँ श्री प्रभु अटल

घर घर पहुंच कर टहल पुकारे

मैं तेरा तु मेरा

जाग मेरा मन

जाग मेरा जन

जन जन प्रीत जगाना

यही करम की रीत

जो आत्म परमआत्म मिलाये

सदा जागना सदा स्मरणना

सदा अपनों से अपनों मिलाना

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

"वल्लभ"

ब्रहमांड का आनंद है

प्रकृति की वसंत है

सृष्टि की मधुरता है

जगत की सुबह है

संसार की खुशी है

"वल्लभ" कोई शब्द नहीं है, नाम नहीं है।

"वल्लभ" कोई मंत्र नहीं है, कोई जप नहीं है।

"वल्लभ" कोई व्यक्ति नहीं है, कोई संस्कृति नहीं है।

"वल्लभ" कोई साधन नहीं है, कोई संबंध नहीं है।

"वल्लभ" तो उर्जा है, स्पर्श है।

"वल्लभ" तो अनुभूति है, अनुमति है।

"वल्लभ" तो साक्षात है, सर्वज्ञ है।

"वल्लभ" तो विशुद्ध है, विश्वास है।

"वल्लभ" तो सत्य है, सर्जन है।

"वल्लभ" तो सेवा है, प्रीत है।

"वल्लभ" का हृदयस्थ और आत्मसात अर्थ है - आनंद।

जीवन के हर प्रकार का आनंद में वल्लभ समाये हुए है।

वल्लभ है - आनंद है।

जीव है तो वल्लभ है - वल्लभ है तो आनंद है

जीव तत्व के हर तत्व में आनंद है

यही ही पुष्टि सेवा प्रीत रीत है।

प्रकट भये श्री वल्लभ

पधारे हमारे द्वार द्वार

हर तन मन धन आत्म

व्रज रज बने, यमुना बने

हर रोम रोम साँस साँस

गोवर्धन बने, अष्टसखा बने

कण कण पुष्टि धाम

हर निकुंज हर यमुना घाट

श्री वल्लभ बसे घट घट

यही है पुष्टि वैष्णव लीला

ऐसे ही बसे "श्री नाथजी नाथ"

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"श्री कृष्ण शरणं मम:" धून गाये
"जय श्री कृष्ण" मंत्र आंतर मुख से जागे
आज श्री वल्लभ पधारे मेरे द्वार
मैं नीत नीत नाचुं आज
ढोल मंजीरा बाजे
उडे लाल गुलाल
प्रीत बंधन की माला सिद्ध करी
ब्रह्म संबंध की आण गंठन करी
पुष्टि रीत कीर्तन से उर्जा जगायी
मधुरम गीत से गूँज उठाई
आये मेरे वल्लभ प्यारे मेरे वल्लभ
पधारे मेरे वल्लभ स्पर्शे मेरे वल्लभ
नजर में वल्लभ नजारों में वल्लभ
नैनों में वल्लभ दर्शन में वल्लभ
होठों पर वल्लभ कर्णों पर वल्लभ
अंग अंग में वल्लभ संग संग में वल्लभ
रोम रोम में वल्लभ रज रज में वल्लभ
साँस साँस में वल्लभ दास दास में वल्लभ
रुप रुप में वल्लभ रुह रुह में वल्लभ
ब्रह्म में वल्लभ ब्रह्मांड में वल्लभ
सृष्टि में वल्लभ युक्ति में वल्लभ
जगत में वल्लभ भक्त में वल्लभ
संसार में वल्लभ सार सार में वल्लभ
आकाश में वल्लभ प्रकाश में वल्लभ
साकार में वल्लभ आकार में वल्लभ
धरती पर वल्लभ हस्ती पर वल्लभ
वल्लभ वल्लभ वल्लभ वल्लभ
🌷🌷🌷🌷🙏🌷🌷🌷🌷
“Vibrant Pushti “

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

मनाते है मनोरथ

जगाते है उत्सव

मन के रथ को दिशा देते है

तन के अंग को शृंगारते है

ऐसे जीवन सजाते है

ऐसे जन्म संवारते है

ब्रह्मांड मिला है ब्रह्म पायेंगे

जगत मिला है जगतनियंता सहायेंगे

सृष्टि मिली है सृजनता सहारेंगे

प्रकृति मिली है प्राकृत्व पीयेंगे

पंचमहाभूत है पंचतत्वों जोडेंगे

ऐसी रीत है जन्म जीवन की

ऐसी रीत है आत्म परमात्मा की

ऐसी प्रीत है श्री प्रभु प्रियतम की

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

निरखते निरखते मैं हो गई

निरखते निरखते मैं खो गई

निरखते निरखते मैं डूब गई

निरखते निरखते मैं भूल गई

निरखते निरखते मैं बन गई

निरखते निरखते मैं पा गई

सच! ऐसा है मेरा कान्हा

सच! ऐसा है मेरा साँवरिया

सच! ऐसा है मेरा गोविंद

सच! ऐसा है मेरा गोपाल

सच! ऐसा है मेरा श्याम

सच! ऐसा है मेरा प्रियतम

"Vibrant Puahti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कुछ तो है यह मन में

कुछ तो है यह तन में

कुछ तो है यह जीवन में

कुछ तो है यह वन में

कुछ तो है यह आँगन में

कुछ तो है यह सावन में

कुछ तो है यह गगन में

कुछ तो है यह चमन में

कुछ तो है यह कंगन में

कुछ तो है यह चरण में

कुछ तो है यह सजन में

कुछ तो है यह लगन में

कुछ तो है ....

प्रीत शरण में 🌷🌷🌷

“Vibrant Pushti “

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

लूटाना इतना जो पानेवाला खद को लूटाना शिख जाय

तडपना इतना जो तडपाने वाला खुद तडपता जाय

पुकारना इतना जो सुनने वाला खुद झुमता जाय

भूलना इतना जो याद आने वाला खुद भूलो में खो जाय

"कान्हा" ऐसी है मेरी प्रीत

न कभी हमसे ....

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

जलते हुए सूरज से जले

तपते हुए रेगिस्तान से जले

सुलगते हुए संसार से जले

आर्त दीप दीपक से जले

पर्वत के पाषाण पत्थर से जले

धगधगते कोयले अंगार से जले

वेदना भरे नयन नजर से जले

प्रीत विरह की याद से जले

जो जलते है वोही जाने

प्रीत की आग निराली

जले तो भी झूमे

फना हो मुस्कुराता मुस्कुराता

“Vibrant Pushti “

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

आज सूरज को देखा

इतना शांत था

जैसे अमावस्या का सागर

आज सागर को देखा

इतना शांत था

जैसे तरुवर की छाया

आज तरुवर को देखा

इतना शांत था

जैसे पंखी का लपकना

आज पंखी को देखा

इतना शांत था

जैसे पशु का वागोलना

आज पशु को देखा

इतना शांत था

जैसे मनुष्य का जागना

आज मनुष्य को देखा

इतना शांत था

जैसे प्रभु का दर्शना

सच! कितना शांत है यह जगत

जो सर्वे को है जीना

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

नैनन के पलके बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन की कीकी बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन के बिंब बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन की नजर बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन के तीर बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन की वाचा बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन के इशारे बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन की आतुरता बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन के प्रश्न बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन की व्याकुलता बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन के उत्तर बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन की वेदना बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन के अश्रु बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन की ज्योत बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन के नर्तन बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन की धारा बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन के दर्पण बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन की तस्वीर बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन के दरवाजे बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन की तकदीर बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन के गीत बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन की अपलकता बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन के विरह बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन की तृष्णा बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन के मिलन बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन की प्रीत बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन के चरण बोले कृष्ण कृष्ण

हे कृष्ण! हे कृष्ण! हे कृष्ण!

मेरे नैन तेरे दास कृष्ण

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

पंखी बीन कैसे जीऊँ मैं

वह गाये गीत पिया मिलन में

यह है मुझे सिख बीन बादल गगन में

वनस्पति बीन कैसे जीऊँ मैं

वह बिछाये आँचल पिया मिलन में

यह है मुझे सिख वैरान रेगिस्तान में

पशु बीन कैसे जीऊँ मैं

वह निभाये साथ पिया मिलन में

यह है मुझे सिख पथराळ जमीन में

पिया मिलन में एक एक स्पंदन

हर जगाये हर संवारे पिया मिलन

यही मुझे प्रीत सिखाई आत्म जीवन में

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हे इश्क! क्या है तु? क्यूँ है तु?

तेरे एक साँस से दिल पंकज हो जाता है

तेरे एक अश्क से धडकन पूजा हो जाती है

तेरे एक स्पर्श से आत्म ज्योत हो जाती है

तेरी एक नजर से नयन शरण हो जाता है

तेरी एक सोच से मन पागल हो जाता है

तेरी एक गूँज से रोम स्पंदन हो जाता है

सच मैं ऐसा साँवला हो गया हूँ

हर तरह से हर द्वार भटक रहा हूँ

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

गाँव जाते पगडंडी चलते

गाँव जाते नदी नहाते

गाँव जाते मंदिर दर्शते

गाँव जाते पैड चढते

गाँव जाते उजाणी करते

गाँव जाते वडील मिलते

गाँव जाते मन बहलाते

गाँव जाते तनमन गाते

गाँव जाते धन लूटाते

गाँव जाते थाक उतारते

गाँव जाते उत्सव मनाते

गाँव जाते सबकुछ भूलते

ओहहह मेरा गाँव!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कैसे है रे नैन तेरे

जो हर नैनन से मुझे निहारे

कैसा है रे निहार तेरा

जो हर नजर से मुझे पुकारे

कैसी है पुकार तेरी

जो हर निगाह से मुझे संवारे

कैसा है संवारना तेरा

जो हर पलक से मुझे करारे

कैसा है करार तेरा

जो हर दृष्टि से मुझे एकरारे

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

वार्ता कर दिया चरित्र को

इतिहास कर दिया एक सत्य को

भूतकाल कर दिया वर्तमान को

सुख कर दिया सच्चिदानंद को

दु:ख कर दिया एक विशुद्ध दर्द को

देव कर दिया परमेश्वर को

साधन कर दिया साक्षात को

नेह कर दिया परमप्रीत को

यंत्र कर दिया प्राकृतिक को

विष कर दिया विश्वास को

कैसे है हम!

जो पूर्ण पुरुषोत्तम रुप से प्रकट भये

श्री कृष्ण कन्हैया को आकार कर दिया

कुछ करें ऐसा जो आकार को साकार कर दे

कुछ जगायें ऐसा जो निराकार को साकार कर दे

ओहहहह! श्री वल्लभ!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

थाडे से खडा हूँ कबसे

न मैया यशोदा आयी

न प्रिय राधा आयी

झुके हुए नैन से

रुके हुए अधर से

न थकता हूँ इंतजार करते

न हारता हूँ बेकरार सोचते

वात्सल्य की रीत निराली

प्रीत की गति अमृतावली

थाडे से मुझे संवारे

आंतर विरहाग्नि से जगत संवारुँ

जन जन पुकारें हे साँवरिया!

पुष्टि प्रीत का स्पर्श अनोखा

हर स्पर्श से मैया पायी

हर साँस से प्रिया पायी

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

क्या होता है

कुछ होता है

किसके लिए होता है

कौन करता है

जो मन से खींचता है

जो तन से पुकारता है

जो नैन से निहालता है

जो धन से व्यवस्थापकता है

जो साँस से एक करता है

जो याद से निकट रहता है

जो अक्षर से जुडता है

जो स्वर से स्पर्शता है

ओ मेरे कृष्ण!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

क्या क्या जाना इस दुनिया से

क्या क्या समझा इस जगत से

क्या क्या सिंचा इस संसार से

क्या क्या पाया इस जन्म से

क्या क्या ढूँढा इस प्रकृति से

क्या क्या संवारा इस सृष्टि से

धारण किया मानव जीवन किस किस को कैसे पहचाना

मानव से मुमुक्षु बने मुमुक्षु से मनुष्य

मनुष्य से मानव हुए

या

मनुष्य से माहंध हुए

या

मनुष्य से महादेव हुए

जन्म जन्म की रीत निराली

जो जागा वह बुद्ध हुए

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

जो नैन में बसे

जो दिल में ठहरे

वो कहा जाये?

जो होठों पर बसे

जो धडकन में ठहरे

वो कहा जाये?

जो मन में बसे

जो आत्म में ठहरे

वो कहा जाये?

जो आँचल में बसे

जो बिंदिया में ठहरे

वो कहा जाये?

जो कंगना में बसे

जो पायल में ठहरे

वो कहा जाये?

अरे कान्हा! तु कैसे जायेगा?

हाँ! अगर तु मुझे तुझमें समाये

तो तु मुझमें से जायेगा

ऐसा करले!

तु चाहे वह करले

बस यही ही एक रीत है

जो तु मुझमें न ठहरेगा

कोई बात नहीं

मैं तुझमें ठहरुँगी

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कहीं तरह से सोच लगाई

कहीं तरह से स्मरण जगाई

कहीं तरह से याद संवारी

हे कान्हा! जो भी बिरहाई, मैं खुद को रोक न पाई

कहीं तरह से दर्शन लगाई

कहीं तरह से कीर्तन सुनाई

कहीं तरह से मनोरथ सजाई

हे कान्हा! जो भी पधराई, मैं खुद को लूटा न सका

कहीं रीत से आश बढाई

कहीं रीत से साँस उठाई

कहीं रीत से दास धराई

हे कान्हा! जो भी लूटाई, मैं खुद को स्पर्श न रंगाई

कैसा है यह जन्म

कैसा है यह जीवन

कैसा है यह जगत

हे कान्हा! जो भी रचाई, मैं खुद को कैसा खेल खेलाई

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कृष्ण तु क्यां नथी होतो

आम ज घुमतो भटकतो

कोई व्यक्ति मळे

तो ते स्नेही थई जतो

आम ज हरतो फरतो

कोई साथ मळे

तो ते साथी थई जतो

कृष्ण तु क्यां नथी होतो

नजर ज नजर फरकती

कोई नैन मळे

तो ते प्रेमी थई जतो

कृष्ण तु क्यां नथी होतो

याद थी याद गूँजती

कोई हिचकी मळे

तो ते आत्मीयता अनुभवतो

कृष्ण तु क्यां नथी होतो

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

पलक उघडते ही स्मरण मेरे श्री नाथजी के

नैन खुलते ही दर्शन मेरे श्री नाथजी के

होठ फडफडते ही पुकार मेरे श्री नाथजी के

हस्त उठते ही वंदन मेरे श्री नाथजी के

पैर चलते ही दंडवत मेरे श्री नाथजी के

मेरे श्री नाथजी के मेरे श्री नाथजी के

मेरे श्री नाथजी के मेरे श्री नाथजी के

मन जागते ही तडपे मेरे श्री नाथजी

तन उठते ही नाचे मेरे श्री नाथजी

धन खिलते ही बरसे मेरे श्री नाथजी

आत्म तेजते ही प्रकटे मेरे श्री नाथजी

आत्म परमात्मा मिलते ही एक मेरे श्री नाथजी

मेरे श्री नाथजी मेरे श्री नाथजी

मेरे श्री नाथजी मेरे श्री नाथजी

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

मेरा शरण है वल्लभाचार्य

मेरी सृष्टि है यमुनाराणी

सरपे पुष्टि संस्कृति

दिल है अष्टसखा रुहानी

निकल पडे है जय श्री कृष्ण कहके

पुष्टि पंथ समझने

श्री श्री नाथजी को मिलने

गोवर्धन परिक्रमा करने

ठहरना गोविंद धून पुकारनी

चलना गौचारण जगानी

सरपे पुष्टि संस्कृति

दिल है अष्टसखा रुहानी

ब्रह्मसंबंध तुलसी माला धर

वैष्णव तन मन जगाने

रोम रोम श्री कृष्ण प्रकटाने

नित्य सत्य रमत खेलने

पलटना संसार वृत्ति छोडके

छूटना अहंकार अंग जलाके

सरपे पुष्टि संस्कृति

दिल है अष्टसखा रुहानी

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

मेरा भाग्य नहीं है

मैं "माँ" हो

सदा अफसोस है

मैं "माँ" नहीं

पर

मेरी "माँ" है

"माँ" से समझा नारी क्या है

"माँ" से समझा स्त्री क्या है

"माँ" से समझा धरती क्या है

"माँ" से समझा नदी क्या है

"माँ" से समझा संगीत क्या है

"माँ" से समझा शक्ति क्या है

"माँ" से समझा प्रीत क्या है

"माँ" से समझा ममता क्या है

"माँ" से समझा सन्मान क्या है

"माँ" से समझा वंदन क्या है

"माँ" से समझा आशीर्वाद क्या है

"माँ" से समझा देना क्या है

"माँ" से समझा गृह क्या है

"माँ" से समझा कुटुंब क्या है

"माँ" से समझा संस्कृति क्या है

"माँ" से समझा सुश्रुति क्या है

"माँ" से समझा आनंद क्या है

"माँ" से समझा भेट क्या है

"माँ" से समझा नम्रता क्या है

"माँ" से समझा विश्वास क्या है

"माँ" से समझा छाया क्या है

"माँ" से समझा सुरक्षा क्या है

"माँ" से समझा त्याग क्या है

"माँ" से समझा व्यवस्था क्या है

"माँ" से समझा जन्म क्या है

"माँ" से समझा जीवन क्या है

"माँ" से समझा धर्म क्या है

"माँ" से समझा कर्म क्या है

"माँ" से समझा आँचल क्या है

"माँ" से समझा सत्य क्या है

"माँ" से समझा स्पर्श क्या है

ओ माँ!   मेरी प्यारी माँ!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🙏🌷

करता हूँ बंध पलकें

तेरी रुस्वाई हमें पुकारती है

हे जग जीव!

तेरे नयनों से सौंदर्य सजाऊँ

करता हूँ अधर चिपके

तेरी मुस्कान हमें कहलाये

हे जीवन जीव!

तेरे खंजन से मुखडा नचाऊ

धरता हूँ मौन शरमा के

तेरी सूरत हमें सुनाएँ

हे अंश जीव!

तेरी शांता से तुझें समाऊं

हे गोपी!

तु ही मैं हूँ

मैं ही तुम हूँ

यही है सृष्टि का जीवंत

यही है प्रकृति का बंधन

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

जगाया कृष्ण का ज्ञान मेरे मन मंदिर में

उदभाया कृष्ण का भाव मेरे अंग अंग में

पधराया कृष्ण का पार्दुभाव मेरे चित्त में

बसाया कृष्ण का प्रेम मेरे आत्म में

रंगाया कृष्ण का रंग मेरे तरंग में

स्पर्शाया कृष्ण का चरित्र मेरे जीवन में

सजाया कृष्ण का शृंगार मेरे आँचल में

हे वल्लभ! आपने

हे यमुना! आपने

हे गोवर्धन! आपने

हे राधा! आपने

हे गोपि! आपने

हे अष्टसखा! आपने

हे वैष्णव! आपने

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

किसीने किसीसे कहा

"तुम पुरुष हो इसलिए तुम चाहो वह कर सकते हो"

"तुम स्त्री हो इसलिए तुम चाहो वह कर सकते हो"

न पुरुष होने से

न स्त्री होने से

चाहे वह कर सकते है

कोई भी सर्व योग्य कर सकता है जो सत्य हो, धर्मशील हो, सत्य वृत्ति हो, पवित्र विचार हो।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

कैसा है रे कान्हा तु

एक बार तेरा नाम धारण कर लिया तो तु मेरा हो गया

एक बार तेरा धाम पहुँच गया तो तुने मेरा घर बसा लिया

एक बार तेरा दर्शन कर लिया तो तुने तिरछी नजर से अपना बना लिया

एक बार तुझे पुकार लिया तो तुने मेरा हाथ थाम लिया

एक बार तेरा चरण स्पर्श कर लिया तो तुने गले लगा दिया

एक बार तुझे भूल गया तो तुने तेरी विरह रस की यादों में मुझे पागल कर दिया

ओहह मेरे कान्हा! निराली तेरी अदा!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

अपने प्रियतम प्रेमी "श्री कृष्ण" को हम कैसे भाव से पुकारेंगे?

जैसे

नरसिंह महेता ने - शामलिया अर्थात - श्यामलिया

मीराबाई ने - गिरिधर

कोई माधव

कोई मोहन

कोई श्याम

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🙏🌷🌷

द्युत - अकर्मीय धन उपभोग कर रहे है।

व्यशन - पानम - रोग - अनिद्रा पी रहे है।

व्यभिचार - गुरु - मातापिता - श्री प्रभु के नैनों में अश्रु समझलो व्यभिचार कर रहे है।

हिंसा - असैद्धांतिक रीति अपनाये।

हम कहाँ कहाँ रहते है?

हम कहाँ क्या क्या करते है?

हम कहाँ क्या क्या खाते पीते है?

हम कहाँ क्या क्या कहते है?

यही ही कलियुग है।

हम ही कलियुग कि उत्पत्ति है।

हम ही कलियुग को सिंचते है।

हम ही कलियुग को पोषते है।

जो दूसरे के द्ववारा खुद को उठाते है।

यह कलयुग है।

ओहह! कुछ समझे

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

अपने प्रियतम प्रेमी "श्री कृष्ण" को हम कैसे भाव से पुकारेंगे?

जैसे

नरसिंह महेता ने - शामलिया अर्थात - श्यामलिया

मीराबाई ने - गिरिधर

कोई माधव

कोई मोहन

कोई श्याम

कोई गोविंद

कोई गोपाल

कोई गोवर्धन

कोई वासुदेव

कोई वार्ष्णेय

कोई दामोदर

कोई केशव

कोई नंदलाल

कोई राधे

कोई कृष्ण

कोई कन्हैया

कोई कान्हा

कोई लल्ला

कोई बाल कृष्ण

कोई द्वारकाधीश

कोई विठ्ठल

कोई नवनीत

कोई नरसिंह

कोई गोकुलेश

कोई मुकुंद

कोई पुरुषोत्तम

कोई मधुसूदन

कोई मुरारी

कोई श्रीनाथजी

कोई योगेश्वर

कोई जगदीश

कोई नटवर

कोई जगन्नाथ

कोई मदन मोहन

कोई वल्लभ

और कहीं है

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🙏🌷🌷

खेलते है मनुष्य से

हँसते है मनुष्य से

खेलते है पशु से

हँसते है पशु से

खेलते है सृष्टि से

हँसते है मानव से

खेलते है प्रकृति से

हँसते है संस्कृति से

खेलते है वृत्ति से

हँसते है स्वार्थ से

खेलते है प्रीत से

हँसते है बेवफा से

खेलते है भगवान से

हँसते है नास्तिक से

हाँ! समय समझ की रीत है

जो जिये है वह जगसार

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🙏🌷

"कृष्ण" "कृष्" व्याकरण अर्थ है आकर्षण, सर्व में, सर्वत्र व्याप्त। हमारी धरती खेती प्रधान धरती है और हर रज में कृष् उगता ही है, यह हर रज में। "ण" अस्तित्व है, अस्तित्व होना, सर्वत्र दृश्य और अदृश्य से होना - समाना - बसना - व्यापक होना - ऐक्य होना - आंनद होना - परिवर्तन करना अर्थात नूतन तनु करना वह परम विशुद्ध तत्व को "कृष्ण" कहते है।

"कृष्ण" मेरे कैसे प्रियतम है और प्रेमी है?

जो मुझे प्रीत करें!

जो मुझे सदा जगाये - तुम कौन हो?

जो मुझे सदा योग्य करने खुद को कहीं कहीं रीति से - परिवर्तन से मुझे सिखाये, समझाये, मेरा साथ निभाये।

जो मुझे अपना सर्वत्र लूटा कर मुझसे शुद्ध और पवित्र क्रिया करवाये।

जो मुझमें एकरुप हो कर खुद को सामान्य करके मुझे असामान्य - असाधारण रचाये।

मेरे हर ज्ञान - भाव और परिस्तिथि में मुझे सर्वोत्तम पाठ पढाये।

मुझे मेरी खुद की पहचान कराने ब्रहमांड, जगत, सृष्टि, प्रकृति और संसार को हर तरह का पोषण - पुष्टि कराये।

मुझे हर कक्षा में, हर समय में मेरी रक्षा करें।

मुझमें प्रीत की हर रीत से मुझे खुद में समाये और वह खुद मुझमें समाये।

ओहह मेरे प्रिये!

तुम ही मेरे परम प्रियतम हो! जो मुझे प्यार प्यार और प्यार करते हो।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"पौरुषत्व"

"पुरुष"

"पुरुषार्थ"

"पुरुषोतम"

यही ही है सीडी जो हर मनुष्य को गति करना है।

तो ही वह पुरुष है - स्त्री है - मनुष्य है ।

नहीं तो वह अमानवीय है, पशु है, पंखी है, परतंत्र है।

हर जन्म यही सिद्धांत से ही होता है।

जो सिद्धांत चूक गया, तूट गया, लूट गया, मर गया।

कैसे जीते है हम? कौनसी कक्षा में हम है?

यही समझ के लिए ही यह शरीर, यह तन, यह मन हमें पाया है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

"कन्हैया" कन् + हैया = कन्हैया🌷

कन् अर्थात कहाँ नहीं।

कन् अर्थात कण कण में।

कन् अर्थात कोई भी अवकाश।

कन् अर्थात कोई भी साँस।

हैया - प्रीत का मूल स्थान।🌷

हैया - विश्वास का मूल स्थान।

हैया - धारणा का मूल स्थान।

हैया - पवित्र गति का मूल स्थान।

हैया - पुरुषार्थ का मूल स्थान।

हैया - प्रिये का मूल स्थान।

कन्हैया! कितना माधुर्य है - कहने में🌷

कन्हैया! कितना वात्सल्य है - तन मन में

कन्हैया! कितनी तीव्रता है - स्मरण में

कन्हैया! कितनी शुद्ध गूँज है - आंतरिक पुकार में🌷

कन्हैया! कितनी अनोखी स्वर सरगम है - सुनने में

कन्हैया! कितना अलौकिक शब्द है - लिखने में

कन्हैया! कितना धडकता भरा आनंद है - सीने में

कन्हैया! कितना अद्वैत है - परम - पर एकात्म में🌷

कन्हैया! कितनी प्रीत उत्सती धारा है - आत्म में

कन्हैया! कितनी विरहता है - साँसों की आह में

कन्हैया! कितनी आतुरता है - तन में

कन्हैया! कितनी व्याकुलता है - विरहाग्नि में

कन्हैया! कितनी एकात्मता है - आत्म परमात्मा मिलन में🌷

कन्हैया! कितना समर्पण है - तन मन धन में

कन्हैया! कितना कितना ओह्ह! कितना ………… है - तुमसे दूर रहने में

कन्हैया! तु कौन है रे! तु क्या है रे!

ऐसो है मेरो प्रियतम!🌷

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"

निकुंज में पधारे
श्री नाथ प्यारे प्यारे
श्री नाथ प्यारे प्यारे
श्री वल्लभ के दुलारे

निकुंज में पधारे
श्री नाथ प्यारे प्यारे

गोवर्धन पर्वत पधारे
गौ गोपि से गौचारण करे
नटखट नटखट लीला रचाये
गिरिराज प्यारे प्यारे

गिरिराज प्यारे प्यारे
गौपालों के रखवाले

निकुंज में पधारे
श्री नाथ प्यारे प्यारे

श्री यमुनाजी तट बिराजे
बंसीवट पर चिर चुराये
गोप गोपि संग रास रचाये
श्याम प्यारे प्यारे

श्यामा के प्यारे प्यारे
प्रियतम हो हमारे

निकुंज में पधारे
श्री नाथ प्यारे प्यारे
श्री नाथ प्यारे प्यारे
पंकज के पुष्टि प्रिये

निकुंज में पधारे
श्री नाथ प्यारे प्यारे
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷
🌷🌷🌷🙏🌷🌷🌷

"केशव" हे केशव! हे केशव! यह चीत्कार था श्री नारदजी का। जब वह जगत विचरण करते रहते है तब केशी नाम धारक अति बलवान दानव उन्हें भटक जाता है। नारदजी ने वह दानव को समझाया कि मुझे अकेला समझ कर तुम अपना कार्य सिद्ध कर पायेगा वह अशक्य है। मुझे अकेला मत समझना।

ओहह! दानव ने उन्हें आहवान किया - हे ब्राहमण! मैं अवश्य मेरा कार्य सिद्ध करके ही रहूँगा और तुम्हें तेरा प्राण मुझे देना ही होगा, चाहे तु किसीको पुकारले।

जैसे नारदजी ने श्री नारायण को पुकारा श्री प्रभु प्रकट हो कर वह केशी दानव का संहार किया तब ही नारदजी के मुख से पुकार उठी - हे केशव! हे केशव!

कितना अदभुत और कितना सूक्ष्म विचरण है श्री कृष्ण का जो हर रूप से हर गति से अपनी प्रीत निभाते है।

हे मेरे प्रियतम!

तुने कहाँ लगाई इति देर अरे ओ कन्हैया!

तुने कैसे कैसे धरे रुप अरे ओ बावरियाँ!

कन्हैया! कन्हैया! कन्हैया! ओ मेरे साथियाँ!

नित् नित् बरसे प्रीत पिया कि

मुख मुख पुकारे नारायण विरह कि

तुने कैसे किया मुझमें प्रीत शृंगार, अरे ओ कन्हैया!

तुने कहाँ लगाई इति देर अरे ओ कन्हैया!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

जीते है सिंधु के देश में

रहते है नर्मदा के देश में

पीते है यमुना के देश में

स्नान है गंगा के देश में

तपते है तापी के देश में

यात्रा है कृष्णा के देश में

पढ़ते है सरस्वती के देश में

बंधते है सतलज के देश में

अर्पते है क्षिप्रा के देश में

पूजते है गोमती के देश में

नमते है चंद्रभागा के देश में

तर्पणते है गोदावरी के देश में

हम इस देश के व्यक्ति है जिस देश में संस्कृति बहती है।

हम इस देश के मानव है जिस देश में प्रकृति खिलती है।

हम इस देश के आत्म है जिस देश में प्रीत तरसती है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"मोहन"

मोहे भूल न जाना हे कन्हैया!

मोहे छोड़ न देना हे कन्हैया!

न तो यह मोह को मारता है पर मोहे उनकी ओर खींचता है

मोहे अपना बनाता है

मोहे अपना करता है

मोहे अपना समझता है

मोहे अपना अपनाता है

यही तो है मोहन जो केवल और केवल मेरे है

यही तो है प्रीत धारण जो केवल मुझ पर न्योछवर करते है

यही तो है आनंद जो केवल मुझ पर लूटाते है।

यही तो है सौंदर्य जो केवल मुझ पर सजाते है।

ओ मेरे मोहन! मेरे तन मन धन के दामन।

तु है तो ही मैं हूँ, मेरे जीवन का सृजन ।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कैसा हूँ मैं?
नजर उठाता हूँ श्याम नजर न आये
नजर फिराता हूँ श्याम नजर न आये
कैसा गिनौना हूँ श्याम ओझल जाये
कैसा डरावना हूँ श्याम दूर जाये

अधर से पुकारता हूँ श्याम न मेरी सुने
अधर से जपता हूँ श्याम न मेरी सुने
कैसा भ्रष्ट हूँ श्याम डर जाये
कैसा भिक्षुक हूँ श्याम हार जाये

तन तड़पाता हूँ श्याम सहारे न आये
तन तरसाता हूँ श्याम सहारे न आये
कैसा पवित्र हूँ श्याम छुपता जाये
कैसा विश्वसनीय हूँ श्याम लज्जाता जाये

मन से स्मरणता हूँ श्याम निकट न आये
मन से ध्यानता हूँ श्याम निकट न आये
कैसा अगम्य हूँ श्याम शरमाता जाये
कैसा निम्न हूँ श्याम दर्दता जाये

ओहह जगत वासी!
ओहह मन वासी!
ओहह तन वासी!
ओहह धन वासी!
ओहह नर्क वासी!

कैसे मैं रहूँ? कैसे क्या करूँ?
श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

हे आकाश

हे धरती

ढूंढता हूँ जिसे तुमने छुपाया कहीं

तेरे सितारें टम टमा कर कहे रहे है

वह यही ही कहीं छुपाया है

तेरे पौधें खील खील कर जता रहे है

वह यही ही कहीं छुपाया है

ढूंढता ही रहूँगा आखिर तक

जब सितारें सूरज हो जायेगा

ढूंढता ही रहूँगा आखिर तक

जब पौधा वृक्ष हो जायेगा

तब तो तु किरण बन कर मेरे साँसों में बस जाएगी

तब तो तु फूल हो कर मेरे आँचल पर छा जाओगी

तब मैं मैं न रहूँगा तु तु न रहेगी

मैं श्याम हो जाऊँगा तु श्यामा हो जाओगी

यही है हमारी जन्म की रीत

"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

हे कृष्ण!
तु भी ऐसा दर्द से खुद का इलाज नहीं कर सकता
तु भी ऐसा दर्द से खुद को इतना जलाता है
तु भी ऐसे दर्द से खुद को अनगिनत वेदना में तडपता है
तु भी ऐसे दर्द से खुद से खुद की पहचान खो देता है
तु भी ऐसे दर्द से खुद से खुदा की रुसवाई से आहे भरता है
तु भी ऐसे दर्द से खुद से खुद को बरबादता है
तु भी ऐसे दर्द से खुद से दिल्लगी की तन्हाई में डुबाता है
तु भी ऐसे दर्द से खुद से खुद को लुटाता है
तु भी ऐसे दर्द से खुद को खुद से ध्रुजता है
तु भी ऐसे दर्द से खुद को यह धरती, यह आसमान, यह सागर, यह सूरज, यह वायु से सलगता है
तु भी ऐसे दर्द से खुद को इंतज़ार में भटकाता है
तु भी ऐसे दर्द से अपने आप को विरहता में गुनगुनाता है
तु भी ऐसे दर्द से कुछ लिखता ही रहता है
तु भी ऐसे दर्द से तन मन और धन को भूलता है
तु भी ऐसे दर्द से अपने आपको पुकारता रहता है

यही तो एक सत्य है,
जिसमें जिसको तरछोडा है
जिसमें जिसको निचोड़ा है
जिसमें जिसको नचाया है
जिसमे जिसको रुलाया है
जिसमें जिसको सहा है
जिसमें जिसको बिकाया है
जिसमें जिसको धोकाया है
जिसमें जिसको भरमाया है

पर हे मेरे प्रीत मित्र!
यही तो एक ऐसा आनंद सत्य है जिसने जिसने उन्हें स्पर्शा उन्होंने कुछ पाया है।

हे कृष्ण! तो तु मेरे लिये कुछ नहीं कर सकता।
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

तुम मिले तो तुम ऐसे है

हम मिले तो हम ऐसे है

वो मिले तो वो ऐसे है

ये मिले तो ये ऐसे है

ऐसे कैसे मिले तो तुम ऐसे है

ऐसे कैसे मिले तो हम ऐसे है

ऐसे कैसे मिले तो वो ऐसे है

ऐसे कैसे मिले तो ये ऐसे है

यही रफ्तार में तो कहीं रुक गये

यही व्यवहार में तो कहीं भूल गये

यही विचार में तो कहीं खो गये

यही आचार में तो कहीं तुट गये

ऐसी है यह रीत जगत की कोई कैसे कैसे मिले

ऐसी है यह जीत जगत की कोई कैसे कैसे खेले

ऐसी है यह नीत जगत की कोई कैसे कैसे झेले

ऐसी है यह प्रीत जगत की कोई कैसे कैसे महाले

कितने अवतार लिए जगत में

हर हर को मिले

पर

न कोई हर को मिले

न कोई हरि को मिले

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

पता नहीं मेरी नजर में क्या है?

जो मुझे सब नकारात्मक ही नजर आये

जहां मेरी नजर पहुँचे नकारात्मकता ही जगाये

जहां नजर स्पर्शे वैसे ही मुझमें क्रोध ही प्रकटाये

जहां नजर छूते ही मुझमें अयोग्यता ही खिलाये

जैसे नजर पड़ते ही मुझमें अन्याय ही अन्याय दिखाये

जैसे नजर खुलते ही मुझमें असमंजस में ही भरमाये

जैसे नजर गिरते ही मुझे खुद को ही गिराता जाये

जैसे नजर से नजर मिलते ही मुझसे कुछ न कुछ मांगा जाये

जैसे नजर फिरते ही मेरा मन खुद ही भटका जाये

जैसे नजर झुकते ही मेरा रोम रोम शरमाये

सच कैसी है ये नजर मेरी जो मुझे हर तरह से हराये

हे मेरा सत्य! मुझे कुछ भी तरह से बचाय

मेरा जन्म जीवन सुधराय!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

ये नैनन में ऐसा क्या है, जो कुछ जगाने के लिए पल में अपलक और पल में कहीं बार खुल बंध होता है?

ये नैनन में ऐसा क्या है, जो कुछ जिज्ञासा के लिए कहीं कहीं घुमके अटकलें करती है?

ये नैनन में ऐसा क्या है, जो कुछ ढूंढती ढूंढती अपने आप में खो जाती है?

ये नैनन में ऐसा क्या है, जो सदा कोई इंतजार ही होता रहता है?

ये नैनन में ऐसा क्या है, जो सारे जीवन धारा उनमें डूबी रहती है?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

धर्म

अर्थ

काम

मोक्ष

यह क्या है?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

सोचता है सोचता ही रहता हूँ

कौन है कृष्ण? कैसा है कृष्ण?

कहाँ है कृष्ण? क्यूँ है कृष्ण?

किसने अपनाया कृष्ण?

किसने प्रकटाया कृष्ण?

किसने जताया कृष्ण?

किसने कहा कृष्ण?

किसने जगाया कृष्ण?

किसने दर्शाया कृष्ण?

किसने स्पर्शाया कृष्ण?

किसने मिलाया कृष्ण?

किसने तड़पाया कृष्ण?

किसने विरहया कृष्ण?

हे कृष्ण! हे कृष्ण! कृष्ण कृष्ण!

हा कृष्ण! हा कृष्ण! कृष्ण कृष्ण!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

क्या है हम की हमें

प्रकृति भी हैरान करें

सृष्टि भी हैरान करें

संसार भी हैरान करें

समाज भी हैरान करें

कुटुंब भी हैरान करें

साथी भी हैरान करें

खुद का विचार भी हैरान करें

खुद का कर्म भी हैरान करें

खुद का तन मन धन भी हैरान करें

हाँ! हम क्या है?

हमें अवश्य टटोलना चाहिए।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

मुझे श्री प्रभु प्रेम पीना है

कैसे?

जैसे मैं उनकी हो जाऊं

जैसे मैं उनमें खो जाऊं

जैसे मैं उनसे जुड़ जाऊं

जैसे मैं उनमें डूब जाऊं

जैसे मैं उनसे लड़ जाऊं

जैसे मैं उनमें विरह जाऊं

जैसे मैं उनसे लूट जाऊं

जैसे मैं उनमें मिट जाऊं

जैसे मैं उनसे लिपटा जाऊं

जैसे मैं उनमें पगला जाऊं

जैसे मैं उनपे मरता जाऊं

जैसे मैं उनमें खिंचता जाऊं

जैसे मैं उनसे संवरता जाऊं

जैसे मैं उनमें भटकता जाऊं

जैसे मैं उनको गाता जाऊं

जैसे मैं उनमें रंगाता जाऊं

जैसे मैं उनसे तडपता जाऊं

जैसे मैं उनमें झूमता जाऊं

यही तो पीना है - प्रेम रस

जो पीते पीते हर रोम श्याम हो जाये।

मैं श्यामा तु श्यामलिया हो जाये।

मैं राधा तु कृष्ण हो जाये।

मैं गोपि तु गोपाल हो जाये।

मैं मोहनिया तु मोहन हो जाये।

मैं साँवरी तु साँवरिया हो जाये।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

ऑय संभाल!

ओहह! कौन किसको कहता है

ओहह! कौन किसको सुनाता है

ओहह! कौन किसकी सुनता है

ओहह! कौन किससे कहता है

ओहह! कौन किसीकी सुनता है

ओहह! कौन किसीसे सुनता है

कैसे है ये लोग?

जो क्या क्या कहता है

जो क्या क्या सुनते है

जो क्या क्या सुनाते है

हाँ!

कुछ हाँ में हाँ भरे

कुछ हाँ में ना भरे

कुछ हाँ में ना बोले

कुछ हाँ में मौन रहे

कुछ हाँ में हाँ बोले

कुछ हाँ में ना कहे

कुछ हाँ में हाँ कहे

समझे खुद की भाषा

ऐसे है यह जीवन लोगों के

ऐसे है यह लोग जीवन के

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

क्या है हमारा जीवन? - आश्वस्नीक 😔

क्या है हमारा स्वभाव? - आश्रित 😔

क्या है हमारा अहम? - काल्पनिक 🤔

क्या है हमारा धर्म? - वैश्विक 😁

क्या है हमारी मान्यता? - तार्किक 😏

क्या है हमारी गति? - अर्धनैतिक 🤤

क्या है हमारी कृति? - मान्यस्वीक 🤤

क्या है हमारी दृष्टि - आभासित 😎

हर प्रश्न का उत्तर अति गहराई भरा है।

अवश्य सोचो और अपने आपको समझो और अपनी सर्वोत्तम गति के लिए परिवर्तन कैसे करना है वह अपनावो। 🌷🙏🌷

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कितना थकना है मुझे
जो हर रीत से थकता जाऊँ
कितना हारना है मुझे
जो हर रीत से हारता जाऊँ
कितना सहना है मुझे
जो हर रीत से सहता जाऊँ
कितना डरना है मुझे
जो हर रीत से डरता जाऊँ
कितना भागना है मुझे
जो हर रीत से भागता जाऊँ
कितना हटना है मुझे
जो हर रीत से हटता जाऊँ
कितना मरना है मुझे
जो हर रीत से मरता जाऊँ
कितना झुकना है मुझे
जो हर रीत से झुकता जाऊँ
कितना समझना है मुझे
जो हर रीत से समझता जाऊँ
कितना रुकना है मुझे
जो हर रीत से रुकता जाऊँ
कितना छुपना है मुझे
जो हर रीत से छुपता जाऊँ
कितना रहना है मुझे
जो हर रीत से रहता जाऊँ
कितना सोचना है मुझे
जो हर रीत से सोचता जाऊँ
कितना करना है मुझे
जो हर रीत से करता जाऊँ
कितना मानना है मुझे
जो हर रीत से मानता जाऊँ

हे मानव! इसीलिए तो तु है

जो तुझे जन्म दिया

जो तुझे मन दिया

जो तुझे जीवन दिया

जो तुझे संसार दिया

जो तुझे सूर्य दिया

जो तुझे आकाश दिया

जो तुझे धरती दिया

जो तुझे सागर दिया

जो तुझे ....

तु ही तु हो

जो तु ही तु हो

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

मानव

मानुस

मनुष्य

क्या है ये?

मन + आव = मानव

मन + आउस = मानुस

मन + उष्य = मनुष्य

मन सर्वे में है

अब

आव = जिसके पास मन आये

जिसके पास से मन जाये

जिसजे साथ मन जाये

जिसके साथ से मन जाये

जिसके आंतर मन गति करे

जिसके अंदर मन मनचले

यह है मानव

आउस = जो मन को उत्स करे

जो मन का उदभव करे

जो मन को चल अचल करे

जो मन को चंचल करे

जो मन को उजागर करे

जो मन को जागृत करे

यह है मानुस

उष्य = मन का उष हो

मन का धारण हो

मन का धर्म हो

मन का प्रकटना हो

मन का शिक्षण हो

मन का सकर्म हो

मन का संचलन हो

मन का संतुलन हो

यह है मनुष्य

अभी समझले हम कौन है और कैसे है?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कभी रुकता हूँ

कभी टटोलता हूँ

कभी जागता हूँ

कभी सोता हूँ

कभी ठहरता हूँ

कभी दौड़ता हूँ

कभी संभलता हूँ

कभी टकराता हूँ

कभी जलता हूँ

कभी तडपता हूँ

कभी भूलता हूँ

कभी छोड़ता हूँ

कभी तोड़ता हूँ

कभी झूमता हूँ

कभी रोता हूँ

कभी सहमता हूँ

कभी विरहता हूँ

कभी गुमसुमता हूँ

कभी अपनाता हूँ

कभी नाचता हूँ

कभी गाता हूँ

कभी भटकता हूँ

कभी भागता हूँ

कभी रमता हूँ

कभी भोगता हूँ

कभी सोचता हूँ

कभी उठता हूँ

कभी पुकारता हूँ

कभी तरसता हूँ

कभी स्पर्शता हूँ

कभी ठुकराता हूँ

कभी जीता हूँ

कभी मरता हूँ

हे मेरी प्रीत! तेरे लिए मैं क्या क्या हूँ?

कभी राधा! कभी यमुना!

कभी कृष्ण! कभी श्याम!

कभी सीते! कभी गोपि!

कभी राम! कभी गोपाल!

क्या क्या करता हूँ!

ऐसे ऐसे ही तुझसे जुड़ता हूँ अकेला अकेला

हे मेरी पुष्टि!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

अभी इतना पता हो रहा है

अहंकार कैसे जागता है,

अहंकार कैसे उठता है,

अहंकार कैसे उदभवता है,

अहंकार कैसे उत्सता है,

हमारे विचार

हमारे व्यवहार

हमारी क्रिया

हमारी सूत्रता से

ये इतनी गहरी और चिंतनीय विशेषज्ञ है

जो जीव और जीवन के हर समय अर्थात काल में जीवंत है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🙏🌷

"पिता" जिसका पता सर्वे को रहता है वह 🙏

"पिता" जिसका सन्मान सर्वे को जगाता है वह 🙏

"पिता" जिसका सार्वभौमत्व सर्वे को स्पर्शता है वह 🙏

"पिता" जिसकी निडरता सर्वेको उत्कृष्ट करती है वह 🙏

"पिता" जिसकी मर्यादा सर्वे को अपनानी होती है वह 🙏

"पिता" जिसकी क्षमता सर्वे को मापती है वह 🙏

"पिता" जिसकी एकलता सर्वे को सिखाती है वह 🙏

"पिता" जिसका सामर्थ्य सर्वे को वीरती है वह 🙏

"पिता" जिसकी क्षमा सर्वे को वंदती है वह 🙏

"पिता" जिसकी दीर्घदृष्टि सर्वे को संकेतती है वह 🙏

"पिता" जिसकी छांव सर्वे को शांतती है वह 🙏

"पिता" जिसकी हुँकार सर्वे को हिम्मतती है वह 🙏

"पिता" जिसका मौन सर्वे को निर्णानित है वह 🙏

"पिता" जिसकी प्रीत सर्वे को इखलाती है वह 🙏

"पिता" जिसका अस्तित्व सर्वे को पुरुषार्थी है वह 🙏

"पिता" जिसका नस्तित्व सर्वे को इझराति है वह 🙏

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

योगिनी मैं बन जाऊँ साँवरिया तोरी

योगिनी मैं बन जाऊँ साँवरिया तोरी

योगिनी बन कर वन वन डोलू

तेरे ही गुन गाउँ

नित उरकी कंपित वीणा पर

तेरा ध्यान लगाऊँ

योगिनी मैं बन जाऊँ साँवरिया तोरी

यमुना बन कर गोवर्धन सिंचु

व्रजरज ही जगाऊँ

जीवन परिभ्रमण पुष्टि कर

पुष्टि पंथ प्रकटाऊँ

योगिनी मैं बन जाऊँ साँवरिया तोरी

योगिनी मैं बन जाऊँ साँवरिया तोही

"योगिनी एकादशी" सर्वे पुष्टि जनो को प्रणाम 🙏

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

ये तो कहो

ये तो कहो

कौन हो तुम?

याद भी निराली

महक भी मतवाली

तन मन कैसे करें रखवाली

बिंदिया सजायी

कंगना खनकायी

पायल पुकारें प्रीत पिया साँवरी

हो हो ये तो कहो

ये तो कहो

कौन हो तुम?

कौन हो तुम?

नैन नैन मिलायी

अंग अंग लगायी

रोम रोम साँवरा रंग अपनायी

साँस साँस जगायी

अधर अधर पिलायी

आत्म श्याम पुष्टि प्रीत प्रकटायी

हो हो ये तो कहो

ये तो कहो

कौन हो तुम?

कौन हो तुम?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

ऐसा तो क्या करें

जिससे खुद से आनंद प्रकटे

जिससे खुद से विशुद्धता जागे

जिससे खुद से पवित्रता प्रसरे

जिससे खुद से मधुरता महके

जिससे खुद से विश्वास द्रडे

जिससे खुद से ज्ञान बढ़े

जिससे खुद से कष्ट नष्टे

जिससे खुद से सेवा उठे

जिससे खुद से करुणा बहे

जिससे खुद से सन्मान वंदे

जिससे खुद से भक्ति सींचे

जिससे खुद से तेज प्रखरे

हाँ! यही तो हमारा जन्म और जीवन है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

"रथयात्रा"

रथ अर्थात मन

रथ अर्थात तन

रथ अर्थात धन

रथ अर्थात आत्म

रथ अर्थात अंश

रथ अर्थात जीव

यात्रा अर्थात मानसी

यात्रा अर्थात परिक्रमा

यात्रा अर्थात व्यय - व्यतीत

यात्रा अर्थात परिभ्रमण

यात्रा अर्थात जन्म जन्मांतर

यात्रा अर्थात भटकवु

रथयात्रा

मन की मानसी

तन की परिक्रमा

धन का व्यय - व्यतीत - व्यवहार

आत्म का परिभ्रमण

अंश का जन्म जन्मांतर

जीव का भटकना

अति गहरी और सर्वोत्तम रहस्य है यह कि हम कौन और कैसे है और कौनसी दिशा में कैसी गति। रथयात्रा से एक ऐसा परीक्षण है जो अंशी अर्थात परमात्मा - परब्रह्म अपनी खुद की निधि, रीति, गति को खुद अपने कर्म से जो घटित हुआ है और होते होते जो परिवर्तन होता है उनका निरीक्षण करके खुद का अहेवाल तैयार करके खुद की पहचान करके खुद में कितना परिवर्तन करना है जिससे हर तत्व, ब्रह्मांड, प्रकृति, सृष्टि, जगत में विशुद्धता, योग्यता, पवित्रता, धर्मता, सत्यता की व्यापकता सुधार हो।

"कर्म का सिद्धांत सर्वे की पहचान" 🙏🙏🙏

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"रथ पर सवार हो कर

आया मेरा जगन्नाथ"

जन्म जन्म की प्यास बुझाने

खड़े है हम भी ऐसे

जैसे उनकी धर्म प्रियता धरके

जय घोष हम भी करते है

जैसे उनकी कर्म सिद्धांत रीत अपनाके

आया आया "मेरा जगन्नाथ आया"

"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

प्रीत की रीत से आत्म परमात्मा हो जाता है

जैसे

लैला - मजनू

हीर - रांझा

रोमियो - जूलियट

और हमारा जीवन?

हम कितने मर्यादित अर्थात कितने असमंजस अर्थात कितने संकुचित अर्थात कितने संशयी अर्थात कितने नासमझ अर्थात कितने अज्ञानी है कि

हम प्रीत को कैसे कैसे विचारो, क्रियाओ, रीतो, मान्यताओं, साधारणताओ, सामान्यताओ, अधुरपताओ, रुढताओ, अव्यवहारताओ, निम्नताओ से देखते है, छूते है, भोगते है, सोचते है, कृतकृतते है, नियमितते है, द्रढ़ते है, दोरते है, सिंचते है, अपनाते है, घूटते है, लूटते है, मोड़ते है, योजते है, संसर्गते है, शिक्षते है, घडते है, बांधते है, संहारते है, नियमनते है, डरते है, छुपाते है, भागते है, मारते है, अविश्वाशते है, असत्यते है, दुष्टते है, धृष्टते है, दुरुपयोगते है, अंधारते है, डुबोते है, नष्टते है, व्याकुलते है, भ्रष्टते है, बुझाते है, भुसते है, खोते है, तोड़ते है, बरबादते है, कपटते, छोड़ते है, भूलते है, मुंझाते है, सहते है, नफरतते है, स्वार्थते है।

सच हम क्या है?🙏

मुझे नही पता है

मैं कैसा मनुष्य हूँ?

मैं कैसा इन्सान हूँ?

मैं कैसा आदम हूँ?

मैं कैसा व्यक्ति हूँ?

हिंदुत्व अपनावित

न राधा को समझ सकता हूँ न कृष्ण को समझ सकता हूँ

न भक्त को समझ सकता हूँ न भगवान को समझ सकता हूँ

न ज्ञान को समझ सकता हूँ न श्रेष्ठ गुरु - आचार्य को समझ सकता हूँ।🙏

केवल भटकता हुआ एक जीव हूँ।🙏

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"कृष्ण" क्या क्या है?

हमारे परम प्रिय श्री आचार्यजी हममें श्री कृष्ण का निरूपण कैसे करते है?

हम जो भी मनुष्य है, हममें विशुद्धता, पवित्रता, विश्वसनीयता, योग्यता, अखंडता, स्थिरता और आनंदमयता का उत्स जो करें और धरे वही हमारे परम प्रिय गुरु है, हमारे परम प्रिय आचार्य है।

संप्रदाय कोई भी हो पर जो हममें अपनी

अनन्ता एव कृष्णस्य लीला नामप्रवर्तिका:।🌷

पुरुषो ध्यानमत्रोतक्तमं सिद्धि: शरणसंस्मृति:।🌷

भक्तोध्द्वार प्रयत्नात्मा जगत्कर्ता जगन्मय:।🌷

भक्तिप्रवर्तकस्त्राता व्यासचिन्ताविनाशक:।🌷

अन्तरात्मा ध्यानगम्यो भक्तिरत्नप्रदायक:।🌷

भक्तकार्यकनिरतो द्रौण्यस्त्रविनिवारक:।🌷

भक्तसम्यप्रणेता च भक्त वाक्परिपालक:।🌷

ब्रह्मण्यदेवो धर्मात्मा भक्तानां च परीक्षक:।🌷

उत्तराप्राणदाता च ब्रह्मास्त्रविनिवारक:।

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

ओह्ह मेरे श्रेष्ठतम श्री प्रभु!🌷🙏🌷

ओह्ह मेरे परम श्रेष्ठ श्री आचार्य!🌷🙏🌷

आपने हमें क्या क्या रहस्य कह दिये, सार्थक किया, सिद्ध किये, प्रमाणित किये।

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

आपको हमारा कोटि कोटि वंदन!🙏

आपको हमारा साष्टांग दंडवत प्रणाम!🙏

कितनी सहजता और सरलता से हममें श्री कृष्ण को उत्स किया और निरुपण किया।

अदभुत! 🙏

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"विषय" ओह्ह क्या है यह?

हम मनुष्य क्या क्या समझ और क्या क्या पहचानना और क्या क्या करना और हर समझ, पहचान और कर्म के प्रश्च्यात हमें कैसे होना है? क्या होना है? नही समझना, नही करना चाहते है। हम तो हमारी हर क्षण क्षणभंगुर करते है और खुद को नष्ट कर रहे है।

हमनें विषयों को ऐसे पाला है, ऐसे सींचा है, ऐसे पीया है, ऐसे धरा है, ऐसे व्यवहारिक किया है कि हम हर विचार से, हर क्रिया से, हर रीत से विशुद्धता को तोड़ते रहते है, सत्य से बिछड़ते रहते है और जगत अर्थात संसार को दुष्ट करते करते खुद को अस्पृश्य करते है।

हम समझते है - हम गहरी बातें समझ नही सकते अरे! खुद को इतना नीचे गिरा दिया है कि केवल विषय ही कि तरफ आकर्षित होते है पर योग्य विचार और क्रिया की तरफ नही मूड सकते इतने तो हम लाचार और अहंकारी है।

सच! कितने .... ओह्ह!

कैसा है यह मानव!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

मनुष्य मन से जुड़ा है उन्हें मनुष्य कहते है। मन कितना सर्वाधिक और सर्वोच्च है जो हमारे जन्म, जीवन और जन्म मुक्ति से जुड़ा है।

मन से उत्स हुए हर धारा से कुछ होता है।

मन से उदभव हुए हर लहर से कुछ होता है।

मन से उठे हुए हर तरंग से कुछ होता है।

मन से जागे हुए हर भाव से कुछ होता है।

मन से प्रकट हुए हर ज्ञान से कुछ होता है।

मन से उजागर हुए हर कश्मकश से कुछ होता है।

मन से मान्यता हुए हर अपनाया से कुछ होता है।

मन से धारा हुए हर चुस्तता से कुछ होता है।

मन से केलवायी हुए हर रीत से कुछ होता है।

मन से माना हुआ हर कार्य से कुछ होता है।

मन से स्थिर हुआ हर संकल्प से कुछ होता है।

मन से अस्थिर हुआ हर विचार से कुछ होता है।

मन से सोचा हुआ हर क्रिया से कुछ होता है।

मन से पुरुषार्थ हुआ हर गति से कुछ होता है।

अर्थात मन से ही कुछ न कुछ होता है।

मन नही तो मनुष्य नही।

मन को कैसा घड़े?

मन को कैसा केलवे?

मन को कैसा रचे?

मन को कैसा शिक्षे?

मन को कैसा संस्कृते?

मन को कैसा धरे?

मन को कैसा मनाये?

मन को कैसा उठाये?

मन को कैसा जगाये?

मन को कैसे स्थिराये?

मन को कैसे मचलाये?

मन को कैसे पुरुषार्थे?

मन को कैसे पहचाने?

मन को कैसे मंथनाये?

मन को कैसे दृढ़ाये?

हमारे जन्म, जीवन और जन्म जीवन प्रयोजन को कैसे सिद्ध करे?

हमारे तन मन धन को कैसे योगत्व करे?

हमारे अस्तित्व को कैसे अंशी युक्त करे?

हाँ! हमें हमारा जन्म, जीवन, और जन्म मुक्ति पाना तो है ही, तो...............

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

एक श्याम हो बहोत श्याम

कैसी लीला तुने रचाई

श्याम श्याम से बिछड़े राम

श्याम श्याम से भूले श्याम

न कोई राम रहे न कोई श्याम

घडते घटते हुए दुर्योधन

टूटते छूटते हुए दुशासन

अंधकार अहंकार से रावण भये

अज्ञान अभद्र से कंस भये

श्याम श्याम से श्यामहीन हो गए

राम राम से स्वार्थजन हो गए

कैसी लीला कैसी घटमाल

श्याम के संसार में प्रीत असंस्कृत

राम के संसार मे संस्कार अस्पृश्य

आओ राम आओ घनश्याम

जगाओ कण कण में राम

प्रकटाओ बूँद बूँद में श्याम

खुद को जगाकर सर्वत्र हो जाये राम

खुद को उत्कृष्टता कर सर्व हो जाये श्याम

यही ही तो रीत है

एक ही श्याम भये बहोत श्याम

एक ही राम भये अनेक घनश्याम

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"क्षमा"

क्षमा क्या है?

क्षमा किसे कहते है?

क्षमा कौन कर सकता है?

क्षमा के अधिकारी कौन है?

प्रथम तो मैं आप सर्वे से माफी मांग लेता हूँ, क्यूँकी जो जता रहा हूँ, जो कह रहा हूँ, जो जगा रहा हूँ, वह परम संपूर्ण शुद्ध और सत्य है कि

यह जगत में आज अगर कोई क्षमा शील व्यक्ति हो तो केवल और केवल एक वैज्ञानिक है जो आज पूरे जगत को ब्रहमांड की दिशा बता रहा है, बाकी न कोई है।

न कोई माँ है।

अगर कोई क्षमाशील हो तो वह परंब्रहम विशुध्ध तत्व है बाकी नही कोई है।

माफ और क्षमा में बहुत बड़ा अंतर है।

हाँ! माफ करने वाला हो सकता है, पर क्षमा करने वाला तो कोई नही।

क्षमा अर्थात विशुद्धता

क्षमा अर्थात पूर्ण जागृतता

क्षमा अर्थात द्रढ विश्वास

क्षमा अर्थात संपूर्ण योंग्यता

क्षमा अर्थात अतूट दया

क्षमा अर्थात अखंड प्रीत

क्षमा अर्थात निस्वार्थ वीरता

क्षमा अर्थात अलौकिक दान

क्षमा अर्थात सकल सामर्थ्य

क्षमा अर्थात अप्रितम सौंदर्य

क्षमा अर्थात स्थिर समन्वय

क्षमा अर्थात संस्कृत सेवा

क्षमा अर्थात निर्देष्ट आज्ञा

क्षमा अर्थात अचूक समर्पण

धरती - क्षमा

सूर्य - क्षमा

सागर - क्षमा

आचार्य - क्षमा

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"क्षमा"

क्षमा क्या है?

क्षमा किसे कहते है?

क्षमा कौन कर सकता है?

क्षमा के अधिकारी कौन है?

प्रथम तो मैं आप सर्वे से माफी मांग लेता हूँ, क्यूँकी जो जता रहा हूँ, जो कह रहा हूँ, जो जगा रहा हूँ, वह परम संपूर्ण शुद्ध और सत्य है कि

यह जगत में आज अगर कोई क्षमा शील व्यक्ति हो तो केवल और केवल एक वैज्ञानिक है जो आज पूरे जगत को ब्रह्मांड की दिशा बता रहा है, बाकी न कोई है।

न कोई माँ है।

अगर कोई क्षमाशील हो तो वह परंब्रह्म विशुध्ध तत्व है बाकी नही कोई है।

माफ और क्षमा में बहुत बड़ा अंतर है।

हाँ! माफ करने वाला हो सकता है, पर क्षमा करने वाला तो कोई नही।

क्षमा अर्थात विशुद्धता

क्षमा अर्थात पूर्ण जागृतता

क्षमा अर्थात द्रढ विश्वास

क्षमा अर्थात संपूर्ण योँग्यता

क्षमा अर्थात अतूट दया

क्षमा अर्थात अखंड प्रीत

क्षमा अर्थात निस्वार्थ वीरता

क्षमा अर्थात अलौकिक दान

क्षमा अर्थात सकल सामर्थ्य

क्षमा अर्थात अप्रितम सौंदर्य

क्षमा अर्थात स्थिर समन्वय

क्षमा अर्थात संस्कृत सेवा

क्षमा अर्थात निर्देष्ट आज्ञा

क्षमा अर्थात अचूक समर्पण

धरती - क्षमा

सूर्य - क्षमा

सागर - क्षमा

आचार्य - क्षमा

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"सरलता"

सरल - सरल हम बार बार बोलते रहते है, कहते रहते है। मैं बहोत ही सरल हूँ, मेरे जैसा कोई सरल नही इसीलिए मुझें बार बार यह संसार और ये समाज और ये लोगों में फसता रहता हूँ।

ओहह!

न सरलता की समझ

न सरल गुण

न सरलता के अपरस

सिर्फ बोलना और कहना - सरलता अर्थात सरल नहीं है।

सरल अर्थात न स्पर्श सांसारिक माया का

सरल अर्थात न स्पर्श सामाजिक बंधन का

सरल का अर्थ है निष्कपट

सरल का अर्थ है शुद्ध प्राकृतिक

सरल का अर्थ है संपूर्ण पारदर्शक

सरल का अर्थ है योग्यता

सरल का अर्थ है स्वार्थहीन

सरल का अर्थ है अजेय

सरल का अर्थ है सर्व से परे

सरल का अर्थ है अपरस

सरल का अर्थ है सरस

सरल का अर्थ है अमाध्यम

सरल का अर्थ है निस्पृहता

सरल का अर्थ है न क्रोध, न मोह, न आवेश, न आक्रोश

सरलता का अर्थ है असामान्य

सरलता का अर्थ है असाधारण

राजा राम - सरल थे

राजा जनक - सरल थे

लाल बहादुर शास्त्री - सरल थे

संत तुकाराम - सरल थे

ऋषि वशिष्ठ - सरल थे

सती मंदोदरी - सरल थी

संत विदुर - सरल थे

नही है हम

हम कुछ भी बोले या कहे

नही है हम

न हो सकते है

न पा सकते है

संसार की यह रीत से

संसार की यह गति से

हे प्रभु! तु है सरल पर तेरी सरलता पहचानने की आकृति नही

हे प्रभु! तु है सरल पर तेरी सरलता देखने की दृष्टि नही

हे प्रभु! तु है सरल पर तेरी सरलता पाने की पुरुषार्थता नही

हे प्रभु! तु है सरल पर तेरी सरलता स्पर्शने की संस्कृतता नही

हे प्रभु! तु है सरल पर तेरी सरलता उजागर करने की जागृतता नही

ओहह श्री वल्लभ! 🙏

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

"योग"

योग अर्थात योग्य विचार

योग अर्थात योग्य क्रिया

योग अर्थात योग्य एकाग्रता

योग अर्थात योग्य संचालन

योग अर्थात योग्य समाधि

योग अर्थात योग्य इंद्रियों संगति

योग अर्थात योग्य प्राकृतिक

योग अर्थात योग्य तत्विक

योग अर्थात योग्य पारायणिक

योग अर्थात योग्य सात्विक

योग अर्थात योग्य धार्मिक

योग अर्थात योग्य तनमनस्कित

योग अर्थात योग्य व्यक्तिक

योग अर्थात योग्य व्यवहारिक

योग अर्थात योग्य समांतर

योग अर्थात योग्य आचरित

योग अर्थात योग्य संयोजित

योग अर्थात योग्य कृतिक

योग अर्थात योग्य सृजित

खुद ही समझले हम योग की कौनसी घटमाल में है?

अगर कोई भी प्रकार में या गुणवत्ता में नही है तो योगभ्रष्ट है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

ऐसा तो ऐसा

ऐसा तो ऐसा

ऐसा तो ऐसा

कितनी बार ऐसा

जो बार बार

ऐसा तो ऐसा करे

नही वह स्थिर रहे

हर तरह से ऐसा ऐसा में

खुद को कैसा कर देता है

खुद को कैसा बना देता है

खुद को कैसा घड़ देता है

खुद को कैसा रच देता है

दृष्टि होते हुए भी हम दृष्टि हीन होते है

मन होते हुए भी हम अमान्य होते है

तन होते हुए भी हम नतन अर्थात रोगी होते है

धन होते हुए भी हम निर्धन होते है

धर्म होते हुए भी हम अधर्मी होते है

सच! क्या है हम जो हर रीत से ऐसे ऐसे होते है!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ देते जाते है

कुछ कहते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ स्पर्शाते जाते है

कुछ धड़काते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ भिगोते जाते है

कुछ जगाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ बहाते जाते है

कुछ चमकाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ थरथराते जाते है

कुछ ठंड़ठंड़ाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ नचाते जाते है

कुछ गिराते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ झुलाते जाते है

कुछ हिलाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ जीतते जाते है

कुछ हारते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल
कुछ खोते जाते है
कुछ पाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल
कुछ पिलाते जाते है
कुछ तरसाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल
कुछ मिलाते जाते है
कुछ बिछड़ाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल
कुछ   जाते है
कुछ   जाते है
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हमारे समाज को शारीरिक और मानसिक निरोगी और योग्य रखने और करने में प्रथम व्यक्तित्व चिकित्सक अर्थात डॉक्टर आते है।

यह तो सच है न!

शायद सच है?

न मजबूरी से सोचो

न कोई डर से सोचो

न कही कही तरह से सोचो

न कोई रिस्तो से सोचो

सच कहें तो

1. अपना स्वास्थ्य निरोगी होगा

2. अपना कोई सेवक जागृत होगा

3. रिस्तो से हम भी खुद को योग्यता पर लाने की कोशिश होगी

खुद न लूटाये खुद की नासमझ से

खुद न टूटे खुद का अज्ञान से

थोड़ी सी हिम्मत थोड़ा सा पुरुषार्थ

समाज को उत्तम कर सकती है

वह चिकित्सक को याद कराओ

तु भी एक मनुष्य है

तुम्हारे सामने है वह भी एक मनुष्य है

लूट लूट के क्या बटोरा?

किसीकी आह, किसीकी आग

जो आत्मीयता से खाक कर देगी

जन्म जन्म को शाप बना देगी

जो जीवन जीवन को अंधेरा कर देगी।

उठो! जगावो खुद के व्यक्तिव को

जो खुद निरोगी वह परम योगी।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

धरती तरसती है

आसमान तरसता है

सूरज तरसता है

सागर तरसता है

सच!

तो इनसे बने हुए हर कोई भी तरसता ही है

हर तत्व तरसते है

तो उनकी प्यास कौन बुझायेगा?

भगवान!

श्री प्रभु!

गुरु!

माँ!

नही नही कोई नही बुझा सकता।

खुद को पूछलो

जिसको भी पूछना हो तो पूछलो

कौन बुझा सकता है प्यास?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

श्याम श्याम संग ऐसी जुड़ी
उजली श्याम रंग हो भयी

श्याम श्याम रंग ऐसी रंगी
मन श्याम श्याम सूर गा ने लगी

श्याम श्याम सूर गा ने लगी
तन श्याम श्याम पुरुषार्थ करने लगी

श्याम श्याम पुरुषार्थ करने लगी
धन श्याम श्याम अर्चन करने लगी

श्याम श्याम अर्चन करने लगी
जीवन श्याम श्याम चरित्र बसाने लगी

श्याम श्याम चरित्र बसाने लगी
पुष्टि प्रीत श्याम दर्शन अंतरंग होने लगी

श्याम दर्शन अंतरंग होने लगी
आत्म श्याम श्याम परम तत्व पाने लगी

श्याम श्याम परम तत्व पाने लगी
श्याम श्याम से एकात्म भयी

श्याम श्याम से श्यामा हो गई
श्यामा श्यामा से श्याम हो गई
यही रीत है श्याम प्रीत की
यही सृष्टि है श्याम पुष्टि की
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

जीते जीते कुटुंब को पी जाये वो ही है जिंदगी

जीते जीते समाज की इमारत हो जाये वो ही है जिंदगी

जीते जीते गाँव के चौराहा हो जाये वो ही है जिंदगी

जीते जीते शहर का इलाका हो जाये वो ही है जिंदगी

जीते जीते राज्य का झंडा हो जाये वो ही है जिंदगी

जीते जीते देश का बलिदान हो जाये वो ही है जिंदगी

जीते जीते आंतरराष्ट्रीय वंदन हो जाये वो ही है जिंदगी

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

मन की झँखनाओ का झुलन बनवाऊं
तन की तमन्नाओ का तोरण बंधवाऊं

मेरा श्याम हिंडोले झूले
मेरा कान्ह झुलनिये झूले

टुहुक टुहुक तरुवर गाजे
ढुरर ढुरर बदलियाँ गरजे
धरती गाये मल्हार
रिमझिम रिमझिम अमी बूँद बरसे
मन की वडवाई अंबर को चूमे
तन की तरुणाई तरंगों से झूमे

मेरा घनश्याम हिंडोले झूले
मेरा गोविंद झुलनिये झूले

गुलमहोर निकुंज सजाये
जुईमोगरा अंग भराये
वनस्पति बिखरे हरियाल
झुनुन झुनुन झरना धार बरसाय
टिमटिम तारलियाँ रंग उड़ाय
नाचे मयूर गाये दादुर

मेरा साँवरिया हिंडोले झूले
मेरा गोवर्धन झुलनिये झूले
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"राधा" को गोपि भाव

"कृष्ण" को रसो वैः सः कहते है।

क्या है यह माधुर्य भाव और शरणागत भाव?

श्री राधा! "राधा" "राधा"

श्री कृष्ण! "कृष्णा" "कृष्णा"

क्या है यह "राधा"

क्या है यह "कृष्ण"

डूबना है तो राधा के नयन में

खोना है तो कृष्ण के रंग में

हे राधा!

हे कृष्ण!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

क्या है जीव और क्या है जीवन?

क्या है जन्म और क्या है जगत?

क्या है आत्मा और क्या है परमात्मा?

क्या है विचार और क्या है मन?

क्या है क्रिया और क्या है धन?

क्या है साधन और क्या है तन?

क्या है तत्व और क्या है परिवर्तन?

क्या है धर्म और क्या है संस्कृति?

क्या है प्रीत और क्या है अनुभूति?

क्या है स्त्री और क्या है पुरुष?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"नंद घर आनंद भयो"

ओहह!

"नंद घर सुख भयो" क्यूँ ऐसा न कहा?

मनुष्य को यह तफावत समझना है।

हम जगत वासी और हमारी भूमि पर श्रीकृष्ण ने अवतार धरा, अर्थात परमानंद ने अवतार धरा।

हम सिर्फ गाते है

हम सिर्फ पुकारते है

"नंद घर आनंद भयो"

कभी सोचा है - यह सिर्फ गुनगुनाते है तो अपने तन, मन और धन में कुछ तरंग जागते है। यह तरंग जो अनुभूति कराता है वह कबतक? जबतक हम ....

प्रयत्न करलो।

पर

हम यह अनुभूति हम क्यूँ खो देते है?

अवश्य सोचो।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

श्री श्रीनाथजी के नयन अर्ध खुले और दृष्टि नही समांतर - नही उपर पर नीचे की तरफ है।

क्यूँ?

अर्ध खुले नयन अर्ध बंध नयन

अर्ध कहे नयन अर्ध सुने नयन

अर्ध मिले नयन अर्ध जागे नयन

अर्ध हँसे नयन अर्ध मूंदे नयन

अर्ध लूटे नयन अर्ध लूटाये नयन

अर्ध विरहे नयन अर्ध बसाये नयन

अर्ध संकेताये नयन अर्ध परिक्षारथे नयन

अर्ध अपनाये नयन अर्ध निरिक्षणाये नयन

अर्ध अपूर्णाये नयन अर्ध पुष्टाये नयन

अर्ध विचलित नयन अर्ध अविचलित नयन

अर्ध स्वीकार्य नयन अर्ध परिकार्य नयन

अर्ध प्रीताये नयन अर्ध माधुर्याये नयन

अर्ध कृपाये नयन अर्ध कृतार्थाये नयन

सच! कैसे है श्री श्रीनाथजी के नयन?

कौन क्या भाव और ज्ञान अनुभवते नयन?

कौनसा शरण और अर्पण करते है नयन?

हे श्री वल्लभ!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कितने धागे है जीवन के

ममता का धागा

आँचल का धागा

शिक्षा का धागा

धर्म का धागा

विवाह का धागा

कर्म का धागा

बंधन का धागा

रक्षा का धागा

पघडी का धागा

मृत्यु का धागा

यही सर्वे में उत्तम

प्रीत का धागा

जो बंधते बंधते अतूट होता है

जो छूते छूते अखंड होता है

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हे मेरे वतन के वासी!

ऐसे जागे है अब हम

कभी न हारे कोई आंधी से

कभी न हारे कोई तूफान से

अङ्ग रहेंगे साथ साथ

निडर रहेंगे बाथ बाथ

कभी न कोई प्रलोभन स्वीकारे

कभी न कोई रिश्वत अपनाये

भगाये भ्रष्ट हर कूट तूट नीतिका

भगाये गरीबी हर जन जीवनका

खुद को करे बुलंद इतना

दीपक जलाये घर घर स्वच्छताका

रंग पूरे एकता विश्वास शांत तिरंगाका

हर हिंदुस्तानी है सैनिक जगत कल्याणका

हर भारतवासी है प्रकृति संस्कृति रखवाला

आओ मिलके करे प्रतिज्ञा

हाथ से हाथ पकड़के करे वादा

सदा ऊंचा रखेंगे तिरंगा

सदा बहायेंगे प्रेम की गंगा

घर घर है हिंदुस्तान हमारा

हमसे है न्यारा हिंदुस्तान प्यारा

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हे पलक!
तु खुलने की जल्दी न कर
मेरे साँवरिया को सपनों में आना है

हे पलक!
तु जागने की मति न कर
मेरे साँवरिया को मुझमें जागना है

हे पलक!
तु उठने की बेचैनी न कर
मेरे साँवरिया को मुझमें रुकना है

हे पलक!
तु आकुल व्याकुल न हो
मेरे साँवरिया को मुझमें ठहरना है

हे पलक!
तु उघड़ने की कोशिश न कर
मेरे साँवरिया को मुझमें बसना है

हे पलक!
तु फरफराने की विधि न कर
मेरे साँवरिया को मुझमें सँवरना है

हे पलक!
तु संभलने की नीति न कर
मेरे साँवरिया को मुझमें खोना है

हे पलक!
तु सपनों से तिलमिला न हो
मेरे साँवरिया को मुझमें स्थिरना है

हे पलक!
तु विचारों से बेझिझक न हो
मेरे साँवरिया को मुझमें टहलना है

हे पलक!
तु मन से बेकरार न हो
मेरे साँवरिया को मुझमें आराधना है

हे पलक!
तु तेरे तन से कोई क्रिया न कर
मेरे साँवरिया को मुझको मुझसे लूटना है

"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"गूँजा मधुरा माला मधुरा
यमुना मधुरा वीचिर्मधुरा"
गूँजा
गूँज से गूँजा हुआ।
हर एक वैष्णव की गूँज
हर एक गोपि की गूँज
हर एक गोप की गूँज
हर एक आचार्य की गूँज
हर एक पुष्टि तत्व की गूँज
हर एक सृष्टि की गूँज
हर एक प्रकृति की गूँज
हर एक ब्रह्म की गूँज
जो गूँज से गूँजा अधिक द्रढ हुई है
कैसी गूँज थी वैष्णव की
कैसी गूँज थी गोपि की
कैसी गूँज थी गोप की
कैसी गूँज थी आचार्य की
कैसी गूँज थी पुष्टि तत्व की
कैसी गूँज थी सृष्टि की
कैसी गूँज थी प्रकृति की
कैसी गूँज थी ब्रह्म की
गूँज सदा आंतर ध्वनि है
गूँज सदा आंतर नाद है
गूँज सदा आंतर सूर है
गूँज सदा आंतर पुकार है
गूँज सदा आंतर आहवान है
यहाँ श्री वल्लभाचार्यजी ने जो गूँज लिख कर
यहाँ श्री वल्लभाचार्यजी ने जो गूँज कही
यहाँ श्री वल्लभाचार्यजी ने जो गूँज गाई
यहाँ श्री वल्लभाचार्यजी ने जो गूँज अनुभई
ओहह श्री वल्लभ!
आपश्री हमें क्या स्पर्श कराके क्या क्या परिवर्तन कराते हो?
"Vibrant Pushti"
जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

"रास्ता"

किसे कहते है?

उलट पुलट

अंदर बाहर

टेडा मेडा

तीव्र गति मंद गति

न संकेत न निशानी

न दिशा न दशा

न साधन न बंधन

न अधिकृत न मार्गसूचक

न चौराहा न गलि

न मोड़ न जोड़

न सिपाही न निर्देशक

न नियमन न संयमन

न मर्यादा न शिष्टता

न हादसा न जीवन

न सजा न फरियाद

न मृत्यु न अपंग

न क्रोध न भोग

केवल झझुमना, केवल भटकना, केवल टूटना

केवल बिछड़ना, केवल भ्रमणां

ऐसा है यह रास्ता न मंझिल कोई ओर

रुके वही आशियाना

ऐसा है यह रास्ता जो चले भारतवासी रोज

न खुद का रास्ता तो भी दौड़े विपरीतता मौज

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"गूँजा मधुरा"

कैसी गूँज लगाई श्री वल्लभ ने

जो गूँज श्री श्रीनाथजी को जगाई

दौड़ के आये श्री यमुना के द्वारे

पुष्टि सृष्टि की सिद्धांत रचाई

ऐसी गूँज जो मुझमें जागे

ऐसी गूँज मेरे आत्म तट श्रीयमुनाजी जगाये

ऐसी गूँज मेरे मन द्वार श्री वल्लभ जगाये

ऐसी गूँज मेरे तन रोम श्री गोवर्धन जगाये

ऐसी गूँज मेरे धन रंग श्री अष्टसखा जगाये

ऐसी गूँज मेरे जीवन साँस श्री षोडसग्रंथ जगाये

तो मेरे रंग तरंग में पुष्टि

तो मेरे अंग संग में पुष्टि

तो मेरे सृजन दर्शन में पुष्टि

तो मेरे अर्चन पूजन में पुष्टि

तो मेरे कर्म धर्म में पुष्टि

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

राधा!

कभी ऐसे ही अपने आप अकेले बैठे बैठे पुकारो

क्या होगा?

अपनी नयन से देखना

अपनी साँस से छूना

खुद में कुछ परिवर्तन पाओगे

यह परिवर्तन की अनुभूति "राधा" है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

चलती है यह धारा

जो धारा मेरे कुल से धरी

चलते गये पूर्वजो के पूर्वजो

मैं भी चलता हूँ यही धारा में

मेरे वंश भी चलते है यही धारा में

उनके भी वंश चलेंगे यही धारा में

कभी ऐसा मोड़ तो कभी ऐसा मोड़

मुड़ते मुड़ते कहाँ कहाँ जाये धारा

जहाँ जाये वहाँ पाये हम हमारे

कहीं कोई कैसे सागर में मिलेगी धारा

अगर हमें मिलना है परम अंशी को

पहुंचना है क्षीरसागर किनारा

खुद चले ऐसे सिद्धांत से

जो धारा मुड़े वही मोड़ से

यही तो है कर्म की जीवनधारा

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

क्या है यह पलके
जो न होती तो
न नैन झुकते न नैन उठते
न नैन सोते न नैन जागते
न नैन तिरछते न नैन बरसते
न नैन छुपाते न नैन ढूंढते
न नैन तरसते न नैन बिछड़ते
न नैन रोते न नैन हँसते
न नैन बोलते न नैन कहते
न नैन सुनते न नैन गाते
न नैन इशरते न नैन पुकारते
न नैन मूँदते न नैन बहते
न नैन रुठते न नैन तिरस्कारते
न नैन लपकते न नैन मटकते
न नैन भराते न नैन सुकहाते
न नैन सुलगते न नैन ठंड़ठंड़ाते
न नैन चलते न नैन ठहरते
न नैन बसाते न नैन ठुकराते
न नैन झबकते न नैन टपकते
न नैन चैनाते न नैन बेचैनाते
न नैन खरीदते न नैन बेचते
न नैन तोड़ते न नैन जोड़ते
न नैन ....
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"कृष्ण" जानने से पहले हमें कृष्ण प्रागट्य का रहस्य जानना है

"कृष्ण" जानने से पहले हमें कृष्ण आक्रंद जानना है

"कृष्ण" जानने से पहले हमें कृष्ण स्थली जानना है

"कृष्ण" जानने से पहले हमें कृष्ण कुटुंब जानना है

"कृष्ण" जानने से पहले हमें कृष्ण गाँव धर्म जानना है

"कृष्ण" जानने से पहले हमें कृष्ण समाज कर्म जानना है

"कृष्ण" जानने से पहले हमें कृष्ण भौगोलिक जानना है

"कृष्ण" जानने से पहले हमें कृष्ण आध्यात्म जानना है

"कृष्ण" जानने से पहले हमें कृष्ण प्रीत रीत जाननी है

मेरा समन्वय ऐसे कोई भी स्पर्श से होता है तो मैं "कृष्ण" को जानने की सरलता पा सकता हूँ।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

श्याम रंग से तन रंगाया

श्याम से गौर समाने

श्याम अंग से आसमाँ सजाया

श्याम से सूरज उगाने

श्याम तरंग से सागर लहराया

श्याम से घनघोर बरसाने

श्याम उमंग से अनिल उड़ाया

श्याम से भँवर गुनगुनाने

श्याम आँचल से धरती रक्षाया

श्याम से प्रकृति खिलने

श्याम संग से प्रीतरस पिलाया

श्याम से आत्म जुड़ने

श्याम श्याम से प्रियतम प्रकटाया

श्याम श्यामा श्यामा श्याम होने

ऐसी निराली प्रीत वर्धनी

जैसे श्री राधा यमुना पुष्टि सर्जनी

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"नंद घेर आनंद भयो
जय कनैया लाल की
हाथी घोड़ा पालकी
जय हो नंद लाल की"

क्या कह रहा है यह धून?

"नंद घेर आनंद भयो"
नही सुख भयो नही वैभव भयो
भयो आनंद भयो आंतर नाद
कैसे थे नंद गाँव के वासी
जो कर दिया सारे ब्रहांड को व्रज वासी
एक एक गोपि एक एक गोप
हर एक के तन मन धन में व्याप
अखिल ब्रह्मांड के परंब्रह्म पधारे थानके नन्हा बाल गोपाल
मेरे जीवन में आनंद भरने
मेरे जीवन में प्रीतरस भरने
यमुना जगायी गोवर्धन जगाया
जीवन खेलने अष्टसखा जगाया
साँस साँस राधा प्रकटायी
स्वर स्वर वल्लभ प्रकटाये
ऐसो है मेरो श्री नाथ
ऐसो है मेरो प्रियतम
जो पल पल मेरे साथ जिये
जो क्षण क्षण मेरो हाथ पकड़े
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

क्या है यह उत्सव जन्माष्टमी
जो निर्धन धन धन लूटाये
घर घर दीपक प्रकटाये
घर घर नंदगाँव रचाये
खुद को समझे बाबा नंद यशोदा
अपने को माने गोप गोपिका
ऐसे सजाये गृह वाटिका
जैसे कान्हा खुद जन्म धराये
श्रृंगार पहने रास खेले
खेले लीला श्री कृष्ण कन्हाई का
ऐसे रोम रोम में बसे गोविंदा
बसाये कृष्ण संस्कृति जीवन में
गृह गृह लाला गृह गृह गोपाला
बंसी बजाके नांचे धर्म वैष्णवता
गोकुल गोवर्धन नंदगाँव बरसाना
यमुना वृंदावन वृजधाम मथुरा
ऐसो है मोरो घर में नंदमहोत्सव
जो जन जन गाये
"नंद घेर आनंद भयो जय कनैया लाल की
हाथी घोड़ा पालकी जय हो नंद लाल की"

आजे श्री कृष्ण पधार्या मारे आँगनिया रे
उर मां उमंग थाय
हैया ना दीठनार हमारे संग संग जिये रे जगाये प्रीत अपरंपार
शु हरि गुण गाय आ पापी तन जीवलडो रे
खुद आनंद लूटावा आय
आओ छे चितचोर प्यारो साँवरियो मारो
जो जन्म जन्म सोहाय
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

किस्मत का खेल है निराला

जो किस्मत से खेले

उनसे किस्मत खेले

जिसमे सदा किस्मत जीत जाये

पर

जो खुद किस्मत बनाये

वो किस्मत से खेले

उनमें वह खुद जीत जाये

इसीलिए तो

सूरज उगता है

फूल खिलता है

झरना फूटता है

हवा महकती है

और हममें निस्वार्थ विचार प्रेरते है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

मैं पढ़ रहा था मेरे जीवन की किताब

हर पन्ने पर "जय श्री कृष्ण" लिखा था

हर पन्ने पर "श्री कृष्ण शरणं ममः" लिखा था

मैं सहसा गया

कौन लिख रहा था हर पन्ने पर ऐसा

संवरता संवरता पहचान लिया

लिख रही थी मेरी माता "जय श्री कृष्ण"

लिख रहे थे मेरे पिता "श्री कृष्ण शरणं ममः"

माता सुबह मंगल मुहर्त में करती थी पार्थना

पिता शाम की संध्या वंदना में करते थे साधना

यही ही है जीवन पुरुषार्थ जो जन्म करे कृतार्थ

निस्वार्थ से जीना, विश्वास से जीना

संस्कृति संस्कार पल पल संवरना

हर एक के भीतर हरि निहालु

हर मन के भीतर आनंद उजालु

"जय श्री कृष्ण" पल पल निभाऊं

"श्री कृष्ण शरणं ममः" सदा ध्याउँ

न रहे दोष न रहे विटाम्बना

हर पल मधुर रहे मेरे अंगना

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

क्या है हम की हमें

प्रकृति भी हैरान करें

सृष्टि भी हैरान करें

संसार भी हैरान करें

समाज भी हैरान करें

कुटुंब भी हैरान करें

साथी भी हैरान करें

खुद का विचार भी हैरान करें

खुद का कर्म भी हैरान करें

खुद का तन मन धन भी हैरान करें

हाँ! हम क्या है?

हमें अवश्य टटोलना चाहिए।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

मुझे श्री प्रभु प्रेम पीना है

कैसे?

जैसे मैं उनकी हो जाऊं

जैसे मैं उनमें खो जाऊं

जैसे मैं उनसे जुड़ जाऊं

जैसे मैं उनमें डूब जाऊं

जैसे मैं उनसे लड़ जाऊं

जैसे मैं उनमें विरह जाऊं

जैसे मैं उनसे लूट जाऊं

जैसे मैं उनमें मिट जाऊं

जैसे मैं उनसे लिपटा जाऊं

जैसे मैं उनमें पगला जाऊं

जैसे मैं उनपे मरता जाऊं

जैसे मैं उनमें खिंचता जाऊं

जैसे मैं उनसे संवरता जाऊं

जैसे मैं उनमें भटकता जाऊं

जैसे मैं उनको गाता जाऊं

जैसे मैं उनमें रंगाता जाऊं

जैसे मैं उनसे तडपता जाऊं

जैसे मैं उनमें झूमता जाऊं

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

यही तो पीना है - प्रेम रस

जो पीते पीते हर रोम श्याम हो जाये।

मैं श्यामा तु श्यामलिया हो जाये।

मैं राधा तु कृष्ण हो जाये।

मैं गोपि तु गोपाल हो जाये।

मैं मोहनिया तु मोहन हो जाये।

मैं साँवरी तु साँवरिया हो जाये।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

ऑय संभाल!

ओहह! कौन किसको कहता है

ओहह! कौन किसको सुनाता है

ओहह! कौन किसकी सुनता है

ओहह! कौन किससे कहता है

ओहह! कौन किसीकी सुनता है

ओहह! कौन किसीसे सुनता है

कैसे है ये लोग?

जो क्या क्या कहता है

जो क्या क्या सुनते है

जो क्या क्या सुनाते है

हाँ!

कुछ हाँ में हाँ भरे

कुछ हाँ में ना भरे

कुछ हाँ में ना बोले

कुछ हाँ में मौन रहे

कुछ हाँ में हाँ बोले

कुछ हाँ में ना कहे

कुछ हाँ में हाँ कहे

समझे खुद की भाषा

ऐसे है यह जीवन लोगों के

ऐसे है यह लोग जीवन के

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

क्या है हमारा जीवन? - आश्वस्नीक 😔

क्या है हमारा स्वभाव? - आश्रित 😔

क्या है हमारा अहम? - काल्पनिक 🤔

क्या है हमारा धर्म? - वैश्विक 😁

क्या है हमारी मान्यता? - तार्किक 😏

क्या है हमारी गति? - अर्धनैतिक 🤤

क्या है हमारी कृति? - मान्यस्वीक 🤤

क्या है हमारी दृष्टि - आभासित 😎

हर प्रश्न का उत्तर अति गहराई भरा है।

अवश्य सोचो और अपने आपको समझो और अपनी सर्वोत्तम गति के लिए परिवर्तन कैसे करना है वह अपनावो। 🌷🙏🌷

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कितना थकना है मुझे
जो हर रीत से थकता जाऊँ
कितना हारना है मुझे
जो हर रीत से हारता जाऊँ
कितना सहना है मुझे
जो हर रीत से सहता जाऊँ
कितना डरना है मुझे
जो हर रीत से डरता जाऊँ
कितना भागना है मुझे
जो हर रीत से भागता जाऊँ
कितना हटना है मुझे
जो हर रीत से हटता जाऊँ
कितना मरना है मुझे
जो हर रीत से मरता जाऊँ
कितना झुकना है मुझे
जो हर रीत से झुकता जाऊँ
कितना समझना है मुझे
जो हर रीत से समझता जाऊँ
कितना रुकना है मुझे
जो हर रीत से रुकता जाऊँ
कितना छुपना है मुझे
जो हर रीत से छुपता जाऊँ
कितना रहना है मुझे
जो हर रीत से रहता जाऊँ
कितना सोचना है मुझे
जो हर रीत से सोचता जाऊँ
कितना करना है मुझे
जो हर रीत से करता जाऊँ
कितना मानना है मुझे
जो हर रीत से मानता जाऊँ

हे मानव! इसीलिए तो तु है
जो तुझे जन्म दिया
जो तुझे मन दिया
जो तुझे जीवन दिया
जो तुझे संसार दिया
जो तुझे सूर्य दिया
जो तुझे आकाश दिया
जो तुझे धरती दिया
जो तुझे सागर दिया
जो तुझे ....
तु ही तु हो
जो तु ही तु हो
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

मानव

मानुस

मनुष्य

क्या है ये?

मन + आव = मानव

मन + आउस = मानुस

मन + उष्य = मनुष्य

मन सर्वे में है

अब

आव = जिसके पास मन आये

जिसके पास से मन जाये

जिसजे साथ मन जाये

जिसके साथ से मन जाये

जिसके आंतर मन गति करे

जिसके अंदर मन मनचले

यह है मानव

आउस = जो मन को उत्स करे

जो मन का उदभव करे

जो मन को चल अचल करे

जो मन को चंचल करे

जो मन को उजागर करे

जो मन को जागृत करे

यह है मानुस

उष्य = मन का उष हो

मन का धारण हो

मन का धर्म हो

मन का प्रकटना हो

मन का शिक्षण हो

मन का सकर्म हो

मन का संचलन हो

मन का संतुलन हो

यह है मनुष्य

अभी समझले हम कौन है और कैसे है?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कभी रुकता हूँ

कभी टटोलता हूँ

कभी जागता हूँ

कभी सोता हूँ

कभी ठहरता हूँ

कभी दौड़ता हूँ

कभी संभलता हूँ

कभी टकराता हूँ

कभी जलता हूँ

कभी तडपता हूँ

कभी भूलता हूँ

कभी छोड़ता हूँ

कभी तोड़ता हूँ

कभी झूमता हूँ

कभी रोता हूँ

कभी सहमता हूँ

कभी विरहता हूँ

कभी गुमसुमता हूँ

कभी अपनाता हूँ

कभी नाचता हूँ

कभी गाता हूँ

कभी भटकता हूँ

कभी भागता हूँ

कभी रमता हूँ

कभी भोगता हूँ

कभी सोचता हूँ

कभी उठता हूँ

कभी पुकारता हूँ

कभी तरसता हूँ

कभी स्पर्शता हूँ

कभी ठुकराता हूँ

कभी जीता हूँ

कभी मरता हूँ

हे मेरी प्रीत! तेरे लिए मैं क्या क्या हूँ?

कभी राधा! कभी यमुना!

कभी कृष्ण! कभी श्याम!

कभी सीते! कभी गोपि!

कभी राम! कभी गोपाल!

क्या क्या करता हूँ!

ऐसे ऐसे ही तुझसे जुड़ता हूँ अकेला अकेला

हे मेरी पुष्टि!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हमने सबने देखा

सिर्फ साड़ी

मुस्कुराता मुखडा

एक ही धुन

एक ही संगीत

न पुलिस

न कोई ऐसा रास्ता जो ट्राफिक को हैरान करें

वंदन है 🌷🙏🌷

"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

अभी इतना पता हो रहा है

अहंकार कैसे जागता है,

अहंकार कैसे उठता है,

अहंकार कैसे उदभवता है,

अहंकार कैसे उत्सता है,

हमारे विचार

हमारे व्यवहार

हमारी क्रिया

हमारी सूत्रता से

ये इतनी गहरी और चिंतनीय विशेषज्ञ है

जो जीव और जीवन के हर समय अर्थात काल में जीवंत है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🙏🌷

"पिता" जिसका पता सर्वे को रहता है वह 🙏

"पिता" जिसका सन्मान सर्वे को जगाता है वह 🙏

"पिता" जिसका सार्वभौमत्व सर्वे को स्पर्शता है वह 🙏

"पिता" जिसकी निडरता सर्वेको उत्कृष्ट करती है वह 🙏

"पिता" जिसकी मर्यादा सर्वे को अपनानी होती है वह 🙏

"पिता" जिसकी क्षमता सर्वे को मापती है वह 🙏

"पिता" जिसकी एकलता सर्वे को सिखाती है वह 🙏

"पिता" जिसका सामर्थ्य सर्वे को वीरती है वह 🙏

"पिता" जिसकी क्षमा सर्वे को वंदती है वह 🙏

"पिता" जिसकी दीर्घदृष्टि सर्वे को संकेतती है वह 🙏

"पिता" जिसकी छांव सर्वे को शांतती है वह 🙏

"पिता" जिसकी हुँकार सर्वे को हिम्मतती है वह 🙏

"पिता" जिसका मौन सर्वे को निर्णानित है वह 🙏

"पिता" जिसकी प्रीत सर्वे को इखलाती है वह 🙏

"पिता" जिसका अस्तित्व सर्वे को पुरुषार्थी है वह 🙏

"पिता" जिसका नस्तित्व सर्वे को इझराति है वह 🙏

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

योगिनी मैं बन जाऊँ साँवरिया तोरी

योगिनी मैं बन जाऊँ साँवरिया तोरी

योगिनी बन कर वन वन डोलू

तेरे ही गुन गाउँ

नित उरकी कंपित वीणा पर

तेरा ध्यान लगाऊँ

योगिनी मैं बन जाऊँ साँवरिया तोरी

यमुना बन कर गोवर्धन सिंचु

व्रजरज ही जगाऊँ

जीवन परिभ्रमण पुष्टि कर

पुष्टि पंथ प्रकटाऊँ

योगिनी मैं बन जाऊँ साँवरिया तोरी

योगिनी मैं बन जाऊँ साँवरिया तोही

"योगिनी एकादशी" सर्वे पुष्टि जनो को प्रणाम 🙏

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

ये तो कहो

ये तो कहो

कौन हो तुम?

याद भी निराली

महक भी मतवाली

तन मन कैसे करें रखवाली

बिंदिया सजायी

कंगना खनकायी

पायल पुकारें प्रीत पिया साँवरी

हो हो ये तो कहो

ये तो कहो

कौन हो तुम?

कौन हो तुम?

नैन नैन मिलायी

अंग अंग लगायी

रोम रोम साँवरा रंग अपनायी

साँस साँस जगायी

अधर अधर पिलायी

आत्म श्याम पुष्टि प्रीत प्रकटायी

हो हो ये तो कहो

ये तो कहो

कौन हो तुम?

कौन हो तुम?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

ऐसा तो क्या करें

जिससे खुद से आनंद प्रकटे

जिससे खुद से विशुद्धता जागे

जिससे खुद से पवित्रता प्रसरे

जिससे खुद से मधुरता महके

जिससे खुद से विश्वास द्रडे

जिससे खुद से ज्ञान बढ़े

जिससे खुद से कष्ट नष्टे

जिससे खुद से सेवा उठे

जिससे खुद से करुणा बहे

जिससे खुद से सन्मान वंदे

जिससे खुद से भक्ति सींचे

जिससे खुद से तेज प्रखरे

हाँ! यही तो हमारा जन्म और जीवन है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

"रथयात्रा"

रथ अर्थात मन

रथ अर्थात तन

रथ अर्थात धन

रथ अर्थात आत्म

रथ अर्थात अंश

रथ अर्थात जीव

यात्रा अर्थात मानसी

यात्रा अर्थात परिक्रमा

यात्रा अर्थात व्यय - व्यतीत

यात्रा अर्थात परिभ्रमण

यात्रा अर्थात जन्म जन्मांतर

यात्रा अर्थात भटकवु

रथयात्रा

मन की मानसी

तन की परिक्रमा

धन का व्यय - व्यतीत - व्यवहार

आत्म का परिभ्रमण

अंश का जन्म जन्मांतर

जीव का भटकना

अति गहरी और सर्वोत्तम रहस्य है यह कि हम कौन और कैसे है और कौनसी दिशा में कैसी गति।

रथयात्रा से एक ऐसा परीक्षण है जो अंशी अर्थात परमात्मा - परब्रह्म अपनी खुद की निधि, रीति, गति को खुद अपने कर्म से जो घटित हुआ है और होते होते जो परिवर्तन होता है उनका निरीक्षण करके खुद का अहेवाल तैयार करके खुद की पहचान करके खुद में कितना परिवर्तन करना है जिससे हर तत्व, ब्रह्मांड, प्रकृति, सृष्टि, जगत में विशुद्धता, योग्यता, पवित्रता, धर्मता, सत्यता की व्यापकता सुधार हो।

"कर्म का सिद्धांत सर्वे की पहचान" 🙏🙏🙏

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"रथ पर सवार हो कर

आया मेरा जगन्नाथ"

जन्म जन्म की प्यास बुझाने

खड़े है हम भी ऐसे

जैसे उनकी धर्म प्रियता धरके

जय घोष हम भी करते है

जैसे उनकी कर्म सिद्धांत रीत अपनाके

आया आया "मेरा जगन्नाथ आया"

"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

प्रीत की रीत से आत्म परमात्मा हो जाता है

जैसे

लैला - मजनू

हीर - रांझा

रोमियो - जूलियट

और हमारा जीवन?

हम कितने मर्यादित अर्थात कितने असमंजस अर्थात कितने संकुचित अर्थात कितने संशयी अर्थात कितने नासमझ अर्थात कितने अज्ञानी है कि

हम प्रीत को कैसे कैसे विचारो, क्रियाओ, रीतो, मान्यताओं, साधारणताओ, सामान्यताओ, अधुरपताओ, रुढताओ, अव्यवहारताओ, निम्नताओ से देखते है, छूते है, भोगते है, सोचते है, कृतकृतते है, नियमितते है, द्रढ़ते है, दोरते है, सिंचते है, अपनाते है, घूटते है, लूटते है, मोड़ते है, योजते है, संसर्गते है, शिक्षते है, घडते है, बांधते है, संहारते है, नियमनते है, डरते है, छुपाते है, भागते है, मारते है, अविश्वाशते है, असत्यते है, दुष्टते है, धृष्टते है, दुरुपयोगते है, अंधारते है, डुबोते है, नष्टते है, व्याकुलते है, भ्रष्टते है, बुझाते है, भुसते है, खोते है, तोड़ते है, बरबादते है, कपटते, छोड़ते है, भूलते है, मुंझाते है, सहते है, नफरतते है, स्वार्थते है।

सच हम क्या है?🙏

मुझे नही पता है

मैं कैसा मनुष्य हूँ?

मैं कैसा इन्सान हूँ?

मैं कैसा आदम हूँ?

मैं कैसा व्यक्ति हूँ?

हिंदुत्व अपनावित

न राधा को समझ सकता हूँ न कृष्ण को समझ सकता हूँ

न भक्त को समझ सकता हूँ न भगवान को समझ सकता हूँ

न ज्ञान को समझ सकता हूँ न श्रेष्ठ गुरु - आचार्य को समझ सकता हूँ।🙏

केवल भटकता हुआ एक जीव हूँ।🙏

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"कृष्ण" क्या क्या है?

हमारे परम प्रिय श्री आचार्यजी हममें श्री कृष्ण का निरूपण कैसे करते है?

हम जो भी मनुष्य है, हममें विशुद्धता, पवित्रता, विश्वसनीयता, योग्यता, अखंडता, स्थिरता और आनंदमयता का उत्स जो करें और धरे वही हमारे परम प्रिय गुरु है, हमारे परम प्रिय आचार्य है।

संप्रदाय कोई भी हो पर जो हममें अपनी

अनन्ता एव कृष्णस्य लीला नामप्रवर्तिका:।🌷

पुरुषो ध्यानमत्रोतक्तमं सिद्धि: शरणसंस्मृति:।🌷

भक्तोध्द्वार प्रयत्नात्मा जगत्कर्ता जगन्मय:।🌷

भक्तिप्रवर्तकस्त्राता व्यासचिन्ताविनाशक:।🌷

अन्तरात्मा ध्यानगम्यो भक्तिरत्नप्रदायक:।🌷

भक्तकार्यकनिरतो द्रौण्यस्त्रविनिवारक:।🌷

भक्तसम्यप्रणेता च भक्त वाक्परिपालक:।🌷

ब्रह्मण्यदेवो धर्मात्मा भक्तानां च परीक्षक:।🌷

उत्तराप्राणदाता च ब्रह्मास्त्रविनिवारक:।

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

ओहह मेरे श्रेष्ठतम श्री प्रभु!🌷🙏🌷

ओहह मेरे परम श्रेष्ठ श्री आचार्य!🌷🙏🌷

आपने हमें क्या क्या रहस्य कह दिये, सार्थक किया, सिद्ध किये, प्रमाणित किये।

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

आपको हमारा कोटि कोटि वंदन!🙏

आपको हमारा साष्टांग दंडवत प्रणाम!🙏

कितनी सहजता और सरलता से हममें श्री कृष्ण को उत्स किया और निरुपण किया।

अदभुत! 🙏

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हम मनुष्य है, हममें कहीं ज्ञानेन्द्रियाँ है, भावेन्द्रियाँ है, सिद्धेन्द्रियाँ है, सुसुस्पतेन्द्रियाँ है और कर्मेन्द्रियाँ है।

हर एक कि पहचान है, सार्थकता है, विशेषता है, योग्यता है।

आज हम इनमें से एक का पूछते है

"सुनना" किसे कहते है और क्यूँ कहते है?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

थकु मैं ऐसे विचारों से
जो मेरा संसार असार करे
हारु मैं ऐसी वृत्ति से
जो मेरा मन विचलित करे
डरु मैं ऐसे कुकर्म से
जो मेरा अंग अधर्म आचरे
याचूँ मैं ऐसी तृष्णा से
जो मेरा आंतर दीप बुझाये
भागु मैं ऐसी घृणा से
जो मेरा सामर्थ्य हारता जाये
छुपु मैं ऐसे वचन से
जो मेरा अस्तित्व मिटाता जाये
पूछूं मैं ऐसे कथन से
जो मेरा ज्ञान मूर्खता जाये
निभाऊं मैं ऐसे रंज से
जो मेरा संबंध अहवेलता जाये
संस्कृतु मैं ऐसी अविद्या से
जो मेरी शिक्षा भ्रष्टति जाये
विचरु मैं ऐसे कुसंस्कार से
जो मेरा जन्म मरता जाये
अर्चनु मैं ऐसे स्वार्थ से
जो मेरा धन बिखरता जाये
रहूँ मैं ऐसी अशुद्धि से
जो मेरी प्रीत दुष्टति जाये
भजु मैं ऐसे संदेह से
जो मेरा प्रभु रुठता जाये
नहीं नहीं! हे प्रभु प्रियतम!
न मुझसे कुछ ऐसा होना
जो मैं तेरा अंश न रहूँ।
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"विषय" "विष"

हम हर शास्त्र में पढ़ते है,

हम हर शास्त्री से सुनते है,

हमें हर सत्संग में समझाते है,

हमें हर बार जागृत करते है,

विषयों अर्थात विष की आपूर्ति, विष की चेष्टा, विष की स्वीकृतता, विष की लोलुपता, विष की चंचलता, विष की मोहकता, विष की वृत्तता यह शरीर, यह जीवन, यह जन्म को नष्ट करता है।

हम समझते है - हम संसारी है, हम अज्ञानी है, हम जीव है, हम मानव है, तो हम सूक्ष्मता से भी विषयों से जुड़े ही है, एकात्म है, एक रुप है, एक्य है, साम्य है। तो ये गलत है। हमारी यही धारणा, मान्यता, स्वीकार्यता ही हमारा शरीर, हमारा जीवन और हमारा जन्म को नष्ट करता है। जो विष से जुड़े है उनका मृत्यु निश्चिंत है, मुक्ति हीन है, मृत्यु के सार्थकं है। इसीलिए तो हमारा मृत्यु निश्चयी है। चाहे हम शास्त्री हो, ज्ञानी हो, संत हो, बुद्धिवन्त हो, भक्त हो तो भी हमारे लिए हमारा काल निश्चिंत है।

न मुक्ति न प्रीति

न समृद्धि, न बुद्धि

न प्रज्ञानी, न भक्ति

केवल और केवल दोष युक्त

केवल और केवल भ्रष्ट सुक्त

मृत्यु, मृत्यु, मृत्यु, मृत्यु

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

मन से मोहन

तन से त्रेत्रयं

धन से धनंजय

नयन से नयनाभिराम

कर्ण से करुणाधार

नासिका से नरसिंह

अधर से अच्युत

मुख से मुखारविंद

मुखडा से माधव

ऐसो है मेरो श्याम

जो मोहे हर मुखड़े के तीर से तारे

जो मोहे हर मुखड़े के भाव से भावे

जो मोहे हर मुखड़े के इशारे से इशे

यही है मेरा सुंदिर श्याम!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

"अहं ब्रह्मास्मि" श्री जगतगुरु शंकराचार्यजी ने बृहत और विशालता से द्रष्टि दिशा दर्शायी है, जतायी है कि - हम कौन है? यह पहचान के लिए अति सूक्ष्मता से संस्कृत किया है।

अहंकारी विचार धारा, अर्धज्ञानी चिंतन और मनन धारा से हम खुद को और खुद के विचार और क्रिया को निम्न और अघटित कर दिया है।

"अहं ब्रह्मास्मि" ये कोई साधारण सूत्र नही है। ये अति गूढ, विशुध्ध , संस्कृत स्पर्शिय, प्रज्ञानी सिद्धि है।

जो हमें यह उत्स करती है कि

हम खुद ही हमारा सत्य का उजागर करे

हम खुद ही अपने आपको पहचाने

हम खुद ही ज्ञान का दीपक प्रज्वल्लित करे

हम खुद ही हमारा अहंकार नष्ट करे

हम खुद ही हमारा धर्म जगाये

हम खुद ही हमारा चैतन्य स्वरुप जगाये

हम खुद ही हमारे विषयो को अमृत करे

हम खुद ही हमारा द्वैत मिटाये

हम खुद ही हमारा विकार मिटाये

हम खुद ही हममें योग्य व्यक्तित्व जगाये

हम खुद ही आनंद है जो परमानंद हो जाये

हम खुद ही हमारी निस्पृहता को द्रढ करे

हम खुद ही हमारी भ्रमणा को मार सकते है

"अहं ब्रह्मास्मि" को जागृत करना ही हमारी योग्यता है।

हर जीव तत्व "अहं ब्रह्मास्मि" तो सारा जगत ब्रहम हो तो हम परंब्रह्म में एकात्म हो सकते है।

हमारे सर्वे गुरु आचार्यो को यही

"Vibrant Pushti"

सुमन से चरण स्पर्श वंदन🌷🙏🌷

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

मेरे प्रिये! मेरे परम पूज्य सत्यार्थी!

मेरे परम प्रीते! मेरे परम स्नेहार्थी!

मेरे वंदनीय! मेरे सदा स्मरणीय!

मेरे वचनीय! मेरे कर्मगतिय!

मेरे स्पर्शिय! मेरे दर्शनीय!

मेरे सारथी! मेरे प्रत्यार्थी!

हे मेरे श्री गुरुजी! आपने हृदयस्थ प्रणाम!

मुझे मेरे जीवन और जन्म कृतार्थ करने

जो आपके सीमाचिन्ह मार्गदर्शन पा रहा हूँ

यह सदा शिक्षामृत धारा मुझे प्राप्त हो रही है

उन्हें मैं सदा पवित्रार्थे, कल्याणार्थे, योग्यतार्थे, धर्मार्थे हर तत्वों को प्रदान करु ऐसी विनंती स्वीकार्य हो!🌷🙏🌷

"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

यहाँ की मिट्टी क्या है?
यहाँ की हवा क्या है?
यहाँ की धरा क्या है?
यहाँ की महक क्या है?
यहाँ की नदी क्या है?
यहाँ की भूमि क्या है?
यहाँ की गूँज क्या है?
यहाँ का जल क्या है?
यहाँ का अन्न क्या है?
यहाँ का साँस क्या है?
यहाँ का वास क्या है?
यहाँ का आवास क्या है?
यहाँ का आकाश क्या है?
यहाँ का सागर क्या है?
यहाँ का स्वर क्या है?
यहाँ का मंत्र क्या है?
यहाँ का धर्म क्या है?
यहाँ का वायु क्या है?
यहाँ का जन्म क्या है?
यहाँ का साक्षर क्या है?
यहाँ का संस्कार क्या है?
यहाँ का जीवन क्या है?
क्या कहे यह हिंदुस्थान को!
सच! क्या है? क्या करते है हम?
हर व्यक्ति सोचे!
हर वासी सोचे!
हर आवासी सोचे!
ओह्ह! श्री आचार्यो!
ओह्ह! श्री अवतारों!
ओह्ह! श्री ....
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

भिन्न भिन्न की भिन्नता में खो गया मैं
भिन्न भिन्न की भिन्नता में डूब गया मैं
कैसे भिन्न से जन्म कैसे भिन्न से जीवन
कैसे भिन्न से रंग कैसे भिन्न से संग
सच!
कैसे भिन्न से संस्कार सींचने के
कैसे भिन्न से शिक्षण सिखने के
कैसी भिन्नता से गति जगाने की
कैसी भिन्नता से मति पा ने की
जो पल पल विचार नविचार कराये
जो पल पल क्रिया अक्रिया सरजाये
भिन्न भिन्न की भिन्नता में खुद को खुद से भुलाये
भिन्न भिन्न की भिन्नता में खुद को अपनो से मिटाये
हा! पस्तावो विपुल झरना
स्वर्ग से गति करता है
पापी उनमें खुद को डूबाके
पूण्यशाली होता है
ओहह! कैसी है भिन्न लीला उपर वाले की
जो भिन्न भिन्न की भिन्नता में खुद को लूटाते जाता है
जो भिन्न भिन्न की भिन्नता में खुद को मारते जाता है
कैसी ये भिन्नता जो न खुद जिये न अपने को जियाये
जो भिन्न भिन्न की भिन्नता में खुद को जलाते जाता है।
ओहह! प्रकृति धारी
ओहह! प्रकृति प्यारे
तुझे यह साधक का आत्मीय प्रणाम!🌷🙏🌷
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

जीवन की सच्चाई में

1, कभी भी कैसी भी सोच जो अच्छी होगी तो हमें तारेगी, जो बुरी होगी तो हमें मारेगी ही

2, कभी भी कैसा भी बोल अर्थात कथन अर्थात कहा जो अच्छा होगा तो हमें साथ देगा जो बुरा होगा तो हमें हैरान करेगा ही

3, कभी भी कैसा भी चुराया होगा जो तुल्य हीन होगा या तुच्छ होगा तो हमसे वापस लेगा ही लेगा

4, कभी भी कैसी भी दृष्टि हमनें निहारी होगी जो शुद्ध होगी वह हमें शुद्ध ही करेगी जो अशुद्ध होगी तो अशुद्ध ही करेगी

5, कभी भी कैसी भी क्रिया हमनें करी होगी जो सैद्धान्तिक होगी तो सैद्धान्तिक पूर्णता करेगी जो असैद्धांतिक होगी तो असैद्धांतिक अधुरूप कर हमें अयोग्य परिष्कृत करेगी ही

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हर बूँद में रीत भरी है

बूँद बूँद परिवर्तिता है

जिसको छुये बूँद का है

जिसको पीये बूँद का है

बूँद से पहचाना बूँद होना

बूँद से बूँद एक धारा होना

जैसे वसुंधरा का सागर

जैसे मन जीवन की माँ

क्षण क्षण संस्कृत

घड़ी घड़ी अमृत

बूँद बूँद प्रीतामृत

ओ! मेरे परम प्रिये परमात्मा!

तु हर रीत से है मेरा प्रियतम!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

जीवन के हर जीव की कोई चरित्रता है

प्रकृति के हर तत्व की कोई पहचान है

सृष्टि के हर रचना की कोई स्पष्टता है

ब्रह्मांड के हर पदार्थ की कोई गति है

सच! हर स्पर्शता से जो पुष्टि ऊर्जा उठे तो

हर जीव श्री कृष्ण हो

हर तत्व श्री गोवर्धन हो

हर रचना श्री यमुना हो

हर पदार्थ श्री राधा हो

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"भगवान" भग + वान = भगवान

भग - जो तत्व हर तत्वों का रक्षण करे

भग - जो तत्व हर तत्वों को विशुद्ध भाव का अनुभव करावे

भग - जो तत्व हर तत्वों का भूत अर्थात अनुशाशन है

भग - जो तत्व प्रकृति, सृष्टि और संसार में रहने और होने से उन्हें प्रकृति, सृष्टि और संसार के बंधनों का स्पर्श नही होता है

भग - जो तत्व अपने विचार, क्रिया और अनुसंधान से प्रकृति, सृष्टि और संसार के घटमाल से मुक्ति प्रदान करे

भग - जो तत्व अपने सामर्थ्य से भूत, वर्तमान और भविष्य में हर तत्वों को योग्यता संस्कृत करे

भग - जो तत्व अपने आप प्रकट हो कर प्रकृति, सृष्टि और संसार का साकार स्वरूप धारण करके सारी प्रकृति, सृष्टि और संसार में आमूल परिवर्तन करके - धर्म संस्थापन करे

यही तो वान है मूल तत्व का

यह तत्व को भगवान कहते है

यह तत्व को परम श्रेष्ठ कहते है

यह तत्व को परमेश्वर कहते है

यह तत्व को परमात्मा कहते है

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

ओ श्रीनाथजी

तेरा द्वार है नाथद्वारा

तेरा बसना है बरसाना

तेरा नाचना है नंदगाँव

तेरा लीला वृंद है वृंदावना

तेरा गौचारण है गोवर्धना

खुद को संभालना अब ऐसी रीत से

क्यूँकी

मेरा नैन है अब तेरा द्वार - नाथद्वार

मेरा तन है अब तेरा बसना - बरसाना

मेरा मन है अब तेरा नाचना - नंदगाँव

मेरी इन्द्रियाँ है अब तेरा वृंद - वृंदावन

मेरी क्रिया है अब गौचारण - गोवर्धन

तुझे ठहरना मेरे द्वार

तुझे बसना मेरे स्वार

तुझे नाचना मेरे घर

तुझे लूटाना मेरे प्यार

तुझे करना मेरे गौचार

क्यूँकी

तुने जन्म दिया जगत द्वार

तुने मनुष्य तन रचाया सृष्टि अपार

तुने नाँच नचाने जगाया संसार

तुने प्रीत लुटाने प्रकटाया प्यार

तुने पुरुषार्थ करने किया धर्म संस्कार

यही नैन है तेरे

यही मन है तेरे

यही तन है तेरे

यही धन है तेरे

यही जीवन है तेरे

यही स्मरण है तेरे

यही प्रियतम है तेरे

न तु कहीं जा सकता है हमसे

न तु कुछ कर सकता है बिना हमसे

तु ही हम है

हम ही तु है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कितनी बार सुना यह कलयुग है

और

कितनी बार सोचा कि

मेरा जन्म यह कलियुग में ही क्यूँ?

क्या आपने भी कभी सोचा है?

सतयुग में ऐसा क्या था

त्रेतायुग में ऐसा क्या था

द्वापरयुग में ऐसा क्या था

कलयुग में ऐसा क्या है?

परंब्रहम ने तो तीनो युग में अवतार धारण किया था, क्यूँ?

कैसी लीला

कैसी गति

कैसी रीति

कैसी मति

कैसी तृष्टि

समझना तो चाहिए!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हाँ! आज कहना भी कुछ होता है

हाँ! आज बोलना भी कुछ होता है

हाँ! आज सुनना भी कुछ होता है

हाँ!

पर एक सर्वोत्तम रीत भी है

हाँ! मौन रहना

इससे तो होता ही है

जो संसार के सुख दुःख का फैसला

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"सौभाग्य"

हमारे जन्म से लेकर हमारी अनुसार, अनुरूप, अनुभव, अनुमति, अनुग्रह, अनुकूल, अनुगामी, अनुगमन, अनुहार, अनुकरण, अनुकंपा, अनुराग, अनुज्ञात, अनुसंधान, अनुमान, अनुमोदन, अनुशाशन कर्म करते करते जो गति पाते है, यही गति हमें हमारी आंतरिकता और बाहयता में ज्ञान, भाव, स्पर्श, और आनंद की कक्षा पर पहुंचाते हैं, यही कक्षा सूक्ष्मता से हमारा भाग्य संवारता है और संवारते संवारते हमें सौभाग्य प्राप्त करवाता है, यही सौभाग्य से ही हमें श्री प्रभु स्मरण, श्री प्रभु दर्शन, श्री प्रभु ज्ञान, श्री प्रभु भाव, श्री प्रभु अनुभव, श्री प्रभु स्पर्श होता है।

यही ही सौभाग्य है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

आज श्री गणेश चतुर्थी है।

आप क्या समझ रहे हो कि

श्री प्रभु हमारे घर पधारे - हमारे आँगन पधारे!

हाँ!

तो हमें प्रथम खुद को आध्यात्मिक संकल्प करना है,

हमें खुद को आध्यात्मिक पुरुषार्थ करना है,

हमें खुद को आध्यात्मिक अंतःकरण जगाना है।

आध्यात्मिक संकल्प -

हमारे मन, तन, धन में श्री प्रभु पधारे

अर्थात

हम जो भी सोचें - मन

हम जो भी क्रिया करें - तन

हम जो भी व्यवहार धरें - धन

उनमें शुद्धता हो

उनमें पवित्रता हो

उनमें निःस्वार्थ हो

यह शुद्धता हम पायेंगे - हमारा योग्य नियम और संयम से

यह पवित्रता पायेंगे - हमारा आचरण और आवरण से

यह निःस्वार्थता पायेंगे - हम अपने आपको समर्पित करके

यही तो है प्राथमिक प्राधान्य श्री गणेश चतुर्थी की उत्सव की - जो श्री प्रभु पधारे हमारे घर - हमारे आँगन तो हमें कैसा होना है, हमें कैसा रहना है, हमें कैसा सँवरना है।

न समझो ऐसा की यह मर्यादा है

न समझो ऐसा की यह अन्याश्रय है

न समझो ऐसा की यह पुष्टि नही है

अरे!

हममें शुद्धता जगानी है तो

न भेदभाव करें केवल योग्य मन भाव करे

हममें पवित्रता जगानी है तो

न धर्म का विभाजन करें केवल योग्य तन कृति करे

हममें निःस्वार्थता जगानी है तो

न भौतिकता का संग्रह करें केवल योग्य आध्यात्मिक आचरण करे

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

सखा सखी सखी सखा

रिश्ता निराला

जो मिले तो खेल निराला

जो न मिले तो विरह निराला

न दूजे को एक से चले

न एक को दूजे से चले

उनका तन एक

उनका मन एक

हर रीत में समर्पण अनेक

हर लीला में आनंद अनेक

कोई एक से रूठे

हर कोई अनेक से रूठे

कोई अनेक से रूठे

हर एक हर एक से रूठे

ढूंढे चित अपरंपार

टूटे पल वारंवार

न चैन अति दूर में

बहुत बैचैन अति विरह में

कब मिले कब मिले

मन व्याकुल तन आकुल

प्रीत की हर साँस नही बिलकुल

ओहह!

हर एक कि ....

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

श्री सुबोधिनीजी🌷🌷🌷

"निवृत्त तर्षा रुप गीयमानाभ्दवौ षधाच्छ्रोत्रमनो भिरामात्।

क उत्तमश्लोकगुणानुवादात् पुमान् विरज्येत विना पशुघ्नात् ।।

श्रीवल्लभ! कितना अलौकिक और सर्वोत्तम हमें शिखा रहे है।

श्री प्रभु स्मरण - श्री प्रभु धून - श्री प्रभु नाम सकीर्तन - श्री प्रभु भजन - श्री प्रभु गुणगान - श्री प्रभु भक्ति गान - श्री प्रभु भक्ति कथन - श्री प्रभु भक्ति कहन - श्री प्रभु भक्ति श्रवण - श्री प्रभु स्मरण ऊवाच - श्री प्रभु भक्ति स्वरर - श्री प्रभु भक्ति सृजन

कोई सामान्यता नही है, यह कोई ऐसी कृति और गति नही है जो ऐसे ही उत्स हो जाए, उदभव हो जाए, प्रकट हो जाए, जागृत हो जाए, उजागर हो जाये, उठ जाए।

हमारा कोई न कोई

जन्मों जन्म का

अंशी अंश का

संयोजित संयोग का

स्पर्श स्पर्श का

ऋणात्मक बंधन का

संबंध ब्रह्मसंबंध का

एकात्मता हो, तो ही हम यह संस्करण पाते है, नही तो

न स्मरण है न ध्यान है

केवल मोह, लोभ, काम में खो जाते है, भूल जाते है, नष्ट हो जाते है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

आगे है............

"राधा"

हमारी आध्यात्मिक और आंतरिक ऊर्जा है जो संपूर्ण विशुद्ध, पवित्र, विश्वसनीय परम प्रीत है।

हमारे जीवन में

ओ राधा!

ओह्ह राधा!

आह राधा!

जो प्रकट होता है वह केवल और केवल

हममें जो नैतिकता है

हममें जो पुष्टता है

हममें जो निखालसता है

हममें जो साक्षरता है

हममें जो सृजनता है

हममें जो मधुरता है

हममें जो संयोगता है

हममें जो विरहता है

हममें जो तीव्रता है

हममें जो सत्यता है

हममें जो जागृतता है

हममें जो माधुर्यता है

यही हमारी "राधा" है

हमारी राधा हमारे आंतर आनंद से ही प्रकट है।

ओ मेरी राधा!

ओ प्रिय राधा!

ओ प्रियतम राधा!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

मैं कहाँ कहाँ गया ?

मुझे हर जहाँ ले गया जो मेरे मन ने सोचा

मैंने कैसे कैसे सोचा?

मेरा संकल्प से,

मेरी कृति से,

मेरी संस्कृति से,

मेरी शिक्षा से,

मेरा धर्म से,

मेरा आंतर नाद से,

हर जहाँ वह कैसा जहाँ?

जो सांसारिक है

जो प्राकृतिक है

जो धार्मिक है

जो व्यवसायिक है

जो सामाजिक है

जो आध्यात्मिक है

जो मार्मिक है

जो सार्वजनिक है

गया जहाँ पाया …………

पाया ऐसा जिसने जो जो रास्ता बनाया

पाया ऐसा जिसने जो जो कर्म जताया

पाया ऐसा जिसने जो जो धर्म निभाया

पाया ऐसा जिसने जो जो मर्म समझाया

पाया ऐसा जिसने जो जो व्यवहार शिखाया

पाया ऐसा जिसने जो जो प्रकृति उगाया

पाया ऐसा जिसने जो जो जीवन जीया

पाया ऐसा जिसने जो जो संस्कार समाया

पाया ऐसा जिसने जो जो आध्यात्म जगाया

पाया ऐसा जिसने जो जो समाज बसाया

पाया ऐसा जिसने जो जो खुद को बढ़ाया

पाया ऐसा जिसने जो जो तन मन धन रचाया

मुझे मुझसे यही धरना

जो जो मेरा सत्य सँवारा

यही सत्य से जगत संवर्धना

जाना जहाँ जहाँ मेरा जन्म निभाना

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

थिरक ने लगा मनवा मोरा

श्रीमद भागवत कथा सुन कर

थिरक ने लगा तनवा मोरा

श्री भीष्म चरित्र समझ कर

थिरक ने लगा धनवा मोरा

श्री रावण सामर्थ्य पहचान कर

थिरक ने लगा आत्मवा मोरा

श्री सीता विरह स्पर्श कर

थिरक ने लगा जन्म मोरा

जी रहा हूँ ऐसे ऐसे धर्म अपना कर

थिरक ने लगा जीवन मोरा

कहाँ कैसे खुद को छुप छुप कर

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कैसे ले सकता हूँ कुछ किसीका

मेरा अंग है

है मेरी हर इन्द्रियाँ

मेरा मन है

है मेरी हर सच्चाई

मेरा धन है

है मेरा हर पुरुषार्थाई

मेरा विश्वास है

है मेरी हर इमानाई

मेरा धर्म है

है मेरी हर साक्षाराई

किसका ले कर क्या हो सकता है मेरा

जो सूत सूत कर जो ऋण ऋण कर भरपाई

जन्म जन्म जीवन जीवन कब तक करे भुगताई

सोच से ले लू

सामर्थ्य से ले लू

मन से ले लू

तन से ले लू

लूट से ले लू

घुमाके ले लू

बल से ले लू

कल से ले लू

चोरी से ले लू

छल से ले लू

कपट से ले लू

झपट से ले लू

कैसे भी लिया मैं हो गया अदा कार

जन्म जन्म में जीवन जीवन से

मैं हो गया कोई कोई का करज दार

फसता चला मैं डूबता गया मैं

रुँधता भरा अँधता अपनाता संसार

कौन कैसे निकाले कैसे संभाले

हर घड़ी से मैं घट घट भरता मायाजाल

"श्री कृष्ण शरणं ममः" केवल एक द्वार

जो आंतर मन तन धन जगाये संस्कार

जो घट घट मिटाये हर ऋण स्वीकार

मनुष्य योनि मनुष्य ज्ञानी मनुष्य शक्ति मनुष्य भक्ति

यही ही है सृष्टि संचार यही ही है प्रकृति पुकार

यही ही है सत साक्षात्कार यही ही है आनंदाकार

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

लहर लहर सरर सररर

श्री यमुनाजी मधुर मधुर

साँस को सहाये नैन में समाये

मधुर मधुर से अंग में ठहराये

पुलकित पुलकित मन नचाये

अधर अधर से पुष्टि प्रकटाये

ठहर ठहर से धड़कन रुकाये

प्रियतम आत्म को प्रीत स्पर्शाये

ऐसी निराली रीत जगाये

न एक दूजे से दूर कराये

साँवरे साँवरी की लीला न्यारी

चतुर्थप्रिया का सौभाग्य सोहायी

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"दान" क्या समझते है

कोई आश्रित को कुछ दे

कोई जरूरियात मंद को कुछ दे

कोई मांगनार को कुछ दे

कोई लाचार को कुछ दे

कोई व्यवस्था के निर्माण में कुछ दे

कोई आश्रम को कुछ दे

कोई सामाजिक सेवा संस्थान को कुछ दे

कोई कौटुम्बिक निसहाय को कुछ दे

कोई निःसहाय को कुछ दे

कोई ब्राहमण समझ कर कुछ दे

यह दान नही है।

दान एक संस्कार है

दान एक विश्वास है

दान एक सामर्थ्य है

दान एक साक्षरता है

दान एक योग्यता है

दान एक शुद्धता है

दान एक पूर्णता है

दान एक सेवा है

दान एक नियामकता है

दान एक संयमता है

दान एक सृजनता है

दान एक कर्मनिष्ठा है

दान एक धर्म है

दान एक आदर है

दान एक आदर्शता है

दान एक ज्ञान है

दान एक माधुर्य है

दान एक संयोगता है

दान एक समानता है

दान एक उत्सव है

दान एक शिक्षा है

दान एक प्रीति है

दान एक नीति है

दान तो सृष्टि - प्रकृति - जगत - ब्रह्मांड का संयमन है, अधिकार है, अहंकार नष्ट करने का अलौकिक अद्वैत हेतु है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कैसे कैसे मन के मनुष्यों में

मैं मनुष्य और मेरा मन

क्या क्या सोचता है

क्या क्या पाता है

मुझमें पल पल परिवर्तन करता है

मुझे पल पल भिन्न भिन्न कहता है

मुझसे पल पल कुछ कुछ करवाता है

क्या हूँ मैं कैसा है मन कैसा हूँ मनुष्य

जो कोई मन ने कुछ कहा

जो कोई मनुष्य ने कुछ करा

न खुद के मन को समझ सका

न कोई मन को पढ़ सका

न खुद का मनुष्यत्व को पहचान सका

न कोई मनुष्य को जान सका

फिरता रहा जन्मों जन्मों तक

भटकता रहा योनि योनि तक

न मन का मनुष्य हो सका

न मनुष्य का मन हो सका

न खुद के मन को संस्कृत कर सका

न खुद का मनुष्यत्व को स्थिर कर सका

यूँही चलता गया मिलता गया लपटता गया

अभी भी मन को और मनुष्यत्व को कहता हूँ

ऐसा संसार है ऐसा जगत है

मेरा मन भी ऐसा है मेरा मनुष्यत्व भी ऐसा है

जो दूसरों के मन के आधीन है

जो दूसरों के मनुष्यत्व के गुलाम है

जो किसीको गुरु बनाया किसीको दोस्त

जो किसीको जीवन साथी बनाया किसीको कुछ

पर

न खुद के मन को कुछ बनाया

न खुद के मनुष्यत्व को कुछ बनाया

यही तो है जीवन मेरा यही है जगत मेरा

यही तो है धर्म मेरा यही तो है कर्म मेरा

मैं न मन हो सका न मैं मनुष्य हो सका

अकेले बैठ के सोच लेना........

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

राह एक पर रास्ता अनेक
स्थली एक पर मुसाफिर अनेक
जगह एक पर नक्शा अनेक
चलना एक पर मोड़ना अनेक
संधान एक पर साधन अनेक
गति चिन्ह एक पर गति अनेक
साथ दौड़ना एक पर साथी अनेक
चौराहा एक पर अवरोधक अनेक
इंधन एक पर वाहन अनेक
मार्ग एक पर द्विमार्ग अनेक
नियम एक पर अनियमन अनेक
संचालन एक पर संकेत अनेक
पगडंडी एक पर वटे मार्गी अनेक
भुगतान एक पर भोगते अनेक
नजर एक पर इशारे अनेक
सिपाही एक पर दंडी अनेक
नजदीक हर एक पर दूर अनेक

क्या करे हम तो अधिनियमन भारत के सहनशील भारतीय है
हर राह मेरी है हर गति मेरी है
तो
चलना मेरी मरजी - रुकना मेरी मरजी - हंकारना मेरी मरजी
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

मैं कौन हूँ?

मैं क्यूँ हूँ?

मैं कैसा हूँ?

मैं क्या हूँ?

मैं क्या कर रहा हूँ?

मैं क्या हो रहा हूँ?

मुझे क्या करना है?

मुझे क्यूँ करना है?

मैं ही क्यूँ?

यह जिज्ञासा हमारा मन बदल देगा

यह पिपासा हमारा धन बदल देगा

यह तृषा हमारा तन बदल देगा

यह शिक्षा हमारा धर्म बदल देगा

यह आकांक्षा हमारा जीवन बदल देगा

यह दिशा हमारा कर्म बदल देगा

यह जिजीविषा हमारा विचार बदल देगा

यह उषा हमारा जन्म बदल देगा

बदल देगा का अर्थ है योग्यता प्रदान करेगा या योग्यता है तो वह योग्यता द्रढ करेगा।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"कृष्ण" कौन है?

"कृष्ण" क्या है?

"कृष्ण" कैसे है?

"कृष्ण" क्यूँ है?

क्या जानते है हम - एक भारतवासी या हिंदुस्तानी

क्या समझते है हम - एक भारतीय या हिंदीय

एक वार्ता

एक कहानी

एक उपदेश

एक चरित्र

एक ऐश्वर्य

एक प्रियतम

एक परमेश्वर

एक योगेश्वर

एक योद्धा

एक गौचारहा

एक भगवान

एक दूत

एक मित्र

एक कपटी

एक पुरुषोत्तम

एक ....

जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त........

चिंतन करो यहाँ तक कि खुद कृष्ण हमारे अंदर प्रकट हो जाये।

न धर्म से

न कर्म से

न धन से

न मन से

उन्हें तो केवल अपने आंतर आत्म से सँवारो

शायद वो तुम्हें कही छू जाय!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

श्री परंब्रह्म अवतार क्यूँ धारण करते है?

हमारे चौराशी लाख योनि से क्यूँ जुड़ कर मनुष्य योनि को सर्वोत्तम जन्म और पूर्णता का आधार क्यूँ कहते है?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

जीवन तो बहोत से तरासे

तरासते तरासते खुद को भी तरासा

मेरे साथी का भी तरासा

मेरे पितृ का भी तरासा

मेरे समाज का भी तरासा

मेरे धर्म का भी तरासा

घड़ता गया - संवरता गया

जीवन को और जीवन के समय को

कहीं उच्च नीच निहाले

कहीं असमानता अनुभई

कहीं बार यात्रा स्थली निचोड़ी

कहीं बार ज्ञान गुरु निचोड़े

आरंभ से अब तक

हर बार कभी आसमान झुका

हर बार कभी धरती झुकी

हर बार कभी सूरज डूबा

हर बार कभी चंद्र डूबा

पता नहीं है फिर भी पता करता रहता हूँ

कोई है जो मुझे अखंड प्रीत करता है

कोई है जो मुझे अतूट शिखा रहा है

कोई है जो मुझे अपना समझ रहा है

कोई है जो मुझे अपना सबकुछ लूटा कर मुझे अपना जैसे करता रहता है

न वह स्त्री है न वह पुरुष है

न वह प्रकृति है न सृष्टि है

न वह लोक है न ब्रह्मांड है

न वह परंब्रह्म है न परमात्मा है

वह तो है केवल मेरे प्रिये!

वह तो है केवल मेरे प्रियतम!

वह तो है केवल मेरी राधा!

जो मेरे श्री कृष्ण की भी है श्री राधा!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"

"श्याम" कौन है श्याम?

"श्याम" कौन नही है श्याम?

"श्याम" जो नही है श्याम वह कोई नही है

"श्याम" जो नही है श्याम वह कुछ नही है

"श्याम" श्याम से ही है सबकुछ

"श्याम" श्याम से ही है सर्वकुल

"श्याम" श्याम से तु है

"श्याम" श्याम से मैं है

"श्याम" श्याम से हम है

"श्याम" श्याम से हर है

"श्याम" श्याम से प्रहर है

"श्याम" श्याम से दुपेर है

"श्याम" श्याम से शाम है

"श्याम" श्याम से निशा है

"श्याम" श्याम से दिशा है

"श्याम" श्याम से कर्म है

"श्याम" श्याम से मर्म है

"श्याम" श्याम से कर्म है

"श्याम" श्याम से गति है

"श्याम" श्याम से मति है

"श्याम" श्याम से ज्योति है

"श्याम" श्याम से मूल है

"श्याम" श्याम से कुल है

"श्याम" श्याम से विरल है

"श्याम" श्याम से विपुल है

"श्याम" श्याम से पहल है

"श्याम" श्याम से चहल है

"श्याम" श्याम से तरल है

"श्याम" श्याम से अर्थ है

"श्याम" श्याम से पदार्थ है

"श्याम" श्याम से निस्वार्थ है

"श्याम" श्याम से श्वास है

"श्याम" श्याम से विश्वास है

"श्याम" श्याम से सुहास है

"श्याम" श्याम से प्यास है

"श्याम" श्याम से गीत है

"श्याम" श्याम से रीत है

"श्याम" श्याम से मीत है

"श्याम" श्याम से प्रीत है

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

जीवन में पत्नी का दुःख या पति का दुःख

क्यूँ आये?

जीवन में पुत्री का दुःख या पुत्र का दुःख

क्यूँ आये?

जीवन में बहन का दुःख या भाई का दुःख

क्यूँ आये?

जीवन में माता का दुःख या पिता का दुःख

क्यूँ आये?

कैसा यह जीवन है?

कैसा यह रिश्ता है?

कैसा यह बंधन है?

कैसा यह संबंध है?

कैसा यह ऋण है?

हमनें जान कर सुख का जिक्र नही किया है

क्यूँकी सुख में हम सोच नही सकते है, चिंतन नही कर सकते है और एक दूजे की योग्यता नही समझ सकते है, इसीलिए........

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

पति पत्नी की रीत ही एक ऐसी संस्कृति है
जो संस्कृति से सारे परमात्मा एक बालक हो जाता है।🌷

पति पत्नी की रीत ही एक ऐसी प्रकृति है
जो प्रकृति से कष्ट तो क्या कोई दुष्ट भी उनके पास शुद्ध हो जाता है।🌷

पति पत्नी की रीत ही एक ऐसी सुश्रुसा है
जो सेवा से रोग तो क्या कोई वेदना भी उनके आसपास से डरते है।🌷

पति पत्नी की रीत ही एक ऐसा विश्वास है
जो श्वास से वासना तो क्या कोई काम अर्थात विषय उनसे युगों दूर रहते है।🌷

पति पत्नी की रीत ही एक ऐसा आनंद है
जो आनंद से सर्वोच्च कोई सर्वानंद नही हो सकता है।🌷

पति पत्नी की रीत ही एक ऐसा योग है
जो योग से केवल और केवल कर्मयोग यज्ञ ही आहूत होते है, जिसमें संसार की, जीवन की हर पूर्णता संस्कृत होती है।🌷

पति पत्नी की रीत ही एक ऐसा एकात्म है
जो एकात्म के लिए परम अंश भी खुद को बार बार अवतरुत करते है।🌷

पति पत्नी की रीत ही ऐसी प्रीत है
जो प्रीत में सिरी फरहाद - लैला मजनू - रोमियो - जूलियट - हीर रांझा - सावित्री सत्यवान - अनसूया गौतम जैसे कहीं आत्मा परमात्मा तो क्या - देवी देवता तो क्या जो ब्रह्मांडो की सृष्टि के जो भी परम तत्व है वह भी उनके सामने निम्न है।🌷
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

समस्याएं

मनुष्य मनुष्य होते भी साथ नही रह सकते

मनुष्य मनुष्य होते भी योग्य विचार नही कर सकते

मनुष्य मनुष्य होते भी संगठित नही हो सकते

मनुष्य मनुष्य होते भी सत्य नही समझ सकते

मनुष्य मनुष्य होते भी योग्य नही कर सकते

मनुष्य मनुष्य होते भी समझा नही सकते

मनुष्य मनुष्य होते भी निखालस नही हो सकते

मनुष्य मनुष्य होते भी रास्ता नही निकाल सकते

मनुष्य मनुष्य होते भी उच्च नीच का भेदभाव नही मिटा सकते

मनुष्य मनुष्य होते भी सहकार्य नही आयोजित कर सकते

मनुष्य मनुष्य होते भी असमंजस उदभवते रहते

मनुष्य मनुष्य होते भी आनंद नही लूटा सकते

मनुष्य मनुष्य होते भी एक दूजे को लूटते

मनुष्य मनुष्य होते भी एक दूजे को घुमाते

मनुष्य मनुष्य होते भी स्वार्थवृत्ति धरते

मनुष्य मनुष्य होते भी एक दूसरे को नीचा दिखाते

मनुष्य मनुष्य होते भी एक दूजे से झगड़ते रहते

मनुष्य मनुष्य होते भी जीवन नर्क बनाते

मनुष्य मनुष्य होते भी किसीको अपना नही कर सकते

मनुष्य मनुष्य होते भी तफावत रचे

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

क्या बदला ले सकू यह जगत से

क्या बदला चूका सकू यह सृष्टि का

क्या बदला हो सके यह समाज से

क्या बदला भर सकू यह प्रकृति का

क्या बदला सोच सकू यह कुटुंब से

क्या बदला रख सकू यह संबंधी का

ऐसे पंछी है ब्रह्मांड का

कब कहाँ उड़ जाय

कब कहाँ ठहर जाय

कब कहाँ रुक जाय

कब कहाँ चलत जाय

अगर किसीको

कुछ हो आया

कुछ भर गया

कुछ सोच आया

कुछ लग आया

तो माफ करना हमें

हम तो केवल

खुद को उजागर करके आपको प्रीत करते है

खुद से प्रीत कर के अपनी प्रीत लूटाते है

खुद से विरह पा के तुमसे प्रीत निभाते है

तुम कहीं दूर हम कहीं दूर

प्रीत की रीत से साथ है

प्रीत की रीत से एक है

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी की जय"

ओहद!

हम जब भी उन्हें स्मरण में लाते है

हम जब भी उन्हें स्मरण करते है

हम जब भी उनका दर्शन करते है

हम जब भी उन्हें स्पर्श करते है

हम जब भी उनका पान करते है

या

जब भी हम अपने अंतर आत्मा से श्री यमुनाजी को हृदयस्थ करे हुए है तब

एक उत्साह और पवित्रता के साथ पुकारते है

"श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी की जय"

क्यूँ?

श्री वल्लभाचार्यजी की सर्वांक्षा

श्री वल्लभाचार्यजी की आराध्या

श्री वल्लभाचार्यजी की एकात्मता

श्री वल्लभाचार्यजी की पुष्टिता

कितनी प्रचंड है, कितनी द्रढ है, कितनी प्रबल है, कितनी आंतरिक है, कितनी योग्य है जो हमें शिक्षते है

"श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी की जय"

तो क्या है यह श्री यमुना?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"माँ" हमारी कुल देवी
"माँ" हमारी आद्य देवी
"माँ" हमारी जन्म धात्री
"माँ" हमारी जीवन धात्री
"माँ" हमारी संस्कार सिंचनी
"माँ" हमारी जीवन धात्री
"माँ" हमारी पौषण धात्री
"माँ" हमारी कर्म शास्त्री
"माँ" हमारी आनंद धात्री
"माँ" हमारी सेवा धात्री
"माँ" हमारी फल पात्री
"माँ" हमारी सह यात्री
ओहह माँ! तुझे प्रणाम!
तुझसे है मेरा उद्धार!
तुझसे है मेरा आदर
तुझसे है मेरा सत्कार
तुझसे है मेरा आधार
तुझसे है मेरा स्वीकार
तुझसे है मेरा संस्कार
तुझसे है मेरा दुलार
तुझसे है मेरा दीदार
तुझसे है मेरा खुमार
तुझसे है मेरा प्यार
"माँ" हे माँ!
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"साधना" "प्रार्थना" "सेवा" हम किसे समझते है?

जो सुबह उठ कर जप करे,

जो दूर वन में बैठ कर एकाग्रता से मन को श्री प्रभु में लीन करे

जो दर्शन कर या पाठ कर या स्मरण कर श्रीप्रभु के गुणगान पुकारे, गाये, विनंती करे

जो सुबह उठ कर श्रीप्रभु को स्नान कराके, भोग लगाके, श्रृंगार सजा के हम आरती उतारे, किसीका ध्यान धरे

जो हम किसीको गरीब समझ कर किसीको दान दे, किसकी सुश्रुसा करे, किसीको मदद करे।

ना! ना ना! यह साधना, प्रार्थना, सेवा नही है।

सेवा तो वह है

जो किसीका परिहास न करे अर्थात किसीका तिरस्कार न करे,

किसीको ठेस न पहुंचाए,

किसीको दुःख न दे,

किसीका दिल न दुभाये।

अर्थात ये न समझना कि

कोई अपने से खेले, या कोई अपने को घुमाये, कोई अपने से विध्वंश करे और हम चुपचाप सहले,

कोई स्वार्थवृत्ति से अपनी मायाजाल रचते जाय और हम मौन धरे,

हम जागृत हो कर हम निराशावाद से अकार्यरत रहे।

प्रार्थना तो वह है

जो किसीका किसीकी मन से जुड़ जाये, किसीका किसीके लिये मिट जाये,

किसीका किसीके लिये न्योछवार हो जाये, खुद के लिये आंतरिक शुद्धता, पवित्रता और योग्यता प्रकटाये।

साधना तो वह है

जो किसीके मन को अपने मन से जोड़ दे और सुख जगाये,

जो किसीके विश्वास को जीत कर विश्वास से जीवन सफल बनाये,

जो किसीके अंदर आत्मीय सुंदरता जगा कर हर क्षण आदरता जगाये।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

जबसे जन्म धारण किया है तबसे

हमारा होना

हमारा है

हमारा करेंगे

हम से है

हम बताएंगे

हम दिखाएंगे

हम पाएंगे

हम लेके रहेंगे

हमारा ही है

हमारे लिए ही है

क्या है यह? सोचना कभी खुद

की

यह जो उपर लिखा है वो मैं हूँ?

यही तो मैं जन्म से लेकर जीवन पर्यंत करता रहता हूँ, आखरी साँस तक।

हर रीत से सोचलो!

हर विचार से सोचलो!

हर गति से सोचलो!

हर मति से सोचलो!

हर परिवर्तन से सोचलो!

हर जिज्ञासा से सोचलो!

हर कक्षा से सोचलो!

हर अदा से सोचलो!

हर भाव से सोचलो!

हर ज्ञान से सोचलो!

हर पदार्थ से सोचलो!

हर तत्व से सोचलो!

हर अनुभव से सोचलो!

हर चरित्र से सोचलो!

हर सूत्र से सोचलो!

हर अर्थ से सोचलो!
हर श्रुति से सोचलो!
हर दिशा से सोचलो!
हर संयोजन से सोचलो!
हर ब्रह्म से सोचलो!
हर रंग से सोचलो!
हर तरंग से सोचलो!
हर माध्यम से सोचलो!
हर त्वरा से सोचलो!
हर जरा से सोचलो!
हर धारणा से सोचलो!
हर मान्यता से सोचलो!
हर आकांक्षा से सोचलो!
हर मन से सोचलो!
हर तन से सोचलो!
हर धन से सोचलो!
हर जीव से सोचलो!
हर प्राण से सोचलो!
हर प्रीत से सोचलो!
आखिर क्या हूँ! क्या है?
ओहह श्री प्रभु!
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कौन जीत पाया है मन को

कौन जीत पाया है तन को

कौन जीत पाया है धन को

कौन जीत पाया है प्रीत को

कौन जीत पाया है जीवन को

कौन जीत पाया है माया को

कौन जीत पाया है संस्कार को

कौन जीत पाया है अहंकार को

कौन जीत पाया है भगवान को

कौन जीत पाया है पंच महाभूत तत्व को

कौन जीत पाया है जन्म को

कौन जीत पाया है धर्म को

कौन जीत पाया है कर्म को

कौन जीत पाया है सृष्टि को

कौन जीत पाया है ब्रह्मांड को

कौन जीत पाया है सत्य को

कौन जीत पाया है विश्वास को

कौन जीत पाया है अद्वैत को

सोच के अवश्य हमें उत्तर देना,

चिंतन से अवश्य हमें कहना,

हृदयस्थ भाव से अवश्य हममें बताना,

आत्मीय ज्ञान से अवश्य हमें मार्गसूचक करना,

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

ऐसा तो क्या आकर्षण है यह पृथ्वी का
ऐसा तो क्या आकर्षण है यह धरती का
ऐसा तो क्या आकर्षण है यह सृष्टि का
ऐसा तो क्या आकर्षण है यह प्रकृति का
ऐसा तो क्या आकर्षण है यह मानव का
ऐसा तो क्या आकर्षण है यह दानव का
ऐसा तो क्या आकर्षण है यह संस्कृति का
की हर कोई चले आते है जन्म धरने
जो कभी राम बनके
तो कभी श्याम बनके
जो कभी शिव बनके
तो कभी जीव बनके
जो कभी रावण बनके
तो कभी कंस बनके
जो कभी सीता बनके
तो कभी राधा बनके
जो कभी भक्त बनके
तो कभी साधारण बनके
जो कभी आचार्य बनके
तो कभी शिष्य बनके
कितने रुप धरे है और धरता है
फिर भी
आता ही रहता है आता ही रहता है
ओहह श्री प्रभु!
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हमारे घर भी पुत्र का जन्म होता है

हमारे घर भी पुत्री का जन्म होता है

हर जन्म से हम अपनी संस्कृति से जोड़ते है

हर जन्म से उनका नाम संस्कार करण हम हमारी ज्ञानता और भावना से करते है, क्यूँकी बार बार रटन से हमें हमारी ज्ञानता और भावना द्रढ हो हम अपने आपको न भूले।

हम अपने धर्म और कर्म संस्कार उनमें उजागर अर्थात सिंचित करके खुद को कृतार्थ करे।

हम अपने सपनों से उन्हें प्रेरित करके साकार करने की भूमिका बनाये।

हम अपने आपको अपनी कर्तव्यनिष्ठा से अपनी आंतरिक सिद्धि सिद्ध करे।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"दुःख"

दुःख का अर्थ,

दुःख का उदभवना,

दुःख का उत्स होना,

दुःख उठना,

दुःख पैदा करना,

दुःख उत्पन्न करना,

दुःख जगाना,

दुःख बढ़ाना,

दुःख सहना,

दुःख झेलना,

दुःख पीना

दुःख रहना,

क्या समझते है हम, यह दुःख क्या है? यह दुःख क्यूँ है?

यह दुःख मुझे ही क्यूँ?

बस मन में आ गया दुःख, और चिल्लाने लगे

बस कुछ ऐसा वैसा जानने आ गया और दौड़ने लगे

बस कुछ ऐसा अनुभव होने लगा और एहसास जताने लगे

बस कुछ ऐसा किसीने कह दिया और तय कर के झेलने लगे

बस कुछ ऐसा समझ लिया और भिसने लगे

बस कुछ ऐसा सुन लिया और झिझकने लगे

बस कुछ ऐसा सुध लिया और झुंझुमने लगे

ओहह मन!

ओहह मानव!

सच! श्रीप्रभुने अर्थात परम आत्म तत्व ने ऐसा संचालन व्यवस्था रची है कि कौन क्या करें!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"कौमार्य" कितना शौर्य भरा शब्द
"कौमार्य" कितना आग्नेय भरा शब्द
"कौमार्य" कितना विशुद्धता भरा शब्द
"कौमार्य" कितना कुर्बान भरा शब्द
"कौमार्य" कितना न्योछावर भरा शब्द
"कौमार्य" कितना प्रचंडता भरा शब्द
"कौमार्य" कितना प्रखरता भरा शब्द
"कौमार्य" कितना ललकार भरा शब्द
"कौमार्य" कितना तीव्रता भरा शब्द
"कौमार्य" कितना अनहद भरा शब्द
"कौमार्य" कितना विश्वास भरा शब्द
"कौमार्य" कितना हिम्मत भरा शब्द
"कौमार्य" कितना माधुर्य भरा शब्द
"कौमार्य" कितना रणकार भरा शब्द
"कौमार्य" कितना आंतर द्रढ़ता भरा शब्द
"कौमार्य" कितना रंग भरा शब्द
"कौमार्य" कितना आहुति भरा शब्द
"कौमार्य" कितना आंतर शक्ति भरा शब्द
"कौमार्य" कितना गहराई भरा शब्द
"कौमार्य" कितना शृंगार भरा शब्द
"कौमार्य" कितना सत्य आचरण भरा शब्द
"कौमार्य" कितना आत्म प्रबल भरा शब्द
"कौमार्य" कितना आत्मीय ऊर्जा भरा शब्द
"कौमार्य" कितना साक्षर भरा शब्द
"कौमार्य" कितना कर्मनिष्ठ भरा शब्द
"कौमार्य" कितना विशिष्ठ भरा शब्द
"कौमार्य" कितना वंदनीय भरा शब्द
"कौमार्य" कितना सर्वश्रेष्ठ भरा शब्द
"कौमार्य" कितना पूजनीय भरा शब्द
"कौमार्य" कितना पवित्रता भरा शब्द

"कौमार्य" कितना गोपनीय भरा शब्द

"कौमार्य" कितना आनंद भरा शब्द

"कौमार्य" कितना प्रीत भरा शब्द

क्या समझते है हम, एक जीव है हम?

क्या धारते है हम, एक सांसारिक जीव है हम?

क्या विचरते है हम, एक साधारण जीव है हम?

क्या घड़ाते रहते है हम, एक सामान्य है हम?

क्या करते रहते है हम, एक अनुकरण जीव है हम?

क्या जीते है हम, एक जगतवासी है हम?

क्या सीखते है हम, एक अनुचर है हम?

क्या अपनाते है हम, एक आडंबरी है हम?

क्या संस्कृत है हम, एक अहंकारी है हम?

ओहह श्री वल्लभ!

शर्म है, बेशर्म है, न जीव है न ज्योत है

केवल और केवल एक अछूत है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

क्या अपेक्षा रखते है
क्या आशा करते हो
क्या इच्छा धारते हो
क्या तितिक्षा सोचते हो
क्या मांगना चाहते हो
क्या लेना विचारते हो
क्या अपना करने में दौड़ते हो

किससे ये सब मिलेगा?
जिसके पास भी यही सब ही है
जिसके साथ भी यही सब ही है
जिसके अंदर भी यही सब ही है
जिसके बाहर भी यही सब ही है
जिसके मन में भी यही सब ही है
जिसके आचरण में भी यही सब ही है
जिसके आवरण में भी यही सब ही है
जिसके अनावरण में भी यही सब ही है
जिसके कारण में भी यही सब ही है
जिसके विचरण में भी यही सब ही है
जिसके वरण में भी यही सब ही है
जिसके तन में भी यही सब ही है
जिसके कर्म में भी यही सब ही है
जिसके मर्म में भी यही सब ही है
जिसके चर्म में भी यही सब ही है

हम अपेक्षित
हम आशातित
हम इच्छित
हम तितिक्षित
हम माँगतित
हम ग्राह्यतित
हम अपनातित

एक तृणसा
एक छोटासा

एक समान्यसा
एक साधरणसा
तो उनका संस्कृत है
तो उनका साक्षर है
तो उनका स्नेह है
तो उनका धर्म है
तो उनका कर्म है
तो उनका ज्ञान है
तो उनका भाव है
तो उनका सामर्थ्य है
क्या उनसे पाना!
जिसकी दृष्टि ही तृष्टि भरी
जिसकी वृत्ति ही विष भरी
जिसकी कामना ही स्वार्थ भरी

एक तिनका से भी सूक्ष्म समझ और रीत कहे आकाश की
एक तृण से भी सूक्ष्म प्रीत की जानकारी और पूर्णता चाहे सागर की

नही नही! जो खुद को न पहचान सके वह प्रेमामृत क्या पहचाने!

यह तो किनी किनी के पास और किनी कीनी के साथ ही है

जिसे वैष्णव कहते है
जिसे प्रियतम कहते है
जिसे प्रिये कहते है
जिसे कृष्ण कहते है
जिसे बुद्ध कहते है
जिसे ....
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

खुद को खुद की तरह जीना है?

सच! सोचलो!

खुद की तरह जीना है तो खुद को खुद की तरह सँवरना है, सँवारना है।

खुद की तरह सँवरने के लिए खुद को साक्षर होना है, संस्कृत होना है, शिक्षित होना है।

कैसे हो सकते है?

यह समाज में जीने से हो सकते है?

यह कुटुंब में रहने से हो सकते है?

यह गृहस्थ जीवन से हो सकते है?

यह ज्ञान की उपाधि पाने से हो सकते है?

यह भाव भक्ति पाने से हो सकते है?

यह तवंगर या अमीर होने से हो सकते है?

यह धर्म आचार्य या गुरु होने से हो सकते है?

यह संसार त्यागने से हो सकते है?

यह विश्व जीतने से हो सकते है?

यह जीवन जीतने से हो सकते है?

यह महात्मा होने से हो सकते है?

यह परमात्मा होने से हो सकते है?

नही नही! ऐसा कोई सामर्थ्य से नही हो सकता है।

जगत के कोई आधत्य पति या अधिकारी के चरित्र देखलो, आधत्यपदक को पूछलो।

तो क्या करें?

केवल वो ही खुद को खुद की तरह जी सकता है

जो खुद खुद की ऊर्जा पहचान सके

जो खुद खुद का तेज तेजोमय कर सके

जो खुद खुद की परम सर्वश्रेष्ठ दिशा पर कदम भरता रहे

जो खुद खुद की सर्व सिद्धि सुसंयोजन में बाँट सके

जो खुद खुद को हर पदार्थ में लूटा सके

जो खुद खुद को खुद में एकत्व कर सके

जो खुद खुद को

प्रीत का आकाश

प्रीत की धरती

प्रीत का सागर

प्रीत का वायु

प्रीत का अग्नेय

प्रीत का परमप्रिय हो सके वो ही खुद की तरह जी सकता है।

कोई है? कौन है?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

एक व्यक्ति ने प्रश्न पूछा

मुझे हवेली अर्थात मंदिर जाने की आज्ञा है?

मुझे दर्शन करने की आज्ञा है?

मुझे दंडवत करने की आज्ञा है?

मुझे भेंट करने की आज्ञा है?

मुझे मनोरथ करने की आज्ञा है?

मुझे प्रसाद लेने की आज्ञा है?

मुझे कीर्तन करने की आज्ञा है?

मुझे हवेली सेवा करने की आज्ञा है?

मुझे हवेली अर्थात मंदिर में आते व्यक्ति के साथ बात करने या कुछ पूछने की आज्ञा है?

मुझे हवेली अर्थात मंदिर के संस्थापक को पूछने की आज्ञा है?

मुझे हररोज हवेली अर्थात मंदिर आने की आज्ञा है?

मुझे कोई भी शमा या हर शमा के दर्शन की आज्ञा है?

मुझे हवेली अर्थात मंदिर के परिक्रमा की आज्ञा है?

मुझे पैसा भेंट करने की आज्ञा है?

मुझे कोई भी वस्तु भेंट करने की आज्ञा है?

मुझे जो भी आचार्य बिराजते है उन्हें मिलने की आज्ञा है?

मुझे किस किस से मिलना और किस किस से नही मिलने की आज्ञा है?

मुझे यात्रा करने की आज्ञा है?

आदि इतने प्रश्न जो प्रश्न ने पुष्टिमार्ग को नष्ट कर दिया है - हर बात पर आज्ञा

हर रीत की आज्ञा

क्या यह ही पुष्टिमार्ग सिद्धांत है?

क्या यह ही पुष्टिमार्ग सहिंता है?

क्या यह ही पुष्टिमार्ग शुद्धता है?

क्या यह ही पुष्टिमार्ग जीवन है?

क्या यही रीत से ही पुष्टि सेवक हो सकते है?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🙏🌷

जो व्यक्ति के मन का विचार द्वार ही असमंजस से उघड़ता है
उनका मन कैसा होगा?
जो व्यक्ति के तन का कार्य द्वार ही असंख्या से उघड़ते है
उनका तन कैसा होगा?
जो व्यक्ति के धन का उपार्जन द्वार ही विभिन्नता से खुलता है
उनका धन कैसा होगा?
जो व्यक्ति के संस्कार का सिंचन द्वार ही अलगता से सिंचता है
उनका संस्कार कैसा होगा?
जो व्यक्ति के संस्कृत का शिक्षा द्वार ही अधुरपता से भरता है
उनका संस्कृति कैसी होगी?
जो व्यक्ति के प्रवृत का कर्म द्वार ही असंयोजन से घड़ता है
उनकी प्रवृति कैसी होगी?
जो व्यक्ति के आचार का शिष्टा द्वार ही अशिष्ट से विचरता है
उनका आचरण कैसा होगा?
जो व्यक्ति के गृह द्वार ही भिन्नता से खुलते है
उनका गृह कैसा होगा?
जो व्यक्ति के निर्वाह द्वार ही अल्पता से खुलते है
उनका निर्वाह कैसा होगा?
जो व्यक्ति के दिन द्वार ही अंधेरा से उठता है
उनका जीवन कैसा होगा?
जो व्यक्ति के आँचल द्वार ही अनगिनत से बंधते है
उनका चरित्र कैसा होगा?
क्या नाथद्वार जाएं
क्या द्वारका जाएं
क्या यमद्वार जाएं
क्या देवद्वार जाएं
क्या स्वर्गद्वार जाएं
क्या वैकुंठ द्वार जाएं
ओह्ह परमेश्वर!
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हे सनम! क्या रीत है प्रीत की यह जीवन में
जो मन खिंचाए तन तड़पाये आत्म प्रकटाये
मन के हर तरंग में केवल एक परम खिलाए
तन के हर रोम में केवल एक परम जगाए
आत्म के हर किरण में केवल एक परम बसाए
एक परम हर साँस में
एक परम हर दृष्टि में
एक परम हर रंग में
कान्हा ही ऐसा एक परम जो खिंचे खिलाए
गोविंदा ही ऐसा एक परम जो तडपे जगाए
कन्हैया ही ऐसा एक परम जो प्रकटाये बसाए
मन पुकारे माधवा माधवा
तन पुकारे साँवरिया साँवरिया
आत्म पुकारे कृष्णा कृष्णा
हे माधवा! मन सँवारे मन स्थिराये मन मिलाए
हे साँवरिया! तन शृंगारे तन नचावें तन मिलाए
हे कृष्णा! आत्म ब्रहमाए आत्म सूर्याए आत्म मिलाए
प्रीत प्रीत से मन माधवा में मुस्काये
प्रीत प्रीत से तन साँवरिया में महकाये
प्रीत प्रीत से आत्म कृष्णा में मधुराये
ऐसे घडो मेरा मन जो प्रीत ही प्रीत में मैं ही राधा
ऐसे घडो मेरा तन जो प्रीत ही प्रीत में मैं ही राधा
ऐसे घडो मेरा आत्म जो प्रीत ही प्रीत में मैं ही राधा
राधा मेरी स्वामिनी मैं राधा का दास
ऐसो जन्म जीवन दे दियो पल पल राधा साथ
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

इसने ये पाया
इसने ये खोया
इसने ये बोया
इसने ये धोया
इसने ये घवाया
इसने ये कमाया
इसने ये बसाया
इसने ये जमाया
इसने ये लूटाया
इसने ये भूलाया
इसने ये डुबोया
इसने ये भुसाया
इसने ये जगाया
इसने ये लजाया
इसने ये बढ़ाया
इसने ये दबाया
इसने ये बुझाया
इसने ये भगाया
इसने ये बचाया
इसने ये बिकाया
इसने ये नचाया
इसने ये लगाया
इसने ये सुनाया
इसने ये नसाया
इसने ये कराया
इसने ये भराया
इसने ये सजाया
इसने ये बहाया
इसने ये मिलाया
इसने ये सरजाया

इसने ये समझाया

इसने ये भरमाया

इसने ये लहराया

इसने ये प्रकटाया

इसने ये शरमाया

इसने ये बहलाया

इसने ये बदलाया

इसने ये नहलाया

इसने ये सहराया

इसने ये करवाया

इसने ये बनवाया

इसने ये संवाराया

सोचलो क्या क्या करते है - होता है

यही सबके बीच में ऐसे ऐसे ही जीते है

क्या ऐसा मनमें नही उठता है, कुछ करें

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"समाधि"

हमारा जीवन गृहस्थ है और गृह गृहस्थी में समाधि कैसे?

ओहह!

पर हमारे हर आचार्य, हमारे हर उपदेशी, हमारे हर शास्त्र, हमारे हर ज्ञानी ऐसा ही सदा कहते रहते है गृहस्थ जीवन में जो समाधि पाये वह सर्वोत्तम साधना - वह सर्वोत्तम समाधि है, यही ही योग्य समाधि है।

अरे! गृहस्थ जीवन में समाधि कैसे?

कहीँ आचार्य, कहीं ज्ञानी, कहीं गुरु, कहीं उपदेशी तो गृहस्थ जीवन का त्याग करके सन्यास धारण करके ही समाधि में रहते है, जीवन कृतार्थ करते है।

यह कैसी दोहरी बातें!

आचार्य, ज्ञानी, गुरु, उपदेशी आदि जो गृहस्थ जीवन त्याग करके ऐसे पद को धारण किया हो वह समाधिस्थ नही है, वह ज्ञानी हो सकते है, वह गुरु हो सकते है, वह उपदेशी हो सकते है पर समाधिस्थ नही कह सकते है।

श्री शंकराचार्यजी ने कभी ऐसा नही कहा - सन्यासी ही समाधिस्थ है।

श्री वल्लभाचार्यजी ने गृहस्थ जीवन जी कर खुद को समाधिस्थ किया।

समाधि का सामर्थ्य और श्रेष्ठ अर्थ है

जो जीव तत्व - जो व्यक्तित्व आधि, व्याधि और उपाधि में न हो वह जीव तत्व - वह व्यक्तित्व समाधिस्थ है।

ओहह! पर हममें तो सदा होना छूपा है, प्रकट होना, दिखना, दिखाना। हमारा स्वभाव, प्रभाव जो जन्म से ही दिखना और दिखाना है इसीलिए हम अपने आपको खो देते है, भूल जाते है और भटक जाते है।

आधि - व्याधि - उपाधि से हम अभिमानी, अहंकारी, रोगी, भोगी, लोभी और तृषि, दोषी होते है या हो जाते है। इसीलिए हम समाधिस्थ नही हो सकते है, इसीलिए हमें सन्यासी समाधिस्थ लगते है पर सच में नही होते है और हम उन्हीं में, उनसे ही अपनों को और अपने आप को खो देते है, भटका देते है।

ओहह! श्री वल्लभ!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

श्रीप्रभु का मुखारविंद हमें क्या कहता है?

सेवा में

दर्शन में

मनोरथ में

हम क्या क्या करते है?

हमें क्या क्या होता है?

मुख्याजी अपने ज्ञान भाव से कहेंगे

आचार्यजी अपने ज्ञान भाव से कहेंगे

सेवक अपने ज्ञान भाव से कहेंगे

दर्शनार्थी अपने ज्ञान भाव से कहेंगे

मनोरथी अपने ज्ञान भाव से कहेंगे

ज्ञान भाव से कहते कहते

हमारी निष्ठा प्रबल होती है

हमारा विश्वास द्रढ होता है

हमारा मन विष्यामुक्त होता है

हमारा तन पवित्र होता है

हमारा आत्म विशुद्धिओं सभर होता है

हमारा चरित्र की पहचान कराता है

हमें योग्य होने की शिक्षा करते है

हमारा कष्ठ हर लेता है

हमें प्रीत मुस्कान न्योछवार करते है

हमारा दर्द परिवर्तन करते है

हमें निकटता का संकेत धरते है

हमारा साथ निभाते है

हमें निस्वार्थ धर्म संस्कृतते है

हमें सलामत रखते है

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"धन" "धन तेरस"

धन + तेरस = धन तेरस

धन अर्थात धान्य

धन अर्थात धर्म

धन अर्थात धारण

धन अर्थात धन्यता

धन अर्थात धैर्य

धन अर्थात द्युत

धन अर्थात बुद्धि

धन अर्थात पवित्र

धन अर्थात शुद्ध

धन अर्थात वीर्य

धन अर्थात सेव्य

धन अर्थात दान

धन अर्थात इष्ट

धन के ऐसे तेरह प्रकार है जो हमें सदा ऐसा उनका साथ निभाना है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"दीपावली"

दीप अर्थात दीपक - दीया - ज्योतिर्धर।

आवली - आयी हुई - आयी

आवली - समूह - साथ साथ - इकठ्ठे - एक - एक जुट ।

हमारी संस्कृति सच में इतनी अलौकिक और शिक्षात्मक है कि हमें हर उत्सव, हर त्यौहार, हर रीत से हमें सिंचित करती है, जागृत करती है, योग्य कर रही है।

"दीपावली" का संयोजित अर्थ है एक होना।

जैसे दीप की एक ज्योति से असंख्य किरण प्रकटते है पर जब तेजोमय होते है तो एक ज्योत बन कर - एक अखण्डात्मक दीप हो कर सारा अंधकार को नष्ट करती है।

हमारा अंधकार है

हमारी अलगता

हमारी व्यवहारता

हमारी नासमझता

हमारी असाक्षरता

हमारी अंधधर्मता

हमारी अज्ञानता

हमारी अभावनात्मकता

हमारी भेदभावता

हमारी अराजकता

हमारी अविश्वनीयता

हमारी मूढ़ता

हमारी तृष्टता

हमारी स्वार्थता

हमारी निजता

हमारी अनिष्ठा

हमारी अधुरपता

हमारी अपूर्तता

हमारी विरोधता

हमारी कपटता

हमारी दुष्टता

हमारी अहंकर्ता

हमें सर्वथा पता है कि आज श्रीराम ने हर एक का ध्वंश किया था और एकता और मित्रता का विजय प्रस्थापित किया था।

आज हम अपने को ही तरछोडते है, छोड़ते है तो दीपावली कैसे मनाते है?

छोड़ो स्वार्थ की रीतें

छोड़ा अंधश्रद्धा की बातें

छोड़ो अविश्वनीय की रमते

छोड़ो असमंजस के रिश्ते

प्रकटाये दीप एकता के

प्रकटाये दीप विश्वास के

प्रकटाये दीप सेवा के

प्रकटाये दीप प्रीत के

यही ही दीपावली है

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

नित नित नूतन नित नित जीवन

है ये जन्म जगत की रीत

हमारा नूतन वर्ष आपका नूतन वर्ष

वर्ष से वर्ष बढ़ाये नूतन वर्ष जगाये

पल पल नूतन घड़ी घड़ी नूतन

हर धड़कन में पुष्टि प्रीत प्रकटाये

आपको प्रणाम हमारा आशीर्वाद अपनाये

निकट निकट रहे आत्म हमारा

पुष्टि प्रीत सेवा से राधाकृष्ण हो जाये

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"Happy New Year"

हाँ! कल आप सबने यही शब्दों से सबको शुभकामनाएं दी

क्यूँकी

दूसरा कोई शब्दों ही न थे

दूसरा कोई ज्ञान भी न था

हाँ!

और सामने वाले ने स्वीकार भी किया

"Happy New Year" कहके।

आप क्या मानते हो

आप क्या समझते हो

यह शुभकामनाएं किसीने दी और किसीने पायी?

यही ही कहना होता है ..... दूसरा क्या कहें?

कहना तो ऐसा चाहिए जो शब्दों से कुछ ऊर्जा जागे - जो शब्दों से कुछ जागृतता जागे। तभी तो ये दीपावली का दीप प्रकटाना और नूतन वर्ष की शुभकामनाएं तेजोमय हो।

तो क्या करें?

हममें खुद में आत्म निरीक्षण से ऐसा शब्दों कहे, जैसे

"जय श्री कृष्ण"

"जय रामजी"

"राधे राधे"

"जय भोले"

"जय माताजी"

"जय पांडुरंग"

"जय जगन्नाथ"

"जय बालाजी"

"जय भवानी"

आदि कहीं ऐसे सूत्र जो हमारी अंदर कुछ जगाये,

जिससे हमें कुछ असर हो,

जिससे हमें कुछ स्पर्श हो,

जिससे हममें कुछ आंतर चेतना जागे।

जो हमारे विचार को संस्कार सिंचन करें,

जो हमारे कार्य को योग्यता का पाठ पढाये।

सच कहना "Happy New Year" कहने से कुछ जागा? नहीं

क्यूँकी ये कोई ऐसा सात्विक प्रेरणा स्पर्शिय शब्द ही नही है जो कोई असर हो।

हमसे तो हमारा संस्कार है, संस्कृति है।

तो आत्मीयता से कहो - "जय श्री कृष्ण"

"नूतन वर्ष अभिनंदन"

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

आपको श्रीवल्लभाचार्यजी क्या थे? आप इसके उत्तर कर सकते है?

हमने कभी सोचा है - पुष्टिमार्ग की सत्यता, विश्वसनीयता, पवित्रता, विशुद्धता और सायुज्यता?
नहीं कभी नहीं - क्यूँकी हम तो केवल श्रीप्रभु हवेली को दुकान बना कर बैठे है,
हम श्रीप्रभु को एक व्यवहारिक साधन समझते है, तो वैष्णवता को कैसे समझेंगे?

खुद को वैष्णव कहते है और न कोई श्री वैष्णव को समझते है और जानते है।
शायद आज कितनी भी सेवा करले!
शायद आज कितना भी स्मरण करले!
शायद आज कितना भी जाप जपले!
शायद आज कितना भी दान देदे!
शायद आज कितनी भी कथा करले!
शायद आज कितना भी सत्संग करले!
हम न परिवर्तन कर सकते है, परिवर्तित हो सकते है

सच हमारे आचार्य कितने विशुद्ध और पवित्र थे।
सच हमारे ऋषि मुनिओं कितने ज्ञानात्मक और भावात्मक थे।

"ज्ञाननिष्ठा सदा तदा ज्ञेया सर्वज्ञो हि यदा भवेत् ।

कर्मनिष्ठा तदा ज्ञेया यदा चितं प्रसीदति ।

भक्तिनिष्ठा तदा ज्ञेया यदा कृष्ण: प्रसीदति ।

कोई भी प्रकार की निष्ठा हमें उत्तमता प्रदान करती ही है, ये तो श्रीवल्लभाचार्यजी की सर्वोत्तम कृपा है की हमें श्रीसुबोधिनीजी का श्रीकृष्ण स्वरुप पुष्टि रस मिला जो क्षण क्षण आनंदोउर्जित कर देती है।
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

ऐसा कैसा युग है

जो युग में मानव जीव तत्व अपने अहंकार के लिए क्या क्या करता है!

कभी सोचा है कितनी योनि अर्थात कितने अंग धारण करके, कितने स्वभाव, धर्म, प्रकृति, सृष्टि, जगत, भूमि, वायु, आकाश, सागर, और अग्नि का परिवर्तन करके खुद को खुद से खो कर जन्मों जन्मांतर भटक रहता है।

हमारे कितने मानव आचार्यों और ऋषि मुनिओ, ज्ञानी भावात्मक भक्तों ने कितना सामर्थ्य भरा पुरुषार्थ करके पुरषोत्तम से अति श्रेष्ठ पुरषोत्तम खुद को प्रपन्न किया जो हमारे गोत्राधिपति, कुलाधिपति - हमारे परमांश पति होते हुए भी हम ऐसे?

ओहह! कैसे है हम?

हमनें असंख्य जीव योनियाँ से खुद को कृतार्थ करके यह तापस्विक मानव योनि पा कर हम यही ही योनि में वो ही नमानव योनियाँ जैसी क्रियात्मक क्रिया करते है, तो हम क्या है? कैसे है?

कुछ होता नही है हमें? इतने अभिन्न निम्न है?

ओहह श्री वल्लभ!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हम मनुष्य है अर्थात हम मन को उष्य करने वाले जीव तत्व है, व्यक्ति है।
हम मानव अर्थात हम मन को अवगत करने वाले प्राणी है, जीव है।
हम मनुष्य - हम मानव अर्थात मन को उष्य करने वाले - हम मन को धारने वाले - हम मन को रचने वाले - हम मन को संभालने वाले - हम मन को मचलने वाले - हम मन को नचाने वाले - हम मन को अवगत करने वाले - हम मन को जागृत करने वाले - हम मन को उदबोध करने वाले - हम मन को सुबोध करने वाले जीवात्मा है।
जो मन से मन को जोड़ सके
जो मन से मन को मिला सके
जो मन से मन को एकात्म कर सके
वो मन योग्य मन है
वो मन साध्य मन है
वो मन भाग्य मन है
वो मन विजय मन है
वो मन अभय मन है
वो मन सायुज्य मन है
वो मन अच्युत मन है
वो मन विधुत मन है
वो मन सुसंगत मन है
वो मन अदभुत मन है
मन - कितना अलौकिक साधन
मन - कितना सर्वाधिक साधन
मन - कितना सर्वोच्च साधन
मन - कितना व्यापक साधन
मन - कितना सबल साधन
मन - कितना संरक्षक साधन
मन - कितना सुद्रढ़ साधन
मन - कितना गतिमय साधन
मन - कितना सुयोज्य साधन
मन - कितना विद्यामय साधन
मन - कितना प्रीतिमय साधन
मन - तु है तो मैं हूँ!
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

जीवन में कितनी नकारात्मकता से हम जुड़े है

जो हम समझते हुए भी उन्हें ना समझ करते रहते है

1. संस्कार

2. गरीबाई

3. रोग

4. समाचार

5. जाति रिवाज

6. संबंध

7. एक पैसा दिया और सबसे बड़े सलाहकार

8. दायित्व

9. सन्मान

10. असमंजस

11. विसंगतता

12. वह जिये तो हम क्यूँ नहीं

13. लांच रुस्वत

14. आचार

15. व्यवहार

16. अर्धविश्वास

17. अनैतिक

सच क्या है हम! चलो उठो कुछ सत्य करें नूतन वर्ष के संकल्प के साथ

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

गौविंद गौविंद गौविंद

गौवर्धन गौवर्धन गौवर्धन

गौवंश गौवंश गौवंश

गौपाला गौपाला गौपाला

गौचारण गौचारण गौचारण

गौचारह गौचारह गौचारह

गाँव गाँव गाँव

गौ गौ गौ

शायद कुछ समझ में आ रहा हो

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"जय श्री कृष्ण"

हर सुबह "जय श्री कृष्ण"

"जय श्री राम"

"जय श्री वल्लभ"

"जय रामजी"

"राधे राधे"

"आलेकुम सलाम"

"जय जिनेन्द्र"

और

दो हाथों से वंदन करते है

मीठी मुस्कान से सन्मान करते है

सुबह सुबह फूल चुंटते है

सुबह सुबह दुर्वा चुंटते है

सुबह सुबह माल्याजी अर्पण करते है

सुबह सुबह फूल भेंट करते है

मंगल ध्वनि स्फूरते है

मंगल स्वर पुकारते है

मंगल दर्शन करते है

मंगल संकल्प करते है

क्या है यह?

क्यूँ करते है यह?

अपने अंतर मन को कभी पूछा है? ऐसा क्यूँ करें?

नहीं

तो सोचो! क्या है यह और हमें यह हममें क्या जता रहे है, क्या समझा रहे है, क्या सिखा रहे है?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"पुष्टि" श्रीवल्लभाचार्यजी ऐसे असाधारण थे कि "पुष्टि" का हर प्रकार का अर्थ में कृपा और पोषण नही हो सकता है।

"पुष्टि" का अर्थ श्री प्रभुकी अहैतुक कृपा

"पुष्टि" का अर्थ सर्व प्रकार का पोषण नही हो सकता है।

"पुष्टि" का अर्थ कोई सिद्धि - कोई लीला - कोई सामर्थ्यता नही हो सकता है।

"पुष्टि" का अर्थ श्रीगायत्री की पुत्री - श्रीद्वादश सिद्धि की कोई सिद्धि या श्रुति नही है।

"पुष्टि" कोई अलौकिक और अनोखी और अनिर्विषयनी अति विशुद्ध और परम विश्वसनीय सामर्थ्यता है जो हर क्षण श्रीप्रभु के स्पर्शनीय और तनुनवत्वनिय ऊर्जा है, आनंद है, संपूर्णता है, जो अहंकार मुक्त, विष्यामुक्त, सूक्ष्म दोषमुक्त है, जो केवल और केवल परब्रह्म संयोजित है - समन्वयतीत है - परम चिर एकात्मय है।

"पुष्टि" का शास्त्रात अर्थ, व्याकरणर्थ, सकन्धार्थ, प्रकरणार्थ, अध्यायर्थ, भगवतार्थ, भावार्थ, शब्दार्थ अर्थात कोई भी प्रकार का अर्थ केवल श्रीप्रभु की कोई भी प्रकार की लीलामें ऊति वासना का दोष न जागे ऐसा निरुपण को पुष्टि कहते है।

"पुष्टि" ऐसी प्रीत है जो केवल और केवल श्रीप्रभु का सर्व श्रेष्ठ रस एकात्म माधुर्य ही हो।

जो न प्रवाह है

जो न मर्यादा है

जो न विशुद्ध है

"पुष्टि" तो केवल और केवल सर्व श्रेष्ठ रसात्मक एकात्म माधुर्य ही है।

यही ही योग्य अर्थ है - सामर्थ्य है - निर्णायित है - प्रमाणित सिद्ध है - सैद्धांतिक है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

श्रीमद भागवत में कहीं चरित्र आते है, हर चरित्र कोई संज्ञा, कोई संकेत, कोई सिद्धांत उजागर करता है। प्रथम चरित्र श्री अजामिल का है। द्रढ़ता से यह चरित्र पर हम दृष्टि करेंगे तो यह चरित्र हमसे अति सूक्ष्मता से जुड़ता है और यही भावार्थ, ज्ञानार्थ और शास्त्रार्थ से यह चरित्र श्रीभगवत्कार ने प्रारंभ किया है।

श्रीवल्लभाचार्यजी ने पुष्टि सिद्धांत से परिमाण किया है जिससे हमें प्राथमिक पुष्टि सिद्धांत का निवेदन प्राप्त हो। जो सर्वोत्तम स्त्रोत्र में भी निरुपण किया है।

इससे परिकृत होता है - नाम निवेदन

जो वैष्णव होते है उनका हर क्षण नाम निवेदन से संस्कृत है, जिससे मानसी अविररत्ता उठती रहे और हम सदा श्रीप्रभु स्पर्श पाते रहे।

विनंती है कि सर्वे व्यक्तित्व यह सिद्धांत की अनुभूति करें।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

जिसकी माँ केवल और केवल हर एक के साथ ममता से जीना सिखाये वो ही माँ है 🌷🙏🌷

"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"जैसा अन्न वैसा मन"

इतना सूक्ष्म और इतना गहराई से बता रहा हूँ की

आज हमने जो एक प्रथा बना रखी है, जो प्रथा बना रहे है की अपने घर में अन्न को नही पकाना

- कोई कोई परिस्तिथि कारण

- कोई कोई समय के कारण

- कोई कोई काल के कारण

- कोई कोई पश्चिमी सभ्यता के कारण

सच कहें - हमारे जीवन और हमारी शिक्षा और हमारा संस्कार के लिए अति अज्ञानिय, नासमझ भरा निर्णय हम कर रहे है, हम सूक्ष्म पर अति गंभीर गलती कर रहे है।

"जैसा अन्न वैसा मन"

इतनी गहरी रीत है उत्कृष्ट जीवन को रचने, संस्कृत जीवन को घड़ने, संस्कार जीवन को सजाने।

यह ऐसा ब्रह्म शस्त्र है जिससे हर दुष्टता को नष्ट कर सकते है

यह ऐसा ब्रह्म शास्त्र है जिससे हर विषमता का नाश कर सकते है

यह ऐसी ब्रह्म रीति है जिससे परब्रह्म भी हमारे निकट आ कर नाचते है - डोलते है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

आपको पता है हम क्या है?

क्या जीवन जीते जीते कभी ये विचार आता है - हम क्या है?

बचपन खेल में गया

युवानी उमंग में गयी

बुढापा कोस रोग में गयी

न समझ न आया न जान न पाया

गुजर गया जन्म जीवन

बन कर एक तमाशा

ये क्या वो क्या

ऐसा क्यूँ वैसा क्यूँ

खो गया कहाँ कहाँ

आखिर उठ गया ठिकाना

जल गया हम हम मैं मैं

कौन किसका कौन हमारा

यूँही चलते चलते सब चले

न किसीने जाना न कोई ने समझा

बहता चला हर एक का ठिकाना

पता नही क्यूँ नही जागता

कोई किसीका दीपक

जो ज्योत जगाये क्या है हम?

सच क्या है हम? क्या है हम?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कितने भाग्यशाली है हम की
हमारी जन्म धरा,
जीवन आकाश,
साँस अग्नेय सूर्य,
सिंचन स्पर्श वायु,
कृपा बरसत सागर,
संस्कार संस्कृति दिव्य पूर्वार्ध चरित्रों और शास्त्रों,
क्या हमें मनुष्यता नही सिखाते है!
हर आचार्यो से क्या सीखा!
हर ऋषियों से क्या पाया!
हर अवतारों से क्या सिंचा!
हर शास्त्रों से क्या पढ़ा!
हर गीताकार से क्या सुना!
हर भागवतकार से क्या श्रवणा!
सच कहें न हम सीखते है न हम पाते है,
सच कहें न हम सिंचते है न हम पढ़ते है,
सच कहें न हम सुनते है न हम श्रवणते है,
हम तो केवल खुद को भूलते है और घुमाते है
कितने आचार्यो को जाना और समझा?
कितने ऋषियों को जाना और पहचाना?
कितने अवतारों को जाना और अनुभवा?
कितने शास्त्रों को पढ़ा और अपनाया?
कितने गीताकार को सुना और परिवर्तना?
कितने भागवतकार को श्रवणा और कृतार्था?
कोई नही! क्यूँ?
हमारी आदत सुनने की नही है केवल सुनाने की है
हमारी आदत सुनने की नही है केवल बोलने की है
हमारी आदत सुनने की नही है केवल कहने की है
ओह्ह! आज के मानव!
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

जानता हूँ तो भी अन्जान रहता हूँ
मानता हूँ तो भी आमान्या रखता हूँ
सीखता हूँ तो भी अशिक्षित धरता हूँ
समझता हूँ तो भी नासमझ करता हूँ
पहचानता हूँ तो भी मूर्खता प्रदानता हूँ
सच मैं क्यूँ ऐसा हूँ?
कैसी इच्छा
कैसी तमन्ना
कैसी आकांक्षा
कैसी संकल्पता
कैसी कामना
कैसी वासना
कैसी मोहना
कैसी लोलुपता
कैसी रुचिता
कैसी संवेदना
कैसे बंधनमे बंधते है जो जन्मों जन्मों तक नही छोड़ते
जब छोड़ने का जन्म धारण करते है तब
जब पूर्णता से पाने का जन्म धारण करते है तब
जब खुद को संस्कृत होने का जन्म धारण करते है तब
जब खुद को पहचानने का जन्म धारण करते है तब
हम क्या क्या हो जाते है
हम क्या क्या करते रहते है
ओ मानव!
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"श्री पद्मनाभ" नाभि से श्रीप्रभु परम श्रेष्ठ श्री ब्रह्म को प्रकट करें!

कितना सामर्थ्य!

कितना शौर्य!

कितना सत्य!

कितना गौरव!

कितना सर्वोत्तम!

कितना सर्वोच्च!

अथार्त - मानव जीव में नाभि एक सर्व श्रेष्ठ अंग है जो जीव का सर्व श्रेष्ठ क्रिया करता है।

श्रीविष्णु प्रभु की नाभि से श्री ब्रह्माजी का प्राकट्य अति विशुद्ध और संपूर्ण विश्वास के साथ ऐसी लीला रचाती है, जिसमें मानव की असाधारणता उत्स होती है।

श्रीपद्मनाभ सत्य ऐसा परिपक्व है जिससे हर व्यक्ति का वह परिपक्व मूल स्थान है। तो तो ऐसा कह सकते ही है की यही अंग स्थली पवित्र हो उनकी हर गति पवित्र। मातृत्व की परिभाषा यही उजागर करती है इसीलिए तो माता सर्व श्रेष्ठ है।

श्री पद्मनाभ का स्मरण दर्शन और दंडवत अपनी संस्कृति का परम श्रेष्ठ योग है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हम इतने भाग्यशाली है की हमारी संस्कृति में "श्री महाभारत" का संस्कृत हुआ है।

कितना अदभुत और जीवन जागृत और जीवन उजागर करने वाला ज्ञानामृत काव्य है - चारित्र्य है - शास्त्र है - संस्कार है - संस्कृति है यह श्रीमहाभारत कथा और गाथा। जिसमें जीवन की हर संज्ञा - हर संकेत - हर कक्षा - हर परिस्तिथि - हर भूतकाल - हर वर्तमानकाल - हर भविष्यकाल है। मानव से मनुष्य - मनुष्य से श्रीप्रभु - परब्रह्म होने की शिक्षामृत कला का योग्य संस्कृति का निरूपण है।

हे मानव! सच में मुझे जो भी जानना है - समझना है - पाना है - पहचानना है -

मैं कौन?

तो यह प्रश्न का सर्वोत्तम उत्तर यहाँ ही है।

अर्थात मेरा यह कहना नही है की यह जीवन प्रश्नों के उत्तर है, यह तो ऐसा अखंड दीप है जो सदा उत्तम योग्य तेज प्रदान करने वाला मानव ब्रह्मांड सूर्य है।

हे अखंड तत्वज्ञान वर्धक! शत शत नमन करता हूँ।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"स्थली" अर्थात कोई ऐसी भूमि

- कोई ऐसी जगह

- कोई ऐसा स्पंदन

- कोई ऐसा आकर्षण

- कोई ऐसा सूचक

- कोई ऐसा तप

- कोई ऐसा सर्वोच्च स्थान जो हमें खिंचता है

- जो हमें पुकारता है

- जो हमें कोई संकेत करता है

- जो हमें कुछ करवाना चाहता है

- जो हममें कोई परिवर्तन कराना चाहता है

- जो हमें कुछ प्रदान करना चाहता है

- जो हममें कुछ प्रकटाना चाहता है।

हाँ! कुछ तो है।

ऐसा क्यूँ?

यात्रा करने का मन होता है

स्थली का महात्मय जानने का मन होता है

स्थली को बार बार समझने का मन होता है

ऐसा तो क्या है और होता है स्थली में जो हमारे तन मन और विचारों में कुछ परिवर्तन कर देता है?

हमारे तन में ऊर्जा - मन में शांतता - विचारों में स्थिरता भर देता है?

ऐसी स्थली - जो हमारी संस्कृति को उजागर करती है

ऐसी स्थली - जो हमारी मान्यता को विश्वास में परिभूत करती है

ऐसी स्थली - जो हमारे जीवन को शिक्षा प्रदान करती है

ऐसी स्थली - जो हमारे विचारों को गति देती है

ऐसी स्थली - जो हमारे आंतरिक मूल्यों को प्रबल करती है

ऐसी स्थली - जो हमारे जन्म को सफल करती है

ऐसी स्थली - जो हमारे स्पंदन को द्रढ करती है

सच! है कोई स्थली जो हमें हमारी संज्ञा है

सच! है कोई स्थली जो हमें हमारी संस्कृति है

सच! है कोई स्थली जो हमें हमारी पहचान है

सच! है कोई स्थली जो हम हम है - हमारा प्राण है - हमारा आत्म है - हमारा धाम है - हमारी सुबह है - हमारी शाम है - हमारी प्रीत है।

वंदन वंदन वंदन

प्रणाम प्रणाम प्रणाम

दंडवत दंडवत दंडवत

समर्पण समर्पण समर्पण

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

मैंने कहा श्री सूरदास से

ऐसो नयन तुमने कैसे बनायो

जो नीत नीत कृष्ण कृष्ण तु निरखे

सूरदास कहे तब हँसी नयनया

प्रीत नयन बहायो

दृढइन चरनन केरो भरोसो

दृढइन चरनन केरो

श्रीकृष्ण नखशिख मन मेरे बसयो

श्रीवल्लभ इन्द्रिय अंग मेरे भरयो

पुष्टि पुष्टि स्मरणन स्मरणन

रीति जीवन अपनायो

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

खेलता था कभी खुद को लूटा कर

रहता था कभी कहियों से जोड़ कर

खाता था कभी मुट्ठियाँ से बाँट कर

पहनता था कभी रंगबेरंगी एक रंग हो कर

क्या बचपन ही था जो हँसते थे साथ साथ पेट पकड़ कर

न पैसा था फिर भी सबकुछ था एक मिल कर

आज अकेले रहते है खुद को पैसादार बना कर

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कुटुंब में बड़ा अर्थात मुख्य व्यक्ति होना क्या है?

मातापिता

दादादादी

काकाकाकी

मोटाभाई मोटीभाभी

क्या समझते है हम उन्हें?

कुटुंब में दस सभ्यों और हर एक वयस्क

कोई कुछ भी कहे

कोई कुछ भी बोले

कोई कुछ भी समझे

कोई कुछ भी माने

फिरभी सबको संभाले

कोई उन्हें अव्यवहारु समझे

कोई उन्हें वर्चस्व समझे

कोई उन्हें अन्याय समझे

कोई उन्हें मर्यादा समझे

कोई उन्हें बेवकूफ समझे

कोई उन्हें वडील समझे

कोई उन्हें लाचार समझे

कोई उन्हें जोहुकमी समझे

कोई उन्हें जुल्मी समझे

कोई उन्हें स्वार्थी समझे

कोई उन्हें योग्य समझे

कोई उन्हें अयोग्य समझे

कोई उन्हें मजबूर समझे

कोई उन्हें बुद्धिशाली समझे

कोई उन्हें मूर्ख समझे

कोई उन्हें विश्वासघाती समझे

कोई उन्हें डरपोक समझे

कोई उन्हें नासमझ समझे

क्या क्या समझे कैसे कैसे

कैसी है यह विटम्बणा!

एक को कहे कुछ ओर समझे

दूजे को बोले कुछ ओऱ करें

कैसे कैसे विचारों बहाये

मौन धरे तो क्या समझे

खामोश रहे तो क्या माने

कैसी कैसी परिस्तिथि जगाये

संसार की लीला अटपटी

कुटुंब की रीत निराली

कुछ भी कह कर कुछ भी करना

कुछ भी छुपाकर कुछ भी समझाना

कैसे है अंतरागी!

कैसे है कौटुंबनिभाई!

थक गया हूँ हे सर्व कौटुंबाई!

हे ईश्वर! तु ही नेक कर सम्यकयायी

हे ईश्वर! तु ही हिम्मत दे सत्यन्यायी

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🙏🌷

चरित्र से चारित्र्य है

चारित्र्य से मान्यता है

मान्यता से धर्म है

यही ही रीत है संसार की जो सांसारिक अपनाये

पर समझे ऐसा

मनुष्य से चरित्र है

जो मनुष्य से सकारात्मकता है वो ही चारित्र्य है

जो मनुष्य से नकारत्मकता है वो ही अज्ञानता है

यही ही चरित्र से मान्यता समझे

यही ही मान्यता से धर्म समझे

धर्म विशुद्ध मान्यता विशुद्ध मन विशुद्ध मनुष्य विशुद्ध

यही ही सत्य है आचरण चारित्र्य

यही ही सत्य है शास्त्र चरित्र

यही ही सत्य है धर्म संस्थापन चरित्र

यही ही सत्य है मंत्ररूप चरित्र

यही ही है संस्कृति यही ही है स्तुति

यही ही है राम यही ही है कृष्ण

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

जीते जीते जो जो पाया
जो जो ले लेता है संसार
जीते जीते वो ही पाना
जो जो नही ले सकता संसार
कैसे समझे ले लेता है
कैसे समझे नही लेता है
कहे श्रीवल्लभ कहे सही पुरुषार्थ
जन्म लियो मानव जीव सो
सदबुद्धि सदमती सदचिति सदगति
सदप्रीति है जीवन सार
हम मतवाले समझ से नासमझ
कैसे घडते है संसार
पूर्वजों से तोड़े नाता
वंश से तोड़े रिश्ता
कैसी रचते है कुल विधाता
न कोई मेरा न मैं किसीका
कहता रहता है जीवन खारा
खुद ने बोया बीज निम्न भरा
कैसे खिले फूल गुल मधुरा
हे मानव! जाग जगायेजा
तु भी धूल जीवन धूल
धूल धूल से संसार धूल
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"ॐ नमः भगवते वासुदेवाय!"
वासुदेव अर्थात जो सबमें बसे है
वासुदेव अर्थात जो सबसे श्रेष्ठ है
वासुदेव अर्थात जो सबसे बंधे है
वासुदेव अर्थात जो सबसे झुके है
वासुदेव अर्थात जो सबसे जुड़े है
वासुदेव अर्थात जो सबसे प्रिये है
सबसे बंधे है - हाँ - वात्सल्य से
अपना मातृत्व सदा बहावो - हर एक दौड़ कर आपके पास बंधाने आयेंगे - चाहे मानव हो - दानव हो - देव हो - पशु हो - वसु हो
हम सदा उनसे बंधे है क्यूँकी हम पर वह वात्सल्य लूटा रहता है।
सच! हाँ! कैसे भी है हम - रोगी - लोभी - क्रोधी - स्वार्थी
ऐसा क्यूँ? क्यूँकी वो वात्सल्य का संपूर्ण है, वो करुणानिधि है, वो दया का सागर है।
पर ऐसा क्यूँ? क्यूँकी वो लूटाये वात्सल्य तो यह सृष्टि मधुर है, यह प्रकृति मधुर है, यह ऋतुचक्र मधुर है।
कोई बात नही - पर वह लूटाये क्यूँ अपना वात्सल्य?
वह लूटाये अपना वात्सल्य हमारा अज्ञान मिटाने, हमें संस्कृत करने, हमें सुंदर होने, हमसे माधुर्य फैलाने, हमसे सत्य प्रस्थापित करने, हमसे प्रीत लूटाने, हममें निश्वार्थ जगाने, हममें विश्वास सींचने, हमसे सेवा न्योछावर करने, हमसे श्रेष्ठता धरने, हमसे आनंद प्रकटाने।
ओहह! मेरे श्रीप्रभु!
ओहह! मेरे वासुदेव!
ओहह! मेरे भगवंत!
ओहह! मेरे नमनीय!
ओहह! मेरे आंतर विरह पूर्ण आकार ॐ!
"ॐ नमः भगवते वासुदेवाय!"
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

सबसे झुके है - हाँ

श्री वल्लभ!

"ॐ नमः भगवते वासुदेवाय!"

वासुदेव अर्थात जो सबसे झुके है

हाँ! वो सर्व से झुके है।

झुकना का अर्थ है

जिसके सामने झुकते है वो हमसे सर्वोपरि है

जिसके सामने झुकते है वो हमसे बलवान है

जिसके सामने झुकते है वो सर्व श्रेष्ठ है

जिसके सामने झुकते है वो हमें स्वीकार्य है

जिसके सामने झुकते है उनके शरणागत है

जिसके सामने झुकते है उनके आश्रित है

जिसके सामने झुकते है वो वडील है

जिसके सामने झुकते है वो प्रियतम है

जिसके सामने झुकते है वो रक्षक है

ओहह! और वासुदेव सदा झुकते है!

हाँ! सदा झुकते है।

कैसे हो वासुदेव!

ऐसा क्यूँ है वो सदा झुकते है?

जो सर्व श्रेष्ठ है

जो सर्व सामर्थ्य है

जो सर्व गुणातीत है

जो सर्व कला निधि है

जो सर्व ज्ञानी है

जो सर्व ऐश्वर्य है

जो सर्व न्यायी है

जो सर्व माधुर्य है

जो सर्व योग्य है

जो सर्व प्रीत है

हाँ! तो भी सर्व को झुकते है

नही नही!

हाँ! चोकक्स हाँ! वह सर्व को झुकते है

अरे! मेरी पास और साथ तो जो उनके पास और साथ जो है वो तो कुछ भी नही है तो मैं तो गर्व से मेरे में आये उन्हें झुकता हूँ बाकी सबको झुकाता हूँ।

ओहह!

यही तो जगत की रीत है, संसार की गति है।

ओहह श्री वल्लभ!

वासुदेव सर्व को झुकते है

हाँ!

ऐसा क्यूँ?

क्यूँकी उनमें अहंकार नही है

क्यूँकी उनमें सरलता है

क्यूँकी उनमें जागृतता है

क्यूँकी उनमें प्रज्ञानता है

क्यूँकी उनमें साक्षरता है

क्यूँकी उनमें विनम्रता है

क्यूँकी उनमें निःसंदेह है

क्यूँकी उनमें संशय नही है

क्यूँकी उनमें प्रीत है

इसीलिये! वह सबसे झुके है

इसीलिए! वह सर्व को झुके है।

ओहह! श्री वल्लभ!

"ॐ नमः भगवते वासुदेवाय" 🌷🙏🌷

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

मेरे श्याम!

श्याम श्याम करके मेरा नयन श्याम हो गये

जब जब भी नजर उठे श्याम ही श्याम नजर आये

मेरे श्याम!

श्याम श्याम करके मेरे नैन श्याम हो गये

जब जब भी अपलक रहे पलके श्याम तीर खील गये

मेरे श्याम!

श्याम श्याम करके मेरी आँखें श्याम हो गई

जब जब भी सुरमा छू आया हिरण दृष्टि रच गई

मेरे श्याम!

श्याम श्याम करके मेरे नयन श्याम रंग हो गये

जब जब भी इंतज़ार किया नयन ने श्याम विरह हो गये

मेरे श्याम!

श्याम श्याम करके मेरे पलकें झुक गये

जब जब भी तस्वीर बसी श्याम सी पलकें बंध हो गई

हे श्याम!

श्याम श्याम करके मेरे नैन नीर तरस गये

जब जब भी बूँद नैन से बही श्याम प्यास हो गई

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

श्रीप्रभु का मुखारविंद हमें क्या कहता है?

सेवा में

दर्शन में

मनोरथ में

हम क्या क्या करते है?

हमें क्या क्या होता है?

मुख्याजी अपने ज्ञान भाव से कहेंगे

आचार्यजी अपने ज्ञान भाव से कहेंगे

सेवक अपने ज्ञान भाव से कहेंगे

दर्शनार्थी अपने ज्ञान भाव से कहेंगे

मनोरथी अपने ज्ञान भाव से कहेंगे

ज्ञान भाव से कहते कहते

हमारी निष्ठा प्रबल होती है

हमारा विश्वास द्रढ होता है

हमारा मन विष्यामुक्त होता है

हमारा तन पवित्र होता है

हमारा आत्म विशुद्धिओं सभर होता है

हमारा चरित्र की पहचान कराता है

हमें योग्य होने की शिक्षा करते है

हमारा कष्ठ हर लेता है

हमें प्रीत मुस्कान न्योछवार करते है

हमारा दर्द परिवर्तन करते है

हमें निकटता का संकेत धरते है

हमारा साथ निभाते है

हमें निस्वार्थ धर्म संस्कृतते है

हमें सलामत रखते है

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"धन" "धन तेरस"

धन + तेरस = धन तेरस

धन अर्थात धान्य

धन अर्थात धर्म

धन अर्थात धारण

धन अर्थात धन्यता

धन अर्थात धैर्य

धन अर्थात द्‍युत

धन अर्थात बुद्‍धि

धन अर्थात पवित्र

धन अर्थात शुद्‍ध

धन अर्थात वीर्य

धन अर्थात सेव्य

धन अर्थात दान

धन अर्थात इष्ट

धन के ऐसे तेरह प्रकार है जो हमें सदा ऐसा उनका साथ निभाना है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"दीपावली"

दीप अर्थात दीपक - दीया - ज्योतिर्धर।

आवली - आयी हुई - आयी

आवली - समूह - साथ साथ - इकठ्ठे - एक - एक जुट ।

हमारी संस्कृति सच में इतनी अलौकिक और शिक्षात्मक है कि हमें हर उत्सव, हर त्यौहार, हर रीत से हमें सिंचित करती है, जागृत करती है, योग्य कर रही है।

"दीपावली" का संयोजित अर्थ है एक होना।

जैसे दीप की एक ज्योति से असंख्य किरण प्रकटते है पर जब तेजोमय होते है तो एक ज्योत बन कर - एक अखण्डात्मक दीप हो कर सारा अंधकार को नष्ट करती है।

हमारा अंधकार है

हमारी अलगता

हमारी व्यवहारता

हमारी नासमझता

हमारी असाक्षरता

हमारी अंधधर्मता

हमारी अज्ञानता

हमारी अभावनात्मकता

हमारी भेदभावता

हमारी अराजकता

हमारी अविश्वनीयता

हमारी मूढ़ता

हमारी तृष्टता

हमारी स्वार्थता

हमारी निजता

हमारी अनिष्ठा

हमारी अधुरपता

हमारी अपूर्तता

हमारी विरोधता

हमारी कपटता

हमारी दुष्टता

हमारी अहंकर्ता

हमें सर्वथा पता है कि आज श्रीराम ने हर एक का ध्वंश किया था और एकता और मित्रता का विजय प्रस्थापित किया था।

आज हम अपने को ही तरछोडते है, छोड़ते है तो दीपावली कैसे मनाते है?

छोड़ो स्वार्थ की रीतें

छोड़ा अंधश्रद्धा की बातें

छोड़ो अविश्वनीय की रमते

छोड़ो असमंजस के रिश्ते

प्रकटाये दीप एकता के

प्रकटाये दीप विश्वास के

प्रकटाये दीप सेवा के

प्रकटाये दीप प्रीत के

यही ही दीपावली है

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

नित नित नूतन नित नित जीवन

है ये जन्म जगत की रीत

हमारा नूतन वर्ष आपका नूतन वर्ष

वर्ष से वर्ष बढ़ाये नूतन वर्ष जगाये

पल पल नूतन घड़ी घड़ी नूतन

हर धड़कन में पुष्टि प्रीत प्रकटाये

आपको प्रणाम हमारा आशीर्वाद अपनाये

निकट निकट रहे आत्म हमारा

पुष्टि प्रीत सेवा से राधाकृष्ण हो जाये

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"Happy New Year"
हाँ! कल आप सबने यही शब्दों से सबको शुभकामनाएं दी
क्यूँकी
दूसरा कोई शब्दों ही न थे
दूसरा कोई ज्ञान भी न था
हाँ!
और सामने वाले ने स्वीकार भी किया
"Happy New Year" कहके।
आप क्या मानते हो
आप क्या समझते हो
यह शुभकामनाएं किसीने दी और किसीने पायी?
यही ही कहना होता है ..... दूसरा क्या कहें?
कहना तो ऐसा चाहिए जो शब्दों से कुछ ऊर्जा जागे - जो शब्दों से कुछ जागृतता जागे। तभी तो ये दीपावली का दीप प्रकटाना और नूतन वर्ष की शुभकामनाएं तेजोमय हो।
तो क्या करें?
हममें खुद में आत्म निरीक्षण से ऐसा शब्दों कहे, जैसे
"जय श्री कृष्ण"
"जय रामजी"
"राधे राधे"
"जय भोले"
"जय माताजी"
"जय पांडुरंग"
"जय जगन्नाथ"
"जय बालाजी"
"जय भवानी"
आदि कहीं ऐसे सूत्र जो हमारी अंदर कुछ जगाये,
जिससे हमें कुछ असर हो,
जिससे हमें कुछ स्पर्श हो,
जिससे हममें कुछ आंतर चेतना जागे।
जो हमारे विचार को संस्कार सिंचन करें,
जो हमारे कार्य को योग्यता का पाठ पढाये।
सच कहना "Happy New Year" कहने से कुछ जागा? नहीं
क्यूँकी ये कोई ऐसा सात्विक प्रेरणा स्पर्शिय शब्द ही नही है जो कोई असर हो।
हमसे तो हमारा संस्कार है, संस्कृति है।
तो आत्मीयता से कहो - "जय श्री कृष्ण"
"नूतन वर्ष अभिनंदन"
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

आपको श्रीवल्लभाचार्यजी क्या थे? आप इसके उत्तर कर सकते है?

हमने कभी सोचा है - पुष्टिमार्ग की सत्यता, विश्वसनीयता, पवित्रता, विशुद्धता और सायुज्यता?

नहीं कभी नहीं - क्यूँकी हम तो केवल श्रीप्रभु हवेली को दुकान बना कर बैठे है,

हम श्रीप्रभु को एक व्यवहारिक साधन समझते है, तो वैष्णवता को कैसे समझेंगे?

खुद को वैष्णव कहते है और न कोई श्री वैष्णव को समझते है और जानते है।

शायद आज कितनी भी सेवा करले!

शायद आज कितना भी स्मरण करले!

शायद आज कितना भी जाप जपले!

शायद आज कितना भी दान देदे!

शायद आज कितनी भी कथा करले!

शायद आज कितना भी सत्संग करले!

हम न परिवर्तन कर सकते है, परिवर्तित हो सकते है

सच हमारे आचार्य कितने विशुद्ध और पवित्र थे।

सच हमारे ऋषि मुनिओं कितने ज्ञानात्मक और भावात्मक थे।

"ज्ञाननिष्ठा सदा तदा ज्ञेया सर्वज्ञो हि यदा भवेत् ।

कर्मनिष्ठा तदा ज्ञेया यदा चितं प्रसीदति ।

भक्तिनिष्ठा तदा ज्ञेया यदा कृष्ण: प्रसीदति ।

कोई भी प्रकार की निष्ठा हमें उत्तमता प्रदान करती ही है, ये तो श्रीवल्लभाचार्यजी की सर्वोत्तम कृपा है की हमें श्रीसुबोधिनीजी का श्रीकृष्ण स्वरुप पुष्टि रस मिला जो क्षण क्षण आनंदोउर्जित कर देती है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

ऐसा कैसा युग है

जो युग में मानव जीव तत्व अपने अहंकार के लिए क्या क्या करता है!

कभी सोचा है कितनी योनि अर्थात कितने अंग धारण करके, कितने स्वभाव, धर्म, प्रकृति, सृष्टि, जगत, भूमि, वायु, आकाश, सागर, और अग्नि का परिवर्तन करके खुद को खुद से खो कर जन्मों जन्मांतर भटक रहता है।

हमारे कितने मानव आचार्यों और ऋषि मुनिओ, ज्ञानी भावात्मक भक्तों ने कितना सामर्थ्य भरा पुरुषार्थ करके पुरषोत्तम से अति श्रेष्ठ पुरषोत्तम खुद को प्रपन्न किया जो हमारे गोत्राधिपति, कुलाधिपति - हमारे परमांश पति होते हुए भी हम ऐसे?

ओहह! कैसे है हम?

हमनें असंख्य जीव योनियाँ से खुद को कृतार्थ करके यह तापस्विक मानव योनि पा कर हम यही ही योनि में वो ही नमानव योनियाँ जैसी क्रियात्मक क्रिया करते है, तो हम क्या है? कैसे है?

कुछ होता नही है हमें? इतने अभिन्न निम्न है?

ओहह श्री वल्लभ!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हम मनुष्य है अर्थात हम मन को उष्य करने वाले जीव तत्व है, व्यक्ति है।
हम मानव अर्थात हम मन को अवगत करने वाले प्राणी है, जीव है।
हम मनुष्य - हम मानव अर्थात मन को उष्य करने वाले - हम मन को धारने वाले - हम मन को रचने वाले - हम मन को संभालने वाले - हम मन को मचलने वाले - हम मन को नचाने वाले - हम मन को अवगत करने वाले - हम मन को जागृत करने वाले - हम मन को उदबोध करने वाले - हम मन को सुबोध करने वाले जीवात्मा है।
जो मन से मन को जोड़ सके
जो मन से मन को मिला सके
जो मन से मन को एकात्म कर सके
वो मन योग्य मन है
वो मन साध्य मन है
वो मन भाग्य मन है
वो मन विजय मन है
वो मन अभय मन है
वो मन सायुज्य मन है
वो मन अच्युत मन है
वो मन विधुत मन है
वो मन सुसंगत मन है
वो मन अदभुत मन है
मन - कितना अलौकिक साधन
मन - कितना सर्वाधिक साधन
मन - कितना सर्वोच्च साधन
मन - कितना व्यापक साधन
मन - कितना सबल साधन
मन - कितना संरक्षक साधन
मन - कितना सुद्रढ़ साधन
मन - कितना गतिमय साधन
मन - कितना सुयोज्य साधन
मन - कितना विद्यामय साधन
मन - कितना प्रीतिमय साधन
मन - तु है तो मैं हूँ!
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

जीवन में कितनी नकारात्मकता से हम जुड़े है

जो हम समझते हुए भी उन्हें ना समझ करते रहते है

1. संस्कार
2. गरीबाई
3. रोग
4. समाचार
5. जाति रिवाज
6. संबंध
7. एक पैसा दिया और सबसे बड़े सलाहकार
8. दायित्व
9. सन्मान
10. असमंजस
11. विसंगतता
12. वह जिये तो हम क्यूँ नहीं
13. लांच रुस्वत
14. आचार
15. व्यवहार
16. अर्धविश्वास
17. अनैतिक

सच क्या है हम! चलो उठो कुछ सत्य करें नूतन वर्ष के संकल्प के साथ

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

गौविंद गौविंद गौविंद

गौवर्धन गौवर्धन गौवर्धन

गौवंश गौवंश गौवंश

गौपाला गौपाला गौपाला

गौचारण गौचारण गौचारण

गौचारह गौचारह गौचारह

गाँव गाँव गाँव

गौ गौ गौ

शायद कुछ समझ में आ रहा हो

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"जय श्री कृष्ण"

हर सुबह "जय श्री कृष्ण"

"जय श्री राम"

"जय श्री वल्लभ"

"जय रामजी"

"राधे राधे"

"आलेकुम सलाम"

"जय जिनेन्द्र"

और

दो हाथों से वंदन करते है

मीठी मुस्कान से सन्मान करते है

सुबह सुबह फूल चुंटते है

सुबह सुबह दुर्वा चुंटते है

सुबह सुबह माल्याजी अर्पण करते है

सुबह सुबह फूल भेंट करते है

मंगल ध्वनि स्फूरते है

मंगल स्वर पुकारते है

मंगल दर्शन करते है

मंगल संकल्प करते है

क्या है यह?

क्यूँ करते है यह?

अपने अंतर मन को कभी पूछा है? ऐसा क्यूँ करें?

नहीं

तो सोचो! क्या है यह और हमें यह हममें क्या जता रहे है, क्या समझा रहे है, क्या सिखा रहे है?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"पुष्टि" श्रीवल्लभाचार्यजी ऐसे असाधारण थे कि "पुष्टि" का हर प्रकार का अर्थ में कृपा और पोषण नही हो सकता है।

"पुष्टि" का अर्थ श्री प्रभुकी अहैतुक कृपा

"पुष्टि" का अर्थ सर्व प्रकार का पोषण नही हो सकता है।

"पुष्टि" का अर्थ कोई सिद्धि - कोई लीला - कोई सामर्थ्यता नही हो सकता है।

"पुष्टि" का अर्थ श्रीगायत्री की पुत्री - श्रीद्वादश सिद्धि की कोई सिद्धि या श्रुति नही है।

"पुष्टि" कोई अलौकिक और अनोखी और अनिर्विषयनी अति विशुद्ध और परम विश्वसनीय सामर्थ्यता है जो हर क्षण श्रीप्रभु के स्पर्शनीय और तनुनवत्वनिय ऊर्जा है, आनंद है, संपूर्णता है, जो अहंकार मुक्त, विष्यामुक्त, सूक्ष्म दोषमुक्त है, जो केवल और केवल परब्रह्म संयोजित है - समन्वयतीत है - परम चिर एकात्मय है।

"पुष्टि" का शास्त्रात अर्थ, व्याकरणर्थ, सकन्धार्थ, प्रकरणार्थ, अध्यायर्थ, भगवतार्थ, भावार्थ, शब्दार्थ अर्थात कोई भी प्रकार का अर्थ केवल श्रीप्रभु की कोई भी प्रकार की लीलामें ऊति वासना का दोष न जागे ऐसा निरुपण को पुष्टि कहते है।

"पुष्टि" ऐसी प्रीत है जो केवल और केवल श्रीप्रभु का सर्व श्रेष्ठ रस एकात्म माधुर्य ही हो।

जो न प्रवाह है

जो न मर्यादा है

जो न विशुद्ध है

"पुष्टि" तो केवल और केवल सर्व श्रेष्ठ रसात्मक एकात्म माधुर्य ही है।

यही ही योग्य अर्थ है - सामर्थ्य है - निर्णायित है - प्रमाणित सिद्ध है - सैद्धांतिक है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

श्रीमद भागवत में कहीं चरित्र आते है, हर चरित्र कोई संज्ञा, कोई संकेत, कोई सिद्धांत उजागर करता है। प्रथम चरित्र श्री अजामिल का है। द्रढ़ता से यह चरित्र पर हम दृष्टि करेंगे तो यह चरित्र हमसे अति सूक्ष्मता से जुड़ता है और यही भावार्थ, ज्ञानार्थ और शास्त्रार्थ से यह चरित्र श्रीभगवत्कार ने प्रारंभ किया है।

श्रीवल्लभाचार्यजी ने पुष्टि सिद्धांत से परिमाण किया है जिससे हमें प्राथमिक पुष्टि सिद्धांत का निवेदन प्राप्त हो। जो सर्वोत्तम स्त्रोत्र में भी निरुपण किया है।

इससे परिकृत होता है - नाम निवेदन

जो वैष्णव होते है उनका हर क्षण नाम निवेदन से संस्कृत है, जिससे मानसी अविररत्ता उठती रहे और हम सदा श्रीप्रभु स्पर्श पाते रहे।

विनंती है कि सर्वे व्यक्तित्व यह सिद्धांत की अनुभूति करें।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

जिसकी माँ केवल और केवल हर एक के साथ ममता से जीना सिखाये वो ही माँ है 🌷🙏🌷

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"जैसा अन्न वैसा मन"

इतना सूक्ष्म और इतना गहराई से बता रहा हूँ की

आज हमने जो एक प्रथा बना रखी है, जो प्रथा बना रहे है की अपने घर में अन्न को नही पकाना

- कोई कोई परिस्तिथि कारण

- कोई कोई समय के कारण

- कोई कोई काल के कारण

- कोई कोई पश्चिमी सभ्यता के कारण

सच कहें - हमारे जीवन और हमारी शिक्षा और हमारा संस्कार के लिए अति अज्ञानिय, नासमझ भरा निर्णय हम कर रहे है, हम सूक्ष्म पर अति गंभीर गलती कर रहे है।

"जैसा अन्न वैसा मन"

इतनी गहरी रीत है उत्कृष्ट जीवन को रचने, संस्कृत जीवन को घड़ने, संस्कार जीवन को सजाने।

यह ऐसा ब्रह्म शस्त्र है जिससे हर दुष्टता को नष्ट कर सकते है

यह ऐसा ब्रह्म शास्त्र है जिससे हर विषमता का नाश कर सकते है

यह ऐसी ब्रह्म रीति है जिससे परब्रह्म भी हमारे निकट आ कर नाचते है - डोलते है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

आपको पता है हम क्या है?

क्या जीवन जीते जीते कभी ये विचार आता है - हम क्या है?

बचपन खेल में गया

युवानी उमंग में गयी

बुढापा कोस रोग में गयी

न समझ न आया न जान न पाया

गुजर गया जन्म जीवन

बन कर एक तमाशा

ये क्या वो क्या

ऐसा क्यूँ वैसा क्यूँ

खो गया कहाँ कहाँ

आखिर उठ गया ठिकाना

जल गया हम हम मैं मैं

कौन किसका कौन हमारा

यूँही चलते चलते सब चले

न किसीने जाना न कोई ने समझा

बहता चला हर एक का ठिकाना

पता नही क्यूँ नही जागता

कोई किसीका दीपक

जो ज्योत जगाये क्या है हम?

सच क्या है हम? क्या है हम?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कितने भाग्यशाली है हम की
हमारी जन्म धरा,
जीवन आकाश,
साँस अग्नेय सूर्य,
सिंचन स्पर्श वायु,
कृपा बरसत सागर,
संस्कार संस्कृति दिव्य पूर्वार्ध चरित्रों और शास्त्रों,
क्या हमें मनुष्यता नही सिखाते है!
हर आचार्यो से क्या सीखा!
हर ऋषियों से क्या पाया!
हर अवतारों से क्या सिंचा!
हर शास्त्रों से क्या पढ़ा!
हर गीताकार से क्या सुना!
हर भागवतकार से क्या श्रवणा!
सच कहें न हम सीखते है न हम पाते है,
सच कहें न हम सिंचते है न हम पढ़ते है,
सच कहें न हम सुनते है न हम श्रवणते है,
हम तो केवल खुद को भूलते है और घुमाते है
कितने आचार्यो को जाना और समझा?
कितने ऋषियों को जाना और पहचाना?
कितने अवतारों को जाना और अनुभवा?
कितने शास्त्रों को पढ़ा और अपनाया?
कितने गीताकार को सुना और परिवर्तना?
कितने भागवतकार को श्रवणा और कृतार्था?
कोई नही! क्यूँ?
हमारी आदत सुनने की नही है केवल सुनाने की है
हमारी आदत सुनने की नही है केवल बोलने की है
हमारी आदत सुनने की नही है केवल कहने की है
ओहह! आज के मानव!
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

जानता हूँ तो भी अन्जान रहता हूँ
मानता हूँ तो भी आमान्या रखता हूँ
सीखता हूँ तो भी अशिक्षित धरता हूँ
समझता हूँ तो भी नासमझ करता हूँ
पहचानता हूँ तो भी मूर्खता प्रदानता हूँ
सच मैं क्यूँ ऐसा हूँ?
कैसी इच्छा
कैसी तमन्ना
कैसी आकांक्षा
कैसी संकल्पता
कैसी कामना
कैसी वासना
कैसी मोहना
कैसी लोलुपता
कैसी रुचिता
कैसी संवेदना
कैसे बंधनमे बंधते है जो जन्मों जन्मों तक नही छोड़ते
जब छोड़ने का जन्म धारण करते है तब
जब पूर्णता से पाने का जन्म धारण करते है तब
जब खुद को संस्कृत होने का जन्म धारण करते है तब
जब खुद को पहचानने का जन्म धारण करते है तब
हम क्या क्या हो जाते है
हम क्या क्या करते रहते है
ओ मानव!
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"श्री पद्मनाभ" नाभि से श्रीप्रभु परम श्रेष्ठ श्री ब्रह्म को प्रकट करें!

कितना सामर्थ्य!

कितना शौर्य!

कितना सत्य!

कितना गौरव!

कितना सर्वोत्तम!

कितना सर्वोच्च!

अथार्त - मानव जीव में नाभि एक सर्व श्रेष्ठ अंग है जो जीव का सर्व श्रेष्ठ क्रिया करता है।

श्रीविष्णु प्रभु की नाभि से श्री ब्रह्माजी का प्राकट्य अति विशुद्ध और संपूर्ण विश्वास के साथ ऐसी लीला रचाती है, जिसमें मानव की असाधारणता उत्स होती है।

श्रीपद्मनाभ सत्य ऐसा परिपक्व है जिससे हर व्यक्ति का वह परिपक्व मूल स्थान है। तो तो ऐसा कह सकते ही है की यही अंग स्थली पवित्र हो उनकी हर गति पवित्र। मातृत्व की परिभाषा यही उजागर करती है इसीलिए तो माता सर्व श्रेष्ठ है।

श्री पद्मनाभ का स्मरण दर्शन और दंडवत अपनी संस्कृति का परम श्रेष्ठ योग है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हम इतने भाग्यशाली है की हमारी संस्कृति में "श्री महाभारत" का संस्कृत हुआ है।

कितना अदभुत और जीवन जागृत और जीवन उजागर करने वाला ज्ञानामृत काव्य है - चारित्र्य है - शास्त्र है - संस्कार है - संस्कृति है यह श्रीमहाभारत कथा और गाथा। जिसमें जीवन की हर संज्ञा - हर संकेत - हर कक्षा - हर परिस्तिथि - हर भूतकाल - हर वर्तमानकाल - हर भविष्यकाल है। मानव से मनुष्य - मनुष्य से श्रीप्रभु - परब्रह्म होने की शिक्षामृत कला का योग्य संस्कृति का निरूपण है।

हे मानव! सच में मुझे जो भी जानना है - समझना है - पाना है - पहचानना है -

मैं कौन?

तो यह प्रश्न का सर्वोत्तम उत्तर यहाँ ही है।

अर्थात मेरा यह कहना नही है की यह जीवन प्रश्नों के उत्तर है, यह तो ऐसा अखंड दीप है जो सदा उत्तम योग्य तेज प्रदान करने वाला मानव ब्रह्मांड सूर्य है।

हे अखंड तत्वज्ञान वर्धक! शत शत नमन करता हूँ।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"स्थली" अर्थात कोई ऐसी भूमि

- कोई ऐसी जगह

- कोई ऐसा स्पंदन

- कोई ऐसा आकर्षण

- कोई ऐसा सूचक

- कोई ऐसा तप

- कोई ऐसा सर्वोच्च स्थान जो हमें खिंचता है

- जो हमें पुकारता है

- जो हमें कोई संकेत करता है

- जो हमें कुछ करवाना चाहता है

- जो हममें कोई परिवर्तन कराना चाहता है

- जो हमें कुछ प्रदान करना चाहता है

- जो हममें कुछ प्रकटाना चाहता है।

हाँ! कुछ तो है।

ऐसा क्यूँ?

यात्रा करने का मन होता है

स्थली का महात्मय जानने का मन होता है

स्थली को बार बार समझने का मन होता है

ऐसा तो क्या है और होता है स्थली में जो हमारे तन मन और विचारों में कुछ परिवर्तन कर देता है?

हमारे तन में ऊर्जा - मन में शांतता - विचारों में स्थिरता भर देता है?

ऐसी स्थली - जो हमारी संस्कृति को उजागर करती है

ऐसी स्थली - जो हमारी मान्यता को विश्वास में परिभूत करती है

ऐसी स्थली - जो हमारे जीवन को शिक्षा प्रदान करती है

ऐसी स्थली - जो हमारे विचारों को गति देती है

ऐसी स्थली - जो हमारे आंतरिक मूल्यों को प्रबल करती है

ऐसी स्थली - जो हमारे जन्म को सफल करती है

ऐसी स्थली - जो हमारे स्पंदन को द्रढ करती है

सच! है कोई स्थली जो हमें हमारी संज्ञा है

सच! है कोई स्थली जो हमें हमारी संस्कृति है

सच! है कोई स्थली जो हमें हमारी पहचान है

सच! है कोई स्थली जो हम हम है - हमारा प्राण है - हमारा आत्म है - हमारा धाम है - हमारी सुबह है - हमारी शाम है - हमारी प्रीत है।

वंदन वंदन वंदन

प्रणाम प्रणाम प्रणाम

दंडवत दंडवत दंडवत

समर्पण समर्पण समर्पण

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

मैंने कहा श्री सूरदास से

ऐसो नयन तुमने कैसे बनायो

जो नीत नीत कृष्ण कृष्ण तु निरखे

सूरदास कहे तब हँसी नयनया

प्रीत नयन बहायो

दृढइन चरनन केरो भरोसो

दृढइन चरनन केरो

श्रीकृष्ण नखशिख मन मेरे बसयो

श्रीवल्लभ इन्द्रिय अंग मेरे भरयो

पुष्टि पुष्टि स्मरणन स्मरणन

रीति जीवन अपनायो

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

खेलता था कभी खुद को लूटा कर

रहता था कभी कहियों से जोड़ कर

खाता था कभी मुट्ठियाँ से बाँट कर

पहनता था कभी रंगबेरंगी एक रंग हो कर

क्या बचपन ही था जो हँसते थे साथ साथ पेट पकड़ कर

न पैसा था फिर भी सबकुछ था एक मिल कर

आज अकेले रहते है खुद को पैसादार बना कर

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कुटुंब में बड़ा अर्थात मुख्य व्यक्ति होना क्या है?

मातापिता

दादादादी

काकाकाकी

मोटाभाई मोटीभाभी

क्या समझते है हम उन्हें?

कुटुंब में दस सभ्यों और हर एक वयस्क

कोई कुछ भी कहे

कोई कुछ भी बोले

कोई कुछ भी समझे

कोई कुछ भी माने

फिरभी सबको संभाले

कोई उन्हें अव्यवहारु समझे

कोई उन्हें वर्चस्व समझे

कोई उन्हें अन्याय समझे

कोई उन्हें मर्यादा समझे

कोई उन्हें बेवकूफ समझे

कोई उन्हें वडील समझे

कोई उन्हें लाचार समझे

कोई उन्हें जोहुकमी समझे

कोई उन्हें जुल्मी समझे

कोई उन्हें स्वार्थी समझे

कोई उन्हें योग्य समझे

कोई उन्हें अयोग्य समझे

कोई उन्हें मजबूर समझे

कोई उन्हें बुद्धिशाली समझे

कोई उन्हें मूर्ख समझे

कोई उन्हें विश्वासघाती समझे

कोई उन्हें डरपोक समझे

कोई उन्हें नासमझ समझे

क्या क्या समझे कैसे कैसे

कैसी है यह विटम्बणा!

एक को कहे कुछ ओर समझे

दूजे को बोले कुछ ओऱ करें

कैसे कैसे विचारों बहाये

मौन धरे तो क्या समझे

खामोश रहे तो क्या माने

कैसी कैसी परिस्तिथि जगाये

संसार की लीला अटपटी

कुटुंब की रीत निराली

कुछ भी कह कर कुछ भी करना

कुछ भी छुपाकर कुछ भी समझाना

कैसे है अंतरागी!

कैसे है कौटुंबनिभाई!

थक गया हूँ हे सर्व कौटुंबाई!

हे ईश्वर! तु ही नेक कर सम्यकयायी

हे ईश्वर! तु ही हिम्मत दे सत्यन्यायी

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🙏🌷

चरित्र से चारित्र्य है

चारित्र्य से मान्यता है

मान्यता से धर्म है

यही ही रीत है संसार की जो सांसारिक अपनाये

पर समझे ऐसा

मनुष्य से चरित्र है

जो मनुष्य से सकारात्मकता है वो ही चारित्र्य है

जो मनुष्य से नकारत्मकता है वो ही अज्ञानता है

यही ही चरित्र से मान्यता समझे

यही ही मान्यता से धर्म समझे

धर्म विशुद्ध मान्यता विशुद्ध मन विशुद्ध मनुष्य विशुद्ध

यही ही सत्य है आचरण चारित्र्य

यही ही सत्य है शास्त्र चरित्र

यही ही सत्य है धर्म संस्थापन चरित्र

यही ही सत्य है मंत्ररूप चरित्र

यही ही है संस्कृति यही ही है स्तुति

यही ही है राम यही ही है कृष्ण

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

जीते जीते जो जो पाया
जो जो ले लेता है संसार
जीते जीते वो ही पाना
जो जो नही ले सकता संसार
कैसे समझे ले लेता है
कैसे समझे नही लेता है
कहे श्रीवल्लभ कहे सही पुरुषार्थ
जन्म लियो मानव जीव सो
सदबुद्धि सदमती सदचिति सदगति
सदप्रीति है जीवन सार
हम मतवाले समझ से नासमझ
कैसे घडते है संसार
पूर्वजों से तोड़े नाता
वंश से तोड़े रिश्ता
कैसी रचते है कुल विधाता
न कोई मेरा न मैं किसीका
कहता रहता है जीवन खारा
खुद ने बोया बीज निम्न भरा
कैसे खिले फूल गुल मधुरा
हे मानव! जाग जगायेजा
तु भी धूल जीवन धूल
धूल धूल से संसार धूल
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"ॐ नमः भगवते वासुदेवाय!"

वासुदेव अर्थात जो सबमें बसे है

वासुदेव अर्थात जो सबसे श्रेष्ठ है

वासुदेव अर्थात जो सबसे बंधे है

वासुदेव अर्थात जो सबसे झुके है

वासुदेव अर्थात जो सबसे जुड़े है

वासुदेव अर्थात जो सबसे प्रिये है

सबसे बंधे है - हाँ - वात्सल्य से

अपना मातृत्व सदा बहावो - हर एक दौड़ कर आपके पास बंधाने आयेंगे - चाहे मानव हो - दानव हो - देव हो - पशु हो - वसु हो

हम सदा उनसे बंधे है क्यूँकी हम पर वह वात्सल्य लूटा रहता है।

सच! हाँ! कैसे भी है हम - रोगी - लोभी - क्रोधी - स्वार्थी

ऐसा क्यूँ? क्यूँकी वो वात्सल्य का संपूर्ण है, वो करुणानिधि है, वो दया का सागर है।

पर ऐसा क्यूँ? क्यूँकी वो लूटाये वात्सल्य तो यह सृष्टि मधुर है, यह प्रकृति मधुर है, यह ऋतुचक्र मधुर है।

कोई बात नही - पर वह लूटाये क्यूँ अपना वात्सल्य?

वह लूटाये अपना वात्सल्य हमारा अज्ञान मिटाने, हमें संस्कृत करने, हमें सुंदर होने, हमसे माधुर्य फैलाने, हमसे सत्य प्रस्थापित करने, हमसे प्रीत लूटाने, हममें निश्वार्थ जगाने, हममें विश्वास सींचने, हमसे सेवा न्योछावर करने, हमसे श्रेष्ठता धरने, हमसे आनंद प्रकटाने।

ओहह! मेरे श्रीप्रभु!

ओहह! मेरे वासुदेव!

ओहह! मेरे भगवंत!

ओहह! मेरे नमनीय!

ओहह! मेरे आंतर विरह पूर्ण आकार ॐ!

"ॐ नमः भगवते वासुदेवाय!"

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

सबसे झुके है - हाँ
श्री वल्लभ!
"ॐ नमः भगवते वासुदेवाय!"
वासुदेव अर्थात जो सबसे झुके है
हाँ! वो सर्व से झुके है।
झुकना का अर्थ है
जिसके सामने झुकते है वो हमसे सर्वोपरि है
जिसके सामने झुकते है वो हमसे बलवान है
जिसके सामने झुकते है वो सर्व श्रेष्ठ है
जिसके सामने झुकते है वो हमें स्वीकार्य है
जिसके सामने झुकते है उनके शरणागत है
जिसके सामने झुकते है उनके आश्रित है
जिसके सामने झुकते है वो वडील है
जिसके सामने झुकते है वो प्रियतम है
जिसके सामने झुकते है वो रक्षक है
ओहह! और वासुदेव सदा झुकते है!
हाँ! सदा झुकते है।
कैसे हो वासुदेव!
ऐसा क्यूँ है वो सदा झुकते है?
जो सर्व श्रेष्ठ है
जो सर्व सामर्थ्य है
जो सर्व गुणातीत है
जो सर्व कला निधि है
जो सर्व ज्ञानी है
जो सर्व ऐश्वर्य है
जो सर्व न्यायी है
जो सर्व माधुर्य है
जो सर्व योग्य है
जो सर्व प्रीत है
हाँ! तो भी सर्व को झुकते है

नही नही!

हाँ! चोकक्स हाँ! वह सर्व को झुकते है

अरे! मेरी पास और साथ तो जो उनके पास और साथ जो है वो तो कुछ भी नही है तो मैं तो गर्व से मेरे में आये उन्हें झुकता हूँ बाकी सबको झुकाता हूँ।

ओहह!

यही तो जगत की रीत है, संसार की गति है।

ओहह श्री वल्लभ!

वासुदेव सर्व को झुकते है

हाँ!

ऐसा क्यूँ?

क्यूँकी उनमें अहंकार नही है

क्यूँकी उनमें सरलता है

क्यूँकी उनमें जागृतता है

क्यूँकी उनमें प्रज्ञानता है

क्यूँकी उनमें साक्षरता है

क्यूँकी उनमें विनम्रता है

क्यूँकी उनमें निःसंदेह है

क्यूँकी उनमें संशय नही है

क्यूँकी उनमें प्रीत है

इसीलिये! वह सबसे झुके है

इसीलिए! वह सर्व को झुके है।

ओहह! श्री वल्लभ!

"ॐ नमः भगवते वासुदेवाय" 🌷🙏🌷

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

मेरे श्याम!

श्याम श्याम करके मेरा नयन श्याम हो गये

जब जब भी नजर उठे श्याम ही श्याम नजर आये

मेरे श्याम!

श्याम श्याम करके मेरे नैन श्याम हो गये

जब जब भी अपलक रहे पलके श्याम तीर खील गये

मेरे श्याम!

श्याम श्याम करके मेरी आँखें श्याम हो गई

जब जब भी सुरमा छू आया हिरण दृष्टि रच गई

मेरे श्याम!

श्याम श्याम करके मेरे नयन श्याम रंग हो गये

जब जब भी इंतज़ार किया नयन ने श्याम विरह हो गये

मेरे श्याम!

श्याम श्याम करके मेरे पलकें झुक गये

जब जब भी तस्वीर बसी श्याम सी पलकें बंध हो गई

हे श्याम!

श्याम श्याम करके मेरे नैन नीर तरस गये

जब जब भी बूँद नैन से बही श्याम प्यास हो गई

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

मन करता है बार बार थक चुका हूँ यह संसार

तन करता है बार बार चल चुका हूँ यह संसार

नैन भी कहे कर्ण भी कहे, कहते है अब यह सारा अंग

दृष्टि भी कहे गूँजन भी कहे, कहते है अब यह सारा संग

होंठ भी कहे नासिका भी कहे, कहते है अब यह सारा तरंग

हस्त भी कहे पैर भी कहे, कहते है अब यह सारा सृजन

मैं मतवाला ऐसा चला थक चूका मेरा सारा जीवन

छोड़ रहा हूँ कुछ यादें मेरी कभी कभी की थी कोई रीते

क्या पता कैसे पता कोई तो अंग से आऊंगा फिरसे

प्रकृति मिले सृष्टि मिले कोई तो संग मिले अपनो से

यही प्रार्थना है पुष्टि मिले पुष्टि जन मिले मिले वैष्णव पंथ

वंदन करु श्रीवल्लभ श्रीयमुना श्रीगिरिराज श्रीअष्टसखा

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कितना भी समझाया कितना भी दिया इशारा

कितना भी दिलासा कितना भी किया समझोता

फिर भी न माना पुष्टि मन

फिर भी न माना पुष्टि तन

कैसी है यह रीत जीने की

कल उगेगा सूरज पुष्टि मार्ग का

तेजोमय होगा तत्वों पुष्टि सारा

आश लगा कर पल पल निभाये

श्रीवल्लभ श्रीयमुना श्रीगिरिराज अष्टकम

न कोई जागे मैं क्यूँ घआऊँ जन्म जीवन

श्रीअष्टसखा पुष्टि चरित्र सिद्धांत अपनाऊँ

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

जीवन की कहीं राहे साथ चलते चलते काटी तो जीवन मधुर हो गया

जीवन की कहीं बातें साथ साथ गुनगुनादि तो जीवन संगीत हो गया

जीवन की कहीं रीते साथ साथ रहते रहते निभादि तो जीवन बिनशरती हो गया

जीवन की कहीं मान्यता साथ साथ समझी तो जीवन असामान्य हो गया

(असामान्य अर्थात सामान्य से श्रेष्ठ)

जीवन की कहीं असमंजस साथ साथ तोड़ दी तो जीवन फूल हो गया

जीवन की कहीं तकलीफे साथ साथ सुलझायी तो जीवन रंगबेरंगी हो गया

जीवन की कहीं सेवा साथ साथ जगायी तो जीवन धर्म हो गया

जीवन का कहीं भोजन साथ साथ आरोगा तो जीवन निरोगी हो गया

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कोई धून सुनते है
कोई कीर्तन सुनते है
क्या हम धर्म प्रेमी है?
क्या हम धर्म रुचिकर है?
क्या हम धर्म आश्रित है?
क्या हम धर्म सारथी है?
क्या हम धर्म धरणी है?
क्या हम धर्म रूढ़ि है?
क्या हम धर्म सेवक है?
क्या हम धर्म आचारणी है?
क्या हम धर्म टिकात्म है?
क्या हम धर्म द्रोही है?
क्या हम धर्म विरोधी है?
क्या हम धर्म पालक है?
क्या हम धर्म आंशिक है?
क्या हम धर्म संकुचित है?
क्या हम धर्म संशयी है?
क्या हम धर्म मान्य है?
क्या हम धर्म साध्य है?
क्या हम धर्म गोपनीय है?
क्या हम धर्म निंदनीय है?
क्या हम धर्म प्रचारक है?
क्या हम धर्म वाचक है?
क्या हम धर्म प्रसारक है?
क्या हम धर्म कथानीक है?
क्या हम धर्म रसिक है?
क्या हम धर्म रचित है?
कहो! सोचो! अचूक सोचो!
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"मारा घट मां बिराजता श्रीनाथजी, श्रीयमुनाजी, श्रीमहाप्रभुजी"

कितने द्रढ है हम और खुद के मुख से कहते है

"मारा घट मां बिराजता श्रीनाथजी, श्रीयमुनाजी, श्रीमहाप्रभुजी"

क्यूँ?

१. हमारा जन्म ऐसे कुटुंब में हुआ है जो "पुष्टि सेवा" आश्रित है

२. हमारा शैशवावस्था ही ऐसे रीतों से है जो "पुष्टि सेवा" प्रणाली है

३. हमारा दीक्षा ग्रहण ही ऐसे संप्रदाय से है जो "पुष्टि सेवा' आधारित है

जन्म से धरे ही हम सदा जुड़ते रहते है - एकात्म रहते है "पुष्टि सेवा" रीत से तो क्यूँ न हम द्रढता से अपने मुखसे कहें

"मारा घट मां बिराजता श्रीनाथजी, श्रीयमुनाजी, श्रीमहाप्रभुजी"

यह तो चोकक्स ही है

इसीलिए तो हम सदा जागृत है हमारे विचारों, क्रियाओं, और आचरण से

इसीलिए तो हम सदा ख्याल रखते है हमारे स्वर से, हमारे श्वास से, हमारे स्पर्श से, हमारी दृष्टि से

इसीलिए तो हम सदा संस्कृत रहते है हमारे ज्ञान से, हमारे भाव से, हमारे मनोरथ से, हमारी सेवा से

न्योछावर है तन मन धन से

न्योछावर है सेवा प्रीत कर्म से

न्योछावर है व्यवहार विनिमय विनियोग से

न्योछावर है काम क्रोध मोह माया से

न्योछावर है अर्थ व्यर्थ स्वार्थ परमार्थ प्राकृतिक सृष्टि से

शायद हम ऐसे नही ही है तो भी हमें होना ही है तो ही हम "पुष्टि" अक्षर - स्वर - स्पर्श - संस्कार - धर्म धारण करके ही हम कह सकते है

"मारा घट मां बिराजता श्रीनाथजी, श्रीयमुनाजी, श्रीमहाप्रभुजी"

नही तो कौनसा घट, कौनसी वांट, कैसी रट जिसमें न तो श्रीनाथजी हो, श्रीयमुनाजी हो, श्रीमहाप्रभुजी हो केवल और केवल एक साधारण मानव जो एक प्राणी पशु की तरह विचरता जीव!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"माँ" मेरी माँ!

हे माँ! तुम कैसी हो री!

न कोई अक्षर, न कोई नजर

न कोई अपेक्षा, न कोई आशा

न कोई स्वार्थ, न कोई द्वेष

न कोई अन्याय, न कोई क्रोध

केवल प्रेम की मिसरी

केवल करुणा की धरती

केवल अमृत की धात्री

केवल सुरक्षा की ज्योति

माँ! तुझे मैं क्या अर्पित करें

नही कुछ पास मेरे जो तेरे शरण धरु

नही कुछ अंदर मेरे जो तेरे चरण धरु

तुझसे मैं, कैसे मैं तेरा इजहार करु

तुझसे मैं, कैसे मैं तेरा पूजन करु

तुझसे मैं, कैसे मैं तेरी सेवा करु

तुझसे मैं, कैसे मैं तुझे कृपा करु

तेरा इजहार से तो मेरा जीवन है

तेरा पूजन से तो मेरा गर्व है

तेरी सेवा से तो मेरा संस्कार है

तेरी कृपा से तो मेरी मुक्ति है

माँ! मैं क्या हूँ?

माँ! मुझे छोड़के न कभी जाना

माँ! मुझे छोड़के न कभी रहना

जन्म धरा है तो छूटना है

पर मेरा जन्म तो सदा तुझसे ही है

माँ! मुझे ऐसा बनाओ जो न कभी मैं तुझसे दूर हुँ

न तु मुझसे दूर हो

जीवन जीते जीते एक आँसू की तकलीफ दी है

हे करुणानिधि!

तु ही कहदे कैसे उगाऊ फूल जो तेरा कष्ट मिटाऊं

तेरी ही शक्ति से मैं कुछ धरु

केवल यही है मेरी सृष्टि

माँ! ओ मेरी माँ!

तु ही मेरी यमुना!

तु ही मेरा वल्लभ!

तु ही मेरी पुष्टि!

तु ही मेरा गिरिराज!

तु ही मेरी प्रीति!

तु ही मेरा श्रीनाथ!

"माँ" तेरे चरण में सदा मेरा रहे तत्व

"जय श्री कृष्ण" 🌷🙏🌷

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

जीवन की एक रीत हमने पहचानी
यह रीत ऐसी है जो
पल पल हमें सताये
पल पल हमें रुलाये
पल पल हमें अस्वस्थाये
पल पल हमें तड़पाये
पल पल हमें गभराये
पल पल हमें मुझाये
पल पल हमें विचाराये
पल पल हमें असमंजसाये
पल पल हमें नकरात्मकाये
पल पल हमें आस्वसानाये
और वह रीत है
अपनों से टूटना
अपनों से दूर होना
पता नहीं ऐसा तो क्या है हममें
जो यह रीत हमारे जीवन में आये
क्या है हम? कैसा जीवन है हमारा?
हे ईश्वर! इस रीत में तु भी है?
हे ईश्वर! क्यूँ है यह रीत?
तोड़ने की रीत तु ही तोड़ दे
तो न कोई तुटे न हमसे तु तुटे
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🙏🌷

हे मेरे प्रभु!

तेरे अक्षर में ऐसा साक्षर है

तन मन धन धन्य हो जाये

तेरे स्वर में ऐसा गुँजन है

रोम रोम पुलकित हो जाये

तेरे साँस में ऐसी ऊर्जा है

धड़कन सूर्य हो जाये

तेरे तत्व में ऐसा स्पर्श है

तत्व तत्व तनुनवत्व हो जाये

तेरे कर्म में ऐसा पुरुषार्थ है

खुद पुरषोत्तम हो जाये

तेरे जीवन मे ऐसा आनंद है

क्षण क्षण परमानंद हो जाये

क्या है हम?

क्या हो सकते है हम?

न कभी ध्यान रखते है हम

न कभी ख्याल करते है हम

एक नजर उठाली

कौन कौन देखते है मुझे

खुद को कहाँसे कहाँ गिराया हमनें

है यह आँशु नैन के ऐसे

जो जब भी निकले तेरे चरण के लिए

है यह पुकार मुख के ऐसे

जो जब भी निकले तेरे समर्पण के लिए

है यह डग पैर के ऐसे

जो जब भी चले तेरे द्वार के लिए

है यह विचार मन के ऐसे

जो जब भी जागे तेरे सत्य के लिए

है यह क्रिया तन की ऐसे

जो जब भी आचरे शुद्धता के लिए

है यह साधन धन के ऐसे

जो जब भी उपभोगे पवित्रता के लिए

कदम कदम पर यही है आशा

हर चरण पर शिर झुकाया हमने

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

वह तो सबको पता ही है

की

सत्य

निष्ठा

शुद्धता

पवित्रता

शांति

मुक्ति

तो

हमारे पूर्वजों, आचार्यो, ऋषिओं, महर्षिओ, ज्ञानिओ, भक्तों ने सार्थक और साध्य परिस्कृत की है

पर

हमें न जानना है, न समझना है, न संभलना है, न संवरना है,

हमें कोई सत्यता, निष्ठा, शुद्धता, पवित्रता, शांति, मुक्ति कहाँ चाहिए!

हमें तो हम अपने आप से सोचे की हम इनसे उत्तम है!

हम इन्होंसे विशेष है!

हम इनसे अपने आप योग्य है! पैसा वाले है! भौतिकता से ऊंचे है!

बस यही ही हमारी सिद्धि है।

अच्छा!

हाँ!

धर्म!

कोनसा धर्म?

हमें जो सही लगे!

हम जो जो अपनाये!

हम जो जो माने वो ही योग्य धर्म है।

ओहह कितना अहंकार!

ओहह कितना आडंबर!

ओहह कितना अभिमान!

ओहह कितना ममत्व!

कथा - जो मैं हूँ - यही मेरी कथा

व्रत - जो मैं धरु - यही मेरा व्रत

सेवा - जो मैं करु - यही मेरी सेवा

ज्ञान - जो मैं समझू - यही ही ज्ञान

न्याय - जो मैं कहूँ - यही ही न्याय

हमारी पास ऐसा एक अस्त्र और शस्त्र है जिससे हम सबकुछ पाते है।

यह अस्त्र और शस्त्र है - आलोचना करना!

ओहह कितना .... भरा अस्त्र और शस्त्र।

न दृष्टि से खुद के!

न अक्षर से खुद के!

न स्वर से खुद के!

न क्रिया से खुद के!

न धारण से खुद के!

न मान्यता से खुद के!

न नकारात्मक से खुद के!

न अपने आप से खुद के!

तो हम?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"साँवरे!" "साँवरे!" पुकारते हो
वृंदावन की रज को छूते हो
आंतर मन जगाते हो
सच! बहोत ही द्रढता करते हो
जो पढ़ा है वृंदावन सा
जो सुना है वृंदावन सा
जो गाया है वृंदावन सा
जो नाचा है वृंदावन सा
वो ही वृंदावन को हम ने ......
वो ही वृंदावन को हम ने ......
पत्थरों का शहर बना दिया
तो तो
अचूक
मेरा मन भी पत्थर बन गया
मेरा तन भी पत्थर बन गया
मेरा जीवन भी पत्थर बन गया
अक्षर रह गये
किताबें रह गई
रह गये मेरे सूर
इतिहास के हर पन्ने पर
रह गये केवल एक गूँज
जो बार बार पुकारती है
यही वृंदावन था
यही वृंदावन था।
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"प्रेम"

कितना मधुर शब्द है

कितना संवेदन शब्द है

कितना स्पर्शिय शब्द है

कितना रोमांच शब्द है

कितना प्राकृतिक शब्द है

कितना द्रवित शब्द है

कितना हृदयस्थ शब्द है

कितना स्पंदनीय शब्द है

कितना प्राकट्य शब्द है

कितना पवित्र शब्द है

कितना विशुद्ध शब्द है

कितना समर्पित शब्द है

कितना उर्जित शब्द है

कितना चिरस्थ शब्द है

कितना सलामत शब्द है

कितना निरोगी शब्द है

कितना निरहंकारी शब्द है

कितना अद्वैत शब्द है

कितना उपासनीय शब्द है

कितना प्रकंपित शब्द है

कितना व्यापक शब्द है

कितना गतिशील शब्द है

कितना रसिक शब्द है

कितना अभिन्न शब्द है

कितना विशांत शब्द है

कितना परिवर्तित शब्द है

कितना स्वयं शब्द है

कितना निर्मोही शब्द है

कितना निष्काम शब्द है

कितना निःस्वार्थ शब्द है

कितना मुक्त शब्द है

कितना त्यागी शब्द है

कितना प्रजवल्लित शब्द है

कितना सर्वश्रेष्ठ शब्द है

कितना निःसंदेह शब्द है

कितना निःसंशय शब्द है

कितना विश्वनीय शब्द है

कितना आत्मीय शब्द है

कितना परमार्थी शब्द है

कितना अशेष शब्द है

कितना यौन्मुक्त शब्द है

कितना सर्जनात्मक शब्द है

कितना तनुनवनीत शब्द है

कितना प्रिय शब्द है

"प्रेम" समझना ही है

"प्रेम" करना ही है

"प्रेम" पाना ही है

"प्रेम" लूटाना ही है

"प्रेम" न्यौछावरना ही है

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"पुष्टि मार्ग का प्राथमिक सिद्धांत है।

मेरे मन उछालती
मेरे तन नचाती
मेरे नैन बरसाती
चली मेरी जीवन नैया
मेरे प्रियतम के द्वार
मेरा मन पुकारे
मेरा तन तरसाये
मेरे नैन विहराये
मेरी धड़कन तड़पाये
मेरी साँस सिसकाये
मेरे नाथ को मिलने
सररररर सरके
फररररर फरके
धररररर धड़के
हररररर हलेसे
मेरी प्रीत ध्वजाएँ
मेरे नाथ को मिलने
कहीं से सुनाई
सूर एक मधुराई
हे होहोहोहो हेलो लहराई
श्रीनाथ द्वार उघडाई
डग डग तन मन दौड़ाई
मेरे श्रीनाथ को दरशने
पहुँचे हवेली द्वार
दौड़े गोवर्धन चौक
दंडवते एरावत द्वार
स्पर्शे कमल मंडल
दरशे श्रीमुख मुखार
श्रीनाथजी बावा की जय
श्रीवल्लभाधीश की जय
श्रीश्याम सुन्दरश्री यमुने महाराणी की जय
श्रीगुसांईजी परम दयाल की जय
श्री पूछडी के लोटे की जय
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

जाता हूँ कोई जगह पर
पहुँचता हूँ कोई जगह पर
उद्देश्य से जाता हूँ
इरादा से पहुँचता हूँ
होता है कुछ तो ऐसा
जो समझाता है ऐसा
जाओ कहीं भी जगह
पहुँचो कहीं भी जगह
समांतर होता है
समांतर करते है
जीवन में करो विचार समांतर
जीवन के करो कार्य समांतर
जीवन होगा ही आनंदमय
जीवन होगा ही समृद्धमय
जीवन होगा ही मधुरमय
जीवन होगा ही मुक्तमय
हे श्रीनाथ! तु एक ही खड़ा
खड़े हजारों तेरे सामने
कोई कुछ सोचें
कोई कुछ उद्देश्यए
कोई कुछ करें
कोई कुछ इरादे
एक ही उद्देश्य तेरा
एक ही इरादा तेरा
तु समांतर जगत समांतर
कोई कहीं से भी तुझे पुकारें
कोई कहींका भी रैन बसेरा
तु कैसे भी उन्हें संभाले
कैसी तेरी रीत अनोखी
तेरे निकट को तु सिखाएं
वंदन करें, प्रणाम करें
तु ही मेरा जीवन संवारे
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

सीधी सी बात को उलझ उलझ कर
करते है इतनी उलटी
जो उलट उलट कर पुलट सुलझाये
तो भी न हो सीधी
हाँ!
सीधी सी बात को समझे सुलट सुलट कर
करें इतनी सुलझी
जो सुलट सुलट कर सरल सुदृढ़ाये
तो बहे ज्ञान की निधि
पर
यहाँ तो हर बात को असमंजस
मैंने ऐसा सोचा
उन्होंने ऐसा सोचा
सोच सोच में करें गरबड़ी
नींव जीने की ऐसी रची
जो बात बात पर बरबादी
अर्थ का अनर्थ
तर्क का वितर्क
खोद खोद के करें नफटायी
बात बात से जगाये बुराई
ऐसी मतवाली रीत रचाई
एक एक को निपट मरवाई
संत की कोई भक्त की कोई
कोई कोई आत्म ज्ञानी की
ठेकडी उड़ाये खुदगर्ज बातों से
मूर्ख समझ कर मूर्ख बनाये
घड़े बात बात में बड़ाई
जीवन की नीति बढ़ायी
घट घट में खुद को समाई
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

ऐसे सिद्धांतो से चलता है ब्रह्मांड

जो अपनाये वो सितारें हो जाते है

ऐसे सिद्धांतो से चलती है सृष्टि

जो गुल जाये वो रंग हो जाते है

ऐसे सिद्धांतो से चलता है जगत

जो डग भर जाये वो पुरुष हो जाता है

ऐसे सिद्धांतो से चलती है प्रकृति

जो मिल जाये वो रस हो जाता है

ऐसे सिद्धांतो से चलता है समाज

जो संयमे वो शिरोमणि हो जाता है

ऐसे सिद्धांतो से चलती है दुनिया

जो गुणाये वो वैज्ञानिक हो जाता है

ऐसे सिद्धांतो से चलता है पुरुष

जो अखंडाये वो पुरुषोत्तम हो जाता है

ऐसे सिद्धांतो से चलती है स्त्री

जो सौभाग्यये वो अमृत हो जाती है

सच! सिद्धांतो जो सर्जे है

सच! सिद्धांतो जो रचे है

वो कितने अनुभव और प्रज्ञान से ही घड़े है।

हम भी अपनाये

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"समय" क्या है यह

"समय" कैसा है यह

"समय" है एक सत्य

"समय" है एक तालबद्ध गति

"समय" है एक अग्नि

"समय" है एक संस्कार

"समय" है एक विद्या

"समय" है एक परिणाम

"समय" है एक दिशा सूचक

"समय" है एक ज्ञान

"समय" है एक भाव

"समय" है एक तटस्था

"समय" है एक विश्वास

"समय" है एक साधन

"समय" है एक संधान

"समय" है एक परिवर्तन

"समय" है एक संस्कृति

"समय" है एक न्याय

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

क्या तु मुझे कभी कभी याद करता है
तो
क्या तेरी याद मुझे कभी कभी आती है

मेरी यादों से तेरी यादों है
तो
तेरी यादों से मेरी यादों है

मैं ही अकेला हूँ जो तुझसे हूँ
तो
तु ही अकेला है जो मुझसे है

मुझसे तु तुझसे मैं
तो
तुझसे मैं मुझसे तु

क्या सिर्फ यही है
की
तु दूर है तो मैं निकट हूँ
या
मैं दूर हूँ तो तु निकट है

तु मैं हूँ मैं तु है
या
मैं तु है तु मैं हूँ
यही प्रीत की रीत है
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

दूर जाना है

दूर होना है

किसीसे दूर रहना है

निकट जाना है

निकट होना है

किसीके निकट रहना है

क्यूँ होता है ऐसा?

जगत से दूर जाना है

संसार से दूर होना है

माया से दूर रहना है

अपनो से दूर

क्यूँ होता है ऐसा?

श्रीप्रभु के निकट जाना है

भाव के निकट होना है

ज्ञान के निकट रहना है

भक्ति के निकट

स्वार्थ से निश्वार्थ की ओर

श्वास से विश्वास की ओर

मांग से समर्पण की ओर

नफरत से प्रीत की ओर

जाना है

होना है

रहना है

हे परमात्मा! मुझे तुमने सर्वस्व दिया

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कुटुंब की परिभाषा है

साथ निभाने की

समाज की परिभाषा है

रीति रिवाज संभालने की

संसार की परिभाषा है

जीने के नियमन की

जगत की परिभाषा है

तत्वों के योग्य परिवर्तन की

प्रकृति की परिभाषा है

सजीवों के परिपालन की

सृष्टि की परिभाषा है

योग्य सलामती की

ब्रह्मांड की परिभाषा है

सर्वत्र आनंद की

यही ही समझना है

यही ही समांतर करना है

यही ही हमारी सफलता का रहश्य है

जो कर्म से प्रमाणित करें वह भगवान है

जो आचरण से निभाये वह भक्त है

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

श्रीप्रभु को हम प्रेममय से पहचानते है

परमात्मा को हम सर्व श्रेष्ठ प्रियतम कहते है

भगवान को हम प्रिय कहते है

ईश्वर को हम परम प्रिय स्वीकारते है

यह प्रेम - प्रिय - प्रियतम क्या है?

यह प्रेम - प्रिय - प्रियतम क्यूँ है?

बस यूँही एक धारा चल रही है की वह हमारे प्रेमी है - प्रिय है - प्रियतम है।

नही नही!

कभी भी ऐसा प्रश्न हमारे अंदर उठा है - श्रीप्रभु हमारे प्रेमी है - प्रिय है - प्रियतम है?

और हम

यही मानते - समझते - जुड़ते जी रहे है और जीते है।

वो हमारे प्रेमी है - प्रिय है - प्रियतम है, इसीलिए तो वह भगवान है - परमात्मा है - श्रीप्रभु है।

ओह्ह!

कैसी मान्यता!

कैसी रूढिचुस्तता!

कैसी द्रढता!

सच कहना - कभी हमने श्रीप्रभु के प्रेम का इजहार किया है? अर्थात अनुभव किया है? अनुभूति पायी है?

हमारी मान्यता से तो हम तुरंत - हाँ! कहे देते है,

पर सच कहें - हमने कोई इजहार - अनुभव - अनुभूति नही पायी है।

सुख और दुःख को समझते इजहार - अनुभव - अनुभूति - कृपा नही है - मान्यता नही है।

प्रेम पाना - प्रीत करना अति असाधारण और अति गहराई भारी कृति और रीति है।

मान्यता से तो हम बहोत कुछ मान लेते है, पर वह सही अर्थात योग्य नही है।

प्रेम - प्रीत - प्रिय - प्रियतम समझना अति कठिन है पर सत्य भी है की यह पाना ही है।

तो! सोचों! चिंतन करो!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

नही संभलता नही संवारता खुद को

जो पल पल मिटता जाये

जो पल पल टूटता जाये

सच! यह कैसा जमाना है

जो पल पल गिराता जाये

न बाप न माँ न भाई न बहन

न पुत्र न पुत्री न बहु न पौत्री

सब रिस्ता खुदगर्ज का

तुम ऐसे तुम ऐसे

ऐसा ऐसा करके सबसे लड़ाती

कैसी है यह रंगमंच की कहानी

तफावते मन माना रिस्ता पराया

जो अपनो को ठुकराके

जो अपनो को तोड़के

जगत हँसे खुद रोये

घूँट घूँट कर जीवन बिताये

पल पल जन्म साँस मिटाये

सच! यह घटमाल कुटुंब की

जन्म जीवन समय बिखराती

कौन सँवारे! कौन बचाये!

कौन किस किसको समझाये!

नही हम मानव नही हम दानव

कौनसे जीवतत्व हम कहलाये?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हाँ! इतना कह सकता हूँ

मेरे जी ते जी ये कैसा समय!

क्यूँ न जागे सही विचारों से सही कृति

हर कर्म से क्यूँ तूटती है संस्कृति

कैसा है यह फल जो कैसे भी सही संकल्प से क्रिया करें

विश्वास के माध्यम से गुमराह करना

हर एक सुख चाहे दूसरे के दु:खी से

मेरे कंधो पर कोई ओर मरे

मैं सबको छोड़ू, कोई मुझे नहीं छोड़ सकता

मैं ही करु, कोई मेरे जैसा कैसे करें?

दुसरे के अपनाने से मेरा अपनाना ही सही है

साथ निभाना का अर्थ न समझे और हर एक को साथ समझे?

"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

छोटी छोटी कहानियाँ

छोटे छोटे दृष्टांत

छोटी छोटी कल्पनाएं

छोटे छोटे संस्मरणे

छोटा छोटा चारित्र्य

छोटी छोटी घटनाएं

छोटे छोटे उत्सव

छोटी छोटी रचनाएं

जो सामान्य से जानते जानते वार्ता हो जाता है, हो कल एक तिनका था आज वह इतिहास हो कर मानव धर्म संस्थापन हो जाता है। जो एक संस्कृति हो कर शास्त्र हो जाता है, यही शास्त्र जीवन का आमूल परिवर्तन कर के भगवान का गुणधर्म हो जाता है, जो सूत्र हो कर प्रार्थना - स्तुति - पाठ - कथा - वेद हो जाते है।

श्री राम चरित्र - श्री कृष्ण चरित्र - श्री महाभारत इतिहास सर्वे यही की ही संगठनता है।

ऐसे ही हमारे जीवन के छोटे छोटे घटमाल है,

जो कभी संजोग हो जाता है,

जो कभी परिस्तिथि हो जाती है,

जो कभी यज्ञ हो जाता है,

जो कभी कर्म की गति हो जाती है,

जो कभी चारित्र्य हो जाता है,

जो कभी आध्यात्मिक निधि हो जाती है,

जो कभी संस्कृति हो जाती है,

जो कभी प्रीत लीला हो जाती है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हम मनुष्य हुए, हमने हमारे आचार्य के चरित्र पढ़े, हमने उनके धर्म शास्त्र और साक्षर पारिमणिक
मनुष्य जीवन की योग्यता और सुरक्षता,
मनुष्य जीवन की शुद्धता और सत्यता,
मनुष्य जीवन की सिद्धता और सिद्धांतता,
मनुष्य जीवन की सूक्ष्मता और परिवर्तनता,
मनुष्य जीवन की विज्ञानता और प्रज्ञानता, मनुष्य जीवन की श्रेष्ठता और प्रितता को हमने हमको जागृत, संस्कृत और सुश्रुत घड़ने का यत्न और प्रयत्न करते रहते है।
जिसमें काल, संजोग, परिस्तिथि, निर्भरता, प्राकृतता, सृष्टता, दृष्टता और साक्षरता का समन्वय करते करते जीवन की पूर्णता को प्राप्त करने का यज्ञ करते रहते है।
अगर हमारे श्रीआचार्य ही छोटी सी उम्र में ऐसा प्राधान्य, सिद्धि, साक्षरता पा लेते है अर्थात कोई भी मनुष्य कोई भी उम्र में ऐसा ज्ञान प्रज्ञान और साक्षरता पा सकते है।
पर
कहीं अज्ञानता
कहीं विवषता
कहीं धृष्टता
कहीं द्वंदता
कहीं नष्टता
कहीं मूर्खता से हम खो देते है, छोड़ देते है, भूल जाते है, मार देते है, त्याग कर देते है, अघटित कर देते है, तब हम न मनुष्य रहते है, न मानव रहते है शायद कोई एक जीव हो जाते है।
ओहह! कैसी धृष्टता
ओहह! कैसी तृष्टता
ओहह! कैसी घृणता
सच! कैसे जीते है हम!
सोचलो! संभाल लो! संवारलो!
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

उझकि-उझकि पद कंजन के पंजनि पै

पेखि-पेखि पाती छाती छोहन सबै लगीं ।

हमकौं लिखयौ है कहा हमकौं लिखयौ है कहा

हमकौं लिखयौ है कहा सबै लगीं ।

कितनी व्याकुल थी हर गोपियाँ अपने परम प्रिय प्रियतम की चिट्ठी के कतरा छू कर - कह रही थी - हमकौं लिखयौ है कहा?

न अक्षर समझ सकती थी

न चिट्ठी पढ़ सकती थी

केवल चिट्ठी के कतरा के स्पर्श से रोम रोम में ऐसी विरह वेदना उठी थी जिससे खुद काँपती थी और अंतर की विशुद्ध प्रीत काँपती थी।

न नैन स्थिर थे

न धड़कन स्थिर थी

साँस विह्वल थी

आत्म विह्वल था

एक ही गूँजन 'हमकौं लिखयौ है कहा'

एक ही स्वर

एक ही आतुरता

एक ही द्रवता

एक ही तरलता

एक ही द्रढता

एक ही तीव्रता

कैसी है ये प्रेम की घड़ी !

ओहह श्याम!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"व्रज" "वृंदावन"

क्या कहते है यह मिट्टी को

क्या कहते है यह भूमि को

क्या कहते है यह रज को

युग युगांतर से कहीं जीवन पाया

जन्म जन्म से कहीं जीवन गुजारा

योनि योनि से कहीं जन्म मिटाया

नही कहीं विराम

नही कही आराम

नही कही धाम

नही कही हाम

भटका यूँ सुबह को शाम करके

घूमा यूँ सागर को सरिता समझ के

फंसा यूँ जन्म को कर्मफल समझ के

जिया यूँ जीवन को पुरुषार्थ समझ के

विरहा यूँ प्रीत को परमानंद समझ के

सच! सारी धरती छान लो

न पाओगे विरह झरणा

न पिओगे अमृत धारा

न लूटाओगे तृष्ण वेदना

न बरसाओगे तड़पन स्पंदना

क्यूँकि

नही है श्याम कहिं

नही है राधा कहिं

नही है व्रज कहिं

नही है वृंदावन कहिं

है कहिं है व्रज

है कहिं है वृंदावन

तो

है कहिं है मेरे प्रियतम की साँस में

है कहिं है मेरे प्रिय की विरह में

है कहिं है मेरे प्रियवर की यादों में

है कहिं है मेरे पिया की प्रीत में

है कहिं है मेरे पि की पुष्टि में

ओ प्रिया!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कितनो को कहे

ये ऐसा वह ऐसा

मैं ऐसा तु ऐसा

हर एक ने कहा

ये ऐसा वह ऐसा

हर एक ने सुना

हाँ! ऐसा वो ऐसा

क्या कोई सुधारे

क्या कोई सुधरे

न कोई सुधरा

न कोई सुधरे

चक्कर चक्कर फिरे

यही घूमती खुद की धारा

हर कोई घूम घूम रहे

खुद ही ऐसा

कौन कहे कैसा

मतवाले मदवाले ऐसा

दंभी दुनिया के है ऐसा

कौन कैसे सँवारे

ऐसा ऐसा में जले चिता

जन्म जीवन टुटाये

क्या करें ऐसा वैसे चक्कर में

सत्य कहीं ठुकराये

जाग मानव! जाग मानव

जगाय प्रीत की ज्योत

हर हर जुड़ता जाये

सृष्टि प्रकृति हँसती सजाये

जन्म जीवन मधुराये

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

एक छोटा सा तिनका सूरज हो जाता है

एक छोटा सा बूँद सागर हो जाता है

एक छोटी सी लहर बुलंद तूफान हो जाता है

एक छोटी सी घटना इतिहास हो जाता है

एक छोटा सा संकल्प जीवन ध्येय हो जाता है

एक छोटा सा भाव निरंतर प्रेम हो जाता है

एक छोटी सी ज्योत प्रचंड तेज हो जाती है

एक छोटी सी बात विशाल साहित्य हो जाता है

एक छोटा सा विकल्प रास्ता बदल देता है

एक छोटी सी इंट भव्य मंदिर हो जाता है

एक छोटी सी रीत प्राथमिक शिक्षा हो जाती है

एक छोटा सा सिद्धांत कर्मणिक पुरुषार्थ हो जाता है

एक छोटी सी तृष्णा अनुपम ध्येय हो जाता है

एक छोटी सी घृणा परमम द्रष्टा हो जाती है

एक छोटा सा बंधन जीवन संबंध हो जाता है

एक छोटा सा रंग मेघधनुष हो जाता है

एक छोटा सा परिवर्तन आमूल निष्ठा हो जाती है

एक छोटी सी वेदना जीवन तीव्रता हो जाती है

एक छोटी सी सुवृत्ति सर्वदा संस्कृति हो जाती है

एक छोटा सा सूत्र विशाल वेद हो जाता है

एक छोटा सा आँचल तन मन धन सलामत कर देता है

एक छोटा सा स्वर प्रचंड प्रार्थना गूँज हो जाती है

एक छोटा सा डग अविरत मार्ग हो जाता है

एक छोटी सी सेवा विशाल निर्मल स्त्रोत्र हो जाती है

एक छोटी सी संवेदना प्रचुर दया हो जाती है

हाँ! सच

हम भी यह एक छोटा सा - छोटी सी - अपनाये जन्म जीवन मधुर कर दे।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"नाच्यो बहोत गोपाल

अब मैं नाच्यो बहोत गोपाल ।

ओहह श्री प्रभु!

ओहह भगवान!

नाच्यो बहोत गोपाल

अब मैं नाच्यो बहोत गोपाल।

तुझे क्या कहूँ!

अब मैं नाच्यो बहोत गोपाल।

अब थक चुका हूँ!

नाच्यो बहोत गोपाल!

जीवन की मोहजाल से

संसार की रागलीला से

जगत की राजनीति से

नाच्यो बहोत गोपाल

साँस साँस की क्रूर स्वार्थता से

विचार विचार की निच रूपांतर से

क्रिया क्रिया की अहंता से

नाच्यो बहोत गोपाल।

नाच्यो बहोत गोपाल

अब मैं नाच्यो बहोत गोपाल।

कुटुंब कुटुंब की तृष्टता से

समाज समाज की धृष्टता से

धर्म धर्म की विकृतता से

नाच्यो बहोत गोपाल।

नाच्यो बहोत गोपाल

अब मैं नाच्यो बहोत गोपाल।।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

जागिये श्याम सुंदर जागिये

जागिये श्याम सुंदर जागिये

जागिये...........

जागिये...........

नयन तरसे दरश को

विरह बरसे साँस साँस से

जागिये...........

जागिये...........

जागिये श्याम सुंदर जागिये

अधर थरथराते पुकार को

धड़कन थड़के विह्वल अगन से

जागिये...........

जागिये...........

जागिये श्याम सुंदर जागिये

भोर भये तेरे अपलक नयन से

उषा जागे तेरे मधुर मुखड़े से

खिले रंग रंग फूल

गूँजे संगीत सरगम

जागिये...........

जागिये...........

जागिये श्याम सुंदर जागिये

जागिये!

जागिये!

तरुवर गाये गीत मिलन

अनिल प्रसारे महक गगन

खिंचयो तेरे द्वार

दौडयो तेरे आधार

हे श्याम सुंदर!

जागिये श्याम सुंदर जागिये

जागिये श्याम सुंदर जागिये

जागिये.............

जागिये.............

नीर सुधा के चरण पखाले

तेज आदित्य के प्रीत प्रगटाये

मकरंद हर्ष जगाय

सृष्टि सौंदर्य सोहाय

जागिये श्याम सुंदर जागिये

जागिये श्याम सुंदर जागिये

जागिये!

जागिये!

जागिये!

जागिये!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"जतीपुरा" स्थानक कैसे हुआ?

जतीपुरा पुष्टि सम्प्रदाय का सर्वोच्च प्राथमिक स्थान है - आज यही स्थान को हम सन्मान रहित होते हुए सिर्फ देखते रहते है, समझ नही आता है - भारतवर्ष के सारे पुष्टिमार्गीय सेवा धर्म पारायण व्यक्ति उनकी श्रेष्ठता का उपयोग नही करते है।

यह कोई श्रीमहाप्रभुजी की

श्रीगिरिराजजी की लीला नही है जो हम ऐसे आश धरे और हाथ पसारे बैठे रहे?

हमारे आज के जो वल्लभ कुल आचार्य भी कैसे युग की लीला में खोये है - जो कोई सुसंगतता ही नही है।

शायद! ऐसा ही संकेत है की जागना तो उन्हें ही है जैसे अष्टसखा जागे थे।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"आश्रय" पुष्टि चरित्र का यह एक सैद्धान्तिक शब्द है।

"आश्रय" अर्थात ....?

सामान्यत "आश्रय" का अर्थ है

आश्रय अर्थात सहारा लेना

आश्रय अर्थात मदद लेना

आश्रय अर्थात आधारित रहना

आश्रय अर्थात माध्यम में रहना

आश्रय अर्थात निजता में रहना

पुष्टि चरित्र में यह शब्द का संस्कृत अष्टसखा - अष्टकवि - पुष्टि सागर सम्राट "सूरदासजी" ने सचरित्र - सजीवन - सैद्धांतिक किया।

सूरदासजी के पुष्टि स्पर्श अनुभूति से

"आश्रय" का अर्थ शरण में रहना

"आश्रय" का अर्थ सानिध्य में रहना

"आश्रय" का अर्थ सलामत रहना

"आश्रय" का अर्थ स्मरण में रहना

"आश्रय" का अर्थ सेवा में रहना

"आश्रय" का अर्थ मधुर पुष्टि प्रीत में रहना

"आश्रय" का अर्थ अज्ञान - अविद्या रहित रहना

"आश्रय" का अर्थ पुष्टि परब्रह्म में रहना

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

अंधश्रद्धा का अर्थ है

हम जानते है यह जो करते है वह सिद्धांत विहीन है फिरभी समझते सफलता से करते है, जिसमें समझ नही और सफलता नही फिरभी एक संतोष और सामाजिक विचार धारा से समनव्ययी है।

भारतवर्ष के जितने भी ऋषि मुनिओं आचार्यो महर्षिओ ने कभी कोई विचार और क्रिया सिद्धांत विहीन प्रमाणित और साध्य नही की है, पर हम जो भी जी रहे है वह कितनी अन्धाधुंधी में, कितनी मान्यता में, कितने नीति अनीति रीति रिवाजों में जो कभी साध्य ही नही होता है तो भी हमारे डॉक्टर्स, इंजीनियर, शिक्षक, वकील, सामाजिक कार्यकर्ता, न्यायाधीश, व्यापारी, धर्मगुरु अपने जीवन में कही कही परिस्तिथि में खुद की सैद्धांतिक निपुणता को भी भूल कर परिस्तिथि के भय में खुद को घसीटता है और सामाजिक अंधश्रद्धा को पोषता है।

कैसी ये विडंबना है!

न कोई तोड़ सकता है

न कोई सुलझा सकता है

कितने टूट गये

कितने भाग गये

कितने निष्ठुर हो गये

कितने खामोश हो गये

कितने मिट गये

कितने खो गये

कितने भटक गये

हम भी इनमें से एक है

हम भी यही विचार धारा से जीते है - मैं क्या कर सकता हूँ? आजतक कोई न कर पाया है, तो मैं क्या करूँ?

मैं अकेला - मुझे यह संसार समाज कैसे जीने देगा?

ओहह! ऐसे मरते मरते तो जीते है

ऐसे जीने को जीना कैसे कह सकते है?

अन्धाधुंधी - अंधश्रद्धा - अंधविश्वास

मान्यता - तुरंतता - निम्नता - साधारणता

कैसा है जीवन!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

गिरिराज परिक्रमा

गिरिराज दर्शन

गिरिराज स्पर्श

गिरिराज दंडवत

गिरिराज अभिषेक

गिरिराज मनोरथ

गिरिराज सृष्टि

गिरिराज प्रकृति

गिरिराज माधुर्य

को

आजकल हम क्या जानते है

आजकल हम क्या पहचानते है

आजकल हम क्या समझते है

आजकल हम क्या पाते है

आजकल हम क्या निहारते है

आजकल हम क्या संयोजते है

कहिओ ने दर्शन - दंडवत - स्पर्श - परिक्रमा - अभिषेक - मनोरथ किये ही होंगे, क्या खुद में जगाया?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

जीवन की कहीं राहे साथ चलते चलते काटी तो जीवन मधुर हो गया

जीवन की कहीं बातें साथ साथ गुनगुनादि तो जीवन संगीत हो गया

जीवन की कहीं रीते साथ साथ रहते रहते निभादि तो जीवन बिनशरती हो गया

जीवन की कहीं मान्यता साथ साथ समझी तो जीवन असामान्य हो गया

(असामान्य अर्थात सामान्य से श्रेष्ठ)

जीवन की कहीं असमंजस साथ साथ तोड़ दी तो जीवन फूल हो गया

जीवन की कहीं तकलीफे साथ साथ सुलझायी तो जीवन रंगबेरंगी हो गया

जीवन की कहीं सेवा साथ साथ जगायी तो जीवन धर्म हो गया

जीवन का कहीं भोजन साथ साथ आरोगा तो जीवन निरोगी हो गया

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कोई धून सुनते है

कोई कीर्तन सुनते है

क्या हम धर्म प्रेमी है?

क्या हम धर्म रुचिकर है?

क्या हम धर्म आश्रित है?

क्या हम धर्म सारथी है?

क्या हम धर्म धरणी है?

क्या हम धर्म रूढ़ि है?

क्या हम धर्म सेवक है?

क्या हम धर्म आचारणी है?

क्या हम धर्म टिकात्म है?

क्या हम धर्म द्रोही है?

क्या हम धर्म विरोधी है?

क्या हम धर्म पालक है?

क्या हम धर्म आंशिक है?

क्या हम धर्म संकुचित है?

क्या हम धर्म संशयी है?

क्या हम धर्म मान्य है?

क्या हम धर्म साध्य है?

क्या हम धर्म गोपनीय है?

क्या हम धर्म निंदनीय है?

क्या हम धर्म प्रचारक है?

क्या हम धर्म वाचक है?

क्या हम धर्म प्रसारक है?

क्या हम धर्म कथानीक है?

क्या हम धर्म रसिक है?

क्या हम धर्म रचित है?

कहो! सोचो! अचूक सोचो!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"पुष्टि" कहींओ ने कहा पुष्टि अर्थात कृपा।

"पुष्टि" कहींओ ने अहैतुक कृपा

क्या यह ही अर्थ को अपना कर हमें पुष्टित्व पाना है?

क्या यह ही अर्थ को समझ कर हमें पुष्टि स्पर्श पाना है?

क्या यह ही अर्थ को सैद्धांतिक कर हमें ब्रह्म संबंध करना है?

क्या यह ही अर्थ को जीवन चरित्र कर हमें परम भगवदीय होना है?

क्या यह ही अर्थ को गोपिभाव प्रकट कर हमें गोपित्व सँवारना है?

आंतरिक चिंतन से कहे तो यह अर्थ आज के काल में अंधश्रद्धा से सभर है, जो गलत है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हे हमारे मित्र!

हे हमारे साथी!

सर्वे के होते हुए बहोत कुछ सीखा, बहोत कुछ पाया, बहोत कुछ समझा, बहोत कुछ बांधा, बहोत कुछ जीया।

हे हमारे मित्र!

हे हमारे साथी!

जो धरती ने जन्म पाया, जो आकाश ने शिक्षित किया, जो सूरज ने गति दिया, जो सागर ने सिंचा, जो हवा ने वृद्धाया, जो वनस्पति ने औषधा यही से सृष्टि रची, संस्कृति घड़ी, धर्म धरा।

पुष्टि की पहचान यही है की न कोई कृपा है कोई पर, न कोई उपकार है कोई पर, न कोई ऋण है कोई पर। जीना है तो संवरते जाओ खुद को, खुद की समता बढ़ाते जाओ, अधूरापन की विष विषमता को नष्ट करते जाओ, तो खुद की होगी पहचान, तो जीएँगे पुष्टित्व पा कर,

श्रीयमुनाजी मेरे साथ है

श्रीगिरिराजजी मेरे साथ है

श्रीमहाप्रभुजी मेरे साथ है

श्रीश्रीनाथजी मेरे साथ है।

यही साथ से तो बाह्य और आंतर जगत में विचरते है, पुष्टि यात्रा करते है, पुष्टि परिभ्रमण करते है सदा पुष्टिमय रहते है।

यही ही जीवन है, यही ही पुरुषार्थ है, यही ही पुष्टि सत्य है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

सच में कैसे होते है रिश्ते!
रिश्ते! इतना पवित्र शब्द है यह
जो शब्द अपने विचार में उठने से अपने अंदर की ऊर्जा भड़क जाये
जो शब्द अपने विचार में उठने से अपने अंदर की ऊष्मा सुलग जाये
जो शब्द अपने विचार में उठने से अपने अंदर की ज्योति अधिक तेजोमय हो जाये
जो शब्द अपने मन की स्तिथि को स्थिर करे
जो शब्द अपने मन को धैर्य करे
जो शब्द अपने मन को आनंद दायक करे
जो शब्द अपने मन को सांत्वना दे
जो शब्द अपने मन को हिम्मत दे
जो शब्द अपने तन को हर्ष उल्हास कर दे
जो शब्द अपने तन को शांत कर दे
जो शब्द अपने तन को शक्तिशाली कर दे
जो शब्द अपने तन को धैर्यवान कर दे
जो शब्द अपने तन को निरोगी कर दे
जो शब्द अपने तन को ऊर्जावान कर दे
जो शब्द अपने तन को सेवामय कर दे
जो शब्द अपने जीवन को मधुर कर दे
जो शब्द अपने जीवन को सार्थक की पुरुस्कृति दे
जो शब्द अपने जीवन को साथ साथी निभाये
जो शब्द अपने जीवन को उज्ज्वल बनाये
जो शब्द अपने जीवन को योग्य बनाये
जो शब्द अपने जीवन को अलंकृत बनाये
जो शब्द अपने जीवन को संस्कृत बनाये
जो शब्द अपने जीवन को धन्य बनाये
जो शब्द हमें जीवन भर आशीर्वाद प्रदान करे
जो शब्द जीवन भर हमारा ऋण नष्ट करे
सच! कितना अदभुत शब्द है
सच! कितना अलौकिक शब्द है
सच! कितना स्पर्शीय शब्द है
सच! हमें यह विशुद्धता से समझना चाहिए, निभाना चाहिए, सार्थक करना चाहिए।
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"शिव" को कैसे पहचाने

"जीव" को कैसे जाने

जीव के पुरुषार्थ से शिव जागे

शिव के जागने से जीव विशुद्धे

विशुद्ध अर्थात प्रबल ज्ञान भक्ति

ज्ञान भक्ति से पवित्रता प्रकटे

पवित्रता से आचरण दुरित क्षये

दुरित क्षय से प्रीत सृजे

प्रीत से पुष्टि प्रज्वले

पुष्टि से गोपित्व स्फुरे

गोपित्व से यमुना सघोषे

यमुना से व्रज रचे

व्रज से गिरिराज बैठे

गिरिराज से कृष्ण लीला भये

कृष्ण लीला से शिव दौड़े

शिव से जीव संस्कृते

एकात्म हो जीव शिव पुष्टि प्रमये

यही है शिव जो स्पर्शे जीव जीव

यही है जीव जो जगाये शिव शिव

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

प्यार को जानना,

प्यार को समझना

प्यार को पाना

प्यार को निभाना

प्यार में लूटाना

प्यार में खोजाना

प्यार में डूब जाना

प्यार में विरहाना

प्यार में जुड़ना

प्यार में एक होना

क्या है?

यह कोई साधारण और सामान्य नही है।

यह अलौकिक और अदभुत है

जो केवल सीता को ही हो सकता है

जो केवल राधा को ही हो सकता है

जो केवल ....

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

प्रियजनों! आज का स्पर्श कुछ अनोखा है, विनंती है आप अचूक उन्हें समझे।🌷🙏🌷

जीव जब देह में प्रवेश करता है तब ही अहंकार और वासना का उदभव हो जाता है अर्थात जीव या ने अंश - आत्म ज्योति और देह या ने सृष्टि के तत्वों का समूह या ने पंच महा तत्वों।🌷🌷🌷

यह अहंकार - वासना और देह का समन्वय अपने कर्म से ही एकत्व होते है अर्थात जो भी देह धारण होता है वह कर्म की गति से ही निर्मित होता है।

यही ब्रह्मांड और सत्य का नियमन है, विज्ञान है, धर्म है। जो अहंकार और वासना है वह जब जीव देह में प्रविष्ट करते समय निर्मोही और निर्गुण होता है और देह धारी स्वभाव गत होता है, जैसे जैसे वृद्धि होती है वह प्रबल और द्रढ होता जाता है तबतक जब जीव और देह को पूर्णता से समझ आ जाती है की यह मैं हूँ, यही मैं से वह खुद को यह सृष्टि के हर तत्वों से जुड़ना प्रारंभ कर देता है - जैसे अपना नन्हा सा बालक।🌷🌷🌷

जैसे जैसे बड़ा होता जाता है वह अपने संस्कार, संस्कृति और जीवन पद्धति से जीना सीख जाता है।

हाँ! पर उनका पूर्व कर्म अनुसंधान वह अपनी कर्म निधि को जागृत कर अपने आपको योग्य परिस्कृत कर सकता है, योग्य ज्ञान धर्म संस्कार से अनुभव करवा सकता है और वृद्धि पाते पाते वह जीव देह धारी खुद की पहचान भी करवा सकता है।

देह का धरना अर्थात जो भी पंच महा तत्वों का समन्वय भी जो कर्म की वासना है उसी के कारण रूप ही देह का निर्माण होता है, जो जीव यही देह का उपयोग करके अपने आप को अपने अहंकार और वासना से घडता जाता है - वृद्ध होता जाता है। जब वह अपने आपको समझ जाता है तबतक वह जीव देह धारी निर्मोही और निर्दोष होता है, पर जैसे उन्हें संसार, कुटुंब का स्पर्श होता जाता है, वह भी अपनी आसपास के जीव देहधारी जैसा होने लगता है और खुद को समझ ने लगता है। यही समझ में उनमें योग्य संस्कार, विद्या, शिक्षा और कर्म का ज्ञान और भाव का सिंचन योग्यता से होता है तो वह योग्य पुरुषार्थ लायक होता है और अपने जन्म और जीवन को सार्थक करता है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

ओहह कितना असमंजस
सुनते है तो असमंजस
कहते है तो असमंजस
करते है तो असमंजस
समझते है तो असमंजस
समझाते है तो असमंजस
पता नही कौन क्या कहे और हम क्या जाने
पता नही कौन क्या सुने और हम क्या जाने
पता नही कौन क्या क्या कह कर क्या क्या अपनाये
पता नही कौन क्या क्या जान कर क्या करे
पता नही कौन क्या क्या सुन कर क्या करे
पता नही कौन क्या क्या समझ कर क्या करे
पता नही कौन क्या क्या कर कर क्या करे
पता नही कौन क्या क्या कह कर क्या करे
पता नही कौन क्या क्या अपना कर क्या करे
हाँ! इतना है की जो कोई कुछ भी करे वो कोई जाने, कोई समझे, कोई अपनाये, और वो खुद जो भी जाने, जो भी समझे, जो भी अपनाये पर करता ही रहता है जैसा भी हो - करता रहता है यही मुख्य है, चाहे उसका जो भी क्रियास्था हो!
सच! यही तो है - मैं करु यही सत्य!
सच! यही तो है - मैं कराऊ यही सत्य!
सच! यही तो है - मैं जानु यही सत्य!
सच! यही तो है - मैं समझु यही सत्य!
सच! यही तो है - मैं कहूँ यही सत्य!
सच! यही तो है - मैं समझाऊ यही सत्य!
हाँ! इसीलिए तो सर्व साक्षर - सर्व ज्ञानी - सर्व सही - मैं ही सही - मैं सत्य - मेरा ही सत्य!
ओहह! सच! खुद श्रेष्ठ जगत! खुद श्रेष्ठ धर्म! खुद श्रेष्ठ जीवन! खुद श्रेष्ठ मैं!🌷🙏🌷
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

सृष्टि को चलानी है

सृष्टि को बढ़ानी है

सृष्टि को परिवर्तित करनी है

सृष्टि को विकसित करनी है

सृष्टि को संगत करनी है

सृष्टि को शुद्ध करनी है

सृष्टि को सुंदर करनी है

सृष्टि को रंगीन करनी है

सृष्टि को प्रीतिमय करनी है

सृष्टि को तेजोमय करनी है

सृष्टि को मृदुल करनी है

सृष्टि को समतोल करनी है

सृष्टि को नवपल्लित करनी है

सृष्टि को सुंगंधित करनी है

सृष्टि को निर्दोष करनी है

सृष्टि को अक्रूर करनी है

सृष्टि को संस्कृत करनी है

मैं ही हूँ सिर्फ जो सृष्टि को संवार सकता हूँ।

क्यूँकि

मेरी सृष्टि मेरी ही है

मेरी सृष्टि मेरे जैसी है

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

छोटी सी नन्ही ही सी प्यारी बेटी
नन्ही सी कुहुक से
नन्ही सी ठुमक से
नन्ही सी मुसुकान से
आँगन को नचाती है
नचाते नचाते जीव जीवन
हुलामति खिलखिलाती
ठनठनाती रुमझूमती
दर से घर के कोने कोने को
ऐसा खेल खिलाती
प्रकृति हँसे सृष्टि हँसे
जगत हँसे समय हँसे
हँसे सारे तत्व जीव तत्व
ऐसी घटमाल रचाये
समय भूले घट घट भूले
भूले सारे संसारी
कब हुई इतनी ऊँची बढ़ाई
अपने घर से हो किसी की पराई
कैसी है यह रीत समाज की
जो अपनी बिटियाँ नही अपनी
सदा की हो किसीकी जिवनियाँ
हे मेरी बिटियाँ! हे मेरी बिटियाँ!
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

ओ मैंने सजाई सूरज बिंदिया तेरे आत्म की मेरे आत्म से एकात्म होने

ओ मैंने पहना आकाश आँचल तेरे तन का मेरे तन से एक स्पर्श होने

ओ मैंने लगाया अमावस काजल कजरिया तेरे नैन ज्योति का मेरे नैन से बसने

ओ मैंने चिपकाया पंकज लाल पंखुड़िया तेरे अधर का मेरे अधर से चिपकने

ओ मैंने गुँथाया जीवन बाग गजरा तेरी महक का मेरी महक से खिलने

ओ मैंने पुराया सैंथि कुमकुम तेरे सौभाग्य सुहाग का मेरे सुहाग भाग्य से मिलने

ओ मैंने बंधाया मिन्थळ तेरे साथ का मेरे साथ से निभाने

ओ मैंने धागायी वैजयंती कंठ माला तेरे संस्कार की मेरे संस्कार से संस्कृतने

ओ मैंने गंठाये झुल्फ़े

ओ मैंने बँधाये पैजनिया

ओ मैंने लटकाये झुमखें

ओ मैंने पिरोयी अंगूठी

ओ मैंने ....

हे कृष्ण!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

किसको पूछे की मैं क्या हूँ?

मैं ही खुद को नही पूछ सकता की मैं क्या हूँ?

कैसा यह संसार मैंने घड़ा है?

की

कौन किसको पूछे की कौन क्या है?

हाँ! जो कोई किसीको पूछे तो कोई क्या समझ से समझे की कौन क्यूँ पूछते है?

शायद ऐसा है की ऐसे पूछते पूछते कोई किसीको जान सके, किसीको समझ सके, खुद को समझ सके की मैं क्या हूँ?

यही रीत से भी हो सके तो शायद संसार योग्य परिवर्तित हो सकता है, शायद कोई किसीको त्वरित गति से समझ सकता है, खुद खुद को भी त्वरित कह सकता है - मैं यह हूँ।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हर साँस से मार्ग है
हर विचार से मार्ग है
हर दृष्टि से मार्ग है
हर चिंतन से मार्ग है
हर हिम्मत से मार्ग है
हर उम्मीद से मार्ग है
हर कर्म से मार्ग है
हर धर्म से मार्ग है
हर साथ से मार्ग है
हर एकता से मार्ग है
हर सत्य से मार्ग है
हर शुद्ध से मार्ग है
हर पवित्र से मार्ग है
हर योग्य से मार्ग है
हर शरण से मार्ग है
हर प्रणाम से मार्ग है
हर वंदन से मार्ग है
हर नमन से मार्ग है
हर इमान से मार्ग है
हर सिद्धांत से मार्ग है
हर दृष्टांत से मार्ग है
हर प्रतिज्ञा से मार्ग है
हर सुविद्या से मार्ग है
हर निष्ठा से मार्ग है
हर विश्वास से मार्ग है
हर निखालस से मार्ग है
सच!
हर दिशा से मार्ग है
हर तरफ से मार्ग है
सिर्फ और सिर्फ हमें जागृत हो कर जीना है।
भगवान भी - श्रीप्रभु भी - परब्रह भी हमें खुद - खुद करने के लिए तो यहाँ प्रस्थापित किया है।
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण" 🌷🙏🌷

जितना जुठ कहोगे

जितना जुठ सुनोगे

जितना जुठ देखोगे

जितना जुठ फैलाओगे

जितना जुठ बोलोगे

जितना जुठ सोचोगे

जितना जुठ करवाओगे

जितना जुठ करोगे

आप क्या समझते हो

कोई कोई नही समझता

आप क्या जानते हो

कोई कोई नही जानता

आप क्या सोचते हो

कोई कोई नही पहचानता

जितना जुठ होगा

उतना ही विचित्र होगा

न कही योग्यता होगी

न कही शुद्धता होगी

न कही पवित्रता होगी

न कही सत्यता होगी

न कही शांत होगा

न कही विश्वास होगा

न कही श्वास होगा

न कही प्रेम होगा

जहाँ जहाँ जुठ होगा

वही वही उचाट होगा

वही वही क्रोध होगा

वही वही असमंजस होगी

वही वही धोका होगा

वही वही अविश्वास होगा

वही वही अंधश्रद्धा होगी

वही वही क्रूरता होगी

वही वही दुष्टता होगी

वही वही नफरत होगी

वही वही दुरुपयोग होगा

वही वही भ्रष्टता होगी

वही वही दिखावा होगा

वही वही रोग होगा

वही वही अप्रीति होगी

हम क्या समझते है

हम रोगी और भोगी क्यूँ है?

जुठ को अपने आप को घड़ा है

हम अशांत और दूसरे के सहारे क्यूँ है?

जुठ को अपने ने अपनाया है

हम निम्न और भ्रष्ट क्यूँ है?

जुठ को हमने हमारा कर्म साधन बनाया है

हम संताप और दुःखी क्यूँ है?

जुठ को हमने इतना फैलाया है की अब तो न कोई सृष्टि है - न कोई प्रकृति है - न कोई संसार है - न कोई जगत है - जो जुठ से भरा न हो!

हर दृष्टि जूठी

हर स्वर जूठे

हर क्रिया जुठ

हर विचार जुठ

हर रीति जुठ

हर प्रीति जुठ

तो ....

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🙏🌷

"होली" जो जो हो गई है

"होली" जो जो होकर जो न होना था

"होली" जो जो हो सका फिर भी जो न कर पाये

"होली" जो जो हो चुका है उनमें नया संवारने

होली होली अब न होली

होली होली अब ऐसी ही बोली

होली होली अब ऐसी ही करली

होली होली अब ऐसी ही धरली

होली होली अब ऐसी ही भरली

होली होली अब ऐसी ही चलली

जीवन का हर धृष्टता का अंत

जीवन की हर दुष्टता का अंत

जीवन का हर भ्रष्टता का अंत

ऐसी ही रंग में रंगाऊ अब मैं

जो मेरे पिया का है रंग

ऐसे ही रंग में रंगाऊ अब मैं

जो मेरे पिया ही मुझे रंग दे

ऐसे ही रंग में रंगाऊ अब मैं

जो मेरे पिया ही मुझे रंगाये

यही तो उम्र है

जो यही समझ से रंगाऊ

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

लाल रंग से रंगदू
हरा रंग से रंगदू
नीला रंग से रंगदू
पीला रंग से रंगदू
कैसे कैसे रंग से रंगदू
हे साँवरी! कौनसे रंग से रंगदू?

कोई नही लाल रंग से
कोई नही हरा रंग से

नही कोई नीला रंग से
नही कोई पिला रंग से

तेरा तो एक ही रंग! हे साँवरिया!
तेरा तो एक ही रंग!
तुझमें ही लाल रंग
तुझमें ही हरा रंग
तुझमें ही नीला रंग
तुझमें ही पिला रंग
क्यूँकि
जो श्याम रंग तेरा
तो तुझमें ही रंग समाये सारा
हे श्याम! तुझमें ही समाया रंग सारा
अरि ओ नार! तु तो है गौर चटक दार
ओ रंगदार! तु तो है गौर चटक दार
कैसे रंगदे ओ नार!
तुझे लाल रंग से रंगदू
तुझे हरा रंग से रंगदू
तुझे नीला रंग से रंगदू
तुझे पीला रंग से रंगदू
नही नही ओ श्याम!

मुझे अपने ही रंग से रंग दे
ओ श्याम!
मुझे श्याम रंग से रंग दे

गौर रंग नही भाये
श्याम रंग मोहे भाये

अपने ही रंग में रंग दे ओ श्याम
तेरा ही रंग में रंग दे ओ घनश्याम
तेरा ही रंग में रंग दे
मुझे तेरा ही रंग दे

श्याम श्याम से श्यामा कर दे
श्याम श्याम से श्यामा कर दे
ओ श्याम! यही है रंग का त्योहार
ओ श्याम! यही है जीवन का प्यार
ओ श्याम! यही है प्रीत का सार
ओ श्याम! यही है जन्म सिद्धार
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"भीष्म पितामह"

कभी सोचा है यह विभूति को जो हमारी हिन्दुसंस्कृति का एक विशुद्ध और श्रेष्ठ न्यायी जीवन चारित्र्य योद्धा है।

महाभारत का यह परम योगी योद्धा का चरित्र इतना सर्वोत्तम है जिससे सारे मनुष्य जीव तत्त्वों को उनसे शिक्षा और ज्ञान पाना अति आवश्यक है।

हर चरित्र दृष्टांत उनका हमें दृढ और योग्य ही घडता है।

क्या हम मान सकते है की ऐसा परम योग्य तत्व को युद्ध में परार्मश होना पड़े और मृत्यु बाण शैय्या पर सोना पड़े?

नही नही ऐसा हो ही नही सकता!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

बार बार कहने से

बार बार पढ़ने से

बार बार लिखने से

बार बार सुनने से

बार बार देखने से

भी हम

नही जान सकते है

नही समझ सकते है

नही पहचान सकते है

नही कर सकते है

तो हम क्या है?

तो तो

सोच भी नही सकते है

अपना भी नही सकते है

पा भी नही सकते है

तो तो

जी भी कैसे सकते है

विचर भी कैसे सकते है

क्रिया भी कैसे कर सकते है

जीवन भी कैसे बिताते है

ओहह!

श्रीप्रभु!

जीव तत्व की कैसी भूमिका में है?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

नारी को सन्नारी

सन्नारी को आकृति

आकृति को सुकृति

सुकृति को सुश्रुति

सुश्रुति को संस्कृति

यही ही नारी धर्म है।

यही ही नारी गर्व है।

यही ही नारी पर्व है।

यही ही नारी ईश्वर है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"सेवा"

हमारी हिन्दू संस्कृति की वर्ण व्यवस्था की रचना हमारे जो ऋषिओं ने रची है, वह कोई भी जीव के तफावत - मनुष्य का ऊंच निच - तवंगर निर्धन - अमीर गरीब - सुखी दुःखी - निरोगी रोगी ऐसी व्याख्या अर्थात मानसिक - शारीरिक और अर्थोपार्जन से सैद्धांतिक नही है।

यह वर्ण व्यवस्था जो अपने सर्वोच्च गोत्र श्रीगुरु के आधारित है। हर श्रीगुरु प्रज्ञानी और साक्षर ही थे। जो जो व्यवस्था प्रमाणित और सार्थक है, यही रुचि और प्रमाणित क्रिया के आधारित ही रची है। जीवन व्यवस्था को सर्वोच्च करने के लिए योग्य सैद्धांतिक समन्वय करके यह व्यवस्था का निर्माण किया है।

जो विशुद्ध है

जो पवित्र है

जो सत्य है

जो प्रीत भरी है

यही व्यवस्था से ही सेवा का निर्माण हुआ है, हर जीव तत्वों को योग्य और सलामत गति हो। यही ही मूलभूत सिद्धांत है।

सत्य से समझे तो कहीं स्थली पर ऐसी मान्यता नही है। जो सत्य को रूढिचुस्तता के आधीन समझे।

आजकल जो गोत्र विमुख और स्वार्थ वृति से जो जो सिद्धांत - रीति रिवाज का संचालन करते है, उनसे न तो योग्यता केलवाती है, न सत्य समझाता है, न जीवन सुधार होता है, न धर्म का संस्थापन होता है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"तेरे लिए हम कुछ भी सहेंगे

तेरा दर्द अब दर्द मेरा"

कभी अपने आप को कहा है?

कभी अपने मन को कहा है?

कभी अपने तन को कहा है?

कभी अपने धन को कहा है?

कभी अपने ईमान को कहा है?

कभी अपने विश्वास से कहा है?

कभी अपने नयन से कहा है?

कभी अपने धर्म को कहा है?

कभी अपने प्रीत को कहा है?

कभी अपने भगवान को कहा है?

खुश हूँ जिस हाल में रक्खे

तेरी हूँ तेरी ही सदा

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"माँ - बाप"
क्या समझते है - यह कोई व्यवहारिक रिश्ता है?

"बेटा - बेटी"
क्या समझते है - यह कोई सुख का रिश्ता है?

"बहू - बेटा"
क्या समझते है - यह कोई धन बचत का रिश्ता है?

"पौत्र - पौत्री"
क्या समझते है - यह कोई चौकीदार का रिश्ता है?

"माँ" यह कोई घर को संभालने का व्यक्ति है या हमारे संस्कार - कर्म सुधारने की व्यक्ति है?

"पिता" यह कोई डाँटने का साधन है या हमारे जीवन की संस्कार पूंजी के व्यवस्थापक है?

"बेटा" यह कोई धन कमाने का साधन है या हमारे शांत जीवन का साथी है?

"बेटी" यह कोई घर काम करने का साधन है या हमारे गृहस्थी का कल्पवृक्ष है?

"बहू" यह कोई गृह कार्य निभाने का साधन है या हमारे जीवन की सृश्रुषा है?

"पौत्र" यह कोई गृहस्थ जीवन का खिलौना है या हमारे महकते गृह बगिया का फूल है?

"पौत्री" यह कोई गृहस्थ जीवन का भार है या हमारे संस्कृत जीवन का शृंगार है?

"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

पुष्टि संप्रदाय में "अष्ट" शब्द का प्रयोग कबसे हुआ?

पुष्टि संप्रदाय में अष्टयाम सेवा विधि और अष्टछाप कीर्तन व्यवस्था कब हुई?

पुष्टि संप्रदाय में ८४ वैष्णव की वार्ता का प्रयोग कब और कैसे हुआ?

पुष्टि संप्रदाय में अष्टसखा का प्राधान्य उपाधि कैसी साक्षरता और कैसी रचना के आधारित की गई?

पुष्टि संप्रदाय में ८४ वैष्णव को कैसे आविष्कार किया?

वैष्णव संप्रदायों में "व्रज भूमि" अर्थात गोकुल - मथुरा - वृंदावन - गोवर्धन -८४ कोस की स्थली का ही प्राधान्य है, क्यूँ?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हमें सर्वे को श्रद्धांजलि अर्पित करनी है।

कल ब्रह्मांड का एक सर्वोत्तम अंश ब्रह्मांडो में विलीन हो गया

"Stephen Hawking"

यह ऐसा अंश था जो हमारे जीवन - हमारे काल और हमारे तत्वों को हमें परम सत्य से जागृत कर रहा था।

यह ऐसा अंश था जो हमारे अंश को हम कैसे पहचाने!

यह ऐसा अंश था जो हमारे आंतर और बाह्य परिवर्तन से हम हमारे काल से कैसे सलामत रह सके, यह सर्वे प्रयोगात्मक विधि और ज्ञान से हमें सर्वोत्तम करने की कोशिश कर रहा था।

हमारी सर्वे की ओर से हम प्रार्थना करते है कि ऐसे आत्म तत्त्व को बार बार जन्म धारण करके हमें सदा जागृत रखे।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

पुष्टि संप्रदाय में "अष्ट" शब्द का प्रयोग श्रीवल्लभाचार्यजी जब गोविंद घाट पहुंचे और अपने मुख से "अथः श्रीयमुनाष्टक" की रचना हुई और प्रथम मिलन - "श्रीनाथजी और श्रीवल्लभाचार्यजी" का हुआ वो ही क्षण श्रीवल्लभाचार्यजी के मुख से "मधुराष्टकं" की रचना हुई। ऐसे श्रीवल्लभाचार्यजी के मुख से "अष्ट" का प्रथम प्रयोग हुआ।

"अष्ट" गहराई से समझे तो यह जीवन का अनोखा क्रम है

प्रथम अष्ट - बचपन

दूजा अष्ट - प्राथमिक

तीसरा अष्ट - माध्यमिक

चौथा अष्ट - संसार प्रारंभिक पुरुषार्थ

पाँचवा अष्ट - संसार प्राथमिक पुरुषार्थ

षष्ट अष्ट - संसार माध्यमिक पुरुषार्थ

सप्तम अष्ट - संसार निवृत्तिक पुरुषार्थ

अष्टम अष्ट - संसार विभूति पुरुषार्थ

यही अष्ट से ही जीवन कृतकृतार्थता

यही अष्ट से ही जीवन धर्म संस्कार धरता

यही अष्ट से ही जीवन कर्म पुरुषार्थता

यही अष्ट से ही जीवन प्रीतार्थता

यही अष्ट से ही जीवन एकात्मता

ऐसे ही नवं अष्ट से प्रारंभिक आध्यात्म

ऐसे ही दसम अष्ट से प्राथमिक आध्यात्म

ऐसे ही एकादश अष्ट से माध्यमिक आध्यात्म

ऐसे ही बारह अष्ट से परम आत्मीय

ऐसे ही तेरह अष्ट से परम भगवदीय आत्मीय

ऐसे ही चौदह अष्ट से पूर्ण भगवदीय आत्मीय

ऐसे ही पंद्रह अष्ट से अद्वैत आत्मीय

ऐसे ही सोलह अष्ट से जन्म जीवन परम अंशी आत्मीय में एकात्म हो जाता है।

यही ही है अष्ट जन्म जीवन वृतांत।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"अष्ट याम"

याम - आयाम - जहाँ ठहरते है

याम - आयाम - जहाँ स्थिर रहते है

याम - आयाम - जहाँ विश्वास रहता है

याम - आयाम - जहाँ पवित्रता रहती है

याम - आयाम - जहाँ शुद्धता रहती है

याम - आयाम - जहाँ सेवा होती है

याम - आयाम - जहाँ निःस्वार्थ रहता है

याम - आयाम - जहाँ निखालसता रहती है

याम - आयाम - जहाँ प्रीत रहती है

याम - आयाम - जहाँ साक्षरता रहती है

याम - आयाम - जहाँ न्योछावर रहती है

पुष्टि मार्ग संप्रदाय में - अष्टयाम सेवा विधि

चार प्रहर बंसी बट भटक्यो सांझ पड़े घर आयो

चार प्रहर - चार आयाम

कैसा है यह प्रहर? - कैसा है यह आयाम?

यह ऐसा गणित है जो अपनी अपनी समझ से करते है - अपनी अपनी कक्षा से करते है - अपनी अपनी साक्षरता से करते है।

अष्ट याम सेवा विधि का इतना विशाल अर्थ होता है - हर क्षण - हर घड़ी - हर पल।

"न क्षण विलंबते" ऐसी ये विधि है और ऐसी ये निधि है।

श्रीवल्लभाचार्यजी ने ये अष्ट याम विधि प्रकट करी और श्रीविट्ठलनाथजी ने ये अष्ट याम विधि को श्रृंगार किया।

इतने अदभुत थे वह व्यक्तित्व जो जो ने अपनायी वह श्रीप्रभु प्रिय वैष्णव हो गए। 🌷🙏🌷

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

पुष्टि मार्ग में "अष्ट याम" सेवा विधि और अष्टछाप कीर्तन व्यवस्था

अष्ट का अर्थ आठ

समय का आठ प्रकार है

सूरज की स्थिरता से

सूरज की परिक्रमा तक

सूरज की परिक्रमा निरंतर है

सूरज का भ्रमण अखंड है

ब्रह्मांडो के हर तत्व सूरज का भ्रमण करता है।

यही भ्रमण से ही पवित्रता, विशुद्धता और साक्षरता का पार्दुभाव होता है।

अष्टयाम इतना असाधारण जागृतता है मानव जीव के लिए, जिससे मानव देव हो सकता है - श्रीप्रभु हो सकता है - श्री भगवान हो सकता है - श्री भक्त हो सकता है।

अष्ट प्रकार के याम सच में कितने अदभुत और अलौकिक है।

एकम याम - मंगला

दूजम याम - श्रृंगार

तृतयं याम - ग्वाल

चतुर्थ याम - राज भोग

पंचम याम - उत्थापन

षष्टम याम - भोग

सप्तम याम - संध्या आरती

अष्टम याम - शयन

लौकिकता से समझते है कि

हम श्रीप्रभु को जगा रहे है - गलत

हम श्रीप्रभु का श्रृंगार करते है - गलत

हम श्रीप्रभु को ग्वाल सजाते है - गलत

हम श्रीप्रभु को गौचारण करवा पधार रहे है - गलत

हम श्रीप्रभु को राजभोग धर रहे है - गलत

हम श्रीप्रभु को उठा रहे है - गलत

हम श्रीप्रभु को भोग धर रहे है - गलत

हम श्रीप्रभु की संध्या वंदना कर रहे है - गलत

हम श्रीप्रभु को पोढा रहे है - गलत

ओह्ह मेरे मित्र!

कैसी मान्यता! कैसी श्रद्धा!

श्री यशोदा मैया ने श्रीप्रभु को कभी जगाया नही है!

श्रीवल्लभाचार्यजी ने श्रीप्रभु को कभी जगाया नही है!

श्रीअष्ठ सखा के कोई भी कीर्तन - पद समझ ले - हर पद और कीर्तन में श्रीप्रभु को नही जगाया है - श्रृंगार किया है - ग्वाल सजाते है - राजभोग धराते है - उत्थापन कराते है - भोग धराते है - संध्या आरती करते है - शयन कराते है।

सच!

यही तो अष्ट याम का माधुर्य है!

यही तो अष्ट याम की श्रेष्ठता है!

यही तो अष्ट याम की योग्यता है!

यही तो अष्ट याम की विशुद्धता है!

यही तो अष्ट याम की पराकाष्ठा है!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"अष्ट छाप"

अष्ट का माहात्म्य और ज्ञानार्थ - चरितार्थ- भावार्थ - दृढ़ार्थ - पुष्टार्थ - कर्मठ - भक्तार्थ को समझ पाये।

"छाप" अर्थात प्रामाणित - योग्ययिक - कृतार्थीक - अखंडित - अचलित - अनन्यता - अविभाज्यता - पूर्णता।

"अष्ट छाप"

जो हर विचार से योग्ययिक है

जो ज्ञानार्थ से अविभाज्य है

जो दृढ़ार्थ से अचलित है

जो भावार्थ से पूर्ण है

जो पुष्टार्थ से अनन्य है

जो भक्तार्थ से कृतार्थ है

जो कर्मठ से अखंडित है

जो चरितार्थ से प्रामाणित है

वो ही "अष्ट छाप" है

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"अष्ट सखा"
कहीं बार सुना, पढ़ा और स्पर्श पाया। आज कोई भी पूछे तो हमारा मन तुरंत ही कह देगा - यह है अष्ट सखाएँ!
कभी ध्यान किया है?
कभी सोचा है?
कभी चिंतन किया है?
यह "अष्ट सखा" शब्द कहाँ से आधारित किया है?
कितने अदभुत थे वह पुष्टि मार्गीय आचार्य और पुष्टित्व स्पर्श और पुष्टिमय लीलाएँ - जो हर आचार्य अपनी आंतरिक जागृतता और पुष्टि ज्ञान भाव से हर डगर को उत्स करते थे, जिससे पुष्टिमार्ग का प्रस्थापन अति सिद्धांतमय और आनंदमय साक्षर हो रहता था। 🌷🙏🌷
यह अष्ट सखा का मूल आरोहण श्रीकृष्ण भगवान की बाल लीलाओं से स्फुरण किया है।
श्रीमद भागवत के आधारित जो श्रीकृष्ण के सखा थे यही सखाओं को केंद्रित रखें हुए श्रीहरिरायजी ने एक पद रचा है -
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
"सूरदास सो तो कृष्ण तोक परमानंद जानो।
कृष्णदास सो रिषभ, छित स्वामी सुबल बखानो।।
अर्जुन कुम्भनदास चतुर्भुजदास विशाला।
नन्ददास सो भोज स्वामी गोविन्द श्रीदामाला।।
अष्ट छाप आठों सखा श्री द्वारकेश परमान।
जिनके कृत गुनगान करि निज जन होत सुजान।।
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
कितनी सुंदर और शिक्षात्मक तुलना रची है - श्रीहरिरायजी ने!
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
श्रीमद भागवत में श्री कृष्ण अपने सखाओं को पुकारते थे -
"हे स्तोक कृष्ण! हे अंशो! श्रीदामान सुबलार्जुन।
विशालषर्भ! तेजस्विन! देवप्रस्थ! वरुथप।।
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
ऐसी थी श्रीकृष्ण की पुकार अपने अंतरंग श्री सखाओं के लिए।
🌷🙏🌷
यही रचना से ही श्रीविट्ठलनाथजी ने अष्ट सखा - अष्ट छाप का स्थापन किया।
यही प्रेरणा से श्री गोकुलनाथजी और श्री हरिरायजी ने प्रथम अष्ट छापी - चार सेवकन की वार्ता" का सोपान किया।
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"वाह कृष्ण वाह"
"वाह कुटुंब वाह"
"वाह संसार वाह"
"वाह पुरुषार्थ वाह"

सच में आज मुझे तुमने बहोत कुछ दे दिया।
प्रणाम करता हूँ।🌷🙏🌷
किससे क्या पाया
किसने क्या क्या पहचाना

कितने निकट है पर कितने दूर है
मैं कहां और कौन कौन कहां
कैसे जीता मैं संसार तुम्हारा
आज पता हुआ तु ही है रखवाला
पर
हे कृष्ण! तेरा चरित्र ने मुझे संभाला
मुझको मेरे जीवन से मुझको पहचाना
कितनी अदभुत जीवन शिक्षा

सत सत प्रणाम तुझको
सत सत वंदन तुझको
🌷🙏🌷🙏🌷
जो जो जिया जो जो सँवारा
ऐसा प्रीत साँवरिया मेरा
तुझसे ही पाया प्रीत गोपिजन
तुझसे ही पाया मेरी बिटियाँ कृष्णा
तुझसे ही खेले मेरी गुड़िया मिसरी मन
मुस्कुराओ! गाओ यही तराना
कृष्णा कृष्ण! वल्लभ वल्लभ!🌷🌹🌷
सदा मुझसे प्रीत ही बरसाना🌷🌹🌷
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हम कैसे है?

विज्ञान अर्थात शिक्षा पाना - खुद को समझने के लिए इंजीनियर बने, डॉक्टर बने, व्यापारी बने पर न हमें समझ आयी कैसे स्वच्छता पाना - कैसे खुद को घड़कर गरीबी मिटाना - बीमार न होना।

पर नही!

हर बहाने से जीना

हर कोई को घुमाना

खुद के चारित्र्य को बिगाड़ना

हमारा जीवन असाधारण होना चाहिए - ऐसी नफरत भरा नही, जिससे हम जीवन न संवार सके, न संभाल सके, न सलामत रख सके।

पर ऐसा है कि हम ....

उसने कहा

उसने करा

ओह्ह! तो हम भी

हम क्यूँ नही?

नही नही! ऐसे है हम और हमारा जगत!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

भाग्य न कभी भागता है

भाग्य न कभी साथ छोड़ता है

भाग्य न कभी असत्य कराता है

भाग्य न कभी सन्मार्ग छुडाता है

भाग्य सदा निकट रखता है

भाग्य सदा पास ही बुलाता है

भाग्य सदा शुद्ध करता है

भाग्य सदा निष्कपट रखता है

भाग्य सदा अक्रुर है

भाग्य सदा उत्कृष्ट है

भाग्य सदा निरोगी है

भाग्य सदा वियोगी है

भाग्य सदा अमृत है

भाग्य सदा संस्कृत है

भाग्य सदा कर्मयोगी है

भाग्य सदा यात्रा है

भाग्य सदा उपयोगी है

भाग्य सदा सहयोगी है

भाग्य सदा जागृत है

भाग्य सदा प्रवृत है

भाग्य से ही सत्संग है

भाग्य से ही दर्शन है

भाग्य से ही परिक्रमा है

भाग्य को घडते है - रचते है - कृत करते है हमारा योग्य विचार - योग्य कर्म - योग्य परिमाण।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कौन से घर को तुम अपना समझ रहे हो?

कौन से मातापिता को तुम अपना समझ सकते हो?

कौन से पुत्र को तुम अपना समझ सकते हो?

कौन सी पुत्री को तुम अपना समझ सकते हो?

कौन सी प्रियतमा को तुम अपना समझ सकते हो?

कौन सी पत्नी को तुम अपना समझ सकते हो?

कौन से प्रियतम को तुम अपना समझ सकते हो?

कौन से गुरु को तुम अपना समझ सकते हो?

कौन सा धर्म को तुम अपना समझ सकते हो?

कौन सा मित्र को तुम अपना समझ सकते हो?

सच! जो समय अर्थात काल है, यह सब रीते कैसे हम पहचान सकते है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

जो मानव जगत से खेलता है
जगत में खेलता है मानव
किससे खेले - अपनो से खेले
खेल खेल से अपनो को खोये
खो खो कर खुद को भी खोये
कुछ न पाया कहीं को घवाया
अकेले अकेले ही सबको पाया
जो मानव जगत से खेलता है
वह जगत में खेलता है मानव
मान्यता महेच्छा में सारी उम्र गवाई
उम्र की अवधि निकट रचाई
मैं ही सही से न अहंकार विसराई
तील तील घट से सारी काल नष्टाई
यह मेरा यह मेरा न कुछ खुद में समाई
जो मानव जगत से खेलता है
वह जगत में खेलता है मानव
ओहह! तो अब क्या करें!
जाग गये हो तो खुद संवारो
जागृत हो गये हो तो काल संवारो
घट घट संवरी अहंकार संवरी
मान्यता महेच्छा की अंधश्रद्धा संवरी
उम्र उम्र की अवधि संवरी
जो मानव खेलता है जगत से
वह मानव संवरता है जगत
जो जगत खेलता है मानव से
वह जगत को संवरता है मानव
कितनी अनोखी खुद की संवराई
खुद जगा कर खेल खिलाड़ी मिटाई
अकेले अकेले की अवस्था बिसराई
निकट निकट सारी मानव महेराई
वाह!
खुद खुद से कर्म धर्म संवराई
कर्म धर्म - धर्म कर्म से जगत संवराई
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

साँस भरता हूँ
कोई ऊर्जा खिचाती है
साँस निकालता हूँ
कोई ऊर्जा बहती है
है कोई साँसों का सिलसिला
जो खिंचते निकालते
कुछ आदान प्रदान करती है
शायद ऐसा हो सकता है
जो साँसों को रचने वाला
अपनी ऊर्जा से मुझे खिंचता है
मेरी ऊर्जा से खुद को समर्पण करता हूँ
यह दोनों की क्रिया से
ऐसा है
की
वह मेरे लिए है
और
मैं उनके लिए हूँ
शायद यह है
की
वह मेरे लिए ही है
पर
मैं उनके लिए हूँ या नही
वह तो साँसों का सिलसिला ही जता सकता है
जैसे पुष्टि धारा - पुष्टि सेवा - पुष्टि स्पर्श
जो अक्षरसः परिस्कृत कर सकता है
अपने विचार से
अपने स्वर से
अपने अक्षर से
अपने क्रिया से
अपने संस्कृत से
अपने साक्षर से
यही तो विशुद्धता है - सत्यता है - पवित्रता है पुष्टिमय की!
जो घूटते घूटते घट घट समर्पित होय।
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"कृष्ण" ऐसा क्या है - भारतवर्ष के हर व्यक्ति, हर प्रकृति, हर सृष्टि, हर साँस, हर गूँज, हर सेवा, हर निधि, हर यात्रा, हर स्पर्श, हर आनंद "श्रीकृष्ण" से ही जुड़ा है?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"कृष्ण" का कोई संदेश न समझ सके

"कृष्ण" का कोई चरित्र न समझ सके

"कृष्ण" की कोई लीला न समझ सके

"कृष्ण" का कोई भावार्थ न समझ सके

"कृष्ण" कोई ज्ञान न समझ सके

"कृष्ण" का कोई माध्यम न समझ सके

तो क्या केवल आंडबर से ही जिये जाएंगे

तो क्या केवल अंधश्रद्धा से ही जिये जाएंगे

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"कृष्ण"
"नवलक्षणलक्ष्यो हि कृष्णस्तस्य निरूपणात्"
"आश्रय: क्रमभावित्वात् निरोधो वेति संशय:"
हमारा जीवन उत्कृष्ट और आनंदमय करने "श्रीवल्लभाचार्यजी" ने सूक्ष्मता से "श्रीसुबोधिनीजी" के माध्यम से हमें जागृत करने "श्रीकृष्ण" चरित्र को ऐसे सिद्ध किया है कि हमारा हर जन्म, जीवन और काल "श्रीकृष्णमय" हो जाय, जीवन मधुर हो जाय।
एक बात कहें!
ऐसा कैसा हमारा मन - तन - धन - जीवन है कि हम भटक जाते है, बहक जाते है, चहक जाते है, अटक जाते है, लपस जाते है, तूट जाते है, भूल जाते है?
कैसी दृष्टि है हमारी?
कैसी है शिक्षा हमारी?
कैसी है वृत्ति हमारी?
कैसी है कृति हमारी?
कैसी है स्वीकृति हमारी?
कैसी है निष्ठा हमारी?
कैसी है शिष्टता हमारी?
कैसी है प्रकृति हमारी?
कैसी है विश्रुति हमारी?
कैसी है जागृति हमारी?
कैसी है संशय सृष्टि हमारी?
कैसी है प्यास हमारी?
कैसी है आश हमारी?
कैसी है सृश्रुता हमारी?
सच! कैसी है......
जो अनगिनत चरित्र
जो अनगिनत संयम
जो अनगिनत नियम
जो अनगिनत सिद्धांत
जो अनगिनत अनुभव
जो अनगिनत प्रमाण
जो अनगिनत साध्य
जो अनगिनत संस्कार
जो अनगिनत शिक्षा
जो अनगिनत माध्यम
जो अनगिनत सूत्र

जो अनगिनत शास्त्र
जो अनगिनत संकेत
जो अनगिनत संकल्प
तो भी हम?
ओह्ह!
"कृष्ण" यह एक ऐसा पूर्ण पुरुषोत्तम परमम योग्य तत्व ही है ऐसा तुम कैसे समझ सकते हो, पहचान सकते हो,
अपने आंतर और बाह्य ब्रह्मांड में उजागर कर सकते हो?
यही उत्सता से, यही प्राकट्यता से, श्रीवल्लभाचार्यजी ने, श्रीमाधवाचार्यजी ने, श्रीनिम्बाकाचार्यजी ने, श्रीरामानुजचार्यजी ने, श्रीचैतन्य महाप्रभुजी ने और उस समय के आदि संप्रदायों ने, उस समय के भक्तों ने, जो जो अनुभूति से जो उजागर किया वह "कृष्ण तत्व" ही है - क्यूँकि यही परमम चरित्र ने पूर्णता से हर काल को लीला में परिवर्तित किया - यही लीला से उनके आंतर और बाह्य मधुरता का पार्दुभाव हुआ, उन्हें परमानंद की अनुभूति और साक्षात्कार हुआ। इसीलिए "कृष्ण" को समस्त भारतवर्ष में परम श्रेष्ठ पुरुषोत्तम प्रस्थापित किया। जिनकी हर चारित्रता - जन्म से लेकर मृत्यु पर्यान्त जीवन की माधुर्य लीला में परिवर्तन किया - यही परिवर्तन से प्रत्येक क्षण अर्थात हर एक प्रकार का काल योग्य और संयम और नियमन में उनकी साक्षरता से रहे, यही सर्व श्रेष्ठ पुरुषार्थता ही उन्हें परमेश्वर रूप में धारण कर दिया।
"Vibrant Pushti"
जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"कृष्णस्य सर्व वस्तुनि भूम्न इशस्य योजयेत्"

कहते है कितनी सूक्ष्मता से की कृष्ण तत्व और कृष्णस्य ही सर्व है रज रज से, अणु अणु से जो सारे भूमा में व्याप है और यही परमाणु सदा इशस्य का आयोजन नियोजन करते है।

अति गहरी और स्फटिक विशुद्ध रीत जताई है - हर परमाणु में जो तत्व है वह कृष्ण ही है और वह सदा तनुनवत्व की ओर ही गति करता है।

"निरोधो स्यानुशयनं प्रपच्ये किड़नं हरे:।

शक्तिभिदु विभाव्याभि: कृष्णस्येति हि लक्षणम्।।

कितना अदभुत! श्री हरि की अपनी अचिन्त्य शक्तिओं सहित जगत में क्रीड़ा करना ही "निरोध" है।

कृष्ण और कृष्णस्य अर्थात परब्रह्म (कृष्ण) और कृष्ण की लीला दोनों ने ब्रह्मांडो के हर तत्व के साथ लय करके सारे तत्वों का निरोध किया है और हर तत्व में ऐसा परिवर्तन का बीज प्रस्थापित किया है कि वह सदा उनकी और आकर्षित रहे और सदा योग्य होने के पुरुषार्थ में ही गतित्व रहे।

जिससे उनका प्रपंच का नाश हो, संशय का नष्ट हो, सदा शांत और आनंदमय हो, मधुर हो। यही ही तो कृष्ण का सामर्थ्य है।

ओह कृष्ण!

ओह कृष्ण!

ओह कृष्ण!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हम जब भी किसीसे मिलते है

हम जब भी घर से बाहर निकलते है

हम जब भी किसीसे दूर जाते है

हम जब भी कोई बात की शुरुआत करते है

हम जब भी कोई बात की पूर्णाहुति करते है

हम जब भी कोई व्यवहार अर्थात कोई भी क्रिया किसीके साथ करते है तब प्रारंभ और अंत में "जय श्री कृष्ण" करते है।

क्यूँ?

यह कोई परंपरा है?

यह कोई रीत है?

यह कोई सेवा है?

यह कोई तंत्र मंत्र है?

यह कोई सन्मानित चेष्टा है?

यह कोई व्यवहार दृष्टि है?

यह कोई सामान्यत नमस्कार है?

यह कोई आदर प्रदान है?

यह कोई नियमन आवकार है?

यह कोई शास्त्रोक्त शिक्षा है?

यह कोई माध्यम है?

यह कोई आंतर संवेदना है?

यह कोई मुख शुद्धि है?

यह कोई व्यवहार कुशलता का प्रतीक है?

यह कोई सांत्वना की विश्वसनीयता है?

यह कोई मूर्ख समझ की पूर्ति है?

यह कोई अनैतिक भौतिक व्यवहार की उठामन है?

यह कोई छल कपट की व्यवहारता है?

सच कहें!

हम कितने अज्ञानी और अहंकारी और दंभी है

हम कितने मूर्ख और निर्लज है

हम कितने निम्न और नींच है

हम कितने स्वार्थ और अविश्वनीय है

हम कितने गिरे हुए और घिनौने है

हम कितने क्रूर और पापी है

हम कितने अछूत और विकृत है

हम कितने डरपोक और भयावह है

हम कितने छलि और कपटी है

हम कितने अव्यवहारु और दुष्ट है

सच!

हम कैसे कह सकते है कि हम परब्रह्म के अंश है

हम सामाजिक प्राणी है

हम जगत के शिक्षित जीव तत्व है

हम जीव तत्व के प्रतिनिधि है

सोचों!

अगर थोड़ी भी कुछ अंशता है तो सोचों

"जय श्री कृष्ण" क्या है?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

माफ करना अगर किसीको कोई भी प्रकार की ठेश पहुँचे तो!

यह एक जागृत और संस्कारमय सेवा है। 🌷🙏🌷

कितना अदभुत!

कितना अलौकिक!

कितना स्पर्शिय!

कितना आत्मीय!

कितना परिवर्तनीय!

कितना पवित्र!

कितना विशुद्ध!

कितना ऐश्वर्य!

कितना ईश्वरीय!

कितना मधुर!

कितना प्रायोगिक!

कितना प्रमेय!

कितना श्रेष्ठ!

कितना योग्य!

कितना प्रामाणिक!

कितना सलामत!

कितना वैज्ञानिक!

कितना आधारित!

कितना आंतरिक!

कितना सार्थक!

कितना आध्यात्मिक!

कितना चैतन्य!

कितना आग्नेय!

कितना तेजस्वी!

कितना ब्राह्मणीय!

कितना साक्षर!

कितना संस्कृत!

कितना प्रीतार्थ!

सच! जिसने भी यह "जय श्री कृष्ण" की रचना कृतकृति है, उन्होंने कितनी विशालता और पूर्णता से यह सत्यता को हमारी उत्कृष्टता के लिए,

हमारा उद्धार के लिए,
हमारी तनु नवत्वता के लिए,
हमारा समस्त दुरित क्षयो के लिए,
हमारा सर्व दोषों की नष्टता के लिए,
हमारा आध्यात्म जागृतमय के लिए।
"जय श्री कृष्ण"
ओहह कृष्ण!🌷
हा कृष्ण!🌷
हे कृष्ण!🌷
अति सर्वोच्च!
अति सर्वोत्तम!
अति प्रीत!
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"जय श्री कृष्ण"

आपको "जय श्री कृष्ण"

उन्हें "जय श्री कृष्ण"

हमें "जय श्री कृष्ण"

सर्वेको "जय श्री कृष्ण"

तुम्हें "जय श्री कृष्ण"

मुझे "जय श्री कृष्ण"

ओहह "जय श्री कृष्ण"

ऐसा क्यूँ?

क्या संकेत कर रहा है "जय श्री कृष्ण"

क्या कह रहा है "जय श्री कृष्ण"

क्या जता रहा है "जय श्री कृष्ण"

क्या सुना रहा है "जय श्री कृष्ण"

क्या जागृत कर रहा है "जय श्री कृष्ण"

क्या दर्शा रहा है "जय श्री कृष्ण"

क्या स्पर्शता है "जय श्री कृष्ण"

क्या विरहता है "जय श्री कृष्ण"

क्या एकात्मता है "जय श्री कृष्ण"

हाँ! जब भी "जय श्री कृष्ण" सुनते है और जब भी कहते है "जय श्री कृष्ण" तो कुछ असर - प्रभाव और उनका सामर्थ्य तो प्रकट होता ही है, यह सामर्थ्यता - कृतार्थता असाधारण और असामान्य है।

उनका गूँजन - उनका स्पंदन जिसको भी छूता है उनमें आह्यदालकत्मकका - आनंदात्मकका - अलौकिकात्मकका - मधुरात्मकका प्राकट्य होता है।

यही प्राकट्य से हमारे अंश में परब्रह की अनुचेतना प्रबल होती है, यही चेतना से ही हम परब्रह का अनुभव करते है - विरह की उतेजना उठती है और हम हमारे अंग अंग से "जय श्री कृष्ण" को निहालने की उन्मादित करते है।

ओहह! "जय श्री कृष्ण"

"जय श्री कृष्ण"

"जय श्री कृष्ण"

कितना सचित्र!

कितना साक्षात!

कितना अनुभव!

कितना माधुर्य!

कितना स्पष्ट!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"जय श्री कृष्ण" 🌷
शायद हमनें आप में पाया
और
आपने हममें पाया
ठीक है
पर सैद्धान्तिक सत्य कहें
🌷"जय श्री कृष्ण"🌷
एक प्रार्थना है
एक विनंती है
एक परस्पर है
एक स्वीकृति है
एक समन्वय है
एक प्रीत है
एक एकात्मता है
एक ब्रह्मसंबंध है
ओहह!
अति सूक्ष्मता से और आंतर पुष्टि गहराई से खुद को सर्वथा से समेट कर एकांत में स्थिर बैठना और आंतरिक ऊर्जा से शांत होना।
अवश्य 🌷"जय श्री कृष्ण"🌷
प्रार्थना है
विनंती है
परस्पर है
स्वीकृति है
समन्वय है
प्रीत है
एकात्मता है
ब्रह्मसंबंध है
कभी भी - कोई भी क्षण - कोई भी पल - कोई भी स्थल - कोई भी समय - कोई भी तत्व - कोई भी जीव - कोई भी व्यक्ति को "जय श्री कृष्ण" कहना या सुनना या स्पर्शना या गुनगुनाना
आंतरिक समाधि हो जायेगी।

आंतरिक ऊर्जा उठेगी।

आंतरिक संवेदना प्रकटेगी।

आंतरिक स्पंदन खिलेगा।

आंतरिक विरहता तुटेगी।

आंतरिक भक्ति पार्दुभावेगा।

आंतरिक मिलन माधुर्य जागेगा।

आंतरिक स्पर्श चूमेगा।

आंतरिक अंश समायेगा।

हाँ! 🌷"जय श्री कृष्ण"🌷

यही ही सर्वोच्चता "जय श्री कृष्ण" की जो हमारा सर्व श्रेष्ठ ब्रह्मसंबंध करेगा

यही ही सर्वाधिक संपूर्ण सूत्र है "जय श्री कृष्ण" जो हमें सर्व श्रेष्ठ तत्वों से एकात्म करेगा

यही ही सर्वोत्तम पुरुषार्थ है "जय श्री कृष्ण" जो हमें सृष्टि के हर नवत्व से आग्नेय करेगा

यही ही आनंदात्मक है "जय श्री कृष्ण" जो हमें पुष्टित्व के हर स्पर्श से परमानंद लूटायेगा

हे वल्लभ! अखंडता से संपूर्ण ज्ञानात्मक और भावात्मक से आपके शरण में रह कर खुद को सर्वथा से न्योछावर करते है। 🌷🙏🌷

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

मेरे दोस्त मेरे मित्र का नाम यह है

मेरे दोस्त मेरे मित्र का काम यह है

तो यह तो मेरे जीवन घड़तर के लिए योग्य है - उत्कृष्ट है

यही ही ऐसे साथी है जो मेरी अंदर जागृत हुए संस्कार युक्त विचार और कर्म धारा में साथ निभाता है। यही तो सत्य और विशुद्ध मित्रता है। जिससे केवल और केवल विश्वास और अतूटता ही घनिष्ट होती है।

मित्रता मेरे जीवन का एक ऐसा अभिन्न साक्षात्कार और संस्कार संस्थापन है जो मुझे निर्भय और आनंदमय करने में सुसंगत स्त्रोत्र है।

मित्र का अर्थ

मित्र का परमार्थ

मित्र का शास्त्रर्थ

मित्र का प्रीतार्थ

मित्र का कृतार्थ

मित्र का भावार्थ

मित्र का पुरुषार्थ

मित्र का निःस्वार्थ

ही हमारा विशुद्ध और पवित्र और संशय मिटाने का एकात्म सिद्ध साथ है।

जो निर्विवाद है

जो निर्विकार है

जो निर्विघ्न है

जो नीरव है

जो विरल है

जो श्रेष्ठ है

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कितनी सरल बात है
मैं चाहूँ ऐसा हो जाये तो
कौन नही चाहता
कौन नही कहता
कौन नही सुनता
हर कोई चाहता है
हर कोई कहता है
हर कोई सुनता है
पर
नही चाहत है
नही करते है
नही सुनते है
क्यूँ?
क्यूँकि यही तो मैं हूँ
क्यूँकि यही तो हम है
क्यूँकि यही तो सर्व है
तो
कोई क्या करें
ऐसे ऐसे तो कैसे जीये?
मृत्यु तो आनी ही है
तो नैन मिलाके जीये
तो सुन समझ के जीये
तो निखालस रह के जीये
तो सरल समझ के जीये
तो व्यवस्था कर के जीये
तो आत्मविश्वास के जीये
तो संयम के जीये
तो नियमन के जीये
तो सत्य के जीये
तो पवित्र के जीये
तो विशुद्ध के जीये
तो सिद्धांत के जीये
तो स्वतंत्र के जीये
तो स्वमान के जीये
तो निश्चिंत के जीये

तो निष्ठा के जीये
तो धर्म के जीये
जो नमन के जीये
जो प्रणाम के जीये
जो सद्आचरण के जीये
जो कर्मकारण के जीये
जो समर्पण के जीये
तो प्रेम के जीये
तो बिना संशय के जीये
तो बिना संकोच के जीये
तो बिना भय के जीये
तो बिना मजबूर के जीये
तो बिना मदद के जीये
तो बिना आश के जीये
तो बिना मोह के जीये
तो बिना असमंजस के जीये
जो बिना क्रोध के जीये
जो बिना लोभ के जीये
तो बिना सहारा के जीये
तो बिना चालाकी के जीये
तो बिना लगनी के जीये
तो बिना खिंचाव के जीये
जो बिना आधार के जीये
जो बिना संबंध के जीये
जो बिना बंधन के जीये
जीवन जन्म और काल स्वीकृत और परिस्कृत हो कर सलामत की परमम गति करेगा।
यही तो योग्यता है जन्म जीवन और सर्वकाल की।
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"मनुष्य" सच में हम मनुष्य है?

मनुष्य कैसे है हम?

सृष्टि - प्राणी से संस्कृत होती है अर्थात जो प्राणी खुद में सोचने की सिद्धि प्राप्त करें और यही सिद्धि से अपनी निजी क्रिया से जीवन व्यवहार निभाता जाए - कर्म करता जाए - तो वह मानव है।

यही जो प्राणी ऐसा पुरुषार्थ करने के लिए अपनी सारी इंद्रिया - अपने सारे साधन - अपने सारे उद्देश्य को सृष्टि और प्रकृति की रचनाओं को अपने में समेट कर - एक जुट कर योग्य प्रकार का ज्ञान प्राप्त कर अनेक मार्ग - अनेक दिशा - अनेक सार्थकता - अनेक सिद्धि खुद में जागृत कर खुद को एक ऐसा व्यक्तित्व घड़ कर प्राणी से वह मनुष्य की पदवी - मनुष्य की संस्कृति - मनुष्य की दृष्टि - मनुष्य का स्वभाव- मनुष्य की कर्माणि का धी रास्ता रचता है वह मनुष्य है।

अर्थात मनुष्य ही एक ऐसी उपाधि - कक्षा - योग्यता - सिद्धि है जो प्राणी अपनी मन की धरणा से खुद मनुष्य है।

अगर कोई प्राणी सोचने की सिद्धि के साथ अचूक ध्येय के साथ अचूक नीति की सिद्धि प्राप्त करे - व्यवहार करे - कर्म करे तो वह प्राणी देव है।

अगर कोई प्राणी सोचने की सिद्ध के साथ अचूक ध्येय के साथ अचूक अनीति की सिद्धि प्राप्त करे - व्यवहार करे - कर्म करे तो वह प्राणी दानव है।

यह तो सामान्य और साधारण ही समझ है। यही ही धारणा - मान्यता और संस्कृति से ही हम जीये जा रहे है - जीये जा रहे है।

बस यही ही तक हमारी मर्यादा है?

बस यही ही हमारी सार्थकता है?

क्या हम ऐसे ही मनुष्य है?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"अस्वच्छता"

क्या यह शब्द से हम वाकेफ है?

क्या यह शब्द से हम जुड़े है?

क्या यह शब्द से हम है?

क्या यह शब्द से हम स्पर्शनीय है?

क्या यह शब्द से हम मिले झूले है?

क्या यह शब्द से हम एकैय है?

क्या यह शब्द से हम व्यवहारिक है?

क्या यह शब्द से हम जैविक है?

क्या यह शब्द से हम धर्मी है?

क्या यह शब्द से हम प्रेमी है?

क्या यह शब्द से हम व्यवसायी है?

क्या यह शब्द से हम कर्मी है?

क्या यह शब्द से हम व्यसनी है?

क्या यह शब्द से हम आस्थि है?

क्या यह शब्द से हम सेवक है?

क्या यह शब्द से हम ज्ञानी है?

क्या यह शब्द से हम संस्कृत है?

क्या यह शब्द से हम मनुष्य है?

सच! सोचलों!

यह शब्द से हम क्या है?

जन्म से मृत्यु पर्यान्त हम कितने गहराई में खुपे हुए है की कितनी भी बार हम स्वच्छता का शपथ ग्रहण करे - संकल्प करे - प्रतिज्ञा करे - वचन दे! पर हम वहीं के वहीं! न तिलभर न बदले और बदलेंगे!

"प्राण जाए पर अस्वच्छता न जाए"

यही ही हमारा तन मन धन ज्ञान जीवन धर्म कर्म और बलिदान है।

जो भी करे अस्वच्छ करे

जो भी सोचे अस्वच्छ सोचे

जो भी अपनाये अस्वच्छ अपनाये

सच! कितने द्रढ है हम अस्वच्छ के सिद्धांत को धरे हुए।

सच! कितने चोक्कस है हम अस्वच्छ के कर्माधिन के लिए।

सच! कितने निडर है हम अस्वच्छ की सलामती के लिए।

सच! कितने उपयोगी है हम अस्वच्छ को फैलाने के लिए।

सच! कितने कठोर परिश्रमी है हम अस्वच्छ को आबाद करने के लिए।

हम सारी सृष्टि को वादा करे - कितना भी तु हमें नफरत करे - कितना भी तु तरछोडे - हम न तुझे छोड़ेंगे - हम तुझसे दूर रहेंगे।

आप सर्वे को मेरा प्रणाम! 🌷🙏🌷

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

आखरी साँस तक नही पता है कब क्या होगा?

नही मनुष्य जानता है

नही आदमी जानता है

नही जीव तत्व जानता है

जब श्री भीष्म ने जन्म लेकर मनुष्य देह धारण किया तो नही पता था मृत्यु बाण शैया पर सोना है।

जब भगवान श्री कृष्ण ने मनुष्य देह धारण किया तो नही पता था पैर में तीर लगना है।

जब भगवान श्री राम ने मनुष्य देह धारण किया तो नही पता था सरयू नदी में डूबना है।

जब रावण ने मनुष्य देह धारण किया तो नही पता था मेरा वध होना है।

जब द्रौपदी ने मनुष्य देह धारण किया तो नही पता था मेरा चीरहरण होना है।

यह नकारात्मकता की सोच नही है, यह हमें अचूक सोचना है - ऐसा क्यूँ?

कर्म का ऐसा क्या सिद्धांत है, जो ऐसी स्थिति उदभवती है।

धर्म का ऐसा क्या सिद्धांत है, जो ऐसी परिस्तिथि रचती है।

प्रकृति का ऐसा क्या सिद्धांत है, जो ऐसे रोगीष्ट होते है।

सृष्टि का ऐसा क्या सिद्धांत है, जो ऐसे राक्षस जन्म लेते है।

समय का ऐसा क्या सिद्धांत है, जो ऐसे कलयुग परिवर्तते है।

जन्म, पूर्व जन्म, पुनः जन्म, गत जन्म की मान्यता को त्यागकर यह जन्म धरा है उनसे खुद को संस्कृत, साक्षर, पवित्र, शुद्ध, सत्यार्थी करके जन्म जन्म, भव भव को क्यूँ न सुधारे! क्यूँ न परिवर्तित करे!

सत्य से कहे - यही ही प्रकृति, सृष्टि और समय से ही योग्य पुरुषार्थ से हम यही ही मनुष्य देह से हम खुद को परम भगवदीय, परम प्रज्ञानी, परम भक्त, परम श्रेष्ठ, परम आचार्य, परंब्रह्म कर सकते है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"प्रागट्य श्रीवल्लभ"

नाचत मन गावत तन
सृष्टि जगावत प्रकृति मधुरावत

मधुर मधुर मन मधुर मधुर तन
मधुर सृष्टि मधुर प्रकृति
पधारे द्वार श्री वल्लभ

किरण किरण रंग उड़ावत
पुष्प पुष्प महक बहावत
पधारे द्वार श्री वल्लभ

रज रज सांझी पुरत

रंग रंग उड़ावत अंग अंग सुहावत
पत्ते पत्ते जगत सजावत
पधारे द्वार श्री वल्लभ

मेरे मन स्थिरावत
मेरे तन शुद्धावत
मेरे कर्म सिद्धांतवत
मेरे धर्म धरावत
पधारे द्वार श्री वल्लभ

नमन हमारे
प्रणाम हमारे
वंदन हमारे
दंडवत हमारे

पधारे श्री वल्लभ द्वार हमारे
"Vibrant Pushti"
"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

पता है सृष्टि और प्रकृति का नियम है

किसीको मारना और जीना

अर्थात कोई पशु पशु का शिकार करेगा और अपना निर्वाह करेगा

अर्थात यह ही हुआ कि जो कोई किसको मारके जीये - किसीको मारके जीवन निर्वाह करे वह पशु है।

सोचले! हम किसीको किस किस तरह मारते है और अपना जीवन निर्वाह करते है

कमीशन खा कर

लूट कर

Money laundering कर

भ्रष्टाचार कर

रिस्वत दे और ले कर

गलत भाव दे और ले कर

गलत हिसाब कर

गलत माप तोल कर

गलत वस्तु दे और ले कर

गलत माहिती दे और ले कर

गलत रीत अपनाकर

अनपढ़ को गलत समझा कर

नादुरस्त अर्थात रोगी को घुमा घुमा कर इलाज कर

विश्वास को पैसे में परिवर्तित कर

भरोसा को पैसे में तोल कर

हर व्यवहार और रिश्ता को अर्थोपार्जन में ही ढालना - अपनाना - सुलझाना।

ओहहह! सब करते है तो मैं करता हूँ!

कौन नही करता ऐसा?

जहां देखो जो व्यवहार सोचलो - करलो - देखलो - अनुभव करलो!

कोई भी स्तिथि परिस्तिथि लूटना और लूटा।

कौनसा अर्थोपार्जन क्रिया ऐसी नही है जो कोई किसीको न लूटे!

सभ्य समाज में नजर करे

Doctor - लूटे - भरोसा का कितना बड़ा दरज्जा - विश्वास का गलत इस्तेमाल - प्राणी में कितना उच्च स्थान - जो यही लूटे तो कौन न लूटे!

Judge - न्यायाधीश - पुलिस अधीक्षक - अधिकारी - जो न्याय करने वाले न्याय के नियम विरुद्ध अनीति करे - गुनाह को गलत ठहरे - असत्य को अज्ञान की टिप्पणी से - अक्षर शब्द की अज्ञानता और अधुरप का गलत अर्थघटन करे - विश्वास का गलत उपयोग करे।

Industrialist व्यापारी Businessman - कैसा भी प्रकार का उत्पादक और विक्रेता - जो जगत के हर व्यवहार और कारोबार से जुड़े है वह ऐसी नीति - अनीति रचे - जिससे हर व्यवहार से गलत अर्थोपार्जन ही हो! हर व्यवस्था से लूटना! क्या ज्ञान का यही सही उपयोग है?

नेता - नेता शब्द का अर्थ को इतना निम्न और निच कर दिया कि हर जीव अपने खुद को भूल गया। कितना घिलौना और दुष्ट प्राणी या पशु बना दिया।

शिक्षक - आचार्य! ज्ञान का उजाला करने वाले - ज्ञान को उजेडे!

ज्ञान से विद्या से संस्कार और जीवन को घड़ने वाले - विद्यार्थियों को लूटे - मानसिक और शारीरिक कुसंस्कार को सिंचे! कैसे समाज की रचना रचे! जो हर शिक्षा से केवल लूटना! ओह्ह!

जो जगत को गति और योग्य करते है वही किसीका विश्वास तोड़ते है - दामन नोचते है - बेगुनाह को तिल तिल कर मारते है।

खुद ही सोचलो!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कैसी है यह जीने की राह

जो

रास्ते रचते रचते

या

रास्ते चलते चलते

कोई क्या मिल गया

कोई कहा मिल गया

कोई कहा जुड़ गया

तो

रास्ता चौराहा हो गया

जहा देखो वहा चौराहा

न कोई एक रास्ते पर जा सका

न कोई एक रास्ते को पा सका

न कोई एक रास्ते को ढूंढ सका

बस

घूमता रहा

भटकता रहा

अटकता रहा

लटकता रहा

कितना भी संकेत पाये

कितना भी संकल्प करे

कितना भी द्रढता निभाये

पर

न जान सका

न समझ सका

न पहचान सका

कोई कहे गुरु करलो

कोई कहे गुरु ढूँढलो

कोई कहे यही ही गुरु

लड़खड़ाता गया

रुकता गया

गिरता गया

कभी

अकेले में बैठ कर

कभी

खुद का जो मन हो

खुद का जो तन हो

खुद का जो आत्मा हो

खुद की जो वैचारिक शक्ति हो

खुद की जो ज्ञानिक दीर्घ दृष्टि हो

खुद की जो आत्मीय साक्षरता हो

तो

यज्ञ करना

ध्यान धरना

तप करना

अविचलित हो कर

समांतर हो कर

न्याय पहचान कर

तो

अचूक चौराहा तोड़ोगे

अचूक रास्ता पकड़ोगे

अचूक जीवन डग भरोगे

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

हम कहीं बार कहते है

हम कहीं बार सुनते है

हम कहीं बार भुगतते है

यह किया

वह किया

ऐसा किया

वैसा किया

ऐसा न करना था

ऐसा करना था

ऐसा ही योग्य है

ऐसा ही अयोग्य है

पहले ऐसे सोच लेते तो

पहले पूछ लिया होता तो

पहले सलाह ले ली होती तो

सच! कैसे है हम?

क्यूँ इतनी असमंजस

क्यूँ इतनी बेकरारी

क्यूँ इतने बौखलाये

क्यूँ इतनी तालावेली

क्यूँ इतनी उत्तेजना

क्यूँ इतनी तीव्रता

क्यूँ इतनी अस्थिरता

क्यूँ इतनी .... क्यूँ?

कैसी हमारी क्रिया

कैसी हमारी तृष्णा

कैसी हमारी वृति

कैसी हमारी बुद्धि

क्यूँकि हर सोच में है अधुरप्ता

क्यूँकि हर क्रिया में है आद्रता

क्यूँकि हर वृति में है कुत्रिमता

क्यूँकि हर स्थिति में है अपरिपकवता

क्यूँकि हर काल में है अनिश्चितता

क्यूँकि हर दिशा में है निष्क्रियता

क्यूँकि हमारा घड़तर हुआ है

ऐसे ही वचन से

ऐसे ही कथन से

ऐसे ही साधन से

ऐसे ही वाचन से

ऐसे ही लगन से

ऐसे ही शिक्षण से

ऐसे ही धर्म से

ऐसे ही कर्म से

ऐसे ही मर्म से

ऐसे ही शास्त्र से

तो क्या करना चाहिए?

तो हमें अपने आप को ऐसे चरित्र से जोड़ना चाहिए जो चरित्र हमारा आमूल परिवर्तन करे

तो हमें अपने आप को ऐसे व्यवहार से व्यवहारना चाहिए जो व्यवहार संसार का शुद्ध हो

तो हमें अपने आप को ऐसे ऐसे धर्म के सिद्धांतों से सिंचना चाहिए जो सिद्धांत से सत्य की ही पहचान हो

तो हमें अपने आप को ऐसे ज्ञान से संस्कृत साक्षर होना चाहिए जो ज्ञान केवल आनंद की ओर ही गति करता हो

तो हमें ऐसे ही भाव जागृत करना चाहिए जो भाव केवल विश्वास ही उत्स करता हो

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

"मंगला चरण" साक्षर चारित्र्य स्पर्श भक्तिवर्धिनी प्रार्थना 🌷🙏🌷

🌷पुष्टि षोडस - ०१🌷

🌷"पुरुषोत्तम सहस्त्र नाम स्त्रोतम्" परब्रह्म पुरुषार्थ चरित्र स्पर्श

🌷"यमुनाष्टकम्" परम उत्कट सकल सिद्धि जागृत तनुनवत्व परिवर्तित चरित्र

🌷"बालबोध" जीव अहंताममतानाशे सर्वथा निरहंकृतौ - केवलश्चेत्समाश्रित: बोध प्रोक्तं - जीव विशुद्धता।

🌷"सिद्धान्तमुक्तावली" - विज्ञाने ब्रह्मात्म्त्वावबोधने - ज्ञानाभावे पुष्टिमार्गी तिष्ठेत्पूजोत्सवादिषु - अनुग्रह: पुष्टिमार्गे नियामक इति स्तिथि: - एतद् बुद्ध्वा विमुच्येत पुरुष: सर्वसंशयात् ।

🌷"पुष्टिप्रवाहमर्यादाभेद" भक्तिमार्गस्य कथनात्पुष्टिरस्तीति निश्चय: - भगवद्ररुपसेवार्थ तत्सृष्टि र्नान्यथा भवेत्।

🌷"सिद्धान्तरहस्यम्" सर्वदोषनिवृत्तिर्हि दोषा: पञ्चविद्या: स्मृता: - निवेदिभि: समर्प्यैर्व सर्वम कुर्यादिति स्तिथि:।

जो भी प्रकार का देह धारण किया हो वह देह धारी उपरोक्त पुष्टि ज्ञानामृत और भावामृत का मधुरात्मक साक्षर पान पा ले और कर ले, वह ही मधुदेश का गौलोक धाम में स:देह परमानंद प्रीत सिद्धि की अद्वैत स्तिथिस्थापक्ता धारण कर सकता है, सदैव तनुनवत्व और वपु अमृतम से स्वराट आत्मा हो सकता है।

पुष्टि षोडस -०१ .... आगे ...

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण" 🌷🌷🌷

"इतिहास"

इतिहास ऐसा होना चाहिए जो इतिहास से इतिआनंद होना चाहिए।

कितना भी युगों का इतिहास अनुसंधाने सतयुग के सिवाय बाकी हर युग में इतिआहास - इतिआभास - इतिदाहक ही इतिहास है।

जैसे जैसे साक्षरता - योग्यता - सुधारता व्यापक होती जाती है वैसे वैसे सलामतता - सुरक्षता अनिश्चित, अरक्षित, अवैधिक, भ्रमित और अनैतिक होती जाती है।

हम दिन ब दिन कितने अहंकारवादी और कुत्रिम और नाटकीय होते जाते है कि अपनी हर विचारधारा और कार्यदक्षता खुद को खुद से और हमें अपने कुटुंब से - समाज से दूर करता जाता है - विघटित करता जाता है - विच्छेदन करता जाता है - क्रूर करता जाता है।

यही ही है आज का मानव जीवन जो जीने की हर घड़ी में नफरतता और निष्ठुरता का सिंचन करती रहती है और हम उनमें स्वाहा होते जाते है। हम एक दूसरे से बाटते जाते है, विखुटे पड़ते जाते है, नष्ट होते जाते है।

क्या करना चाहिए? ऐसे बरबाद होते हुए जीवन को सुशील - सुरक्षित - शुद्ध - आनंदमय करने के लिए?

हम इतने भाग्यशाली है कि हमारी धरोहर में सतयुग का इतिहास सूक्ष्मता से रज रज में, कण कण में, बूँद बूँद में पड़ा है, उन्हें उजागर करना ही योग्य मार्ग - दिशा और संस्कृत है।

हम हमारा सतयुग का इतिहास के ही माध्य्म से हमें

१. प्रातःकाल में ५ (पाँच) बजे उठ कर नित्य कर्म करके सेवा का कार्य करना योग्य है।

जिससे मन - तन शांत और सुनिश्चित दिनचर्या में साथ देती है।

२. सुनिश्चित दिनचर्या से हमारे अंदर न रोग या अविचार का प्रवेश न होने से हम अधिक पुरुषार्थवादी होंगे जो हमें अधिक मात्रा में हमारी अर्थोपार्जन व्यवस्था में हमें अधिक योग्यता प्रदान करेगा, जो हमें वधु "Digital Tools" से अवगत और सरल करेगा।

यही ही सर्वश्रेष्ठ जीवन घड़तर की प्रक्रिया है।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

ये कैसा है यह प्यार

जो नैन से जुड़े

जो मन से जुड़े

जो तन से जुड़े

जो आत्म से जुड़े

जो आँसू से जुड़े

जो इंतेज़ार से जुड़े

जो तड़पन से जुड़े

जो तरस से जुड़े

जो विरह से जुड़े

जो यादों से जुड़े

जो ख्यालों से जुड़े

जो आह से जुड़े

जो अगन से जुड़े

जो अपलक से जुड़े

जो बैचैन से जुड़े

जो आनंद से जुड़े

जो एकांत से जुड़े

जो धड़कन से जुड़े

जो साँस से जुड़े

जो आंतर वेदना से जुड़े

जो अनंत प्रवाह से जुड़े

जो आंतरिक ऊर्जा से जुड़े

जो अनंतता से जुड़े

जो अखंडता से जुड़े

जो निर्भयता से जुड़े

जो अमृत से जुड़े

जो राग से जुड़े

जो ऋचा से जुड़े

जो स्वर से जुड़े

जो अक्षर से जुड़े

जो अंग से जुड़े

जो रंग से जुड़े

जो स्वयं से जुड़े

जो संयम से जुड़े

जो अन्न से जुड़े

जो क्रिया से जुड़े

जो विचार से जुड़े

जो रूप से जुड़े

जो विशुद्धता से जुड़े

जो निःस्वार्थ से जुड़े

जो पवित्रता से जुड़े

जो परमार्थ से जुड़े

जो आध्यर्थ से जुड़े

जो कृतज्ञ से जुड़े

जो कृतार्थ से जुड़े

जो सेवा से जुड़े

जो निष्ठा से जुड़े

जो धर्म से जुड़े

जो कर्म से जुड़े

जो विश्वास से जुड़े

जो सत्य से जुड़े

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

कभी फूल को खिलते निहाला है?

कभी बीज को अंकुर फूटे निहाला है?

कभी बूँद को बादल से बरसते निहाला है?

कभी किरण को सूरज से ऊर्जते निहाला है?

कभी चांदनी को चंद्र से बहते निहाला है?

कभी तरंग को सागर से उठते निहाला है?

कभी लहर को हवा से लहराते निहाला है?

कभी दृष्टि को नैन से खिंचते निहाला है?

कभी धड़कन को हृदय से धड़कते निहाला है?

कभी विचार को मन से उदभवते निहाला है?

कभी साँस को तन हृदय से संयोजितते निहाला है?

कभी प्रीत को प्रियतम से जोड़ते निहाला है?

नही कभी नही!

तो भी प्रयत्न करना!

अवश्य नही ही निहाला है।

सोच लो!

यह अनुभूति की बात या रीत नही है।

यह केवल आंतरिक आध्यात्मिक की बात या रीत है।

अभी भी कहता हूँ, नही ही निहाला है।

क्यूँ?

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

मंतव्य"

कैसा अनोखा शब्द है

कैसा व्यवहारिक शब्द है

कैसा साधारण शब्द है

कैसा सामान्य शब्द है

कैसा स्पर्शिय शब्द है

कैसा नाटकीय शब्द है

कैसा तिरस्कृत शब्द है

जो

कौन कैसे उपयोग और उपभोग करता है

जो

कौन कैसे अर्थात से समझ और स्पर्श करता है

जो

कौन कैसे क्या क्या खेल रचत है और रचावत है।

"मंतव्य" को निखालस से, योग्यता से, निर्भयता से, साक्षरता से उपयोग और उपभोग करे तो

"मंतव्य" को द्रढता से, विश्वास से, पूर्णता से, कुशलता से, ऊंच नीच अभेदता से व्यवहार और स्पर्श करे तो

यह "मंतव्य" मददगार हो जाएगा, शैक्षणिक हो जाएगा, धार्मिक हो जाएगा, कार्मिक हो जाएगा, जागृत हो जाएगा, आग्नेय हो जाएगा, निःभ्रमित हो जाएगा, निःसंदेह हो जाएगा, आनंदित हो जाएगा।

हमारे जीवन का यह एक ऐसा घटक घटक और पृथक पृथक धारणा और कल्पनीय है कि इन्हें निखालस से ही स्पर्श करे - स्वीकार करे तो जीवन सफल हो जाए - जीवन कर्मयोगी हो जाए - जीवन श्रेष्ठ हो जाए।

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

तुझसे कितना दूर हूँ मैं
नही है मुझे पता
तुझसे कितना निकट हूँ
नही है पता
पर
इतना चोक्कस है
मैं तुझमें हूँ
तु मुझमें है
क्यूँकि कभी
ये तेरे मूंदते नैन आकाश के बादलों से बरसाता है
ये तेरे थरकते होंठ बिजली की घरघराहट से थरथराता है
ये तेरी सिसकती साँसे हवा के तूफान से पैड पत्ते की चीत्कार है
ये तेरा काँपता तन धरती की उड़ती रज से जलता है
ये तेरा तड़पता मन ब्रह्मांड की घट घट की परिवर्तनता है
क्या यह सब की असर का पता मुझे नही होता
क्या
मेरे नैन भी क्यूँ मूंदते है?
मेरे होंठ भी क्यूँ थरकते है?
मेरी साँसे भी क्यूँ सिसकती है?
मेरा तन भी क्यूँ काँपता है?
मेरा मन भी क्यूँ तड़पता है?
क्या मुझे तुमसे कुछ सुख पाना है
क्या मुझे तुमसे कुछ दुःखो का सहारा पाना है
क्या मुझे तुमसे कुछ अधिक माँगना है
क्या मुझे तुमसे कुछ अधिकार करना है
नही नही
तुझसे ही रचा हूँ तो क्या तुझसे चाहे
तुझमें ही मैं हूँ
मुझमें मैं ही तु है
तो

क्या ऐसा नही है

तु ही मैं हूँ

मैं ही तु हूँ

सच! जीवन जीते जी हर प्रकार का एहसास हो रहा है कि तेरा भी यही जीवन है जो मेरा है।

गुजरते हर वक़्त की असर

तुझसे कितना दूर हूँ मैं

तुझसे कितना निकट हूँ मैं

नही पता

पर

अब पता हो गया

तु ही मैं हूँ

मैं ही तु हूँ

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"🌷🌷🌷

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - वल्लभी वैष्णव

"Vibrant Pushti"

Inspiration of vibration creating by experience of

life, environment, real situation and fundamental elements

"Vibrant Pushti"

53, Subhash Park, Sangam Char Rasta

Harni Road, City: Vadodara - 390006

State: Gujarat, Country: India

Email: vibrantpushti@gmail.com

" जय श्री कृष्ण "